सचदा नंद सरूप धन्न धन्न हजूर श्री नाभ कंवल राजा साहिब जी

नूरी किरनां

स. गुरबख्श सिंह रहिपा

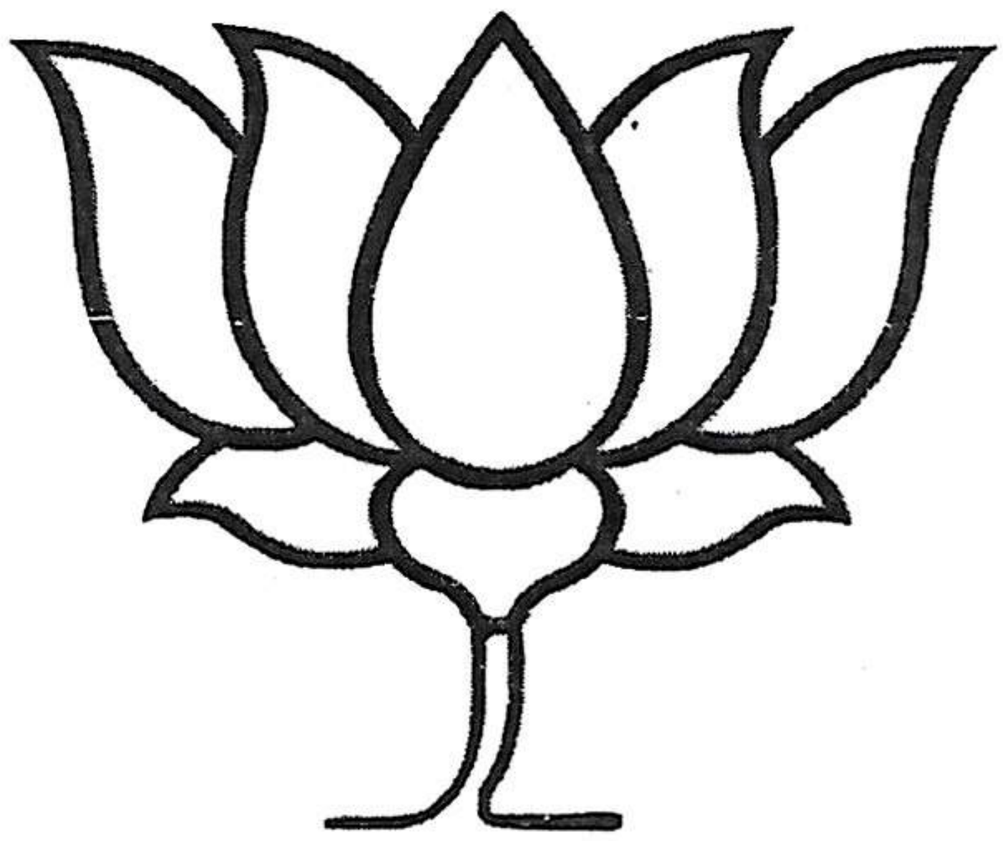

नूरी किरनां

नूरी किरनां

स. गुरबख्श सिंह

संस्करण : 2017

प्रकाशक : तख्त हजूर श्री नाभ कंवल
राजा साहिब जी (रहिपा)

कम्प्यूटर टाईप सैटिंग : वैक कंप्यूटर्ज, जालंधर
फोन :98140-87063, 0181-2239181

छापक : पंज आब प्रिंटर्ज़, जालंधर

टाईटल डिज़ाईन : वैक कंप्यूटर्ज, जालंधर

फोटोग्राफी : लल्ल स्टूडीओ, सोना जी सटूडीओ

भेटा : रूपये 200/-

ततकरा

- दोहरा 11
- भूमिका 13
- इष्ट के धनी–स. गुरबख्श सिंह जी 15
- जीवन लीला श्री नाभ कंवल राजा साहिब जी 19
- साखी महाराज नाभ कंवल राजा साहिब के जन्म की चली 20
- साखी रसूलपुर भूआ अत्तरी के पास जाने की चली 24
- साखी मन्नणहाने के लोगों से हुई 27
- साखी मन्नणहाने से बल्लोवाल जाने की 28
- साखी रहिपे से रत्ते टिब्बे जाने की चली 31
- साखी लोदीपुर जाने की चली 32
- साखी झिंगड़ी जाने की चली: बाबा जवाहर सिंह का मिलाप 33
- जमात का और गाँवों में जाना 37
- आगे साखी ईशर सिंह के वाड़े में जाने की चली 43
- बैंत 45
- आगे साखी लाला हमीर चन्द जी की चली 46
- साखी बाबा जवाहर सिंह जी की 51
- साखी करम सिंह बब्बर के खूह (कूएँ) के पानीकी 56
- साखी सुरमुख सिंह से हुई 58
- आगे साखी झिंगड़ां से रहिपे आने की 62
- आगे साखी हाकम शाह से गोष्ठ की हुई 65
- साखी संतों से हुई 68
- साखी बाबा जवाहर सिंह जी से पुनर मिलाप 72
- साखी सरदार हरनाम सिंह से हुई 75
- साखी बाबा जवाहर सिंह जी जोति जोत समाने की चली
- गुरमुख माया में उदासी 77

- बाणी 84
- साखी भगत माने से हुई 86
- बैंत 88
- साखी संत भूरी वालों से हुई 89
- साखी वतन सिंह पुत्र बखशिश करने की चली 92
- साखी हकम शाह को अंतिम समय दर्शन देने की चली 95
- साखी रहिपे के लोगों से हुई 97
- साखी ईशर झीर (झिऊर) से हुई 100
- साखी माता साहिब देवी जी को दर्शन देने की चली 101
- साखी सरकुला वाले कुएं को आबाद करने की चली 103
- साखी रहिपे तखत की चली 104
- साखी बाबा हरी सिंह दुबारा बाग लगाने की चली 107
- साखी गुरुद्वारा दुःख निवारन गांव झिंगडा के रचने की चली 110
- बैंत 111
- साखी माई नंदी से हुई 119
- साखी रल को कैद में से छुड़वाने की चली 120
- आगे साखी गुरूद्वारा गोसलां के मंजी साहिब की चली 124
- आगे साखी गोसला से रहिपे जाने की चली 127
- साखी पटियाले साहिब दास जी के मिलाप की चली 129
- आगे साखी संत वीरम दास वधौसी वाले से हुई 133
- आगे साखी बार देश की चली 135
- आगे साखी झिंगड़ी जाने की चली 138
- आगे साखी साहिब दियाल के उदार की चली 140
- आगे साखी और चली 145
- आगे साखी सुज्जों की चली 147
- साखी वरियाम सिंह को यमों से छुड़वाने की चली 151
- आगे साखी लड़ाई की चली 153

- बैंत 158
- साखी हरी सिंह को माया की बखशिश 163
- साखी धुन्ना मल्ल सेठ से हुई 165
- साखी साईं गाँव झिंगड़ा वाले से हुई 168
- आगे साखी बिशन सिंह के परिवार की चली 172
- आगे साखी भसत पटियाले वाले साहिब दास जी के ज्योति–जोत समाने की चली 175
- आगे साखी मजारे लंगर का नक्शा बनाने की चली 177
- आगे साखी सौणमल्ल के प्रथाएं चली 180
- आगे साखी जगत सिंह के प्रथाएं चली 182
- आगे साखी समाधों में कुएं (खूही) लगवाने की चली 185
- आगे साखी हीरा सिंह को कैनेडा में दर्शन देने की 186
- आगे साखी मूसापुरी मुंदर सिंह से हुई 188
- आगे साखी माली राम खटकडां वाले से हुई 191
- आगे साखी मान सिंह, मंडेरां वाले से हुई 193
- आगे साखी करम सिंह रायेपुर डब्बे वाले से हुई 195
- आगे साखी पाखर सिंह झिंगडा वाले से हुई 198
- आगे साखी सुंदर सिंह गाँव मजारे वाले से हुई 199
- आगे साखी इन्दर कुब्बे को पुत्र बख्शानें की हुई 203
- आगे साखी गाँव गुणाचौर के मामदीन राजपूत की चली 206
- आगे साखी महिंगे से हुई 208
- आगे साखी मौला बख्श सुआमी के प्रथाएं की चली 209
- आगे साखी रसूलपुर की संगत का कोहड़ (कुष्ट) दूर करने की चली 215
- आगे साखी अमर चन्द बठल्ला वाले से हुई 216
- आगे साखीभरो मर्जारे के जाट मल्लू से हुई 219
- दूसरी साखी मल्लू से और बख्शी पहलवान से हुई 220
- आगे साखी नागरा के लोगों से हुई 221
- साखी जागर सिंह नागरा वाले से हुई 223

- साखी नागरा के लोगों से हुई 224
- साखी पण्डित बसंत सिंह भधाना वाले से हुई 225
- साखी परीते मजारे वाले से हुई 227
- साखी कूकर निसतारा 228
- आगे साखी चरन सिंह झिंगड़ां वाले से हुई 231
- आगे साखी गंगा के संतों से हुई 234
- आगे साखी करम कौर के पुत्र को राज़ी (ठीक) करने की चली 235
- आगे साखी और चली 237
- आगे साखी मजारे के इन्दर की चली 238
- साखी मजारे वाले करतारे जाट से हुई 241
- आगे साखी ननकाणा के एक जाट से हुई 242
- साखी बनारसी फलपोते वाले से हुई 243
- आगे साखी सरदारा सिंह रसूलपुरी को बर्मा में दर्शन देने की चली 244
- दूसरी साखी सरदारा सिंह से हुई 246
- आगे साखी सीबो रहिपेवाली को पुत्रों की बख्शिश की चली 248
- आगे साखी दन्नो ददियाल की माई से हुई 250
- आगे साखी लक्ष्मी (लछमी) को पुत्र की बख्शिश की चली 251
- आगे साखी करमी और रक्खी को पुत्रों की बख्शिश की चली 253
- साखी करमी और दौले की चली 254
- दूसरी साखी करमी और दौले की चली 256
- तीसरी साखी करमी से हुई 257
- चौथी साखी करमी से हुई 258
- साखी बड़ी माता दर्शन को आई 263
- साखी और चली 264
- साखी नरंजन सिंह से हुई 265
- दूसरी साखी नरंजन से हुई 267
- साखी काले नाग से हुई 271

- साखी गाँव मेहदपुर के शेर सिंह से हुई 272
- साखी फजे तेली और बतन सिंह से हुई 274
- साखी उमरू से हुई 276
- साखी गाँव हेड़ियां के गज्जू से हुई 277
- आगे साखी और चली साखी काला को विराट रूप दिखाने की चली 278
- साखी पाल सिंह मजारे वाले से हुई 289
- आगे साखी बन्ती नाम धारण कीं लड़की को ठीक करने की चली 282
- दूसरी साखी बन्ती से हुई 284
- साखी भगवान सिंह गाँव मजारेवाले से हुई 286
- दूसरी साखी भगवान सिंह के परिवार की चली 289
- आगे साखी ईशर सिंह पुजारी हकीमपुर गुरुद्वारा नानकसर वाले से हुई 291
- साखी महंत पूरन दास से हुई 293
- साखी गाँव मजारे के लोगों से हुई 299
- आगे साखी दयालू को गुरू नानक रूप में दर्शन देने की चली 300
- साखी एक भगत से हुई 301
- आगे साखी रतन सिंह गाँव मसानी वाले से हुई 304
- आगे साखी गुरुद्वारा झिंगड़ां के मुक्कद्दमे के प्रथाएं चली 307
- आगे साखी एक थानेदार से हुई 312
- आगे साखी हजारा सिंह रसूलपुरी की चली 313
- आगे साखी और चली 315
- आगे साखी दीवान सिंह गोबिंदपुरी को परियों के दर्शन करवाने की चली 316
- आगे साखी गणेशे को पुत्र की बख्शिश करने की चली 318
- साखी गुलज़ार सिंह गाँव मजारे वाले से हुई 320
- साखी मंगू के परिवार की चली 322
- आगे साखी बाबू के उधार की चली 303
- आगे साखी गाँव रहिपे वाले रागी निर्मल सिंह से हुई 309
- आगे साखी प्यारा सिंह गुणाचौरी से हुई 325

- आगे साखी संत करतार दास जी की चली 327
- आगे साखी संत अवदूतों से मिलाप की हुई 330
- आगे साखी दिलबाग सिंह मजारे वाले से हुई 339
- आगे साखी सुरमुख सिंह के परिवार की चली 342
- आगे साखी ठाकर सिंह की चली 349
- आगे साखी दास से हुई 355
- दूसरी साखी दास से हुई 360
- तीसरी साखी और दास से हुई 362
- आगे साखी और चली 365
- पाँचवी साखी दास से हुई 369
- आगे छठी साखी चली 372
- साखी राहों के एक सयाद के पुत्र जुगिंदरफली से हुई 375
- आगे साखी उजागर सिंह से हुई 378
- आगे साखी किशने मजारे वाले से हुई 379
- साखी जुलाहमजारे के सरवण की चली 381
- साखी करम सिंह रसूलपुरी की चली 382
- साखी भुल्ला सिंह गाँव करनाणा वाले की चली 383
- आगे साखी और चली 385
- साखी एक फोटोग्राफर और जैले खां राजपूत से हुई 389
- आगे साखी शादी खां के परिवार की प्रथाएं चली 388
- साखी किशने से हुई 391
- साखी मूले से हुई 394
- आगे साखी तुगल से हुई 395
- आगे साखी करनैल सिंह खानखाना वाले से हुई 396
- साखी मन्नण हाने जाने की चली 398
- आगे साखी गुरदास मसत की चली 336
- साखी मन्नणहाने उजागर सिंह की माई से हुई 401

- आगे साखी उमर चंद मन्नणहाने वाले से हुई 402
- आगे साखी प्रीतम दास के प्रथाएं चली 404
- आगे साखी भगवान सिंह घटारों वाले से हुई 407
- आगे साखी नन्ते से हुई 409
- साखी ठाकर सिंह खटकड़ कलां वाले से हुई 411
- साखी केसरी गुणाचौर वाली से हुई 417
- साखी दुर्गादास गाँव गुणाचौर वाले से हुई 419
- साखी रतने का कृष्ट दूर करने की चली 420
- साखी पण्डित दीनानाथ से हुई 421
- आगे साखी इंदर से हुई 424
- साखी संत घुंघरूदास के प्रथाएं चली 426
- साखी बीबी करमी से हुई 428
- साखी ज्योति–जोत समाने की चली 430
- नूरी किरनां का सार 435
- प्रोरभय करम (कर्म) भोगे बिन खत्म नहीं होता 440
- आत्मा विचार ज्ञान सागर 443
- बिन वैराग ना छूटस माया 451
- मध्य वैराग 454

दोहरा

१ओंकार उरधार के बरनन करुं बलास
सतिगुर के प्रसाद से अनुभव हो प्रकाश।।
हो अकरे अबनाशी परी पूरन प्रमात्मा बीवू
रूप दीया तोआ खंडा ब्रहमंडा के मालिक
दीजो बुध विवेक ताही हाथ कलम उठानी
हूऐ संपूरन काज मेहर होए तोहिआनी
अनुभव होए प्रकास ताहि हाथ कलम उठानी
नूरी किरना नाभ कंवल बीच रस भरदानी

पहिले बंदना निरंकार ताईं,
कीआ सुन थीं बहि प्रकास है जी।
ब्रह्मा, विष्णू, महेश चानेश साजे,
देवी देवता बे–शूमार है जी।
करूं बंदना नाभ कंवल ताईं,
कीआ भवजलों पार संसार है जी।
करू बंदना जवाहर मिरगिंद ताईं,
की बंदगी अजब कमाल है जी।
करू बंदना लाला पीर ताईं,
परदा ढूई का कीआ दूरहै जी।

करुं बंदनां झण्डी वालड़े को
दिआ बंधदरिआ को लाहै जी।
करूं बंदना अबदूले शाह ताईं
दिया किला फिलौर बना है जी।
करूं बंदना नानक पीर ताईं,
दिया कुल को ज्ञान चिराग है जी।
करूँ बंदना अंगद, अमरदास ताईं,
बाणी रची रूप भगवान है जी।
करूं बंदना हरगोबिंद ताईं,
कीआ राक्षसों का जिस ने नाश है जी।
करूं बंदना हरि राये साहिब ताईं
दिया भूखों को जिस ने राज़ है जी।
करूं बंदना हरकृष्ण ताईं,
कीआ गुंगो को जिस ने ज्ञान है जी।
करूं बंदना तेग बहादुर ताईं,
सीस दिया, दिल्ली में ले है जी।
करूं बंदना गुरू गोबिंद सिंह ताईं,
दिया धर्म पे ला परिवार है जी।

भूमिका

''साध रूपअपना तन धारा''

जीवन लीला नाभ कंवल रारजा साहिब जी नूरी किरनां की रचना अकाल पुरख वाहिगुरू की शक्ति के जीवों के उदार के लिए गुरू पीरों, अवतारों, ऋषियों, मुनिओं, पैगंबरों के रूप में जोत रूप हो के शक्ति के गुण बताए हैं, दिखाए हैं जीवों के उदार के ढंग बताये हैं, शब्द के इशारे से शक्ति के गुण बताये हैं, खुदा की होंद को प्रकट किया है। इस भरथ खण्ड में बहुत ऋषि मुनि, पीर–फकीर, औलिए, अवतार हुए हैं सब ने धर्म को अलग–अलग रूप दिया है। हर ढंग से आत्मा और परमात्मा के मिलाप का रास्ता बताया है। नूरी किरनां जीवन लीला नाभ कंवल राजा साहिब.जी में से पाठकों को आत्मिक शक्ति मिलेगी, पूर्ण प्रसन्नता मिलेगी, भगती रंग, प्रेम रंग, प्रेम रस मिलेगा। पूर्ण सहयोगिता मिलेगी, महांपुरुष गुरू पीरों जीवन से प्रेमी जिज्ञासू सज्जनों को सबक मिलताहै, कुर्बानी का मिशन मिलता है। नाम के रसिए प्रेमी सज्जन भक्ति का रस ले सकते हैं। बहुत मुद्दतों की दिल में इच्छा थी ऐसे महांबली के जीवन की लड़ी

लिखी जाये। अत्यंत जीवों का उधार एक नयन के ईशारे से किया। भूत, प्रेत, पत्थरों, वृक्षां मानसों का कल्याण किया (तारा)। शब्द के ईशारे से उदार किया। मनुष्य की बुद्धि और कलम उनके द्वारा किए परउपकार लिख नहीं सकता। मैं तुच्छ बुद्धि वाला नाचीज़ क्या लिख सकता हूँ। सतिगुरूओं की कृपा से जो अनुभवता बख्शिश (प्राप्त) हुई, से पासक गुण लिख रहा हूँ। पाठक पढ़ कर क्षमा करें। दास कोई विद्वान नहीं है। मैं अन्जान, नाचीज़ अल्प मत वाला जो सिक्खों सेवकों केसाथ बीत चुकी कहानियां लिखने की कोशिश कर रहा हूँ। वैसे भी पुरखी जद्दी तौर पर पिता जी सत्संगी होने के कारण मन का झुकाव इस खोज में गुरू की कृपा से जुड़ा हुआ है। एक बड़े समुंद्र के रूप में से एक बूंद की समझ भी न रखता हुआ जीवन लीला नूरी किरनां का नाभ कंवल राजा साहिब जी सतिगुरू की कृपा से लिख रहा हूँ। पाठक सज्जन भाषा लगां, कन्ना, अक्षर शुद्ध कर लें। हम अज्ञान अल्प मत थोंरी अपना बिरद पछानु।

लेखक

—स. गुरबख्श सिंह

गाँव रहिपा (नवांशहर)

ईष्ट के धनी– गुरबख्श सिंह जी

स. सरमुख सिंह के पोतरे, स्वर्गवासी स. ठाकुर सिंह और माता संती के पुत्र स. गुरबख्श सिंह को राजा साहिब के प्रति प्यार विरसे में से मिला। उनका जीवन राजा साहिब प्रति सर्मपण, प्रेम और श्रद्धा से भरपूर था। उनकी यह अनूठी रचना (नूरी किरनां) उनकी इन भावनाओं की ही तर्जमानी करती है।

राजा साहिब जी के घर के साथ सम्बंधित होने के कारण मैं उनका हमेशा वो रूप देखती थी, जो उनको साधारण रूप में विचरते हुए को देखने वाले लोग शायद नहीं थे देख सकते। राजा साहिब जी के सेवक के रूप में उनको कभी भी बीच–विचाले नहीं देखा, जब भी देखा शिखर पर ही देखा।

जब उनको मैं अपने पिता स. चैन सिंह और उनकी भूआ जी बीबी करमी से राजा साहिब जी की बातें करते हुए देखती तो मैं उनकी पातशाह प्रति प्रेम की शिखर देखती जो मेरे परिवार के साथ–साथ उनकी आँखों में से तृप–तृप करके वह रहा होता। गुरूद्वारा श्री तख्त साहिब की ईमारत उसारी का कोई काम हो या पातशाह की बरसी से संबंधित कोई प्रोग्राम हो वो जीअ–जान (पूरी लगन) तनदेही से लगे होते यह उनकी सेवा–भाव का का शिखर होता। 'जीवन में गृहस्थ' और दुनियादारी से निर्लेपता, नूरी किरनां लिखने के लिए भरपूर मेहनत और लगन से डट कर लगे रहना उनके समपर्ण भाव की हद थी। एक बार बीबी करमी (जो उनको सदा अपने बच्चों) की तरह प्यार करते थे) उनके द्वारा लिखी सिर्फ एक पंक्ति कर के उन को बहुत गुस्सा हुए। वो बहुत क्रोध में हाथ में खुंडी पकड़ कर उनको झिड़क रहे थे और स. गुरबख्श सिंह हर संभव यत्न कर के, क्षमा योजना के लिए अरजोईयां कर रहे थे, जैसे एक बच्चा अपनी माँ के आगे माफी

माफी के लिए मिन्नतें करता है। यह उन की नम्रता का शिखर था जो मैंने अपनी आँखों में देखा।

उनके लिए उनका सारा कुछ राजा साहिब जी थे और उनका हर तीर्थ मजारा था। दीवाली के पर्व पर जब लोग दूर–दूर से अपने इष्ट के आगे चिराग जगाने जाते वह मजारे आ जाते। होला महल्ला हो, माघी हो, वैसाखी हो या कोई भी त्यौहार हो वह जल्दी ही मजारे होते। वह जब भी घर आते एक विशेष अदब उनके साथ होता। घर के सारे सदस्य उन को उठ कर मिलते। वह हमारे हाथ चूमते, सिर पर हाथ रखते और कहते, तुम मेरे राजे के घर की अच्छी लड़कियां हो, हमेशा नेक कर्म करने।

'नूरी किरणा' उन की सख्त मेहनत, बहुत मेहनत और लगन का नतीजा है। राजा साहिब का सारे सेवकों में से पातशाह से सम्बन्धित जानकारी और साखियों को लिखने का विचार केवल उनके भाग्य में आया। इस कारज की शिखर पर पहुंचने के लिए उन्होंने रात दिन एक कर दिया। यदि वह इस साधारण नजर आते कार्य को न करते जाते तो आप हमारे पास राजा साहिब के साथ सम्बन्धित जानकारी दाँत कथाओं के रूप में होती। जिस में पता नहीं कितनी मनघड़ित कहानियां शामिल हो गई होती। उन के इस कार्य के लिए हम सारे उन के हमेशा ही रिणी हां। 'नूरी किरणा' लिखने के साथ वह एक साधारण मनुष्य से एक खोजी ऐतिहासिकार बने। जिन की लिखत राजा साहिब की संगत के लिए एक रौशनी का मुनारा है। एक दिन आएगा जब नूरी किरणां राजा साहिब जी के इतिहास का मील पत्थर बनेंगी। अन्त में मैं सारी संगत के चरणों में विनती करती हूँ कि इस जीवन साखी की बहुत प्रेम और श्रद्धा के साथ संभाल के पढ़े और रखें। इसकी पुर्न छिपाई और सुधाई में यदि कोई भूल हुई हो तो गुरू और संगत दोनों माफ कर देने के योग्य हैं। श्री नाभ कंवल राजा साहिब जी और सारी संगत के कोटि–कोटि धन्यावाद सहित।

–संगतां की दासरी

परमजीत कौर

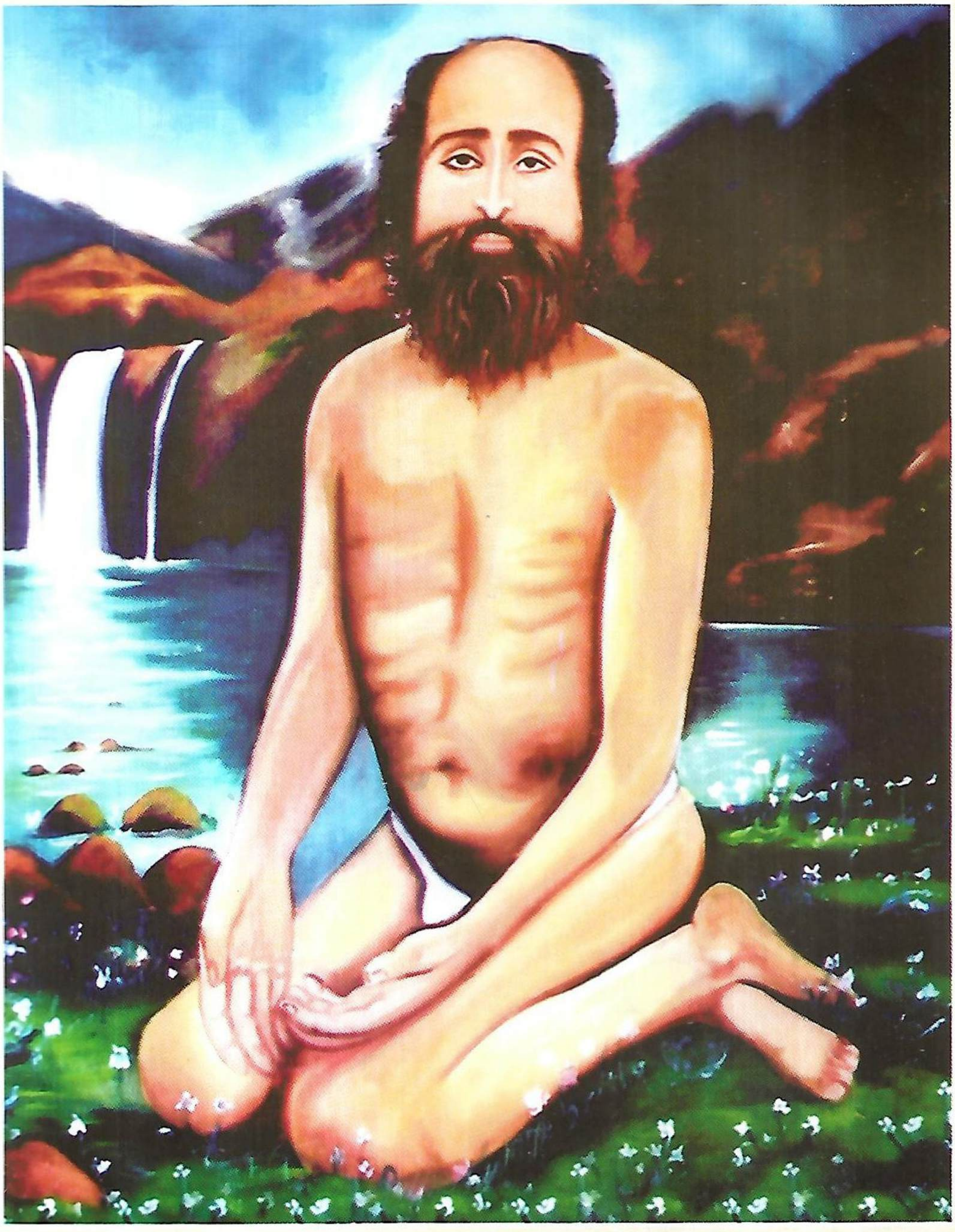

हजूर महाराज मस्त गुरू साहिब दास जी पटियाले वाले

मकबरा साई झण्डी पीर (कड़ियाणा)

भगवान दास गुरू मनिये कामल बलि फकी, रास्ते रास्ते जांवदा देवे छोड़ शरीर
यादगार धन्य धन्य बाबा जवाहर सिंहजी गाँव गोबिंदपुर

बीच हजूरी मरतबे रहते सुहबा साम।
सतिगुरू के गुरू औलिया हबीर चन्द जी नाम।।

समाध
हजूर लाला बली जी सरकार
(झिंगड़ां)

जन्म अस्थान हजूर
श्री नाभ कंवल राजा साहिब जी
(इनसैट) नानके घर हजूर
श्री नाभ कंवल राजा साहिब जी
गाँव बल्लोवाल

समाध मस्त गुरू बाबा साहिब दास जी मंगवाल (संगरूर)

पवित्र वैरागण लाला बली जी (झिंगड़ां)

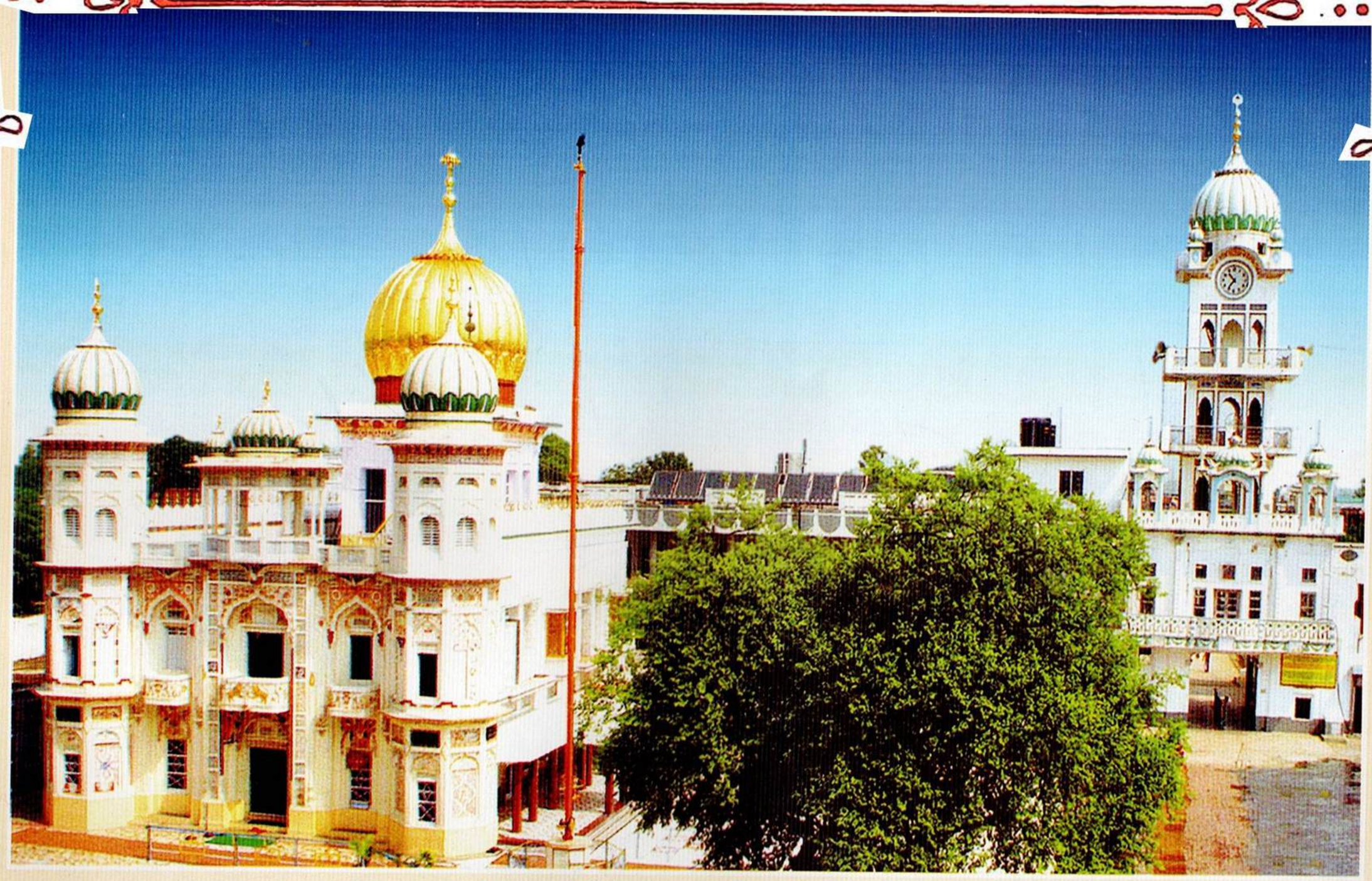

रोसाखाना श्री नाभ कंवल राजा साहिब जी, मजारा नौ आबाद

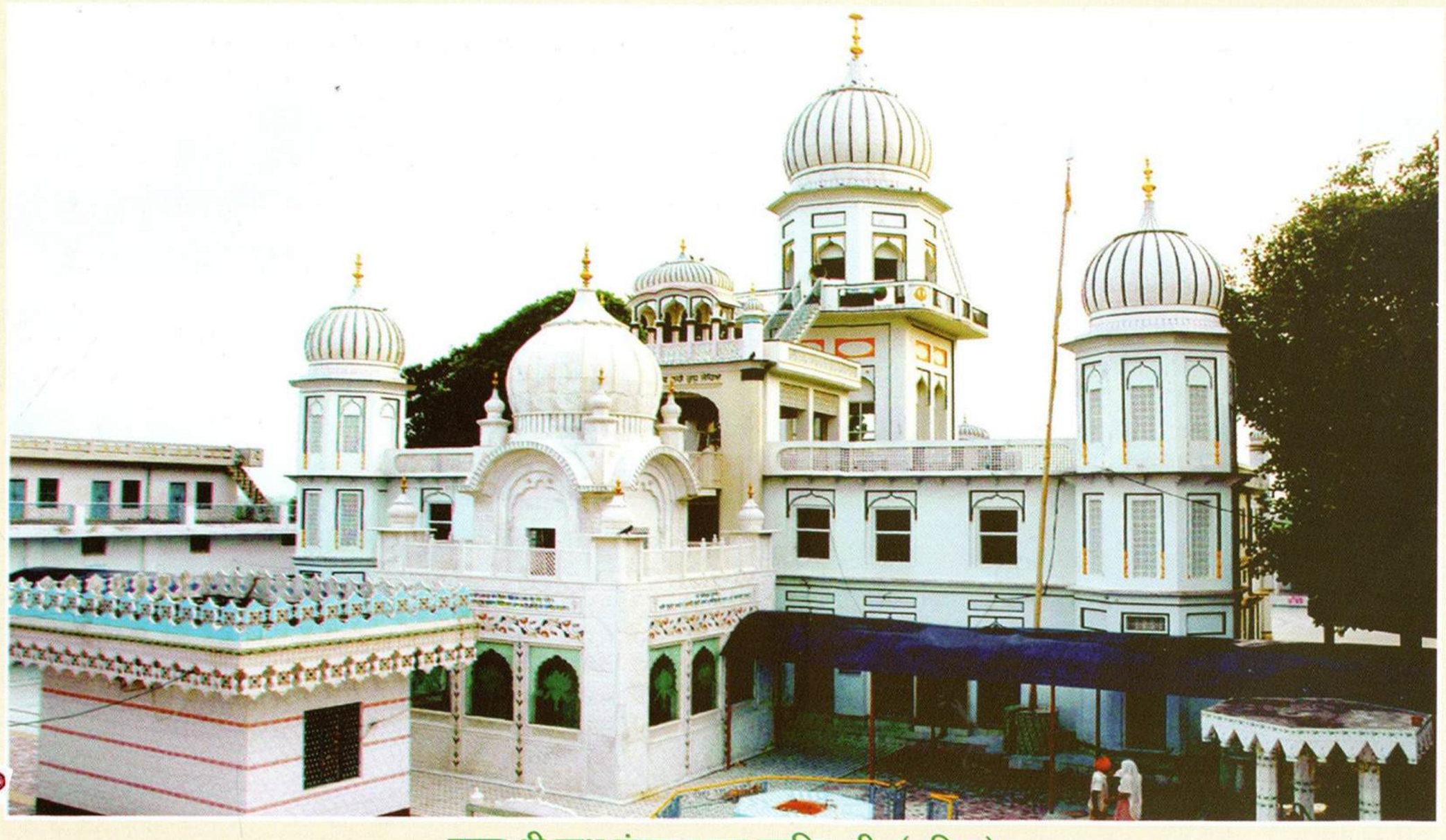

तख्त श्री नाभ कंवल राजा साहिब जी, (रहिपा)

तप अस्थान गुरूद्वारा श्री सरोवर साहिब (गुणाचोर)
जिसकी सेवा महाराजजी ने अपनी हाजरी में करवाई और वचन
किया कि उस स्थान पर स्नान करने से हर तरह के दुःख दूर होंगे।

पवित्र अस्थान रौली वाली खूही हेड़ियां

गुरूद्वारा
दु:ख निवारन साहिब
गांव झिंगड़ां
(इनसैट) मस्तगढ़ साहिब

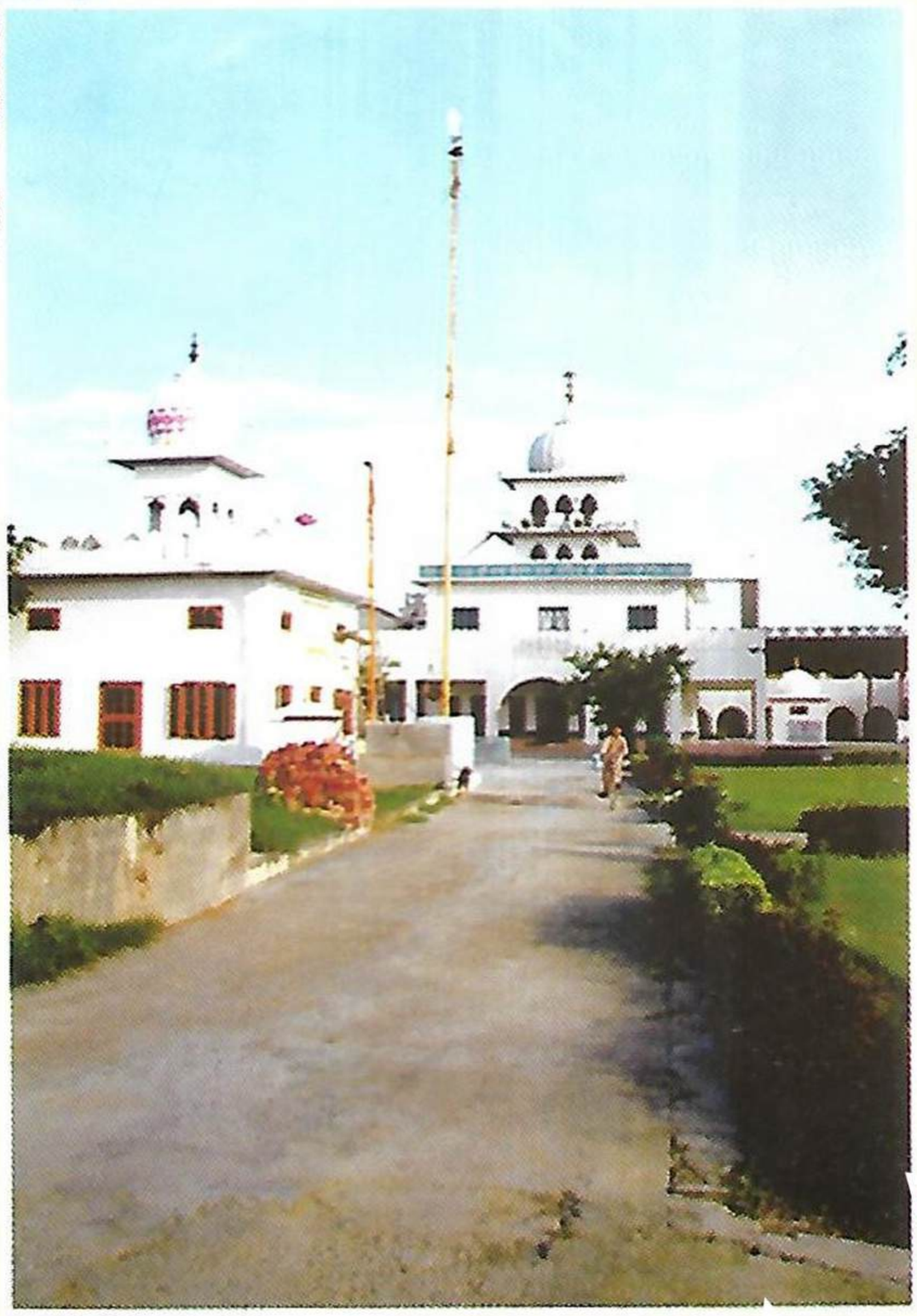

गुरुद्वारा मंजी साहिब
गाँव गोसलां

गुरुद्वारा बंगला साहिब गांव सुज्जों

यादगार श्री नाभ कंवल राजा साहिब, जद्दी गांव मन्नणहाना

मजार

बाबा मियां साहिब जी सरकार

(करनाणा)

तकिया

बाबा बूलण शाह जी

(रहिपा)

विरयाम सिंह, पंजाब सिंह का खूह (कुआं) मजारा नौ आबादा) यह इन्द्र को पुत्र (तरसेम सिंह) की बखशिश की। यह स्थान बारह तरेह साल रह के दुनियावी जीवों का उद्धार किया। साथ ही बेरी का वृक्ष नज़र आ रहा है, यहां इन द्र को सांप उठाने के लिए कहा था।

सच्च खण्ड धाम हजूर श्री नाभ कंवल राजा साहिब जी, मजारा नौ आबाद
(मिस्त्री करतार सिंह का घर)

अस्थान बाबा साहिब दयाल जी (दमदमा साहिब झिंगड़ां) बाबा जी इस स्थान पर महाराज जी के दर्शन करने के बाद बैठा करते थे। महाराज राजा साहिब का कुल्ला जो साथ ही था 'पहला अस्थान' में बैठा करते थे। जो साथ ही नज़र आ रहा है। बाबा जी बारे साबका सरपंच और पतवेंत लोगों के मुताबक कहा जाता है कि बाबा जी अपना सिर महाराज जी के चरणों से उतनी देर नहीं उठाते थे जब तक महाराज उठने के लिए कह न दें। साथ ही यह भी नितनेम था कि अपनी पगड़ी के कोने के साथ महाराज जी का जोड़ा साफ करा करते थे।

पवित्र अस्थान फत्तूआना साहिब, इनसैट उसारी अधीन और यतीम आश्रम, श्री नाभ कंवल राजा साहिब (बुर्जुग)

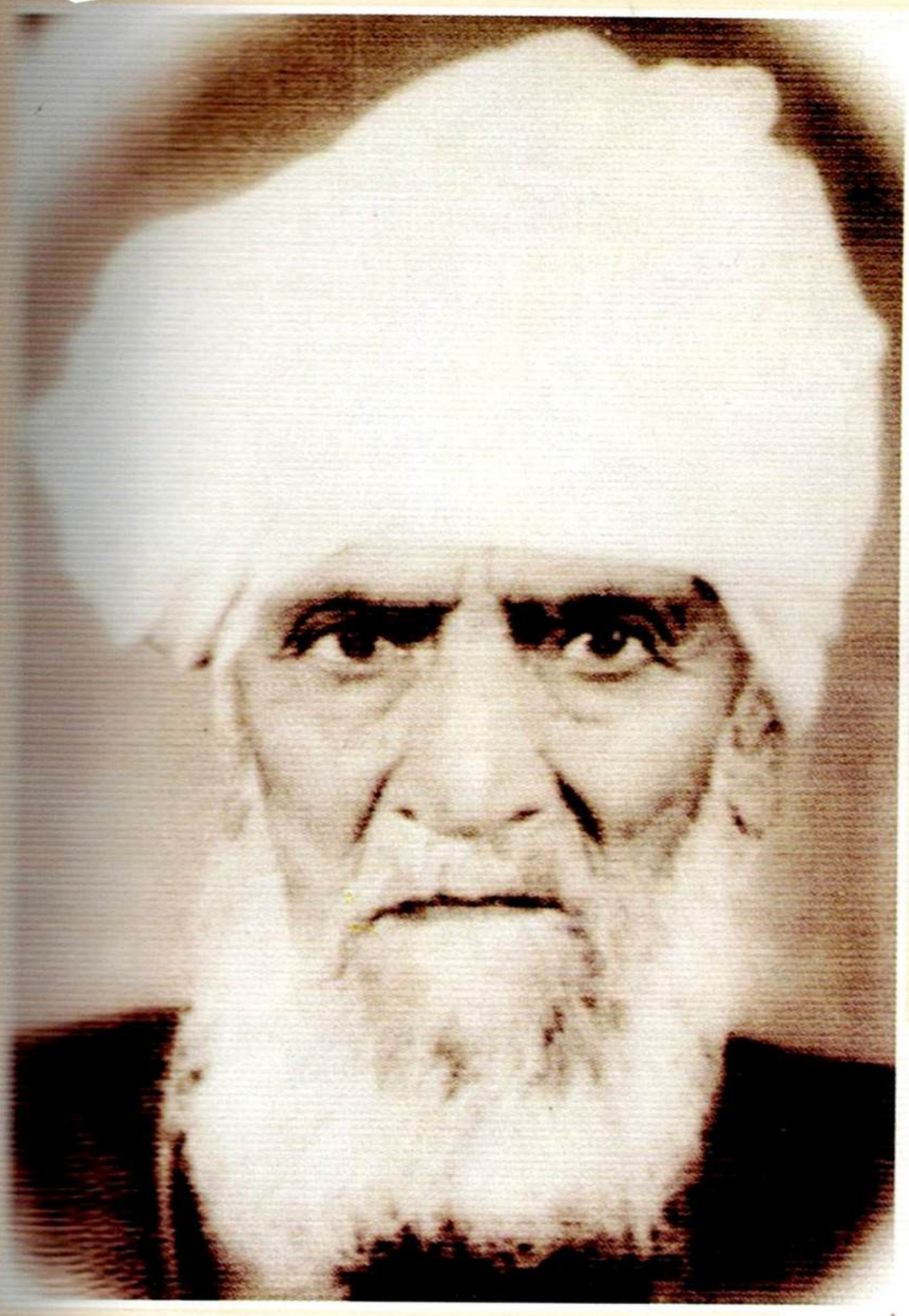

महंत पूर्ण दास जी

समाध महंत पूर्ण दास जी

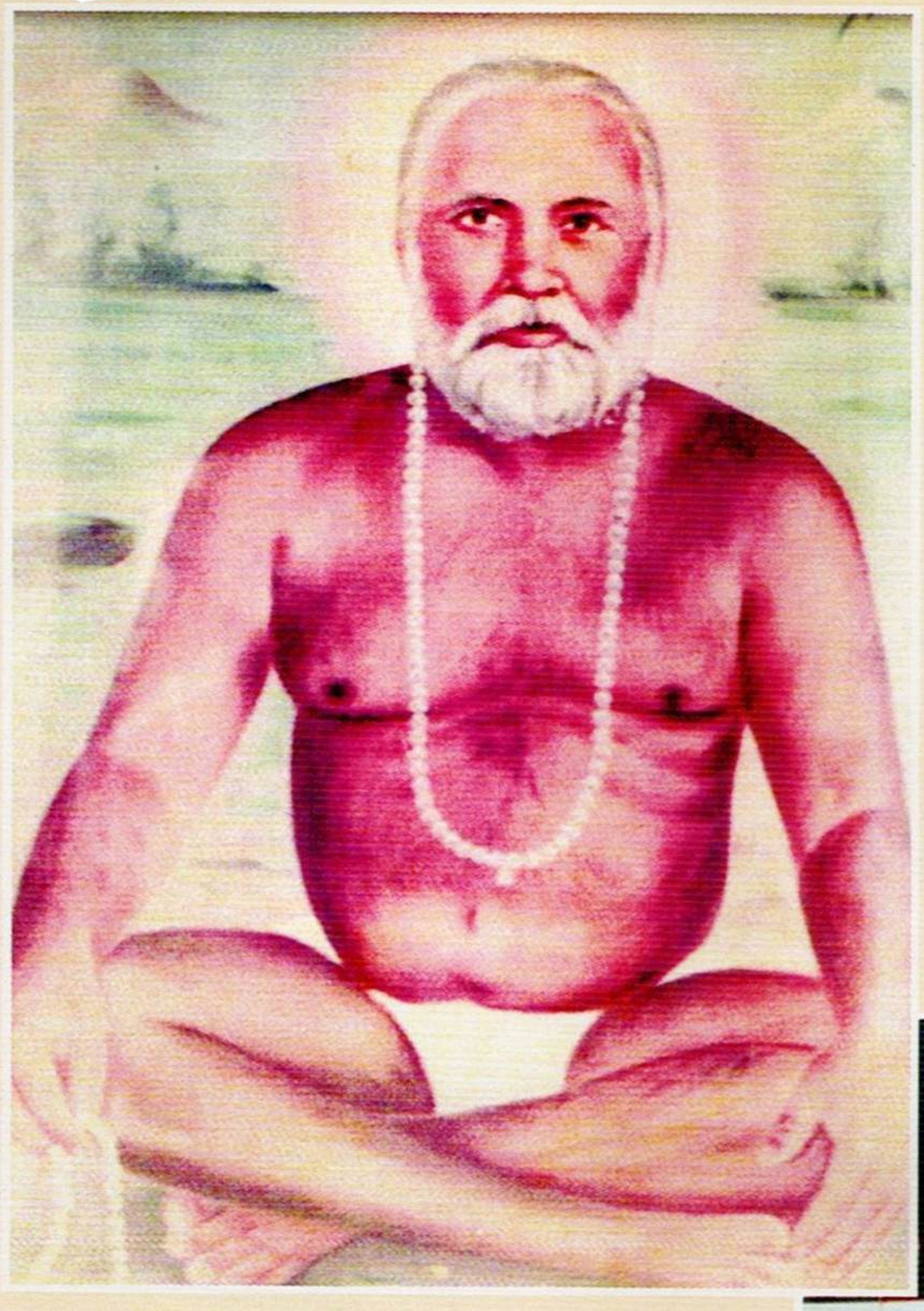

महाराज अवधूत साहिब जी

रसूलपुर (जगरावां)

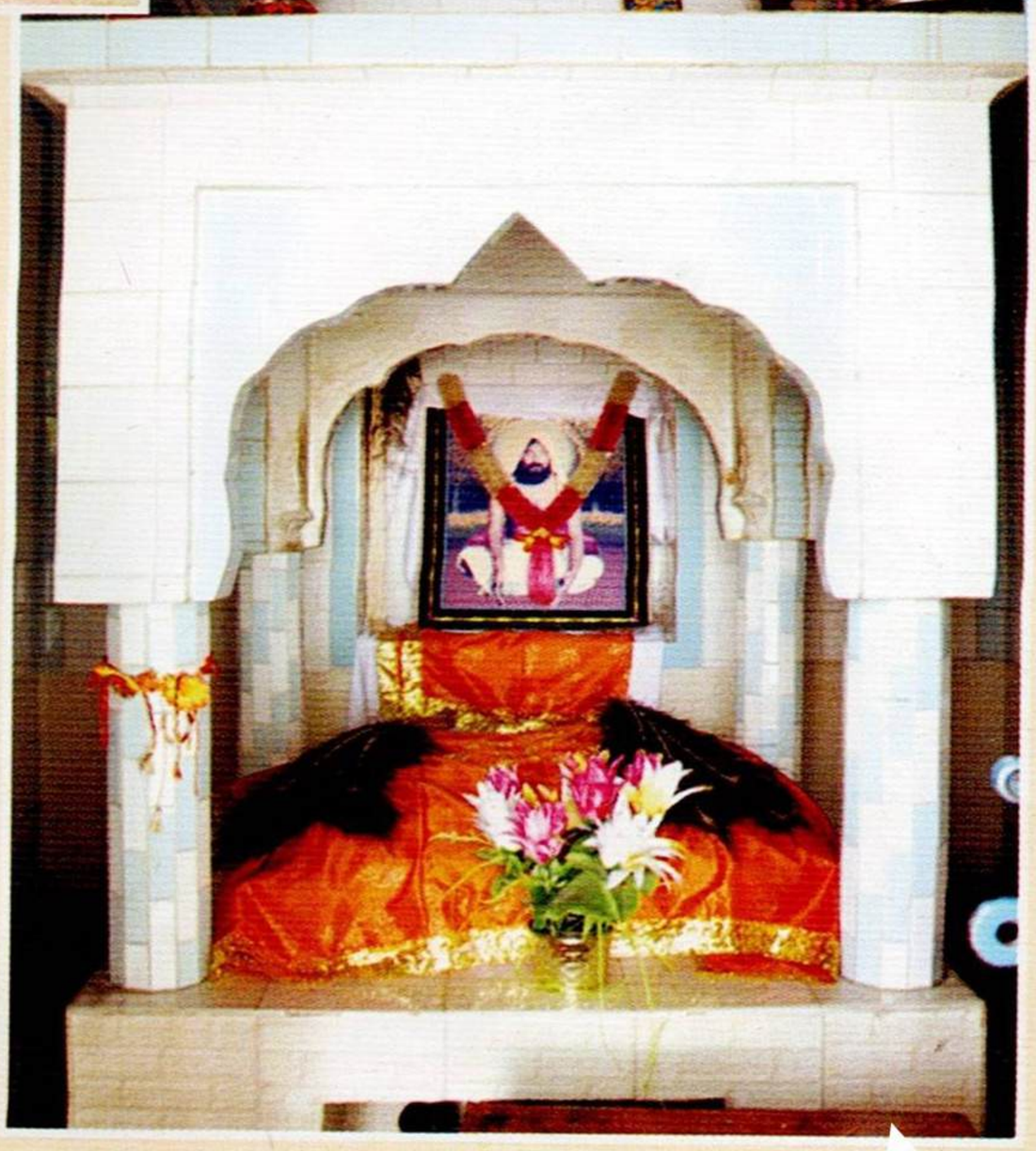

समाध

महाराज प्रीतम दास जी

(झिंगड़ां)

पवित्र अस्थान, महाराज जी का अपना घर (मजारा राजा सहिब)
(साथ ही बैठक भी नज़र आ रही है जिस में महाराज बिराजमान होते थे)
मौजूदा स. चैन सिंह, करतार सिंह, नत्था सिंह, माई जस्सी का घर)

पवित्र अस्थान
बाबा साहिब दयाल जी
(मजारा राजा साहिब जी) उस
अस्थान पर बाबा जी भजन–बन्दगी
के साथ अपने हाथों से
महाराज जी के लिए
सुच्चे तिल्ले का जोड़ा तैयार करते थे।

लेखक : स. गुरबख्श सिंह (रहिपा)

नूरी किरनां

जीवन लीला श्री नाभ कंवल राजा साहिब जी

महाराजा राजा सहिब जी के पड़दादा जी बाबा नौधा जी थे। नौधे के दो पुत्र थे। बड़े का नाम बाबा भोला और छोटे का नाम सीबो था। भोले का पुत्र बाबा मंगल दास जी और सीबो का पुत्र रला था। रले का पुत्र उमर चन्द और मंगल दास जी के घर कंवल का रूप नाभ कंवल राजा साहिब जी का जन्म हुआ। बाबा नौधा, गाँव मनन्नणहाने में नंबरदार था। एक सौ पच्चीस घुमां ज़मीन का मालिक था। काफी गाँवों में नौधे की चौधर का सिक्का चलता था। मंगल दास गाँव बल्लोआल, तहिसील बंगा ज़िला नवांशहर में नंबरदार खज़ाने की पुत्री माता साहिब देई से शादीशुदा हुए थे। शादी के बाद कई साल तक माता गंगा जी की तरह घर पुत्र ना हुआ पुत्रों बिना घरों के भाग अधूरे ही रहते हैं, जैसे खूह बिनां जूह बरानी, चन्द बिना रैण सुनी, फूल बिन तरवर सूना, नीर बिना सरोवर सूना, खुशबो बिन फूल सूना, ऐसे ही पुत्र बिना घर, मन्दिर, दौलतां, हवेलियां सूनियां होती हैं। जैसे राजा दशरथ (राम चंद्र जी के पिता) ने पुत्र प्राप्ति के लिए यज्ञ हवन किए थे, पत्रेछठी यज्ञ किया, प्रभु की भक्ति की, ऐसे ही बाबा मंगल दास जी, माता साहिब देई जी भी लगे साधू सन्तों की सेवा करने और यज्ञ हवन करने, प्रभू की भक्ति करने लगे। पुत्र प्राप्ति के लिए भक्ति करते–करते वो उच्च कोटि के साधू बन गए। भजन की ही मूर्ति बन गए। गुरू तेग बहादुर जी की तरह आँखों के कोने भी वैराग के पानी से ख़राब हो गए थे। कुछ नज़र भी कमज़ोर हो गई और आकाश वाणी हुई–बन्दगी मनजूर हुई, खुद भगवान जी आप के घर प्रगट होंगे और

ईक्कीस कुलों (पीढ़ियों) का उदार करेंगे। आपके भगवान संसार को सीधे रास्ते लाएगा। धर्म को सुरजीत करेगा तेरा भगवान नाम भी रोशन करेगा। पत्थरों, वृक्षों, पर्वतों नर, नारी गंधरभों, वन मानसों सब को निवाजेगा। पच्चीस साल ब्रह्म चर्ज की पालना करके वरिआम पुत्रका संकल्प किया। मन उसे भागों भरे दिन के सुपने लेने लगा। मन खुशी से डलकां मारने लगा। रोम–रोम गद–गद होने लगा। वो सुन्दर–सुन्दर सपने देख रहे थे। मन का झुकाव और भी दिन व दिन प्रभु भक्ति की तरफ बढ़ता जा रहा था। जिस खंड में परमात्मा का नूर प्रगट होना हो। उस खंड के वन पर्वत, पशू नर नारी सब मस्ती में झूम उठते हैं, जिस माता–पिता की गोद को भाग लगने हों, उस की क्या बात कहनी है? माता जी के रोम–रोम में प्रेम की झरनाहठें पड़ने लगीं। हर रोज देवतों के सुंदर–सुंदर सपने आ रहे थे। मन में बहुत सरूर रहने लगा। मन भक्ति में लीन रहने लगा। मन सत्य संतोख का पुंज बनता जा रहा था।

(साखी पहली)

साखी महाराज नाभ कंवल राजा साहिब जी के जन्म की शुरू हुई

गांव मन्नणहाना तहिसील गढ़शंकर ज़िला हुशियारपुर में पिता मंगल दास माता साहिब देवी जी की पवित्र कोख में से सवत ईसवी अठारां सौ बासठ (1862) सात फग्गन दिन रविवार रोहणी नछत्तर, सिंह, शिव जोग फग्गन सुदी (1 1) ग्यारह दली रात, तीन बज कर पच्चीस, मिनट, सतारां, सैकंड पर जन्म बल्लोआल नानके गाँव में हुआ।

आपि नरायण कला धारि जग महि परवरिओ।

जन्म के समय देव लोक में से देवतों ने फूलों की वर्षा की। मात

लोक की तरफ लाख–लाख सिजते किए। मंगलाचार किया। गंधरवों ने रास मंडल किया। खुशियों के गीत गाये। नीले–नीले आकाश की तरफ से सितारों ने डलकें मारीं।लाख–लाख वार सलामें की। सूखे बागों ने लागरें छोड़ी, सूखे दरिया बहने लगे। पौण पानी बागों में से फूलों के सिहरे गुंद कर सुन्दर प्रीतम जी के भेट किये। सच्चे प्रीतम जी से खुशियां प्राप्त कीं। छः ऋतुओं की सब से बड़ी ऋतु बसन्त ऋतु, केसरी बसन्ती सूट पहन कर हार श्रृंगार लगाये, जीवन में मस्त हुई, खेतों बन्ने, पर्वतों को हुस्न का रंग चढ़ाती हुई सुन्दर माही के गीत गाती हुई, सुन्दर–2 पीले फूलों के हार गूंथ कर गाँव बल्लोवाल प्रगट हुए नूर के गले पढ़ती हुई, खुशी से मसतानी हुई घूमती थी। मोर बोगों में पैल पा रहे थे। सब नर नारी के मन में खुशियों के जज़बात डलकें मारते थे। सब तरफ शीतलता फैली हुई थी।

घटा आई पर बन्न होरा रही धन्न–धन्न सारे तन प्रसन्नता लाती।।
मीठी मीठी वगे पौण बगुले अकाश भौण सौण की सिफत कोई नदी जाती
पड़ने लगी फुहार बूँद ननी दिलदार हुए हम हमवार नौर नार कुसलाती।।
वैहण बिसथार उपर भगवान दास नेहुवाली नदी नहीं पलक ठराती।।

सब के मन प्रभू की भक्ति में जुड़ गए थे। उमरी दाई का दिल और रोम रोम दर्शन करके निहाल हो गया। इस तरह का बालक तो हमने कभी नहीं था देखा। यह तो कोई खुदा का ही नूर पैदा हुआ है। इसके चेहरे जलाल और झलक अनोखी ही पड़ती है। सुन्दर भी बहुत है। मस्तक, नाक, खण्डे की धार जैसा, भुजाएं लम्बी, गोल–गोल उगलें लम्बी, नैण, नशीले, रोम, सुनहिरी, कुंडलदार, चरन कोमल गुलाम के फूलों जैसे, जाने सरूप का ही पुतला है। इस की छूह से ही मेरा सीना साफ हो गया है। शरीर फूलों जैसा हल्का लगता है। कोई

अनोखा ही सरूर आ रहा है। आँखें मिलती आ जा रही हैं। दिल करता है, देखी जाऊं। आँखें सबर नहीं करती। 'लू लू के मड्ड लाख लाख चश्मा मैं एक खोलूं एक कज्जा हूँ' वाला हाल उमरी दाई का हो रहा था। नंबरदार खज़ाने को दोहतरे की बधाई मिलने लगी। नाना खुशी में खीवा होई फिरता खुले दिल से गरीबों को लगा दान करने। पैसे वाले को पैसा दे मिशरी की बोरी खोल कर रख ली। खजाने का छोटा भाई हीरा, फकीरीया मरासी, चौकीदार लगे ढोल बजाने रै खुशियाँ मनाने। जब महाराज जी तेरह दिनों के हुए तों मन्नणहाने, सुनेहा, मिशरी भेजी। फकीरीया लेकर गया। बाबे भोले ने सुन कर बहुत खुशी मनाई। बहुत दान गरीब लोगों को दिया। 30 घुमांह ज़मीन गाँव कंगरौड की दान के तौर पर छोड़ दी। बड़ी सरकार की बधाई की राजे महाराजे वाली खुशी मनाई गई। पिता मंगल दास जी उन दिनों में गाँव खैड ही रहते थे। नानके भी खैड़ ही थे। मंगलदास साधू बन गए थे। जब महराज जी के जन्म का संदेशा मिला तो बहुत खुशी मनाई। इसी खुशी में खैड़ के पूर्व की तरफ ठुआणे के राह पर एक खूही पुन्न अर्थी लगाई चार पाँच कनाल जगह भी छोड़ी, जो खूही आज भी बाबा मंगलदास जी के नाम से बुलाई जाती है। एक चार खानों का कमरा भी है। पाँच–सात पौधे आमों के भी बीच लगे हुए हैं। लोग मानते और पूजते हैं। मंगलदास जी खूही लगवा कर गाँव बल्लोवाल ससुर घर आये। आ कर बालक के रूप में सुन्दर पुत्र का मुखड़ा देखा। बहुत देर बाद मन की कामना (इच्छा) प्रभू ने पूरी की। मन खुशी में फूला नहीं था समाता। दिल जान रोम–रोम खुशी से झूम उठा। सब लागी लोग लगे बधाई देने। फकीरीये चौकीदार ने पूछा 'बालक का क्या नाम रखा है? क्या किताब पर चढ़ाये? सभी घर वालों

ने सलाह करके गाँव ताहरपुर सरहाल से पण्डित श्री वेद प्रकाश बुलाया। पण्डित जी ने जन्म का समय पूछ कर जन्म कुंडली बनाई। गुहों का मेल किया। पत्तरी वाचने (देखने) से देखा कि बहुत अच्छे घर में गृह मेल खाते हैं। जन्म कुंडली बना कर पंडित जी कहने लगे। यह तो कोई परमात्मा का ही रूप इन्सान की सूरत में प्रगट हुआ है। इस के पीछे बहुत लोकाई लगी फिरेगी। इस पीछे संसार उधरेगा जिस का जस सारी दुनियां में होगा। यह तो गुरू पीर अवतार होगा। राजों का राजा होगा। मेरा जोतिश तो यही ही बता रहा है विष्णू भगवान ही जन्मधारी होकर आये हैं। नाम भी भगवान दास ही रखना बनता है।

रंग गोरा, नज़र तीखी, उंगलियां आगे से पतली गुट्ट मोड्डे, गोड्डे, गिट्टे, छाती सब अंग गोल बिना हड्डियों के। इस के शरीर के चिह्न जो हर सब अवतारों वाले ही हैं। रोम सोने जैसे सुनहिरी। सज्जे चरण में पद्म, हाथ में शंख चक्कर गधा, पदम के चिह्न हैं। इस सुन्दर से बालक के दर्शन करके मन शीतल हो गया है। इस के रंग ढंग सब अलग ही है। भगवान का रूप समझ कर नाम भगवान दास ही रख दिया। मंगल दास जी हुक्का सिगरट से बहुत नफरत करते थे। कुछ दिन ही बल्लोवाल ठहर कर चार दिनों के बाद गाँव खैड़ ही चले गये। मंगल दास घर काम काज सब छोड़ बैठे थे। संसार के रिश्ते मैले और झूठे समझ कर साध बिरती धारण कर ली। ज्यादातर खैड़ रहते। कभी मुकंदपुर, पूरन दास जी के पास धर्मशाला में रहते। एक कुटिया गाँव लोधीपुर बनवा कर कभी कभी रहते। मोरो मजारे भी कुछ समय रहते रहे। लोधीपुर वाली कुटिया तो (संताली) की झाड़ियों में छुपी है। माता साहिब देई घर गाँव बल्लोवाल पिता खज़ाने के पास रही। खज़ाने के भी एक ही पुत्री थी और कोई पुत्र नहीं था।

हीरे के भी सात लड़कियां ही थी पुत्र कोई भी नहीं था। माता साहिब देवी पिता जी की सेवा करती थी। दो वर्ष माता जी महाराज जी को लेकर मायके घर बल्लोवाल ही रही। बाद में मन्ननहाने चले गये। कभी कभी खैड़ भी चले जाते थे। मंगलदास जी भी खैड़ ही रहंते थे। कई लोग महाराज जी का जन्म भी गाँव खैड़ ही बताते थे। पूरी खोज करने के बाद पता लगा जन्म नानके घर गाँव बल्लोवाल ही हुआहै। मन्नणहाने कई सयानी बजुरग से पता किया, महराज जी के मासी के पुत्रगाँव ताहरपुर वाले बिशन सिंह ने भी बल्लोवाल का हीबताया। बल्लोवाल भी दो मातायें हैं जिन की आयु सौ वर्ष से भी ज्यादा है उन्होंने भी जन्म बल्लोवाल का ही बताया है। बोल भाई जी वाहिगुरू।।

(साखी दूसरी)

साखी रसूलपुर भूआ अत्तरी के पास जाने की शुरू हुई

जब महाराज जी की उमर पाँच वर्ष की हुई तो इनकी भूआ माई अत्तरी गाँव रसूलपुर महाराज जी को अपने साथ ले गई। माता अत्तरी के कोई पुत्री पुत्र नहीं था। इस करके ज्यादा ख्याल करती थी दूसरी तरफ मंगल दास जी उन दिनों लोधीपुर रहते थे। रसूलपुर के साथ ही गाँव मूसापुर प्राईमरी स्कूल था। जब महाराज पाँच वर्ष के हुए तो पढ़ने लगा दिया। करियाम का मौलवी मास्टर शाहदीन पढ़ाता था। उस आगे पढ़ने लगा दिया। बुद्धि बड़ी तीखण था। मौलवी शाहदीन हैरान था। इस तरह का बालक आगे कभी नहीं था देखा। एक वार ही सबक बताने से याद कर लेता जैसे पहले ही चौदह विद्या पढ़ कर आया हो। थोड़े ही समय में सारे इल्म पढ़ लिये– फारसी, इंगलिश, उर्दू पंजाबी हिन्दी नागरी, अर्बी। अपने रचे ग्रंथ

भगवान बलास की रचना तो पंजाबी में की है, बोलते सारी ज़ुबानें थे। उर्दू बहुत बोलते थे। तेरह वर्ष की आयु तक आप जी ने पढ़ाई संपूर्ण की। आपजी के जमाती रसूलपुर के नंबरदार किशन चन्द जी थे। एक वार कहते छुट्टियों के दिन थे, बरसात का मौसम था। गाँव में इन दिनों रासधारिये आ गये। महाराज जी को साथ ले जाने के लिए बहुत कहने लगे क्योंकि सुन्दर बहुत थे इस करके पीछा न छोड़न। एक दिन साथ तोर ही लिए। नवांशहर चले गये। नवांशहर से जा कर किशन चन्द नंबरदार उनको वापिस ले आ। वापिस आ कर राजा साहिब गाँव खैड़ ही चले गए। कभी गाँव मन्नणहाने भी चले जाया करतेथे। ज्यादा खैड़ ही रहने लगे। एक वर्ष कई बच्चों को, बुर्जुग लोगों को भी पढ़ाते रहे। आप पढ़ाने लग जाना। कुर्सी लेकर एक हाथ में लंबी सोटी लेकर बैठ जाना। बिशन सिंह को महाराजा जी ने उड़ा ऐड़ा और पंजाबी लिखनी पढ़नी सिखाई थी। बिशन सिंह जी की माई महाराज के साथ बहुत प्रेम करती थी। इनके घर ही ज्यादा रहा करते थे। बिशन सिंह ने ही महाराज जी के जन्म का समय पूरा पूरा बताया था। बिशन सिंह भी महाराज जी का हम उमर था। बिशन सिंह की माता ने सारी बात बिशन सिंह को बताई थी। जिस वक्त दास बिशन सिंह को मिला था, उस समय बिशन सिंह की आयु पचासी वर्ष की थी। इस समय भी बिशन जीवत और राज़ी खुशी है। महाराज जी पर बुहत श्रद्धा रखता है। उन दिनों महाराज जी की चाली, चलना फिरना साधुओं जैसा था। लिबास कोई पक्का नहीं था धारण किया। कुछ नानक शाही मत उदासी संप्रदा बाबा मंगल दास जी थे। इस करके आप भी इसे भेस से सबंध रखते थे। बस्तर जैसा भी दिल करे पहनते थे। लोग बाबा भगवान जी कहकर बुलाते थे, लगते भी बाबा जी ही थे। रंग गोरा, सुनहरी बावरियां, चाल उतावली, शरीर

पतला। आप जी की मिठ्ठी बोली संसार पर जादू का प्रभाव पा रही थी। एक दिन छोटी सी घोड़ी पता नहीं कहाँ से ले आये, गले में लाल मनकों की माला पहनी हुई, भगवें रंग का चोला गले में पहना हुआ था। बिशन सिंह की माता देख कर कहने लगी, ''यह क्या हालत बनाई हुई है? गले में से माला तोड़ दी। आप एक वर्ष इसी ही इलाके में रहें। एक दिन गाँव दाते की जूह में जा बैठे, चार दिन रेत के ढेर पर बैठे रहे, न कुछ खाया न कुछ पिया। चार दिन बैठे हो गये पशु चराने वाले लड़के देखते हैं, इस साध को पता नहीं भूख प्यास लगती ही नहीं? धूप में भी टिब्बों में बैठे रहते थे। दाते का लड़का उमर चन्द बाकी बागियों को कहने लगा, ''चलो। आज राजा साहिब जी से पूछते हैं कि आप कुछ खाते–पीते क्यों नहीं ? बिना आहार ही बैठे हो।'' महाराज जी कहते, ''हमें भोजन जब दिल चाहे, अर्शों से आ जाता है।'' चन्द कहने लगा, ''जी। आज हमें भी छकावो, हमारा कड़ाह प्रसाद छकने को मन करता है।'' महाराज जी उठे एक खेत में छप्पड़ी के किनारे जा खड़े हुए। वो छप्पड़ी चीकड़ से भरी हुई थी, उस चीकड़ से भरी हुई छप्पड़ी की तरफ नज़र की तो वो चीकड़ कड़ाह प्रसाद का रूप धारण कर गया। सभी बागियों ने जी भर कर खाया। जैसे गुरू नानक देव जी ने गाँव तलवंडी बालकों को मिट्टी के लड्डू बना कर खुआए। इन दिनों मन्नणहाने के लोगों को बहुत कारगर चमत्कार दिखाए। इक दिन एक बर्जुग पशु चारता खुशहालपुर, पुराने बाग में क्या देखता है कि एक शेर खड़ा है। सिंह को देख कर डर गया, डर कर एक वृक्ष पर चढ़ने लगा। महाराज जी ने असल रूप में हो कर आवाज़ दी 'डरना नहीं।' जब बुर्जुग आदमी ने पीछे मुड़ कर देखा तो राजा साहिब जी खड़े थे। *बोलो भाई वाहिगुरू।*

साखी मन्नणहाने के लोगों से हुई

एक दिन महाराज जी गाँव खैड़ के पूर्व की तरफ एक छप्पड़ (टोबे) के किनारे पर कई दिन निरंकार से रूह जोड़ी समाधी लगा कर बैठे रहे। उस समय आप जी के मुखड़े पर बहुत जलाल था, रूहानी नूर डलकें मार रहे सूर्य को मात पा रहा था। गाँव मन्नणहाने के बहुत सारे लोग इकट्ठे हो कर आप जी के पास आए बेनती की, ''भोला जी स्वर्गवास हो गए हैं, आप चल कर अपने हाथों से संस्कार करो। मंगल दास जी तो साधू रूप में रहते हैं आप नंबरदारी संभालो।'' बहुत कोशिश की पर आप जी ने कोई उत्तर न दिया। एक बर्जुग ने बड़ी निर्मता से प्रार्थना की। उस के कहने पर आप जी बोले, ''बाबा जी, बाबे भोले का संस्कार करो, हम ने क्या करनी हैं नंबरदारियों? हमारा रिश्ता तो करतार से है। संसार के सभी रिश्ते झूठे हैं।''

- *नाहि फकीर का देश रहा अरु न ही फकीर की है रही बस्ती ।।ਫ਼ 1 ।।*
- *यह जो दुनियां सिहर मेला दसतगीरी नाही ।।*
- *कूड़ू राजा कूड़ू पर्जा कूड़ सभ संसार ।।*

बाबे भोले के छोटे भाई सिबो और लोगों को महाराज जी ने यह उपदेश देकर भेज दिया। सिबो कुछ वर्ष सर्वराही करता रहा, सिबो के पीछे उसका पुत्र, रला नंबरदारी करता रहा। रला बहुत वार आप जी के चरणों प्रार्थना करता रहा, ''सच्चे पातशाहो। या तो नंबरदारी छोड़ने के बारे में बता दो या फिर चल कर आप नंबरदारी संभालो।'' महाराज इन बातों की तरफ ध्यान ही नहीं थे देते। एक वार बाबे मंग्गू के कहने

पर बताने के लिए तैयार हो पड़े उठ कर फिर बैठ गए। गए नहीं। रले के मरने के बाद रले का पुत्र उमर चन्द ज़ो अब भी नंबरदार है, उसकी शादी के दिन थे, और आदमियों को साथ लेकर महाराज जी के चरणों में प्रार्थना की, ''जी, मेरी शादी है आप भी चलो, ''मजारे वाले नत्था सिंह से भी कहलवाया, महाराज कहते, ''नत्थू। आज हम शादी में जाऐंगे, कल को हमें अफसोस पर भी जाना पड़ेगा। आगे हमें, घर के किसी भी काम के लिए नहीं कहना। 'ऐसे ही संगतों को उपदेश देते हुए धर्म की किरत करना बाँट कर खाना, आए साधू को खिला कर बाद में आप खाना, चोरी यारी बदी, विरोध झूठ बोलना, निंदा करना बुरा बताया। सच्च धर्मशील, संजम, संतोश धारण करने का और नाम जपने का उपदेश, दे कर संगतों को निहाल किया। दो वर्ष रह कर बहुत सारे कौतक इन गाँवों में दिखाए। आप जी की बहुत कीर्ती बढ़ गई लोग आप पर परमात्मा जैसी श्रद्धा रखने लगे। बोलो भाई वाहिगुरू।

साखी मन्नणहाने से बल्लोवाल जाने की

नाभ कंवल राजा साहिब जी दो वर्ष इस इलाके में रह कर एक दिन गाँव बल्लोवाल नाने खज़ाने का अंत समय नज़दीक आया जान कर गाँव से पश्चिम की तरफ से एक पीपल के थड़े पर आ बैठे। गाँव के लोगों की पता चला, बाबा भगवान दास, खज़ाने का दोहता, साधू रूप होकर आया है। चौदह वर्ष का साधू, इतना सजता जानो रूप का ही चन्द चढ़ा हुआ है। मुखड़े की जोति चानणी की तरह चमक मारती थी।

चाँद का भी चाँद वो सच्च का आनन्द है
पसंद दिलबन्द जो बुलन्द हम जाने।''

गाँव में खुशी का छनकाटा छा गया, जैसे मथरा में कृष्ण

भगवान जी के जाने पर हुआ था। गोबिंद राए के पटने में प्रगट होन पर खुशी हुई थी। छिप की तरह माई, भाई, बाल, बुर्जुग सुन्दर प्रीतम की तरफ भागे आना जैसे काहन की बंसरी धुन सुन कर गोकल के नर नारी वन की ओर भाग जाते। भँवरे फूलों की बेड़ी नाव पर लिपट जाते हैं। चकोर चन्द की रिश्मों पर खींचा जाता है इसी तरह बाबा जी की सुनहरी बाबरियों के करिश्में प्रेमियों को खींच रहे थे। मामे मामियां खुशी में नाचती घूम रही थीं। जामे में नहीं थी समातीं। महाराज जी सब को दूर से नमस्कार करने के लिए हुक्म करते। खज़ाने का छोटा भाई हीरा आप जी के चरणों में आ कर बेनती करने लगा, ''सच्चे पातशाह। नंबरदार बहुत याद कर रहा है, घर चलो, नंबरदार पलंग से उठ नहीं सकता, कई दिनों से आप को याद कर रहा है।'' महाराज जी कहने लगे, ''नाना जी को मिलने के लिए ही तो आए हैं।'' प्रसाद की परात भरी हुई थी, हीरे को हुकम किया, संगत में बाँट दें। पतासों का प्रसाद बाँट दिया गया। दूध मलाई और सरदाई की गढ़वी हीरे ने बेनती की ''जी आप भी कुछ छको।'' हीरे के घर वाली सरदाई की गढ़वी लाई हुई थी, आप जी ने सरदाई छकी और दूध फकीरीये चौकीदार को पिला दी। संगत को छुट्टी दे कर आप जी ने उठ कर पलंग पर पड़े नाने खज़ाने को जा कर दर्शन दिया। खज़ाने का आखरी समय था। नाना जी लेटे हुए ही हाथ बाँधकर सलाम किया, ध्यान चरणों की ओर लगाया। महाराज जी ने हाथ पकड़े पवित्र हाथों से हाथों का स्पर्श हुआ। पता नहीं क्या प्रेम का टीका लगाया? सावन के बादलों की तरह आँखों ने आँसुओं की झड़ी लगा दी। सीना वैराग से साफ़ हो गया। मन शुद्ध, सारे संकल्प खत्म हो गए। सामने खड़े डलकें मार रहे रूहानी नूर के दर्शन पा कर करतार से लिव

जा जुड़ी। मन शांत था। एक बार आँखे खोल कर सामने बैठे हुसन की खान की ओर देखा। अब कोई मन में वासना न रही, लेखे सब खत्म हो गए। अब गर्भ जूनी का सिर लेखा नहीं रहा,

'' गुरू नानक जिन सुना पेखा से फिर गरभासि ना परिआरे।।''

सिर पर हाथ धरा और खज़ाना आँखे मीटता मीटता गिर गया। नाना जी का उदार करके आप गाँव के लहंदे पासे एक रेत के थड़े पर जा बैठे। खज़ाने का संस्कार किया गया। लोग गेहूँ की बिजाई कर रहे थे। बैठे बैठे दिन छिपने पर जा रहा था। रात काला सूट पा कर छूकती हुई अपनी चारपाई विछा कर बैठ गई। चंद्रमा समेर की चोटी को छूहता हुआ टह–टह करता अर्शों से फर्शों पर रौशनी का छींटा देता फसलों को अमृत दान कर रहा था। पानी के डल की तरह पृथ्वी पर रिश्मों का फर्श छाया हुआ था। आकाश निरमल था, तरेल के मोती बन बन कर फसलों के गल का हार बन रहे थे। कपास और सण के फूल खिड़े हुए थे, ऐसी शोभा भरी रात में एक पतले से शरीर का तपस्वी समाधि लगाई करतार से लिव लीन हो कर बैठा रहा। रात बीत गई, अपनी डिऊटी देकर लहंदी की ओर खाना हो गई।

सुबह सार उठ कर स्नान किया। हीरा और मिस्तरी ने दहीं का घरड़ बना कर महराजे को छकाया। हीरे ने बेनती की, ''सच्चे पातशाह कुछ दिन यहां ही (रुको) ठहरो।'' आप जी ने कहा, हमें करतार की ओर से बहुत डिऊटियां लगी हुई हैं। हमारे सिर संसार का उदार करना, सीधे रास्ते लगाना, भले के काम करवाने, यही करतार की ओर से डिऊटी है। यह कुछ कह कर आप जी गाँव रहिपे बाबे बूलणशाह जी की जगह पर जा बैठे। बोलो भाई वाहिगुरू।

साखी रहिपे से रेत टिब्बे जाने की चली

बल्लोवाल से उठकर महाराज जी रहिपे बूलणशाह के स्थान पर जा बैठे। रहिपे के लोग कुछ नहीं जानते कि यह साधू छोटी आयु का किस देश, किस गाँव का है? सारा दिन लोग घूमते–फिरते देखते रहे। इस को छोटी आयु में धरुह की तरह वैराग्य लगा है। सारा दिन वो समाधि लगा कर बैठे रहे। न कुछ खाया और न कुछ पिया। गाँव में बाते होने लगीं। बाबे बूलणशाह के स्थान पर एक साधू बैठे हैं, किसी ने बाबे सरमुख सिंह को जा कर बता दिया। सरमुख सिंह पहले से ही संत सेवक थे। सरमुख सिंह के पिता बिशन सिंह जी बहुत दानी भगत थे। आये गए साधु संत की सेवा करना छः महीने के बाद यज्ञ करना। इसे करके सरमुख सिंह जी को सतिसंग का रंग चढ़ा हुआ था। सरमुख सिंह जी ने महाराज जी को विनती की "क्या छकोगे?" कहते, ''सरमुख। जो कुछ तुम्हारी इच्छा हो। हमें तुम्हारी सब बात माननी पड़ेगी।'' सरमुख सिंह महाराज को अपने तुम्हारी साथ अपनी हवेली ले गया। भोजन किया, रात सरमुख सिंह जी के पास ही रहे हरी सिंह मीहां सिंह, छज्जू झिउर, वीर सिंह रामदासीआ सारी रात सफ पर बैठे रहे। सुबह उठ कर स्नान किया। आगे गाँव मेरोमजारे चले गये। उन दिनों में मंगल दास जी मजारे धर्मशाला में रहते थे। दो महीने आप जी इसी गाँव ही रहे। कभी कभी दरिया की तरफ चले जाना, एक दिन रत्ते टिबे चले गये। रत्ता टिब्बा गाँव लसाड़े से पूर्व की तरफ दो मील और दरिया सतलुज के किनारे पर एक कुटिया है जिस में दो साधु रहते थे। एक नारायण दास अच्छी पहुँच वाला करामाती फ़कीर रहता था।

इस ने नाभ कंवलराजा साहिब जी के दर्शन किया। सीना प्रेम की रंगों ने रंगा गया। खड़े हो कर विनती की, ''हे महांपुरुषों। यहां हमारे पास ही रहा करो। महाराज मौज दिल किसी की बंदश में न रहने वाले महाबली शेर रूप आगे निकल गया। नारायण दास इतनी वरकत वाला था। कहते थे एक दिन दरिया सतलुज का पानी बहुत चढ़ा। इस कुटिया आगे एक पीपल का पेड़ था पीपल की जड़ें पानी ने खोद दीं। पीपल एक तरफ को गिरने लगा कुछ उल्टा हुआ ही था। नरायण दास ने हाथ खड़े कर के मुंह से कहा, 'हमारे बैठने की तो शर्म करो। बस इतना वचन कहने के साथ दरिया पीछेहट कर बहने लगा, पीपल वहां ही खलो गया। आज तक वो टेढ़ा ही खड़ा है। कुछ देर इस इलाके में रह कर मंगल दास जी राजा साहिब जी को साथ ले कर गाँव लोधीपुर चले गये।

बोलो भाई वाहिगुरू जी।

साखी लोधीपुर जाने की चली

पिता मंगल दास जी को साथ लेकर लोधीपुर कुटिया में चले गए। कुछ देर यहाँ रहते हुए हुई, माघ के दिन थे। गाँव महरमपुर गरचे संत गंगा दास जी का डेरा था। इस डेरे में माघ महीने की पुण्य को साधारण पाठ का भोग पाया जाता था। इस संत समागम में ईलाके के साधू बुलाये जाते थे। मंगल दास जी के साथ महाराज जी भी इस डेरे में आए। इस छोटे से साधू को बड़ी डुंगाई से तक रहे थे। इनका चलना, फिरना, बोलना, चलना, पड़ना दुनिया को हैरान कर रहा था। ऐसे झलके सुन्दर प्रीयतम जी की नशे के जाम भर–भर पिला रही थी। धर्म अर्थ, काम मोह चारे पदार्थों की झोलियां

भर रहीं थी। इन की मीठी:मीठी रस भिन्नी रसीली सुर ने सरोतों के रोम रोम को कील दिया। जैसे दोधे की स्त्री गुरू नानक जी की सरोद सुन कर मस्त हो गई थी। ऐसे ही संगत राजा साहिब जी की बाणी सुन कर मस्त हो गई थी। अब श्रोते और कुछ सुनना नहीं चाहते थे। महाराज जी के दर्शनों के अभिलाशी बन गए। जब गंगा दास जी के डेरे चरण पड़े तो डेरे को चार चाँद लग गए। रौनकों का सितारा चढ़ते सूर्य की तरह चमक उठा सभी तरफ से अत्यंत पदार्थ आने लगे। गंगा दास जी ने मंगल दास जी के चरण पकड़ कर बेनती की, ''सच्चे पातशाहो। बाबा भगवान दास जी को हमारे डेरे में ही रहने दो। संगत बहुत चाहती है। गंगादास जी की बेनती मान कर मंगलदास जी ने महाराज जी को महरमपुर ही रहने का हुकम किया। गंगादास ने अपने चेलों को कहा'' बाबा जी का सतिकार करा करो, इनके चरणों में माया बहुत आयेगी। यह बहुत बली हैं, संख चक्कर, ग़दा, पदम के चिन्ह हैं. यह अवतारों के चिन्ह हैं। मंगल दास जी लोदीपुर कुटिया में चले गए।

बोलो भाई वाहिगुरु।

साखी झिंगड़ां को जाने की चली : भाई जवाहर सिंह का मिलाप

भाई बूटा सिंह गाँव झिंगडा से गंगा दास जी के गुर भाई थी। बंटा सिंह का पुत्र वरियाम सिंह संत गंगा दास जी का अच्छा प्रेमी था। बूटा सिंह ने महिरमपुर डेरे जा कर बेनती की। हमारे गाँव झिगडां जमात समेत दर्शन दो। 25 फग्गण दिन के चड़ावे से सारी जमात को झंगडा को खाना होने की आज्ञा दी, पूरा जलौअ था। दो ऊठ, साथ छ घोड़े थे। एक गड्डा भी था। जमात के चलने वक्त रण सिंह को फूक लाई

संखों की घुण घार ने आकाश गूंजवां दिया। घोड़ों का हिणक हिणकाहट दूर–2 तक सुनाई देती थी। चलती चलती जमात गाँव झिंगड़ा दिन के चार बजे पहुँच गई। गाँव के पूर्व की तरफ डेरे का इंतजाम किया हुआ था। गांव की संगत माई भाई जिस जिस तरह किसी बरांत का स्वागत करने के लिए जाते हैं इसी तरह बर्जुग आदमियों ने आगे बढ़ कर स्वागत किया। घोड़ों की लगामें पकड़ी। संत मंडली को उतारा दिया। पानी गर्म करके संतों के चरण धोये। आसन लगा दिये। बाकी सेवादारों ने पशुओं की सेवा भी खूब की। रात का भंडारा बूटा सिंह ने किया। फिर और संगत ने भंडारे लगाये। दूसरे दिन साधारण पाठ भी आरम्भ कर दिया। कथा का प्रोग्राम भी शुरू किया।

इस जमात के बीच एक साधू है जिस की उमर कोई लगभग 15 साल की है। कमर की तड़ागी को पीतल की संगली भी पाई हुई है। गोरा रंग नशीले नयन, नाक खण्डे की धार, मस्तक ऊँचा, रूप बहुत सुन्दर देखने वालों की आँखों और रोम–रोम में प्रेम की झरनाहटें पड़ने लग पड़ती थीं।

- *सुंन्दर सरूप का अनूप सोहना देख मुखड़े की जोत चंद सूर्य शरमांदे।*
- *गुरू के पाँच सीधे खींच ते सकंजे, लाल ताज सीस माथे जोत दिखे भगवान जी*

बाकी और साधुओं की जमात से इस छोटे से बालक साधू की चाल अलग ही है। भुजाएं लम्बी, चरण कोमल, मस्तक उस चौदवीं के चाँद जैसा अमृत की भरी रिश्में दुनियां को सीतलता बख्श रही है। सीस पर सुनहरी रंग का सुन्दर जड़ा छतर की तरह ही सजता है। नशीले नयन जिस तरफ एक वार रहमत भरी नज़रों से देख लेते हैं बिन पीए मतवाले हो जाते हैं। हालांकि लोग आप

जी को इस तरह समझने लगे जैसे कि झिंगड़ा गांव का कोई मालिक ही आ गया हो। सब के दिल अन्दर से यही आवाज़ें आने लगी कि यह तो कोई हमारा पिछला मेली ही आ गया है। सभी का दिल आप जी के आगे झुक गया। ज़बरदस्ती ही आप जी के साथ दोस्ती पड़ती जा रही थी। सब के अन्दर पूर्व संचित कर्मों की सधरें जाग पड़ीं। उधर भाई जवाहर सिंह जी भी इस सुनहरी समय का इन्तज़ार कर रहे थे कि कब मेरे खज़ानों का मालिक आए तो भण्डारे के मालिक को भण्डारा सौंप कर मैं आज़ाद होऊं। जब जमात दूसरे दिन डेरे से बाहर लंगर छकने निकली। आगे गंगा दास जी के साथ–साथ दाएं तरफ महंत और एक छोटा सा साधू पीतल का तड़ागा लगाई नाम के नशे से मस्त सी चाल से चला जाता, दुनियां को जादू की तरह ज़ेर करी जाता। भाई जी ने जब देखा लाल नजरी पड़ा।

- *पारस उपर नां मोहर अमोलक हैं संत दा नशान कोई ऊपर नां लाल दे।।*
- *जाण नहीं सकदा गुवाब लोक गुण ताईं पारखू पछाण लैण मैहरम जो हाल दे।।*

भोग के बाद जब जमात डेरे की तरफ चली तो तीखी और सुन्दर नुहार वाले छोटे से साधू को भाई जवाहर सिंह जी ने पकड़ लिया। अपने आसन पर ले गया। बुक्कल में लेकर गद्दी पर जा बिढ़ाया। कहा यह सब मलकीयतें तेरी ही हैं। इस की संभाल करो। पता नहीं उस गलवकड़ी से क्या जादू किया, रोम–रोम अन्दर प्यार का जाग लग गया। दिल अब बिछोड़ा नहीं सहारता, तन मन रोम–रोम प्रेम के रंग में रंगा गया।

एक घड़ी न मिलते ता कलयुग होता

एक मिनट का बिछोड़ा युगों के सामान बीतने लगा। जवाहर सिंह जी ने एक दो बचन कहे, ''बावा जी! आप इन गीदड़ रंगे के

साथ क्या करना है? आप इनका साथ छोड़ कर हमारे पास रहो।'' जब पता लगा संत गंगा दास जी को कि बावा जीको तो भाई जवाहर जी ले गया हैं, झटपट उठ कर भाई जी के पास गए। भाई जी ने आते ही साधु के पैर उठा दिए। कहने लगे, ''महंत जी। यह शेर तेरे कहां काबू में आ गया।'' यह तो बली है, बड़े भारी बेलों का मालिक है, इसको तो देवते सलाम करेंगे, यह तेरे रखने का नहीं है। देखना इस को छोटा सा बालक न समझना इस से बर्तन न साफ़ करवाना, इससे अपनी सेवा न करवाना, नहीं मारा जायेगा, शेर बकरियों के इज्जड़ों में नहीं रहते, अकेले ही वनों के मालिक होते हैं, यह तो हमारे दुआबे की धरती को भाग लगाएगा। पंजाब के कोने–कोने का उधार करना है। वलैतों में भी इस का नाम उच्चा होगा। दरियों का पानी पंजाब देश के भरे हरे बागों की रौनकों, पशु पक्षी नर–नारी सुन्दर प्रीतम, महांबली, अवतारी, राजाओं के राजे के दर्शन के प्यासे हैं।'' जवाहर सिंह जी बचन सुन कर महंत बहुत बड़ा उदास हो गया। कहने लगा ''भाई जी। मेरी जमात का रंग इस के साथ ही है। मेरे रिज़क न छीनो। बाहर गाँवों में हमारी मानता इनके ही आसरे है।'' महंत के ज्यादा कहने पर भाई जी ने बाबा जी को साथ जाने की आज्ञा दे दी। महंत गंगा दास जी खुश हो गया कुछ दिन झिंगड़ी रह कर साधारण पाठ का भोग पा कर झिंगड़ा से झटपट आगे की तैयारी कर ली। गंगा दास महंत का दिल बहुत धड़क–धड़क करता था। कहीं फिर न बाबा जी भाई जवाहर सिंह पास चले जाएं। भोग लगाया यज्ञ हवन किया, सारा दिन लंगर चलता रहता। गरीब लोग असीसें देते जातें। उधर जमात को तैयारी करने का हुकम किया। साधू पेट पर हाथ फेरते हुए बोरिया बिस्तरा बाँध कर तैयार होरहे थे। गाँव वालों ने संगत ने इकट्ठा होकर जमातको

सलामी दी, जमात ने संगत से छुट्टी मांगी। नरसिंह को फूक लगाई। महंत ने घोड़े को सीधा पच्छों की तरफ करके एड़ी लगा दी। संगत को आर्शीवाद देकर रवाना हो गए।

बोलो भाई वाहिगुरू।

जमात का और गाँवों में जाना

झिंगड़ा से उठ कर जमात (संत मंडली) मुकंदपुर, जगतपुर में से होती हुई सरहाल काज़ियां में से होते हुए मजारे डेरे में पहुँच गए। भरो मजारे भी संत गंगा दास जी का एक डेरा था। वहाँ कुछ दिन ठहर कर आगे बड़े रुड़के चले गए। जब एक महीना हुआ इस की इलाके में रहते हुए एक दिन पतले कद का तपस्वी जिस का हुसन का भरा मुख डलकें मारता संसार का उदार कर रहा है। एक महीने से कुछ दिन ज्यादा हुए थे पर अभी तक भी भाई जवाहर सिंह की जफ्फी मिलने का गुड़ा स्वागत, गुड़े प्यार भरे झोके मिलते थे। कभी–कभी ऐसी खींच पड़ती थीं दिल करता था। उठकर उसे संत के दर्शन जा करूँ। जब चाली दिन हो गए। भाई जी के पास से महाराज जी को गए हुए एक दिन भाई जवाहर सिंह जी ढाबी लाला जी के दरबार के आगे समाधि लगाए बैठे थे, उस देश के नज़ारे देख रहे थे। अनोखी झलकें पड़ रही हैं।

बेगमपुरा सहर को नाउ।।

उस गैबी महल के अंदर प्रकाश रूप जोति बिराजमान थी। जिस जोति का प्रकाश सारी सृष्टि के रोम–रोम में प्रकाश दे रहा, जब जीवों को जीवन का दान दे रहा है। सदा सलायत रहने वाले देश

के मालिक की सिफत इन्सान की समझ से बाहर है। करोड़ों सूरज, करोड़ों (कोटि) बिजलियों की चमक से भी प्रकाश ज्यादा, जिस की झलक इन्सान के नेत्र नहीं सहन कर सकते इतनी तेज़ वाली रिश्में जिस को छूह जाती हैं, वो दुनिया को भूल जाते हैं।

- *पिआ लश्कारा दिल लै गया हमारा*
  हुन दास भगवान गीत उसदे ही गावां मैं।।
- *दिल ते इमान करा जान कुर्बान*
  उहो हुसन की खान जो प्राण हूँ से प्यारी है।।२४८।।

उस जोति से जुड़े बैठे भाई जवाहर सिंह जी को अकाशवाणी हुई, ''मेरे प्यारे भगत। तेरे पास जिस को मैं बहुत भंडारे दे कर संसार का उदार करने का हुक्म देकर भेजा था। उस भंडारे की संभाल करने वाला आ रहा है।'' जब भाई जवाहर सिंह को उस सच्ची दरगाह की तरफ से हुक्म हुआ, सच्च के आनंद की तरफ से एक फुरमान हुआ। बाबा जी ने झट अपने खज़ानों के मालिक को ढूँड लिया।

तार इलम न वहां पहुँच सकती जहां प्रेम सनेहा जा देता।
प्रेम नहर लाता पत्थरों में से बाग शीरी के को पानी लगा देता।
वाइरलैस प्रेम की बुरी होती उड़ते पक्षियों को फाही पा देता
पड़ती ज़रूरत नहीं वहाँ पैसों की जहां प्रेम आ कर डेरा लग देता
विष्णू बंधा प्रेम के जाल अंदर नाम देवकी छन्न बंधा देता
कृष्ण बंधा प्रेम के जाल अन्दर, पैर आप सुदामे के धो देता।
नहीं देखता रंग और रूप सोहना, बेर भीलणी के राम खा लेता।
नहीं जानता माल पूरियां को रोटी कोधरे की नानक खा लेता।
उच नीचवाली बाँद घाट ना हीं अंबरों के गल मुका देता।
नहीं जानता राजे रानियां को अलूणा साग बिदर का खा लेता।

भाई जवाहर सिंह जी के प्रेम के राजा साहिब जी को अपने ही रंग में रंग लिया। प्रेम न ऐसी खींच पाई कि राजा साहिब जी को अपनी कोई सुध–बुध न रही जैसे कबीर जी फरमाते हैं:–

कबीर सतिगुरू सूरमे बाहिया बानु तु एकु।।
लागत ही भुए गिर परिया परा करेजे छेक।।

आसन बिछा हुआ ही छोड़ के ऐसे भागे जैसे भौरा फूलों पर, प्रवाना शमा पर, आशिक माशूक की तरफ भाग जाता हो। जिस प्यार का धूना धुखते को एक महीने से कुछ दिन ज्यादा हो गए थे जिस की जफ्पी (के मिलने) का गूड़ा (बहुत ज्यादा) प्यारा आज भी उन्होंने महसूस होता था। आज वो दुख रही धूणी ने किसी दूर बैठे ही भांबड बाल दिये। बेचैनी कर दी। न नींद रही, न किसी से बात करने को दिल करता, खाना–पीना, भूल गया। लम्बे लम्बे स्वास आ रहे थे। तारों की छाया नाम के नशे में झूमते जैसे मारुथलों को चीरती हुई सस्सी, बेले की तरफ हीर भागी जाती, फरियाद नहर निकाल कर पहाड़ की ओर बहुत तेज़ गति से महाराज जी किसी महापुरुष के खींचे हुए जा रहे हैं। गांव झिंगड़ी बैठे भाई जी को जा सलाम किया। सवैया उचारन किया सतिगुरू की सिफत में

हौं प्रनाम करूँ गुर को गुर बाझ न मानत औरन को।
गुर दाता भईओ जग अंतर है गुर दान दीओ मन सौरित को।
छब देवत हैं सभ ही सुर को, उर चाहत है गुर जौरन को।।
दास भगवान जहि पांव धरे गुर सीस नमा तह ठौरन को।।

आप जी ने इन शब्दों से उस्तत की। भाई जवाहर सिंह जी बहुत प्रसन्न हुए, कहने लगे आओ मेरे लाल वरां के दाते मुकता भुगता के

मालिक आओ। उस इलाही दरबार का हुकम हुआ सुनो। उस गैबी महंत से जो आकाशवाणी हुई सब कह सुनाई। जब सोहने प्रीतम जी वाला सुनेहा मिला आप ने बड़ी बुलंद आवाज़ से यह उचारन किया।

प्रीतम प्यारे ईशारे जो न्यारे न्यारे,
जदों दे निहारे होय रहे बलहारे हां।।
कैसी दिआं मैं नसानी नही बिच दो जहानी
ऐसी सूरत लासानी देख हुए बनजारे हां।
खेल है खिआली चाल ओस दी निराली
असीं जतों दी है भाली लैंदे तदों दे नज़ारे हां।।
रिहा नहीं गम्म पिआ दम्म बिच दम्म।
आए दास भगवान होए रहे मतवारे हां।। भ. बि. 258।।

पीर को उदाब उठ करीए सताब
जिन इस्क दे बाब दा हिसाब सिखलाया है।।
पीर ने पलाए प्याला कीआ मतवाला
हमें हुआ है उजाला आला ऐसा बतलाया है।।
पई लसक अजैब गैब गैबल हो रहे
गैब दरजा आवैब ऐसा पीर दिखलाया है।
पीर कामल को रिदे धार बन्दना है बारि बारि
दास भगवान पीर साद की समाया है।।208।।

आया गुर की हौं सांम दण्डौत परनाम
ऐसे नाम नाभी निज रूप गुर हूँ से पाया है।
दान दीआ है अतोल जेहदा मोल है
अमोल मोल बोल से अबोल बोल गुर ने लखाया है।।

गुर प्रताप गए सभ बिरलांप पाप पाए के
अजाप जाप जापको जगाया है।।
गुर कामल को रिदे पार बन्दना है बार–बार
दास भगवान गुर सादकी समाया है।।
(बाणी राजा साहिब जी की भगवान बिलास।। 207।।)

दस कबित निरंकार गुरू की उस्तत में उचारन कीए जब गुर कामिल का मिलाप हुआ। सारे कार्ज सुधर गए। तीने ताप आपिआं–वियापिआं रोग सोग काम क्रोध, लोभ मोह हंकार सभ नष्ट हो गये। कोटि सूर्य के समान अंदर रौशनी हो गई। गुरू ने अंदर ही हाट पटण बाज़ार दिखा दिये।

निरमल जोत जगी घट भीतर, दास भगवान है दर्शन पाय।।

महाराज जी ने भाई जवाहर सिंह को गुरू रूप मन के नमस्कार की। उस्तत में बहुत बाणी उचारन की।

उपमां अपार कैसे करां मैं उचार महमां गुर की अपार परमात्मा से परे है।

भाई जी ने कण्ठ के साथ लगा कर थापी दी। ढाब किनारे बैठ जाने का हुकुम किया। छे महीने महाराज जी लाला जी के समाधि दाब किनारे रहे बड़ी घोर तपस्या की। गर्मी के दिन निकल गए। हाड़ बीते जाने के बाद सावन में बारिशें शुरू हो गईं। वनस्पति हुस्न के बस्तर पहनी घूमती है फसलें सां सां करती हैं। बारिश पड़ कर बंद हो चुकी है। सब तरफ खुशियां ही खुशियां नाच रही हैं। मोर पपीहे बोलते हैं, मेंढक शब्द गा रहे हैं। सूर्य डूबने लगा लिशकारे मारता है, पहाड़ की ओर सतरंगी पींघ पड़ी हुई है, जानवर टिक कर बैठे है, सब तरफ चुप्प पसरी हुई थी। लोग घूक सो रहे हैं।

रात निर्मल, आकाश तारों से डलकें मरता सजता है। ऐसी शोभा भरी रात में दरिया ठाठें मारते हैं। वो पतले से शरीर का तपस्वी गाँव हेड़ियां की ओर एक ऊँचे टिब्बे पर चढ़ कर बैठा है।

भन्नी रैनडिये चामकनि तारे। जागहि संत जना मेरे राम प्यारे।।

सावन की झडियों की बारिश सब ऊपर ही पड़ते रहे, सतिगुरू के हुकम के बिन उठे नहीं। उस दिन भाई जी को दिन के शुरू होते ही इलहाम हुआ। अमानत वाले की अमानत दे देनी थी। इस अमानत में बहुत कीमती कीमती चीजें हैं। अमोलक वस्तुओं के भण्डारे हैं। पण्ड खुली तो ''नानक नदरी नदरी निहालु।'' तीनों लोकों का राज, सप्त दीप, नौं खण्डों का राज, मुक्ता भुगता, धर्म, अर्थ, काम, मोख, रिधियां सधियां, हीरे मोति, लाल जवाहर, पन्नों के और राम नाम के भरे भण्डार थे। दुनियां को नाम जपने, सीधे रास्ते। पशू, पक्षियों, सभ नर–नारियों का उदार करना, धर्म को सुरजीत करना। इस पुंजी की पण्ड खोल कर केसरी रंग के अक्षरों वाली दरगाही पत्र खोल कर रख दी। इस अमोलक और अतुल भरे कोठे की चाबियां भाई जवाहर सिंह जी ने महाराज नाभ कंवल राजा साहिब के हाथ दे केर कहा, ''बस मैं सुरखरू हो गया हूँ। अमानत वाले ने अमानत संभाल ली है,'' ''तख्त ऊपर सो बहै जो तख्ते लायक होई।'' उस परमात्मा के हुकम को आप जी ने बड़ी राजधानी के आर्डर हुई बखशिश को खुले और फराख दिल से झोली डाल लिया। जीवों का उदार करना, नाम जपाना, दान करना, धर्म करना, स्नान, करना, धर्म बढ़ाना, भूली हुई रयत को परमात्मा का रास्ता बताना भले कर्म करने, धर्म की किरत करनी, बाँट कर छकना, दसबन्द निकालना,

आय अतिथि की सेवा करनी, देश सेवा करनी, बुरे कामों से रोकना, जुल्मी बदी विरोधी बुरे कर्मों से जीवों को बचाना, यह आप जी का उपदेश था। इसे ही ढाब के बैठ कर आप जी ने जीवों के उदार के लिए कल्याण रूपी किनारे बाणी भगवान बलास ग्रंथ की रचना की। जिस में बहुत गूढ़े ज्ञान की रौशनी पाई। रौचिक, भयानक, यथारथिक, वचन उचारे। आप जी लिखते हैं:–

झिंगडां की जूह विच ढाब दे कनारे पर सूखन इह सार हैं नदान कहे मौज दिल।।
दुऐत को उठाय के अदुति के मकान पर जात पात भेख नां बनावट है तिल।।
सरब सुआंग विखे खेलदा नरेस होए भरम उठाय निरपक्ष दरवेस मिल।।
अमल कमाएं जेहड़े कहे भगवान दास आवे नां नदान नेड़े आफत अजिल।।32।।

महाराज जी कहते हैं जब पूरे गुरू की शरण के लिए सारे भर्मों का नाश हो गया दुएत का पर्दा दूर हो गया। अदुती के मकान पर जा पहुँचे, जहां कोई भैख, जात–पात का विस्तार नहीं है। वहां कोई बनावट की वस्तु नहीं है। गुरू का दर्शन होने से ऐसे अमल कमाए, जिन से मौत का भी डर न रहा। महाराज जी ढाब के किनारे लाला जी के दरबार में जब कभी मौज में आए बाहर घूम फिर कर सवईए कबित रहिकले सीहरफीयां के रूप में वाणी उचारते।

बोलो भाई जी वाहिगुरू।।

आगे साखी ईशर सिंह के वाड़े में जाने की चली

ढाब किनारे रहते पातशाह जी को जब छ, सात महीने हुए तो भाई जी ने ईशर सिंह की हवेली एक कोठड़ी अलग ही थी, उस में महाराज जी का आसन लगा दिया। बाबा माने की, भाई, सूबा सिंह की डयूटी सेवा की लगा दी। सरदाई का सारा समान खण्ड बदाम पलंग

के नीचे रख दिया। महाराज जी के नाम की खबरें दूर–दूर हो गईं। लोग बातें करते हैं, गाँव झिंगड़ी एक साधू है जिस का नूर सारी दुनियां से अलग ही नज़र आता है। गाँव मजारे से पहले ही मंगू जी लाला जी की सेवा करते थे और भी आदमी महाराज जी के प्रेमी बन गए। गाँव मूसापुर के भी काफी लोग जब महाराज जी पढ़ते थे उस समय के जानने वाले थे सुनंदर सिंह, नरैण सिंह, बसंत सिंह, गुणेशा घुमार, गाँव रसूलपुर का करम सिंह, कालू मरासी, गाँव भरो मजारे से सुन्दर सिंह और बाबू, गाँव खानखाना से गुरदित्ता सिंह, गाँव गोसलां से मंगल राम लोहार, मुनशा सिंह, गांव रहिपा से सुरमुख सिंह, हरी सिंह, मीहां सिंह, छज्जू झीउर, बीर सिंह, गाँव झिंगड़ां से हरनाम सिंह ,माना, सूबा ईशर सिंह, ईन्दर सिंह मोती सिंह इन गाँवों में मुख्य सेवक थे। सारे पहले–पहले झिंगड़ी जाने लगे। मूला, जुआला, मजारे से। महाराज जी उन दिनों में स्फैद लट्ठे की गिलती मार कर रखते थे, पैरों में जोड़ा भी पहनते थे। साहिब दयाल मजारे का सुन्दर जोड़ा तैयार करता था, सुच्चे तिल्ले की कड़ाई करता था। एक गैंडे की सोटी भी महाराज जी रखने लग पड़े। राजे महाराजाओं की तरह आप जी ने रोअब से बात करनी, चलना फिरना शहनशाहों वाला आप जी चलते थे। गाँव के लोग सामने हाथ जोड़ रास्ता छोड़ कर खड़े हो जाते थे। भाई जी गाँव के लोगों को कहते थे, इस महांपुरुष की सेवा करो। मान भओ रखा करो यह बली है इस के पीछे संसार लगा फिरता है, माया इस की दासी है, पीछे लगी घूमेगी। जहाँ भी इनके चरण पड़ते हैं, धरती को भाग लग जाते हैं। हमारे गाँव को देशों में प्रसिद्ध करेगा, इसका दर्शन गंगा पराग के समान है। पशु–पक्षी, पत्थर मानसा, भूतों, वृक्षों वनों पर्वतों किनरों, गन्धरबां का उदार करना है। करतार का ही रूप आदमी की सूरत में आया है।

बैंत :–

साहिब दिआल जैसे वैरागियों के,
बेड़े भवजलों पार थे लगाई जाते।
दातें पुत्रों की बखश कर औतरों को,
कोई उजड़े घर वसाई जाते।
जो शरन आता उस को कण्ठ लगावन,
दुख, रोग, वियोग मिटाई जाते,
हजारा सिंह जैसे कई अन्धों के,
दुबारा फिर चिराग जगाई जाते,
दर्शन दास जैसे कई साधुओं को,
मस्ती नाम की पकड़ चढ़ाई जाते।
ढाबीं बैठ कर ज्ञान का बाल (जगा) दिया,
रौशन सारे संसार कराई जाते।
कई सूखे कूएँ को हरा किया,
दुबारा भाग अनोखड़े लगाई जाते।
पड़ गई धूम थी सारे जहान अन्दर,
कोई अनोखा ही रंग चढ़ाई जाते।
मुख से माँगी मुरादें पा देते ने,
भर कर झोलियां घरों को जाई जाते।
आ कर गीतों के कलाकार सोहने,
सोहने प्रीतम को गीत सुनाई जाते।
दूर–दूर से हैं संगतें आती ने,
दर्शन सोहने प्रीतम का पाई जाते।
लोग सुख सुखन झट होए पूरी,
आ कर कड़ाह प्रसादि चढ़ाई जाते।

दूध दहीं मक्खन के ले जा कर पेड़े,
सोहने माही के सीस लगाई जाते।
जो शरन आय पड़ ठण्ड जाए,
जन्म मरन के दुःख मिटाई जाते।

आगे साखी लाला हमीर चन्द जी की चली

लाला हमीर चन्द के जन्म की कहानी का इस तरह पता लगा है। इनका गाँव फतियाबाद ज़िला अमृतसर था, यह जात के खतरी थे।यह अपनी छोटी अवस्था में अपने स्कूल में पढ़ाई करते थे। इन्होंने दसवीं की परीक्षा देनी थी, पेपर होने से पहले सारे विद्यार्थी लड़के फतियाबाद में इकट्ठे हो कर एक फकीर के पास चले गए। वो फकीरअच्छी पहुँच वाला था। त्रिकाल दर्शी, ईशर कोटी थे। वो मस्त की शरनीं जा कर सभी लड़कों ने बेनती की। 'बताओ बाबा जी, हम पास हो जाएंगें?'' उस दिन जोति निगाह वाले फकीर ने सभी विद्यार्थी लड़कों की ओर देखा, और कहा हमीरा पास हो जाएगा। परीक्षा हो गई। नतीजा आया तो हमीर चन्द फेल। हमीर चन्द जी फेल होने पर मस्तों के पास फिर आ कर विनती की, ''संत जी! आपने तो मुझे पास कहा था मैं तो बुरी तरह फेल हुआ।'' फिर साधू बोले, ''नहीं तू पास है।'' हमीर चन्द ने फिर बेनती की, सच्चे पातशाह जी। पूरी बात बताओ कहाँ पास कर रहे हो?'' मस्त जी कहते, ''हमीरिया! तेरी नाम रूपी पढ़ाई बहुत हो चुकी है, अगर मेहनत करेगा तो पास हो जाएंगा। हमीर चन्द जी कहते है ''बताओ मैं मेहनत कैसे करूँ?'' मस्त ने बताया कि, ''तेरी मिसल साईं झण्डी वाले के पास है। उस की कबर सतलुज दरिया के किनारे पर है, वहां चल कर मेहनत कर। तेरी वस्तु मिल जाएगी।'' उन मस्त जी साईं झण्डी वाले के पास

हमीर चन्द को भेज दिया हमीर चन्द जी को बस्ता उल्टा कर के मां–बाप, सके सम्बन्धी, बहन–भाई और सभी रिश्तेदार छोड़ कर दुआबे की तरफ रवानगी के लिए। फिलौर आ कर सतलुज दरिया किस तरफ चलता है, पता कर के दरिया का किनारा आ पकड़ा। सीधा पूर्व की तरफ चल पड़ा कुछ पता नहीं लगता, उरार पार मण्ड ही मण्ड नज़र आ रहा है। दिल बड़े डिक्के डोले खाता है। विश्वास नहीं होता। झाड़ियों में से गुज़रता हुआ गाँव कंडिआने यार की झौपड़ी के पास पहुँच ही गया, जा कर क्या देखता है एक दरिया के पश्चिम की तरफ कबर है। चार फुट ऊँची चारे पासे चार दीवार बनी हुई है। मण्ड काही से भरा छां–छां करता है सूअर घूर–घूर करते घूमते हैं। बड़ी शांत जगह है। पूर्व की तरफ एक छोटा सा नगर है दिल घबरा रहा कुछ समझ नहीं लगती, कुछ नज़र नहीं आता। हां, दिल डोलता है, धीरज नहीं पकड़ता। मैं यहां किस को आवाज़ दूं तथा किस को बुलाऊँ? किस की मिन्नत करूँ कोई सुनता होगा? दरिया हुक्म में चलता देख कर कुछ विश्वास मन में आ भी रहा है जो गाँव और कबर को सिजता करके पीछे हट कर चलता था। यह नज़ारा देख कर साईं की कबर के आगे पल्लू खिलार पर बैठ ही गया। सारी रात ताड़ी लाई बैठ कर गुज़ार दी। इस गाँव के वासी सारे गुज्जर ही थे। जिस में दो घर लुहारों के थे, दूसरी सुबह फकीर साईं झण्डीवाले को सलाम करने आया। बैठे हमीर चन्द को देखा सेवा के लिए बेनती की। हमीर चन्द ने कहा कि "प्रसादा। गुरमुख हमने छकना है।" कुछ समय हमीर चन्द जी प्रसादा तरखाणों के घर से छकते रहे। रात दिन कबर के आगे भगती करने लगे। फिर मन अन्दर विचार आया कि पर्शादा मेहनत करके ही छकना चाहिए, खत्तरी के घर का शरीर था, टोकरी उठानी भी मुश्किल थी। पास के गाँवों में काफी इनकी तपस्या की खबर फैल गई। लोग काफी श्रद्धा रखने लगे। वाक्फीयत के कारण

मोरो वाले सरदारों के साथ भी आना जाना बन गया। इन सरदारों के मुनशी बनने का काम करने लगे। इन सरदारों के उस समय कचहरी लगती थी। चार पाँच साल इसी तरह इनके काम करते रहे, दिन को इन का काम करना और रात को दरिया में खड़े रहना। फकीर तरखाण ने एक वैरागन बना दी जिस के सहारे और सारी रात खड़े ही गुजार देते थे। इस समय वो वैरागन झिंगड़ी मिस्तरी चैरन सिंह के घर पड़ी है, दो वलों वाली लकड़ी है, 6 साल बीत गए अभी कुछ पता नहीं कब किनारा आयेगा? एक दिन लुधियाना से कागज़ ले कर आए, जब पत्तण से आए तो मल्लाह बेड़ी को बाँध कर चले गए। सूर्य डूबने वाला था दोनों दरियाओं के बीच खड़ा इधर उधर देख रहा है कि अब क्या करूँ और किस तरह पार होऊं? खड़े–खड़े को सोहनी की परीक्षा की झलक पड़ी, दिल करता सीधा यार की झोपड़ी में जाऊँ, ऐसी ही दलीलें करता था। एक तरफ से पैछड़ आई नीला तहमत लगाया हुआ है पानी के ऊपर से जल्दी जल्दी चला जाता है। कोई अनोखी ही झलक दे गया ऐसा जमाल था। हृदय विशाल कर गया, रोम रोम में झरनाहटें पड़ने लगीं। बस अन्तिम झलक भी, दुनियां के सब रिश्ते तोड़ गई। सोचा जिसे ढूँढते को आठ साल हो गए वो सोहणा पीर आज पास से चला गया। अब क्या देखता है जो होउ तो आप ही रख लेगा। मरने से नहीं डरना:–

अग्गवांग तपे रेत ससी न ना सोच होर कर के झुराणां है बलोच वाला मरदी।.
केही है परीत सोहणी कचा घड़ा देख के भी ठिलदी है नदी विच मरनों न डरदी।.

दरिया में ठल्ल ही पड़ा। पीर ने एक बार कहा, पीर ने एक वार कहा, ''डूब जाऐंगा हमीरा'' ''कुछ होए वापस नहीं आऊंगा।'' सच्चा आशिक दरिया को पार कर गया, भरोसा हो गया। मोरों कब

जाना, कभी न जाना। एक दिन सरदार कहते लगा, ''हमीर चन्द जी।'' एक ही काम होना है या दरिया में खड़ा हूँगा और या हमारा काम होगा।'' आप जी ने कहा मैं तो दरिया की ही भेटा होने के लिए आया हूँ, दो साल बहुत घोर तपस्या की। 12 (बारह) वर्ष हो गए भक्ति करते हुए अब भी परमात्मा न मिला देखो आदमी के भाग। शरीर सूख कर तवीत हो गए। एक दिन दिल गया, ''मैं हिन्दू, मेरा पीर मुस्लमान है, नहीं तो मुसलमान ही हो जाऊँ? शायद अगर खैर मिल जाए। मुझे नाचते हुए शर्म न आए नाच मतावां पीर को? यह बात मन में आई। कुछ समय बाद एक फकीर सामने आ खड़ा हुआ, आवाज़ दी ''हमीरिया, अब डोल न, अब तो फल पक्क ही गया है, परसों बारह बजे रात को तेरी चीज़ मिल जाएगी तुझे। ''दिल धड़क रहा है खैर कब मिलेगी, जज्ञियासू वैरागी हो कर खड़ा अर्ज़ कर रहा है। नेत्र बन्द है आग जैसे गर्म–गर्म आँसू गिरा रहा है। किसी तरफ से गैबी आवाज़ आई। मेहरा! मेहरा बहुत रौशनी हुई, कोटि सूर्यों के सामान, गैबी रौशनी में से आवाज़ अई, हमीरिया! मार दरिया में छलांग। जब दरिया की तरफ देखा तो साँप ही साँप नज़रीं पड़े। हमीर चन्द ने छलांग मारही दी। छलांग लगाई तो 'नानक नदरि नदरि निहाल' हो गया, हमीर चन्द के किवाड़ खुल गए। ईशर कोटी होने के बाद आप जी का नाम लाला बलि प्रसिद्ध हुआ। अब आप जी बड़े मालदार बन गए। उस खज़ाने की प्राप्ति हो गई जिसका कोई अंदाज़ नहीं लगा सकता। नाम रूपी खज़ाने की प्राप्ति हो गई, यह अनमोल खज़ाना है शरीर के चिह्न बदल गए। शरीर सूखम हो गया। घोर तपस्या ने दुनियां को दंग कर दिया, अब दुकान मालामाल है, ग्राहकों की भीड़ बनी रहती है। काफी रौनकें बढ़ गईं। एक दिन पशु चराते चराते लड़के लाला जी के पास चले गए। लाला जी कहने

लगे, "लाओ भई, किसी भैंस का दूध निकालकर लाओ।" गुज्जरों के लड़कों ने लवेरी, भैसें एक तरफ कर दीं और औंसर झोटियां लाल जी के पास खड़ी कर दीं। कहने लगे बाबा जी इन के नीचे से दूध निकाल लो। लाला जी ने अपना गड़वा दे कर एक औंसर झोटी को चोने का हुकम दिया। उस औसर झोटी के. नीचे से एक गड़वा दूध का निकाल लिया। इस अद्भुत कौतक (नज़ारा) को देख कर सभी बागी लड़के हैरान रह गया। लाला जी की इस करामात को देख कर हैरान परेशान हो गए। किसी सेवक ने लाला जी के चढ़ने के लिए घोड़ी भी संकल्प की, घोड़ी के पेट से एक बशेरी और एक बशेरा हुए। गाँव छोकरां की एक लड़की की गाँव कंडिआने में शादी हुई थी इस लड़की के नानके गाँव झिंगड़ां में थे, वह ज्यादातर झिंगड़ी ही रहती थी। इस लड़की ने भाई जवाहर सिंह जी को कहा, "भाई जी। तुम साधुओं की सेवा तो बहुत करते हो हमारे गांव कड़िआने में एक साधू है उनके दर्शन करो और आप को पता चले कि किसे तरह के साधू होते हैं।" भाई जी को उसी ही समय ऐसी खींच पढ़ने लगीं, मन बेचैन हो गया, खाना सोना सब भूल गया। भाई बहुत तीखे ग्राहक बन गए कि उस बीबी (लड़की) को कहने लगे, "बेनती है कि अभी ही चलो, उस महांपुरुषों के अभी ही दर्शन कराओ।" दूसरे दिन उठ कर लाला जी के दर्शन करने गाँव कंडिआना गए। आगे लाला जी उठकर झाड़ियों में जा छुप गये, भाई जी काफी ढूँढते रहे, पर लाला जी कोई ख़बर न मिली। हार थक कर वापिस झिंगड़ी आ गए, मन को शांति न मिली। दूसरे दिन उठ कर फिर चले गए, लाला जी फिर उठ कर छुप गए। फिर ढूंढ कर थक कर वापिस घर आ गए। तीसरी वार जब भाई जी चले तो कहा, दर्शन किए बिन वापिस जाऊँगा नहीं।

साखी भाई जवाहर सिंह जी की चली

भाई जवाहर सिंह जी बड़े उच्च कोटि के भगत थे, गृहस्थ आशर्म में रहते हुए ब्रह्म ज्ञानी, तत्त बेते, महांपुरुष हुए हैं।

इन की चाली इस तरह बर्जुग लोग बताते हैं, बसंत ऋतु के अकाश जैसा निर्मल हृदय, दस नाखुन की किरत करके प्रसादा छकते थे। आये अतिथि को भोजन छका कर साधुओं की संगत करनी, नाम जपना, दान करना, स्नान करना, आये गरीब की रक्षा करना इन का परम धर्म कर्म था।

''कबीर मन, निरमलु भइया जैसा गंगा नीरू।।''
पाछे लागे हरि फिरै कहत कबीर कबीर।।

इनका गाँव झिंगड़ा, ज़िला और तहिसील नवांशहर, थाना बंगा था। आप जी लुहारा काम करते थे। यह ऐसी बर्कत वाले थे कि बहुत सारी कहानियां इनकी ऐसी हैं। कई असाध रोगी इन के दर्शन करके राज़ी हो जाते थे, सिर पर हाथ रखने से ही अलामतें दफन हो जाती थीं। सभी काम संपूर्ण हो जाते थे। सो वो महांपुरुष भाई जवाहर सिंह जी उस बीबी के परेरे हुए लाला जी के दर्शन को चले गए। लाला जी आगे दो दिन न मिले जिस तरह पपीहा सुआंती बूँद का प्यासा पी पी करता बहते दरिया के पास से निराश हो कर प्यासा ही वापस आया। भाई जी घर तो आ गए, दिल बेचैन है, टिकाऊ नहीं, तोड़ लगी हुई है। ज़ख्मी हुए मृग की तरह डावांडोल फिर रहे थे, ठण्डे ठण्डे सवास ले रहे हैं। जब तीसरी वार घर से चले तो चलने लगे दिल में पक्की धार ली कि अगर अब आज

भी न मिले तो वापिस घर नहीं आऊँगा। बड़ी रीझ से (दिलचस्पी से) गले में पल्लू पा कर अर्जों की माला फेरते हुए गाँव कंडिआना पहुँच गए। आगे लाला जी दूध पी रहे थे, फकीरिया लुहार हुजरे में बैठा था। भाई जी को दूर से आते हुए देख कर लाला जी ने सेवादार से कहा, ''वो हमारा पुराना मित्र आ रहा है।'' प्यासा बहुत है आज ही इस की प्यास दूर कर देनी है।'' सच्चा प्रेमी सच्चा भगत जैसे प्रवाना शमां पर टूट पड़ता है इसी तरह चरनों पर भगत गिर पड़ा। आंसुओं से चरण धो दिया। लाला जी ने सिर (सीस) ऊपर उठाया, धीरज दिया। रहमत भरीं नज़रों से अपने सुच्चे मोती शिशु की तरफ देखा (निहारा) और चिर की लगी प्यास बुझाई। भाई जी कहने लगे, ''महाराज जी! दो दिन हो गए ने आते ही आप ने दर्शन क्यों नहीं दिया।'' इसका क्या कारण है? आप जी ने कहा, ''मेरे प्यारे लाल। आज ही समय अपने मिलाप का शुभ था, अगर आज से पहले अपना मिलाप हो जाता तो अपना कार्य पूरा नहीं होना था, अब सही सलामत मित्रता निभ जाएगी, अब सच्चा प्रेम हो गया लाला जी की तरफ से नूरी नयनों का झलक लगी रोम–रोम प्रेम से हिलोरे लेने लगा सरूर से तन मन सब अंदर की नसें नाम के रंग से रंगे/ नाम का प्रवाह आठों पहर चल पड़ा। आखें मूंदी गईं अद्भुत ही सरूर में जकड़ी गईं। अब एक पल का भी विछोड़ा झेलना मुश्किल है। आखा जीवं विसरै मर जाओ हुकम हुआ, ''चलो घर, काम करो बाँट कर खाओ इस में सारी बरकतें हैं। काम भी करना दर्शन भी करना।'' सारा दिन काम करना, रयत की सेवा करके शाम को तारों की छाया हर दिन सतिगुरू की हाज़री भरनी। सतिगुरू को भोजन छका कर आप भोजन छकना। सारी रात मुर्शिद की सेवा करनी यह एक नियम बना लिया। इस तरह सेवा करते हुए आठ

वर्ष गुजर (बीत) गया। कई वार तेज़ हवाएँ वर्षा, गर्मी, सर्दी ने रास्ता रोकना चाहा पर सच्चा प्रेमी रुका नहीं।

- *सच वाला नेहु जेहड़े पालद हैं आशक हो मन्नदे मलार नहीं गर्मी ते सर्दी।।*
- *''भी गुरदेखण जाई समुंद सागर होवे, बहु खारा गुर सिख लंघ गुर पै जाई।।''*

एक बार पोह माघ के दिन थे। ककर पड़ता, तेज़ हवा चल रही थी, बारिश पड़ रही थी। जानवर पड़े मरते थे। बाहर हाथ नहीं था निकाला जाता, अन्दर बैठे कंपन लगती थी। ऐसे बहते तूफान में सच्चा आशिक भूरी को लपेट कर (ओढ़ कर) बाबे फरीद की तरह आख़री पर्चा पाने के लिए यह राही चला जाता, हाथ पैर सुन्न हो गए। प्यार वाला तंद ओर भी पक्का हो रहा है। यह सच्चा प्रेमी चीकड़ को नीचे दबाता हुआ साथ ही शब्द पड़ता जाता 'फरीदा गलीए चिक्कड़ दूरि घरु नालि प्यारे नेहु' आगे लाला जी बैठे आत्मिक शक्ति से देख रहे थे। आज भाई जी को क्या दूंगा ''बस, आज तू मेरे में, मैं तेरे में खत्म हो गए झगड़े आज अन्तिम आना होगा फिर नहीं आना होगा।'' भाई जवाहर सिंह जी लाला जी के चरणों में पड़ गया। आँसू निकल रहे थे, सीना वैराग से साफ हो गया। चरणों में गिरे पड़े दास को सतिगुरू मेहरबान जी ने अपने पवित्र हाथों से सीस (सिर) ऊपर उठा कर सीने लगाकर रहमत भरी नज़रों से जब निहारा 'नानक नदरि नदरि निहाल' हो गए। हृदय विशाल हो गया। 'रिद कंवल खिड़े जैसे भान उदै।' खट चक्र खुल गए। लाला जी ने कहा, ''मेरे प्यारे। हम तेरे पास (द्वार) ही चलते हैं, तू तो हद्द ही कर दी।'' इस बात का जब संगत को पता चला सरदार शिव नरायण सिंह मोरों वाले जो कचहिरी लगाया करते थे आप जी इनके पास पहले ही आ कर

रहे थे। सरदार शिव नरायण सिंह ने बेनती की, ''सच्चे पातशाहो हमारे से कोई गलती हुई हो तो माफ करो, हम भूलने वाले जीवन हैं, हमारे पास ही रहो, मेरे घर चलो, पवित्र चरण पा कर दास को सेवा प्रदान करो।'' लाला जी ने कहा, ''गुरूमुखा हमें करतार का हुकम इस तरह है। हम आप के पास ही हैं। जब याद करोगे तो दर्शन होगा। हमारी बातें याद रखनी, धर्म की किरत करनी, बाँट कर छकना, किसी को दुख ना देना।''

''खलक खालिक की जाणके खलक दुखावे नाहि
खलक दुखे जब नंद जी खालिक केपे तांहि''

ऐसा उपदेश संगत को और सरदार शिव नरायण को दे कर फकीरिए लुहार को हुकम किए हमारी घोड़ी ले आओ छोड़ो लाला जी की अपनी रखी हुई थी। इस घोड़ी के पेट में से एक बछेरा और एक बछेरी लाला जी के पास ही थे। हम झिंगडी आज ही चले जाना है। शिव नरायण सिंह ने नौकर भेज कर हाथी मँगवा लिया। हाथी ऊपर सवार हो कर लाला जी झिंगडा चल पड़े। कंड़िआना गाँव के उस वक्त पशु–पक्षी वृक्ष सब नर नारी रो रहे थे, जैसे गुरू गोबिंद सिंह जी के जाने पर अनंदपुरी रोई थी। राम चंदर जी के बनवास के समय अयोध्या पुरी वासी पागल हुए धाहें मार कर रो रहे थे। कृष्ण भगवान के गोकुल और वृंदावन को छोड़ के मथुरा में चले जाने पर गोकुल वासी और गोपियां रोए (ऐसा हाल कडिआना के गुज्जर और गुज्जरियों का हो रहा। कभी कभी दबी हुई नज़रों से शाह सवार की तरफ निहार लेते हैं। उदासे हुए दिल से हाथी के पीछे–पीछे चले जा रहे थे। वसीवा पार हो कर जैसे सुरजू नदी से अयोध्या वासियों को राम चन्दर जी

ने धीरज दे कर वापिस भेजा ता, ऐसे ही लाला जी ने सब संगत को उपदेश देकर पीछे मुड़ने का हुक्म किया। फिर आप चलते–चलते गाँव झिंगड़ी पहुंच गए। नगर निवासियों ने बड़ी खुशी मनाई। आप जी गाँव के पूर्व की तरफ ढाब किनारे डेरा लगा कर बैठ गए। आप जी अच्छे राजनीतिक सूझ वाले थे। आप सब तरह के अदालती पंचायती फैसले करना जानते थे। यह विद्या आप जी ने मोरों पढ़ी हुई थी, गाँव पंचायत से जो फैसला ना होता तो लाला जी पास मुकद्दमां जाता था। गाँव के लोग रब जैसी श्रद्धा आप जी पर रखते थे। एक बार बताते हैं सलहा (टिड्डी दल) बहुत आ गया। बजुर्ग लोग इकट्ठे हो कर लाला जी पास गए और अर्ज़ की, ''सच्चे पातशाहो। क्या करें बहुत नुक्सान हो रहा है?'' लाला जी ने कहा ''जाओ हमारी घोड़ी ले आओ, जहाँ हमारी घोड़ी कार निकालआएगी टिड्डी दल भाग जाएगा, आगे भी नहीं आएगा।'' अब तक टिड्डी दल ऊपर से चला जाता है। बैठता नहीं अगर बैठ जाए तो नुक्सान नहीं करेगा। एकबार बताते हैं बर्फ के गोले (गढ़े) बहुत पड़ने लगे, चेत्र के दिन थे। इसी तरह लोगों ने फिर बेनती की, ''सच्चे पातशाहो! इस वक्त फसलें प्रफुल्लत हैं गेहूँ का नुकसान हो रहा है।'' हुकम हुआ, ''भाई बताओ किधर पड़ने दें?'' गाँव बज्जों की जूह खाली थी। ''सच्चे पातशाहो। गाँव हेड़ियां की जूह में गढ़े पड़ जाऐं तो बाकी फसलें बच जाएंगी'' त ऐसा ही हुआ खाली खेतों में गढ़े पड़े। फसलें बच गईं, आज भी झिंगड़ा की जूह में गड़े नहीं पड़ते ।ऐसी कहानियां लाला जी की बेअंत हैं। एक बार मंगू मजारे वाले ने बेनती की कि ''महाराज! मेरे घर को पवित्र करो, चलो आज ही चलें, मेरे दिल की प्यास बुझाओ जी।'' ज़रा कु चुप कर के मंगू की तरफ ज़रा गौर से देख कर लाला जी कहने लगे ''मंगू अभी टाईम नहीं, कुछ ही वक्त है। थोड़ा ही अरसा है। तेरे ही घर ऐसा वली आएगा

अवतारों का अवतार, पीरों का पीर, जिस को कुतब भी सलामां करेंगे। मंगू। तेरे घर को तेती करोड़ देवते भी सिजता करेंगे शिव, ब्रह्मा इंदर भी तेरे घर को सलाम करेंगे। एक कलप वृक्ष बना देगा तेरे घर को जीवों को भवजलों पार करने को पुल बना देगा, तेरे घर को अमर कर देगा, हज़ारों ही जीव बरों साजा करेंगे, मुँह से मांगी मुरादें पाया करेंगे, मंगू। तेरा घर उस महां अवतारी महांबली की ही मलकीयत होगा। मंगू। हमें भाई जवाहर सिंह को उसी ने प्रगट करना है। हमारा नाम ही रौशन उससे होगा। वो सभी बेड़ों का मालिक बहुत जल्दी ही आ जाएगा। इस तरह मंगू प्रति उपदेश करके मंगू को निहाल किया। महाराज नाभ कंवल राजा साहिब जी का गाँव मजारे मंगू के घर रहने का ईशारा किया। लाला जी गाँव झिंगड़ी तीह साल के लगभग रहे। एक दिन ढाब के किनारे बैठे थे। भाई जवाहर सिंह जी को पास बुला कर कहा, ''सारी चीज़ का मालिक जब आ जाए तो चाबियां झट पकड़ा देनीयां। भाई जी हमारी अब यात्रा खत्म है, आखरी समय आ गया है। हमारी मलकीयत यहाँ है अपने संस्कार की जगह नीयत की। यहां अब गुबन्द वाली समाध है। बहत्तर नाड़ी सरूप के साथ भर गया तीन वार निहाल। निहाल। निहाल। कह कर किवाड़ खोल दिया तीनों लोगों का मालिक बना दिया।

साखी करम सिंह बब्बर के खूह (कुएं) के पानी की

जेठ हाड़ के दिन थे। महाराज जी ईशर सिंह के वाड़े में रहते थे। सरदार हरनाम सिंह सूबा सिंह, बाबा माना, इंदर सिंह सेवादार थे। करम सिंह ने गाँव के पश्चिम की तरफ रटैंडे के वसीवें पर कुआं लगाया। कुआं लगा कर नाल लगाई। फिर भी पानी ना उठे कई दिन

टक्करें मारता रहा, कोई पेश ना जाए। मन निराश हो गया। चार हज़ार रुपया भी लाया, पानी फिर भी न मिला। हार थक कर बैठ गया। डबोलिये भी जवाब दे बैठे, दिन का दोपहर था। सारे कर्मचारी अन्दर जा कर आराम करने लगे। करम सिंह का मन बेचैन था। मन में गिट्टीयां गिनता एक मन एक–चित हो कर गले में पल्लू डाल कर अरदास की, रब का वास्ता पाया, ''अगर कहीं निकट हो कर सुनता हो तो बेड़े को पार लगाये। मक्खन शाह का डूबता जहाज़ रख लिया था, मेरा गरीब का भी कारज करो।'' जब भगत ने नीचा हो कर बेनती की और रब का वास्ता पाया तो संतों भगतों की लाज रखने वास्ते अपने नाम की लाज (लज्जा) रखने के लिए नाभ कंवल राजा साहिब जी जैसे भगवान विष्णू जी ऐरापत हाथी की रक्षा के लिए बेकुण्ठ से नंगे पैर भागे थे। ऐसे ही महाराज नाभ कंवल राजा साहिब पड़ती कहर की गर्मी में, तांबे की तरह तपती रेत, पड़ती लो कानों को साड़ रही थी, जानवरों के दम खुशक कर रही थी। नदी नालों का पानी खुश्क रहा था। मारे गर्मी के लोग अन्दर जा कर लेटे थे। ऐसी पड़ रही गर्मी में डोले हुए भगत को देख कर नंगे पैरीं मारूथलों कंडियाली लोह को चीरते हुए, स्फैद दूध जैसा रंग, सफैद लट्ठे की गिल्टी मारी हुई एक वजे दिन के सूखे और नभागे कुएं को भाग लगाने के लिए बल बल करते मौन पर जा खड़े हुए।

''जह जह काज किरति सेवक की तहा तहा उठि सा धावै।
सेवक कउ निकट होए दिखावै।''

अन्दर पड़े हुए लोगों के कानों जब दुःख भंजनी हरता करता की आवाज़ पड़ी, झटपट सारे आदमी अन्दर से बाहर आए, बाहर क्या देखा कि महाराज जी कुएं की मौण पर खड़े थे। सब ने नमस्कार

की। करम सिंह का वैराग फूट पड़ा। कहने लगा, ''जी मेरा कोई टिकाना नहीं है'' मेरे ऊपर मेहर करो जी, आप सब शक्तियों के मालिक हो जी, आप गुरू नानक देव जी का ही अवतार हो जी, सरदार तेजा सिंह ने बताया मेरे सामने देखने की बात है। महाराज ने एक बार कुएं में झाती मारी, कुआं चलाने का हुक्म किया। कुआं भड़ोले की तरह खाली था। पता नहीं क्या कुछ नयनों के ईशारे से किया पानी का वलवला कुएं के आधा ऊपर फुहारा उठा। कुआं पानी से भर गया बैलों की जोड़ियां चलने लगीं, ढोल ढमाके बजने लगे। करम सिंह को लगी बधाई मिलने। खुशी के बाजे बजने लगे। आप जी एक तरफ मंजी पर बैठ गए। इस कौतक से आप जी की कीर्ति बहुत बढ़ गई। यह सारी साखी सरदार तेजा सिंह ने सुनाई थी। जिस की उमर 12 वर्ष की थी। सरदार ने यह भी बताया कि जब महाराज जी पहले पहल झिंगड़ी आए थे सरदार की उमर पच्चीस साल की थी। महाराज जी चौदह वर्ष के थे बब्बर करम सिंह का अब तक कुआं चल रहा है, पानी सूखता नहीं है।

बोलो भाई वाहिगुरू

साखी सरमुख सिंह से हुई

करम सिंह के कुएं को हरा भरा करके महाराज जी ईशर सिंह के वाड़े जा बैठे। पातशाह को रहते हुए एक वर्ष हो गया था। आप जी के बाहर वाले गाँवों के मुखी (मुख्य) सेवकों के नाम यह हैं।

गाँव झिंगड़ां के सेवकों के नाम
हरनाम सिंह, माना इंदर सिंह, नत्था सिंह, सूबा सिंह, गाँव रहिपा के सेवकों के नाम

सरमुख सिंह हरी सिंह, मींहां सिंह, छज्जू झिउर
गाँव मजारे के सेवकों के नाम
नत्था सिंह, मूला, वरियाम सिंह, जुआला सिंह
गाँव गोसलां के सेवकों के नाम
मंगल राम, मुनशा सिंह
गाँव भरों मजारे के सेवकों के नाम
सुन्दर सिंह और बाबू
गाँव मूसापुर के सेवकों के नाम
बसंत सिंह, नारायण सिंह, सुंदर सिंह
गाँव खानखाना के सेवकों के नाम
भगत गुरदास, गुरदित्त सिंह

यह थे महाराज जी के दरबारी सिख, इन में से एक सुच्चा मोती सरमुख सिंह था गाँव रहिपे वाला जिस को एक रात पास रह कर ही प्रेम का जाग लगा गए थे। इसका एक नियम था, पक्की धारणा भी हर रोज नंगे पैरीं बारिश होए हवायें चलें, गर्मी हो या सर्दी हो, निशकाम अपने प्यारे मुर्शिद के दर्शन ज़रूर ही करना। कई घरोगी काम उसके सच्चे प्यार को भंग करना चाहते थे, पर वो लगातार चाली वर्ष सतिगुरू के दर्शन के लिए यात्रा करते रहे। चाली वर्षों में एक दिन नहीं थे गए, कोई पशु बाहर से लेने के लिए चले गए थे। दूसरे दिन जब दर्शन को गए तो महाराज जी कहने लगे, ''तू सरमुख कल नहीं आया।'' महाराज जी बैल लाया था, उसकी रक्षा के लिए रहना पड़ गया। महाराज जी ने कहा, ''अगर पास बैठे ही खुलवा दे'', सरमुख सिंह ने बेनती की मुझे भूलनहार को बख्श लेना हजी मैं बड़ा गुनाहगार हूँ, मैं झूठे कामों में पड़ कर आप जी के दर्शन भूल बैठा हूँ। सब शक्तियां झूठे कामों में पड़ कर आप जी के दर्शन भूल

बैठा हूँ। सब शक्तियां आप जी की हैं, यह जो चमेली का नूर झलक रहा है। यह सब आप जी का ही पसारा है। जो वनस्पति की हरियावल है यह सब आप जी की ही करामात है।

''सहस तव नैन नन नैन है तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही।।''
''है सभ ताकत फैल रही, जिस आसरे है इहो देह खड़ी।।''
''है घट अंतर सरब निरंतर होए एकत्र बात विचारी।।''
सतगुर बाझ नहीं हथ आत मिलकर उनहन काज सवारी।।
सबद की कुण्जी को लेकर बालक तौ गड़ कांया के कलफ उतारी
दास भगवान खुलें खट चक्र जा गणतंत्र सुरति सिधारी।।

यह जो नयनों में रौशनी है, सब आप जी की ही रौशनी है, सरमुख सिंह जी का वैराग चल पड़ा। चरण पकड़ कर बैठ गया।

''हौं मसकीन हूँ दीन अति कर
न जाना गुण सतिगुरु तेरा।।''

सावन के बादलों की तरह आँसुओं की झड़ी लगाई हुई थी। महाराज जी ने प्यार से सिर पर हाथ धरा और रहमत भरी नज़रों से निहारा, सरदाई छकते छकते शीत प्रसाद बखशिश किया। शीत प्रसाद छका अमृत जैसा तन मन ठण्डा हो गया, शरीर सुन्न हो गया, समाधि लग गई।

'लिव जाए लग जहां जोत रही जगमग दास भगवान लै रहस्य को अधाएगा।।'

बिरती लिवलीन हो गई किसी बड़े शुद्ध शुमार में अभेद हो गई। निर्मल जल है कई किनके उस शुद्ध में आ कर अभेद हो रहे हैं। कई उस बेशुमार शुद्ध में परवाने बन कर एक से अनेक हो रहे हैं। खण्डों ब्रह्मण्डों को रंगीन बना रहे हैं। वन पर्वत सब गण–गंधर्व,

पशू, पक्षी, नर–नारी देवलोक, सब राजा राजा गाते नज़र आया। कई परियों के दर्शन हुए सब तरफ राजे का ही जाप हो रहा था।

''तुम हो सब राजन के राजा।।''
आपे आप गरीब निवाजा।। (दशम ग्रंथ)

सिर पर हाथ रखा तो आँख खुली तो क्या देखता है, महाराज के खुली झूले के साथ लग कर बैठा है। हैरान है कि कुछ देखा सुरती अभी भी नशई और मतवाली सी है फिर दिल करता है कि वहाँ ही चला जाऊं आँखें मिलती जा रही हैं। कोई अनोखा ही रंग है, सरूर आ रहा है, शरीर हल्का हल्का फूलों की तरह लगता है। सीना साफ़ हो गया है। जैसे भाई शमीर बदेह मुक्त कर दिया था। गुरू गोबिंद सिंह जी ने ऐसे ही नाभ कंवल राजा साहिब जी ने बाबे सरमुख सिंह जी को बेदह मुक्त किया। महाराज जी कहने लगे, ''सरमुख। क्या देखा?'' बाबा जी ने कहा, ''जो कुछ आप जी ने दिखाया'' सोई देखा। सरमुख सिंह जी लंबे लंबे सांस ले रहे थे, उन्हें एक मिन्ट का विछोड़ा युगों के सामान बीतने लगा। सतिगुरू का हुक्म हुआ, ''सरमुख। चल घर चला चल। हम भी रहिपे आयेंगे, हमारी रहिपे भी मलकीयत है उसको भी आबाद करना है।'' सरमुख सिंह, ''पातशाह जी। आज ही चलो, मेरा आप ही सहारा हो, आपके बिना साक–अंक, भाई–भाई कोई भी नहीं है। आप जी के दर्शन बिना बच नहीं सकता, जैसे मछली पानी के बिना नहीं बच सकती।'' फिर हुक्म हुआ सरमुख। चलो हम भी आ रहे हैं।

''हुक्म मन्ने होवे परवाण तां खसमैं का महिल पाइसी।।''

बाबा जी गाँव रहिपे चले गए बेकरारी, अपने प्यारे मुर्शिद की इन्तजार में बैठ गए, दिल यकीन नहीं करता। वो भागों भरा दिन

आ भी जाएगा। खण्डों–ब्रह्ममण्डों के मालिक, मिहरों के दाता रहिपे को भाग लगाएंगे। गाँव पश्चिम की तरफ बाबा जी एक वाड़े में अलग कुटिया बना कर रहते थे। महाराज जी के नाम का आसन विछा कर मन में सधरें रख कर पास बैठ गया। मन ही मन बेनती करने लगे, सारी रात माला फेरते ही गुज़ार दी।

भिन्नी रैनड़िऐ चामकनि तारे।।
जागहि संत जना मेरे राम प्यारे।।

आगे साखी झिंगड़ां से रहिपे आने की

बाबा सरमुख सिंह ने जब पातशाह को सच्चे दिल से याद किया और अरदास की तो पातशाह महाराज घट–घट की जानने वालों ने अपने सेवकों को पाँच मील पर बैठे देखा। सरमुख सिंह की बिहवलता पर तरस खा कर आधी रात ईशर सिंह की हवेली से नंगे पैरीं उठ चले। रात रौशनदार थी। चाँद चमक रहा था। पोह माघ के दिन थे। कोरा, कहर का पड़ रहा था। छप्पड़ों के पानी ज़में हुए थे। लोग रजाई में पड़े भी ठुर ठुर करते थे। आप गाँव लड़ोया की तरफ से होते हुए सीधे शिकारां ऊपर से रहिपे के ढक्क को आ निकले। गाँव के पश्चिम की तरफ एक फलाहियों वाले कुएं परआकर बैठे। पहु फटने वाली थी। पूर्व की तरफ आसमान पर लाली का छतर बनता जा रहा था। चिड़ियां चहकने लग पड़ी। जवान लड़कियाँ दूध रिड़क रहीं थीं। कहीं कहीं बोल बराला हो रहा था। ज़मींदार चादर ओड़ कर सिर पार चड़स उठाये जा रहे थे। सरमुख सिंह का बड़ा भाई गुरमुख सिंह फलाई वाला कुआं चलाने की जोड़ियां लेकर पहुंचा तो आगे क्या देखा पंद्रह सोलह साल की उमर का रंग गोरा शरीर पतला, नयन नशीले और नाक तीखा

तलवार की धार जैसा और बड़ी तीखी नुहार वाला, नूर की झलकें मारता हुआ मुखड़ा शीश पर सनहरी रंग की बावरियां कोरे से भरी हुई थीं। तपस्वी भी स्फैद लट्ठे की चादर ओढ़े हुए कुएं के किनारे पर बैठा, जब गुरमुख ने देखा तो बड़ा हैरान हुआ। इतनी पड़ रही सर्दी में यह साधू बैठा है क्या इसे सर्दी नहीं लगती? गुरमुख सिंह ने नमस्कार की सेवा के लिए बेनती की, पातशाह बोले, ओ गुरमुखा! हमारा सरमुख को सनेहा (संदेश) जा देना, कहना राजा साहिब बुला रहे हैं। गुरमुख सिंह ने अपने भाई, सरमुख सिंह को जा बताया कि अपने कुएं ऊपर एक साधू बैठे हैं। दूध गर्म करके ते चलो, मैं आग जला कर सेक कर दूंगा। सर्दी बहुत है। बाबा सरमुख सिंह जी कहने लगे, ''महाराज जी गर्म दूध नहीं पीते, दही की लस्सी बनाकर ले चलें।'' सरमुख सिंह ने जल्दी ही घर से लस्सी बना कर पातशाह के आगे ला कर हाज़र किया। गढ़वी आगे धर कर नमस्कार की, मन खुशी में गद–गद हो उठा। पातशाह के नाम से लोग काफी जानते थे पर दर्शन कम किए थे।काफी लोग जैसे जैसे पता लगता, दर्शन को आने लगे। जैसे कृष्ण की बांसुरी को धुन सुनकर बृज के नर नारी वन की तरफ भाग कर जाते थे। ऐसे ही गाँव रहिपा की संगत महाराज जी के दर्शनों को आने लगी। सभी के दिल अन्दर खुशी थी, काम–काज सभी लोगों को भूल गए। जानवर भी खुशियों में गीत गा रहे थे।

''मीठी मीठी वगे पौण, बगले आकाश भौण
सावन की सिफत कोई कही नहीं जाती।।''

कोई दूध दहीं तथा छुआरे आदि लेकर महाराज जी की हजूरी में बैठ जाते। नंबरदार हरनाम सिंह के घर वाली माई बसंत कौर (सरमुख सिंह जी की भतीज बहू) इस ने सोचा कि सारे लोग कोई

दहीं मक्खन लिए जा रहे हैं। मैं कड़ाह प्रसाद बना कर ले जाऊं, घर ताज़ी भैंस सूई हुई थी। उन दिनों में पहले गुरद्वारा नानक सर गाँव हकीमपुर में सुच्चे घी का प्रसाद चढ़ा कर फिर घी घर में खाया जाता था। बसंत कौर ने रली से घी लेकर प्रसाद बनाया। प्रसाद तैयार करके पातशाह की हजूरी में आ गई। प्रसाद आगे रखकर नमस्कार करके बैठ गई। सारी संगत एक सुन्दर दरबार की शक्ल में शोभा दे रही थी। इलाही मुख की तरफ तक रहे थे, बड़ी नीझ से अमृत की कणीं ऐसे ले रहे थे, जैसे पपीहा सुआती बूँद लेकर खीवा होता है। सच्चे साहिबां ने मिहर भरी नज़रों से सारी संगत की ओर देखा। बसंत कौर नंबरदारनी की तरफ इशारा करके कहा, ''नानकसर भी राजा ने ही आबाद किया, अमृतसर की नींव भी राजे ने रखी थी। सरमुख जितने अवतार हुए हैं, वो मैं ही आता रहा हूँ। बसंत कौर ने हमें लागियों से रला दिया। हमारे प्रसाद में घी झिउर के घर से ला कर पाना था?'' जब इतनी रमज मारी बसंत कौर थर–थर कांपने लगी। ''सच्चे पातशाहो। मैं भूल गई हूँ, बखश लो, मैं भूल गई हूँ।'' बसंत कौर ने सारी बात खोल कर बता दी कि मैं रली झीरी के घर से घी ले कर प्रसाद बना कर ले आना था घर से सुच्चा समझ कर नहीं था पाया। जो प्रसाद बना कर लाया था वो सारी संगत में बाँटने का हुक्म दिया, बाबा सुरमुख सिंह को प्रसाद बाँटने के लिए कहा। प्रसाद बाँटकर, महाराज जी कहने लगे, ''सरमुख सिंह! चलो चलें हमारे लिए जो बिसतरा किया हुआ है उस पर जा कर कुछ देर आराम करें।'' गाँव से जा कर झारी वाली खूह पर स्नान किया। स्नान करके सरमुख सिंह की कोठड़ी फूटा हुआ दहीं छका और आराम किया। संगत को छुट्टी बख्शी।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी हाकम शाह से गोशट की हुई

महाराज जी अब गाँव रहिपा में रहने लगे। कभी दरिया सतलुज के किनारे चले जाना, ज्यादा बाहर खेतों में ही रहते थे, जब आराम करना हो तो बाबे सरमुख सिंह के पास आ कर बिराज जाना। शरदाई और प्रसाद छकाने की डिऊटी भी सरमुख सिंह की होती थी, जिस तरफ भी महाराज चला जाते डिब्बे में बंद करके प्रसाद ले जाना और छका आना। स्नान करवाने की सेवा छज्जू, झीउर करता था। मीहां सिंह और हरी सिंह भी सेवा का हिस्सा काफी लेते थे। महाराज के रहिपे रहने की खबर सभी गाँवों में फैल गई। काफी संगत की आने जाने की रोनकें लगी रहती थी। एक कुल्ला महाराज जी के रहने के लिए गाँव बल्लोवाल की तरफ बना दिया। गाँव रहिपे के लोग महाराज जी पर परमात्मा जैसी श्रद्धा रखते थे। कोई हुक्म नहीं था टालता कई वार सूते सिद्ध ही बैठे बैठे आने वाली भविष्यत बातें कह देते थे। गाँव रहिपा में एक प्रताप सिंह खालसा बरादर था। प्रताप सिंह की शादी हुई, घर वाली मर गई और दूसरी शादी और करवाई। उसके पेट में से एक लड़के का जन्म हुआ। एक वर्ष का होकर मर गया। बच्चे के अफसोस में काफी आदमी इकट्ठे होकर बैठे थे। महाराज जी बाहर से आए, सब ने उठ कर नमस्कार की, आप ने पूछा कि क्या बात है कैसे बैठे हो? सरमुख सिंह ने बताया कि प्रताप सिंह का लड़का स्वर्गवास हो गया। प्रताप सिंह रोने लगा और महाराज कहते, ''प्रतापा! रोना नहीं, और बहुत पुत्र होंगे। फिर कहेगा कि साहुरे मरते नहीं दुख देते है।'' प्रताप सिंह को धीरज देकर आप कोठड़ी चले गए। आप जी का हुक्म सच्च हुआ। नौ लड़कें लड़कियां भी हुई, इतने लड़के और लड़कियां और बहुओं का बापू

रोटी आप पका कर खाता रहा। घर वाली अलग पका कर खाती रही और प्रताप सिंह अलग। यह सब बातें आँखों से देखी हैं। महाराज की कीर्ति दुनियां में काफी बढ़ गई। छोटी आयु के साधू का दुनियां से नूर अनोखा ही झलकें मारता है दूसरी करामात दुनियां को चमक पत्थर की तरह खींच पाती है तीसरा रूप साधुओं जैसा धारण किया हुआ है, चौथा मीरी पीरी भी पूरी है, हुक्म अटल है।

नूर का बैहर अठ पैहर ही वगता है गैहर ना जामे तामें लैहर नियारी है।।

स्त्री को निकट नहीं छूहने देते। हाकम शाह गाँव करियाम में रहता था, अच्छी पहुँच वाला फकीर मुसलमान था। काफी सिक्खी सेवकी बनी हुई थी, हाकम शाह की कबर अब भी गाँव करियाम में हैं काफी मुसलमानों की उमत (कौम) में मन्ने पूजे जाते थे। इनके सेवक गाँव रहिपे में भी रहते थे, गुज्जरों के घर आना जाना काफी था। एक दिन हाकम शाह गाँव रहिपे तकिए में बैठे थे, काफी हजूम इकट्ठा हुआ था। कवाली गा हो रही थीं, कवाल अच्छे सुलझे हुए कलाकार थे। 8 बजे दिन का समय था महाराज जी कई दिनों बाद दरिया की तरफ से आए। जब गाँव आए तो मस्त जैसी चाल से कवालियां सुन कर मस्त जैसे हो गए। चुंगियां भरने लगें। इतना महाराज जी को हाल चड़ा कि टपूसी मार कर पीपल के पत्तों को हाथ जा लगाने लगे, सारे लोग महाराज जी को देखने लगे। चेहरे पर बहुत जलाल था। हाकम शाह ईष्या की आग से जल उठा। अपने आप को बहुत उच्च कोटि का साधू समझ बैठा था। उठ कर क्रोध से बोला, ''खींच लूँ जो कुछ तेरे में है?'' साथ ही तीन लकीरें लगाईं, कहता ये लकीरें टप कर बता अगर तेरे में शक्ति है। महाराज जी तीनों लकीरें टप गए साईं के दिल में एक आग का अँगारा बड़ी देर से धुखता था, उस महांबली समुद्र जैसी हस्ती का डूंघाई और

चौड़ाई का अनुमान नहीं लगा सकता था। इतने भारे असमागाह को एक आग का अँगारा क्या कर सकता था। महाराज जी सुमेर पर्वत की तरह अडोल, अपने उस तार पर ही लगे जा रहे थें, जब साई बहुत घबराया। महाराज जी ने कहा, ''साईं जी। अगर हमारा दिल करे तां नींबू की तरह निचोड़ दें। पर इस बात से हम ने लेना क्या है? फिर आप जी ने कहा, ''साईं जी।'' आह जो कीड़ियों का भौण है, यह आपके तकिए अंदर है, यह खुदा की उमत है। इस को हम ले चले हैं। यह जीव खुदा की रज़ा में हैं तो इनको मोड़ कर बता।'' इतना ही बचन करके पता नहीं क्या कह गया? आप तकिए से बाहर चले गए। बीस पच्चीस कदमों पर बाबा जी की कुटिया थी। बीच में एक रास्ते पर कुएं की पैड़ थी। तकिए की जगह अब स्कूल बना हुआ है। गाँव की तरफ से बाबा जी की कुटिया थी। महाराज जी कोठड़ी अंदर जा कर बैठ गए। कीड़ियों का भौण महाराज की तरफ इस तरह जा रहा था। जैसे सिजदा करके वापिस जा रहे थे। क़ाफी लोग भी महफिल में से उठ कर महाराज के पास चले गए।

कुछ समय बाद परों वाले कीड़े तकिए में से निकल पड़े जहां हाकम शाह बैठा था। लगे कीड़े कान तोड़ कर खाने। सारे तकिए के अंदर कीड़े ही कीड़े चलने लगे। अंत में तकिए में से उठना ही पड़ा। चार मुरीद भी साईं के साथ थे। वो कहने लगे चलो राजा साहिब की मिन्नत जा करें। हाकम शाह मारा शर्म का माफी माँगने से भी झिझकता था कि, ''मेरी उम्र'' 60 साल (वर्ष) की मैं एक छोटे से बालक से क्षमा माँगू? यहाँ से उठ कर चले जाना ही बेहतर है।'' झटपट बोरी बिस्तरां उठा कर तकिए से बाहर हो गया। भूली गुजरी के घर रात गुज़ारी सुबह चलने लगे हाकम शाह ने सोचा कि राजा साहिब से जबरी वैर किया। कीड़े अब भी मेरा पीछा नहीं छोड़ते। फकीर की वगी को खुदा भी नहीं मोड़ता। कहीं मारा ना जाऊँ, ना हुए तो सुलह ही कर

लेती बेहतर है। नहीं और सारी ज़िंदगी बेचैन ही रहेगा। हाकम शाह महाराज जी पास गया। आ कर चरण पकड़ने दौड़ा। आप जी ने उठ कर हाथ पकड़ लिए। महाराज जी ने कहा, ''साईं जी बैठो। आप तो सयाने बर्जुग हो। घबराते नहीं। आपकी तो छायां में बैठ कर खुदा की रियाया को शीतलता मिलनी चाहिए। हां शरदाई छका करो। करामात तो कहर का नाम है। दुनियां का भला करना ही साधू का धर्म है, खुदा की रजा में चलना यही ही खुदाई मेहर है।'' महाराज ने बाबे सरमुख सिंह को कहा साईं को प्रसादा छकाओ। हाकम शाह ने हाथ जोड़ कर बेनती की, ''मेरा आप आगे उजर तो कोई नहीं, मैं आपकी गति को नहीं था जानता, आप तो खुदा का ही रूप हो, आदमी की सूरत में संसार का उदार करने आये हो। तेरे में और खुदा में कोई भेद नहीं। तू जनक राजा अवतार हैं। तेरी महिमा अपर–अपार, गुस्ताखी माफ करनी, मैं आपके सामने, कई ऊँचे नीचे वचन कहे हैं, माफी दे देता, रुखसत दो।'' महाराज जी ने पत्तों के साथ जाने का हुकम दिया, जाओ, यहाँ मर्जी रहो।'' हाकम शाह उठ कर गुज्जरों के घर गए, जिस तरह कोई व्यापारी घाटे का मारा हुओ हो चुप–चुपीते ने रात गुज्जरों के घर काटी। सुबह सूरज निकलने से पहले–पहले ही अपना समान उठा कर करियाम का रास्ता पकड़ा। फिर कभी रहिपे का रास्ता नहीं देखा। सारी आय भोग कर गाँव करियाम में ही समा गए थे। महाराज की कीर्ति और भी बढ़ गई। *बोलो भाई वाहिगुरु।।*

साखी संतों से हुई

महाराज जी को रहिपे रहते आठ महीने हो गए। जेठ हाड़ के दिन बीत गए, चुमासे के दिन गए दो महीने महाराज जी गाँव से

पूर्व की तरफ सरकूलों वाले कुएं पर ही रहे। संत गंगा दास महरमपुर वाले (जब महाराज जी इनकी जमात को छोड़ कर झिंगड़ी आ गए) झिंगड़ां से रहिपे आ गए। महंत गंगा दास के दिल में बड़ी उदासी रहने लगी।

नीर बिनां नाहि सोभ सरोवर रंग बिना नाहि अंग सुखानी।
प्रेम बिना नाहि मानस सोभत तरकस न बिन तीर सुहानी।।
पुसपों की पंकत कहु कब सोभत जौ बिच रीध नहीं मधरानी।
दास भगवान नदान सही ऐसे बोध बिना नाहि सोभ प्रानी।।

चाँद के बिनां जैसे रात डरावनी लगती है जैसे, तैसे ही गंगा दास के डेरे की रौनकों के दिए बुझे हुए थे। गंगा दास जी को विछोड़े का दुख हर दम साड़ रहा था। गोगड़ सुखती जा रही थी, निमोझूना (उदास) हो कर बैठा रहता था। एक दिन अपने सारे चेलों को इकट्ठे करने कहने लगा, ''कोई ऐसी तदबीर करो, कोई ऐसा प्रेम का जादू मारो, कोई राजा साहिब जी को अपने डेरे में ले आओ, फिर हम ऐसा प्रेम का जादू जाल पायेंगे कभी जाने नहीं देंगे। भाई जवाहर सिंह जी से यह काम चोरी करना। भाई जवाहर सिंह बड़ा भारी महांपुरुष है, त्रिकाल दर्शी, भगत, बली है। फकीर के और हाकम के आगे की जाना हो तो निम्रता के साथ जाना चाहिए है।'' गांगा दास जी के चेले अच्छी राजनीतिक विद्या से जानकारी थे। गंगादास जी से आज्ञा लेकर सी. आई.डी. का सबक पढ़कर गाँव महरमपुर से चल पड़े। गाँव झिंगड़ी अपने गुरभाई बूटा सिंह के पास पहुंच गए। बूटा सिंह को सारी बात खुलकर बताई। बूटा सिंह ने बताया राजा साहिब जी को तो गाँव रहिपे सात–आठ महीने हो गए हैं। साधू ने झिंगड़ा से चल कर रात मुकंदपुर

काटी। मुकंदपुर भी संतों का डेरा था। यहाँ महाराज के पिता मंगलदास रहते थे। मंगल दास जी समाये भी मुकंदपुर ही थे। सुबह संत जी उठ कर गाँव रहिपे पहुँचे। बाबे सरमुख सिंहजी को आकर मिले। बाबा जी ने जल पानी की सेवा के लिए बेनती की और आसन बिछा दिए। संतों ने कहा कि हम राजा साहिब जी महाराज जी के दर्शन करने हैं। बाबा जी ने कहा कि भोजन छक कर चलते हैं, हमें भी जाना है। प्रसादा जब तैयार हो गया तो छज्जू झीउर ने आ कर बेनती की। लंगर तैयार है संतों को प्रसादा छकाओ। पहले महाराज जी लिए प्रशादा तैयार करके रख लिया, बाद में संतों को भोजन छकाया। फिर आप छका। उपरंत बाबा जी ने डिब्बा लिया और संतों को साथ लेकर महाराज जी की तरफ चल पड़े। महाराज जी जगतपुर की ओर एक टिब्बे के पैड़े ऊपर बैठे थे, समाधि लगी हुई थी, करतार से बिरती जुड़ी हुई थी। बाबा जी और संत मंडली ने जा नमस्कारकी, महाराज, महाराज, कह कर आवाज़ दी आगे सतिगुरों की समाधि खुलीऔर क्या देखते है आगे महिरमपुर वाले संत हाथ जोड़े खड़े थे। बैठे जाने का हुक्म दिया, सारे डेरे की सुख सार पूछी। आप जी ने संतों को पहले ही कह दिया, ''जो डेरे में आप ने वचन किया था आपका कहा हुआ वचन हमें पूरा करना ही पड़ा। हमने सोचा कि अपने आप ही गंगा दास के पेश हो जाते हैं। चलो आज ही चलते हैं।'' सरमुख सिंह जी को भी महाराज जी कहने लगे, ''प्रसादा जानवरों को ही पा कर हमें दही का एक गिलास लस्सी का बना दो।'' छोटी सी मधानी छज्जू ने पकड़ी हुई थी। मधानी से गढ़वी में दहीं लस्सी छकाई। कहने लगे, ''सरमुखा हम गंगा दास को मिल आयें।'' साथ कई हमारे पड़ाव है। पुरानी जायदाद को नज़र मार आयें और अबाद भी कर आयें। ऐसी कई रमजे मारी। बाबा जी कहने लगे, ''मुझे भी बता दो मैं आप जी के दर्शन कहाँ करूँ?'' मैं पपीहे की तरह

तरसता ही न रहूँ। मुझे आप के दर्शन बगैर अन्धेरा ही अन्धेरा है। ''एक घड़ी न मिलते तो कलयुग होता। मैं आप जी के दर्शन बिनां बच नहीं सकता।'' सरमुख सिंह को बड़े धीरज देते हुए कहा, ''एक महीना इनके साथ रहेंगे। फिर ऐसे ही पासे आ जाएंगे।'' महाराज जी संतों के साथ महरमपुर चले गए। संत मंडली गंगा दास जी बड़े खुश हुए। जैसे किसी की खोई हुई वस्तु मिल गई हो। महंत के चिहरे पर खुशी नाचने लगी। सारे गाँव में पता लगा। महाराजजी के आने पर लोग छिप (वौछाड़) की तरह दौड़े आए। महाराज जी के दर्शन दो वर्ष के बाद हुए। अब महराज जी के गल में सफैद मलमल की अल्फी पहनी हुई, चादर की बुकल मारी हुई थी। पैरों में जोड़ा पहना हुआ है जो सुच्चे तिल्ले की कढ़ाई का है। एक गैंडे की पतली सी सोटी भी हाथ में पकड़ी हुई थी, चिहरे का नूर झलकें मार रहा है। मानो हुसन की निरी खान है कोई अंदरूनी खींच सी पड़ रही थी। जब आप जी के पहले दर्शन किए थे उस वक्त महाराज जी के शरीर पर पीतल का तड़ागा था, भगवें रंग का तौलिया पहना हुआ था। अब शहनशाहों वाला लिवास है। बोलचाल और चलना फिरना बहुत नुहार वाला था। लिवास साधुओं जैसा भी था। संगतों के दिल में बड़ा ही उत्शाह है कि राजा साहिब जी हमारे गाँव में आ गए अब नहीं जाएंगे। पर इन फक्करों को कोई रोक नहीं सकता किसी के बन्धे हुए नहीं रहते।

आशक भौर फकीर ते नाग काले,
बाझ मन्तरों मूल न कीलीए जी।

गाँव महरमपुर कुछ दिन ठहर कर गाँवों का दौरा करना शुरू किया। गाँव मूसापुर, महरमपुर और गाँव करनाणे की तरफ की होते हुए सरादों के दिनों में गाँव मजारे सारी जमात पहुँच गई, दो ऊठ

थे, साथ ही चार घोड़े, एक गड्डा। गाँव से पूर्व की तरफ करनाणे के रास्ते में एक बड़ा भारी बोहड़ है (जहाँ अब छोटा बोहड़ का पौधा है, निकट एक छप्पड़ी है) सराधों के 17 दिन संत मंडली ने यहाँ बिताए। जब भंडारा छकने जाते थे खूब नर–सिंगे बजते होते थे।इस जमात में संगत गंगा दास जी के साथ ही महाराज जी रहा करते थे औरएक दिन भाई जवाहर सिंह जी गाँव झिंगड़ा से गोबिंदपुर जा रहे थे। जाते–जाते जवाले के पास आ बैठे।एक दो सेवादार और भी वहाँ आ गए। जावाल सिंह ते भाई जवाहर सिंह जी को कहा, ''सच्चे पातशाहो। राजा साहिब जी संतों की जमात में फिर चले गए है।'' भाई जी ने कहा, ''आप हमारा संदेश दे देना अगर हमारी खुशी लेनी है तो जमात को छोड़ दें।'' जवाला सिंह, नत्था सिंह, मूला सिंह, वरियाम सिंह ने भाई जवाहर सिंह का संदेश महाराज जीको कह सुनाया। भाई जी का संदेश सुनते ही महाराज जी ने गंगा दास की जमात को छोड़ दिया। वहाँ आपजी ने ऐसे फरमाया:–

''जर जराइत छोड़ जमाइत पकड़ कनाइत काम सरे''

गंगा दास ने बहुत कोशिश की अपनी जमात में ले जाने की जिस तरह नंद जी कृष्ण के मथुरा चले जाने से दु:खी हुए। इस तरह गंगा दास भी बहुत उदास रहने लगा। उस वक्त आप जी की आयु 21 वर्ष की थी। सन् ईसवी 1883 था।

बोलो भाई जी वाहिगुरू।।

साखी भाई जवाहर सिंह जी से पुनर मिलाप

महाराज जी गाँव मजारे ही थे गाँव से पूर्व की तरफ दरवाज़े आगे पलंग पर चादर बिछी हुई थी। आप बड़ी ही शान से बैठे थे।

आप जी और गाँव मजारे के लोग परमात्मा जैसी श्रद्धा रखते थे। जितना वक्त महाराज जी संत मंडली के साथ रहे। महंत गंगा दास और बाकी चेलों ने ऐसी ही सखालत का ज़ोर रखा। काफी शस्त्रों की दलीलें देकर महाराज जी को पक्का कर दिया जैसे राजा जनक से सुखदेव जी निशदर्क किया था, इसी तरह महाराज को संत मंडली ने पक्का किया। साधू का धर्म नहीं गृहस्थी को गुरू धारना या नमस्कार करता, साधू संपरदायें की इस में हत्तक है। गंगा दास जी के कहने का आप जी पर काफी प्रभाव पड़ा। महाराज दरवाज़े के आगे बैठे थे। भाई जवाहर सिंह जी गोबिंदपुर की ओर से आ रहे थे। मजारे के बीच से भाई जी का रास्ता होता था। भाई जवाहर सिंह जी को महाराज जी ने नमस्कार न की। आप जी न तो नमस्कार ही की और न ही उठ कर मिले।

संगत काफी बैठी थी। भाई जी ने कुछ हत्तक समझी। महाराज जी से गुस्से हो गए, मुँह से बचन आया, ''किसी चुगलखोर ने चुगली की है, भला चुगलखोर का भी नहीं होना, जिसने प्रेम के मिलाप का धागा (तन्द) तोड़ा है। अपना किया पायेगा निन्दक।'' पातशाह जी तरफ भी एक तीर छोड़ दिया, ''अगर तू चुगल की सुनी है तो बहुत दुखी होगा, शरीरक कष्ट पायेगा।'' संतों महांपुरुषों की रसना से जो कुछ निकलता है सो हो के ही रहता है।

गई रुह कलबूतों, कमान थीं, तीर छुटा, मुड़ के फेर ना आंवदे ने।

महापुरुषों के कहने के साथ युग पलट जाते हैं। महांपुरषों की बात कहने से कृष्ण अवतारी हस्तियों को तीरों का शिकार बनना पड़ा, महांपुरषों की बात कहने से राम चन्दर जैसे धर्म पुत्र को रोना पड़ा, दशरथ जैसे धर्मी राजाओं को मौत की घोड़ी चढ़ना पड़ा,

महांपुरुषों की बात कहने से चलते दरियाओं को रुकना पड़ेगा, महांपुरुषों की बात कहने से सूर्य चढ़ने से भी रुक गया। महांपुरुषों की नज़र में और रसना में बड़ी बर्कतें हैं।

''साधू बोले सहज सुभाए साधू का बोला बिर्था न जाए।''

भाई जवाहर सिंह जी नराज़गी की बातें कहकर चले गए। महाराज जी कुछ दिनों बाद बिमार हो गए। महाराज जी की शूगर बढ़ने लग पड़ी। शरीर निढाल सा हो गया। चलने फिरने से भी रह गया। बाबे सरमुख सिंह जी ने भाई जवाहर सिंह जी के पास जा कर बेनती की, ''महाराज जी। कृपा करो! मेहर करो! राजा साहिब जी तो बड़े ही कमज़ोर हो गए थे, साधू की अवज्ञा साधू से ही दूर हो सकती है, आप जी कृपा करके तंदरुस्ती बख्श दो।'' भाई जवाहर सिंहजी कहने लगे, ''अगर सतिगुरुओं की शरण आ जाएगा तो सतिगुरू बख्श देंगे। महाराज जी धीरे–धीरे गाँव झिंगड़ी सतिगुरू की शरण में चले गए बेनती के रूप में एक सवैया उचारण किया :–

''हौं मसकीन हूँ दीन अती कर बख्सनहार तूँ साहिब मेरा,
मैं महा मंद अती मत अन्धन जांणिआ है गुण सतिगुर तेरा।
दीन दियाल दया निध जी इह भूलणहार है मूड़ घनेरा।।
हार पड़ा दर आप के मालिक, दास भगवान नदान यह चेरा।।''

जब सतिगुरूओं की उस्तत की, भाई जवाहर सिंह जी ने खुश हो कर वर दिया, ''तूं तो वरों के दाता होगा तुझे तो कुतब भी सलामें करेंगे।'' अपने पास बुला लिए बस उसे ही दिन उसे ही पल बिमारी दूर हो गई। महाराज गाँव झिंगड़ी ही रहने लगे।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

साखी सरदार हरनाम सिंह से हुई

एक दिन की बात है महाराज ईशर सिंह की हवेली से उठकर गाँव लालोमजारा की तरफ से होते हुए गाँव गुणाचौर की तरफ एक पीपल के वृक्ष के नीचे थड़े पर आ बैठे। दो खण की पीपल के नीचे कुटिया भी बनी हुई थी। आप जी जहां सात दिन रहे। हरनाम सिंह प्रसादा हर रोज़ तैयार कर के लेक कर जाते, महाराज प्रसादा आप न छक कर, जानवरों या कुत्तों को पा देते। सात दिन इसी तरह ही निकल गए। हरनाम सिंह का दिल बड़ा भय से डरने लगा, पता नहीं मेरे से क्या भूल हो गई। सच्चे पातशाह आप प्रसादा क्यों नहीं छकते। निराहारी ही रहते हैं। आठवें दिन हरनाम सिंह ने प्रसादा तैयार कर के मन अन्दर पक्की धार ली। आज मैं भी नहीं छकूँगा। अगर महाराज आप छकेंगे तो मैं छकूंगा नहीं तो मैं व्रत ही रख लूँगा। पहले हरनाम सिंह जब प्रसादा तैयार कर के आप घर से चलते थे छक लेते थे क्योंकि पता नहीं था होता कि कब वापिस आए या किस तरफ आप जी दूर चले जाते थे। इस लिए पहले ही छक लेते थे. उस दिन खाली पेट ही प्रसादा ले कर चल पड़े। जब हसूँ हसूँ करते गुलाब के फूल जैसे खिड़े चेहरे के दर्शन किए. चरणों में शीश रख कर तपते सीने को ठण्डा किया। आगे घट घट की जानने वाले दरगाह के मालिक हरनाम सिंह को कहने लगे, ''नामा! प्रसादा छक आना था। हमारा क्या है हम छक ले छके बिना जिस दरगाह में आना जाना हो उसको कोई फर्क नहीं पड़ता, जिसका उस देश की सैर कर लेता होता हो वो अमर हो जाता है, उस देश के नज़ारे अनोखे ही हैं।'' उस के ज़रीए महाराज इस तरह फरमाते हैं:–

''खस खस समान न हुई छिद्र निराकार, निरवैर निरदोख ऐसा
मिट जाए संकल्प विकल्प सारे सच झूठ न रहे संतोखु ऐसा।।''

''अकल शक्ल से परे प्रेम नगर जहाँ बजदी नाम की तार उहो
चशमा लगीयां आमदी चैन ऐसी नाहीं मिलदी बिच बाज़ार उहो।''

''इस शहर की सब वस्तुएँ नाम के ही आधार हैं।'' इस सुन्दर शहर के बीच एक और सुन्दर महल है जिस की दीवरों किसी दर्पण जैसी, शैह की हैं, हीरे पन्ने मोतियों से जड़त हैं। इस महल की छत कोटां सूर्य, तारों की तरह किसी चमकीली वस्तु से जड़ी हुई है, इस महल के अन्दर एक तख्त है जिस की जड़त की सिफत इन्सान की कलम नहीं लिख सकती। उसे जगमग करते तख्त की झलक और चमक तो करोड़ों बिजलियों की चमक को भी मात पा रही है।उस जगमग करते तख्त पर कोई दिव्य ज्योति सरूप बैठा है, जिसकी तीखी करोड़ों सूर्य जैसी ताब को देख कर आँखे धुन्धला जातीहैं, जिस की कोई सूरत या शकल नहीं।''

''देखो तो सारे खण्डो ब्रह्मण्डों में रचा हुआ है सब को जी दान देवणहार है। उस के दर्शनों का रस कथन से परे है। इस दिव्य जोति सरूप की अमर हुई किरने जिस को छूह जाती है, अमर ही कर जाती हैं।''

जित दर तख मुहम्मदा, लख ब्रह्मा बिशन महेस

इस तरह महाराजा नाभ कंवल राजा साहिब जी ने हरनाम सिंह जी को अकाल उस्तत सुनाई और कहने लगे ''नामा लाला हमीर चन्द की दरगाह में बड़ी मानी जाती है। खुदा के घर लाला वज़ीर हैं, लाला जी कहते हैं, चीज़ तो सारी तेरी ही थी भाई। जवाहर सिंह पर तो

नज़र ही की थी। नामा हमारे जिम्मे करतार बड़ी भारी डिऊटी लगाई है, जीवों का उदार करना भूले हुए जीवों को सीधे रास्ते लगाना, सच्च का चक्कर चलाना, करतार के नाम का होका देना भले कामों से ही भला होता है। यह करतार की ओर से हुक्म हुआ है।''

बोलो भाई वाहिगुरू।।

साखी भाई जवाहर सिंह जी के ज्योति–जोत समाने की चली गुरमुख माया में उदासी

भाई जवाहर सिंह का गाँव झिंगड़ा, तहिसील बंगा ज़िला नवांशहर आप जी ने गृहस्थ आश्रम में रहते हुए एक बड़ी ऊँची पदवी हासिल की। यह जन्म से ही आये गये संतों की सेवा करते थे। सेवा करके ही आप जी ने लाला जी को गाँव झिंगड़ी ले आए। इनके साथ ही नाभ कंवल राजा साहिब जी को जौहरियों की तरह लाला की परीक्षा लेकर ऐसा प्रेम जाल पाया कि किसी पासे जाने नहीं दिया। गंगादास जैसे लोगों ने डाकू बन कर कई बार भाई जवाहर जी के गोद के लाल को चुराने के लिए बहुत ही यत्न किए पर भाई जी बड़े बुद्धिमान थे। अच्छे पहरेदार सिपाही थे। गंगा दास की पार्टी का दाह न लगने दिया। इनके प्रेम सदका हमारे दुआबे की धरती को भाग लगे हुए हैं जगह जगह जीवों के भले के लिए महाराज जी ने पुल बाँधे हुए हैं झिंगड़ां, मजारा, रहिपा, बल्लोवाल, गोसलां, सुज्जों, आप जी के जद्दी गाँव मन्नणहाना में भी धाम है। नाभ कंवल राजा साहिब जी के धाम रचे हुए हैं। भाई जवाहर सिंह जी गोबिंदपुर चले गए। गोबिंदपुर भी इनका भाईचारा शरीका रहता था। कुछ दिन गाँव

गोबिंदपुर मिलकर वापिस आए। गोबिंदपुर के वसीवें पर जब आये एक चलते खूह (कूएँ) पर स्नान किया कूआँ चलाने वाले आदमियों को कहा, ''जहां भी कोई राही जाते हुए शरीर छोड़ दे वहाँ ही उस का संस्कार कर देना चाहिए है। यह संदेश हमारा कह देना।'' इतना हुकम देकर कुएँ से चल पड़े निकट ही रास्ता था। रास्ते से होकर एक साफ ही जगह असली सेज ढूंढ ली सुच्चे पानी का छीटा दे कर कुछ चिर चौकड़ी मारकर बैठे रहे। ''घलै आवहि नानका सदै उठि जाए।। जीवन यात्रा खत्म हो गई। गड्डी आई मुसाफिरा जाने वाले, चढ़ गए साथी तेरे नाल दे जी।''

उधर महाराज जी गाँव झिंगड़ां में बैठे हुए यह दोहरे उचारन किए:–

(दोहरा)

- भगवान दास गुरू मननीए कामल वली फकीर।।
  रसते रसते जांवदा देवे छोड़ शरीर।। दोहरा।।
- भगवान दास गुरू गिआत सै ऐसे कीओ चलाण।।
  प्राणों की गठ खोलके वाणी से निरबाण।।५।।
- बंगै सैहर से मील दो पछम ओर पछान।।
  यादगार तह गुर की गोबिंदपुर ही दरमिआन।।३।। दोहरा।।
- श्री जवाहर मृिगिंद को बार बार परनाम।
  जिन के हौं प्रसादि से जानिओ नामी नाम।। दोहरा।।
- कहि मुख उपमा हौं करौं सतिगुरू गुणी निधान।
  मो जैसे मति मन्द को कीनो आत्म ज्ञान।। दोहरा।।
- श्री जवाहर मृिगिंद के गुर को भी परनाम।
  गुर को भई प्राप्ति मिलिओ है मोहि राम।। दोहरा।।
- बिच हजूरी मरतबे रहंदे सुबहा साम।
  सतिगुर के गुर औलिया हंबीर चंद जी नाम।।''

आखिरी समय आ गया। आप सफैद चादरे का तंबू ताण कर सो गए। ''साजन मेरे रंगुले, जाए सुते जीराणु'' आत्मा अपने असली सरूप में जा समाई।

जिउ जल महि जलु आए खटाना।।
तिउ जोती संग जोति समाना।।

इस जंगल में शरीर छोड़ गए भाई जी की खबर अभी किसी को नहीं लगी। इस पवित्र देहं में आप प्रकट हो कर लाखों ही जीवों का उदार किया। इस का रोम–रोम पवित्र हो चुका था। यह राही सफैद चादर ताण कर सो रहा है। न हिलता, ना ही बोलता काफी राही इकट्ठे हो कर जा रहे थे। इस राही के एक तरफ बैठ गए। कई साथ बूढ़ी औरतें भी थीं। कही अफसोस जा रहे थे। बैठे–बैठे एक माई की नज़र पड़ी क्या देखा शरीर के अंग सभी ही ढीले पड़े हुए थे। धीरे से जा कर देखा मुसाफिर सदा की नींद में सोया पड़ा। दुनियां के सारे रिश्ते तोड़ कर किसी ने जा कर गोबिंदपुर खबर की। भगत जवाहर सिंह कल्लरों में ज्योति–जोत समाये हैं। सारे गाँव में बिजली के करंट की तरह खबर का पता चला गया। सभी लोग भगत जी के पास पहुँच गए जहों आपजी सूखों की नींद सोए पड़े हुए थे। काफी इकट्ठ हो गया। गाँव वासी लोगों ने सलाह की कि हमारा भी हक बनता है कि इनका संस्कार अपने गाँव गोबिंदपुर ही कर दिया जाए। इधर महाराज जी गाँव झिंगड़ीं बैठे थे। इंदर सिंह को बुला कर कहा, ''बहुत जल्दी से जल्दी गाँव गोबिंदपुर चले जाओ, सतिगुरूओं के हुक्म की बेअधवी हो रही है।'' आप जी कहने लगे ''इधर आप चलो हम भी आ रहे है।'' गोबिंदपुर के लोग पालकी

बना कर भगत जी की पवित्र देह उस पालकी में रख कर गाँव की तरफ लिए जा रहे थे।

गाँव झिंगड़ां की तरफ एक आदमी को संदेश देकर भेजा। संदेश वाला आदमी भाई इंदर सिंह जी को रास्ते में ही मिल गया। सारी कहानी कह सुनाई और गाँव झिंगड़ां के आदमियों को जैसे जैसे पता चलता गया कलेजा पकड़कर, आँसू बहाते हुए गोबिंदपुर को चल पड़े थे। जनता बड़ा ही विरलाप कर रही थी। हमारे सहारे का सूर्य छिप गया। उधर महाराज जी ने ईशर सिंह की हवेली आ कर कोठड़ी के अन्दर जा कर कुण्डी लगाई। एक आँख मीटने और खोलने से झिंगड़ा से गोबिंदपुर पहुँच गए थे। आगे भाई जवाहर सिंह जी का भाई और चाचा पवित्र देह पालकी में रख कर घर ले गए थे। गाँव वाले लोग कहने लगे कि भगत जी का संस्कार यहां ही किया जाएगा! आपस में झिंगड़ों वालों का और गोबिंदपुर वालों का झगड़ा बढ़ गया। महाराज जी ने कहा कि सतिगुरूओं का हुक्म आपने ने नहीं माना। आप जी का हुक्म पर उसे ही जगह संस्कार करने का था जिस जगह आप जी जोति–जोत समाए थे। अब उस हुक्म की उल्लंघना की गई है, अब सतिगुरूओं की पवित्र देह का संस्कार गाँव झिंगड़ी लाला जी के चरणों में ही किया जाएगा जैसे कि महारानी जिंदा ने अंतिम समय अपने पुत्र दलीप सिंह को कहा था कि "मेरे लाल! मेरे अंतिम आँसू। यह हड्डियों की मुट्ठ मेरे पति जी के चरणों के पास ही दफनाएं जाएं, प्रदेश में न रहने दिए जाए, पंजाब की धरती ले जाना।" महाराजा रणजीत सिंह की समाध लाहौर थी, रानी की देह बंबई से आगे ना ले जाने दी, वहां ही समाध है।

ऐसे ही बड़ी सरकार का जब हुक्म हुआ था फिर किसी की मजाल नहीं कि हुक्म उल्लंघना की जाए। इस से आगे कोई अपील

नहीं थी। महाराज के हुक्म से भाई जवाहर सिंह जी की पालकी उठाई गई। बड़ा ही भारी मेले जैसा आकार था। पीछे काफी खलकत का जलूस था। शब्द पार्टी ढोलकी–छैणों के साथ शब्द पढ़ती जा रही थी। आगे आगे बैंड बाजा बजता जा रहा था। गोबिंदपुर से भगत जी की पालकी गाँव झिंगड़ी पहुंच गई। महाराज जी के हुक्म से पालकी ढाबीं लाला जी की समाध के पीछे की तरफ लाला वली जी के हीरे सुच्चे मोती शिश का आसन लगा दिया। चिता चिनी गई, संगत ने नारियल, छुआरे और मेवों के थाल भरकर लाये। चिता को हवन कुण्ड बना दिया हलवा प्रसाद की देगे तैयार की गई। उस पवित्र शरीर का स्नान करके कीर्तन सोहिले का पाठ करने उपरंत अरदास की। भगत जी के शरीर को चन्दन की चिता ऊपर रखकर महाराज जीके हुक्म से आग लगा दी गई। हलवा प्रसाद बाँटा गया।

भाई जवाहर सिंह जी अच्छाई के पुन्ज, सोने जैसी सुखी ज़िंदगी 82 साल तीन महीने तेरह दिन उमर भोग कर इस संसार को सदा के लिए आलोप हो गए। इन की समाध झिंगड़ी है।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

भाई जवाहर सिंह जी के जोति–जोत समाने के बाद बाहरी गाँवों की संगत अफसोस के लिए महाराज जी के पास आते रहे। महाराज जी काफी समय गाँव झिंगड़ी ही रहे। पिता मंगल दास जी पहले काफी चक्कर में रहते थे। एक दिन ज़िला लुधियाना में कोई अच्छी पहुंच वाले साधू मिले। उन्होंने मंगल दास जी से कहा, ''आप ऐसे ही जंगलों में तकलीफें झेलते रहो।'' आपके घर विष्णु भगवान अवतार पुत्र के रूप में आयेगा। संसार का उदार करेगा। आप के तो इक्कीस खानदानों के ही बेड़े पार हो जाने हैं। उन महांपुरुषों कां वचन सुनकर मंगल दास जी ज्यादा गाँव लोदीपुर या मुकन्दपुर रहने लगे। एक

दिन मंगल दास जी महाराज जी को मिलने के लिए गाँव झिंगड़ी गए। पाँच सात आदमी मंगल दास जी के साथ भी थे। गाँव जा कर महाराज जी का पता किया। हवालदार नत्था सिंह जी को बताया, महाराज जी गाँव रटैंडे की ओर टिब्बों पर बैठे हैं। मंगलदास जी और सारे आदमी आप जी पास गए। नत्था सिंह साथ ही गया। महाराज जी ने अपने पिता मंगल दास जी को सिर झुका कर नमस्कार की। भाई जवाहर सिंह जी के जोति जोति समाने का आप जी ने आप जी के पास अफसोस किया। आपस में काफी बचन विलास होते रहे। मंगलदास जी कहने लगे, ''भगवान दास। अगर आप घर जा कर अपनी नंबरदारी की संभाल करो, शादी भी करवाओ अपना वंश चलता रहेगा, मेरे दिल में यह बड़ी इच्छा है। मैं वंश रखने खातर बड़े कष्ट सहन किए हैं कई जग किए कुँएं लगवाये। बड़ी घोर तपस्या की, कई परमात्मा को ताने मारे तो जा कर कहीं मेरी झोली में खैर पड़ी थी'' यह मोह वश मंगल दास जी ने वचन किए। मोह वश भी क्यों न होते? एक तो बुढ़ापे की अवस्था में पुत्र का मुखड़ा देखना नसीब हुआ। दूसरे आप जी सुन्दर चिहरा मन सोहनी तस्वीर, अवतार हस्ती थे। तन मन दर्शन कर के शीतल हो जाता था। कई यत्नों के साथ महाराज जी ने बड़ी धीमी आवाज़ से पिता जी को कहा, ''पिता जी। हम अब घर नहीं जाऐंगे, इस ख्याल को ही भूल आओ। जब घर–बार छोड़ कर सन्यास धारण किया जाए तो वापस फिर गृहस्थ आश्रम धारण करना धर्म नहीं है। जब साधू बाणा पहन लिया जाए फिर दूसरों के साथ मिलना कैसा? सन्यास धारण करना हो तो पहले ही मान अपमान, सके सबंधी, बहन भाई, रिश्तों को त्याग करना पड़ता है।'' अब हमारा रिश्ता किसी के साथ नहीं रहा?'' इस तरह पिता प्रति उपदेश कर के आप जी एक स्वैया बोला :–

स्वैया

है कब बीच ओह बंधन आवत जो फकीर सनासी।।
हाथ उठाय संधउरा लीओ जब फेर क्यू लोटत हैसती खासी।।
जाण बिरस त्याग पदार्थ पावत हाथ करे जगु हासी।।
दास भगवान नहीं फस बैठत बेपरवाहि जो बृित अकासी।।६०।।

''कोई नंबरदारियां करे, हमारा वास्ता नहीं घरों के कामों से। हमारे जिम्मे करतार ने बड़ी डिऊटी लगाई हुई है। हम तो सारे संसार की यात्रा करनी है। आप चलो बस्तर पहनो आगे जाने के लिए'' आप जी ने ईशारा किया पर इस रमज को कोई भी पहचान न सका। मात लोक को छोड़ कर परलोक जाने के लिए रमज मारी। यह छुपी हुई रमज थी। सुंदर सिंह को 13 गज सफैद लट्ठा एक पगड़ी मुकंदपुर से लाने का हुक्म किया। (सुन्दर सिंह जो महाराज जी का गुर भाई था) सुन्दर सिंह जी झट पट जा कर एक कपड़ा ले आए। ला कर महाराज जी के आगे धरकर नमस्कार की। महाराज जी ने लट्ठा सिरोपाओ पिता मंगलदास जी के चरणों पर रखकर नमस्कार की। मुँह से वचन किया ''जाओ करतार बेड़ा पार कर सी।'' किसी को क्या मालूम था कि ये समय अन्तिम मिलाप था। यह आखरी मुलाकात कर रहे थे। पता नहीं कि सफैद लट्ठे की तह के अंदर एक टिकट भी पिता जी काट दी थी। इस पोटली के अंदर लंबे रास्ते के रास्तों का खर्च भी बाँध दिया था। अब पास धुर का ही बना दिया। एक फल महाराज जी ने अपने हाथ से पिता जी के हाथ पर रखा। यह अमृत फल किसी ऊँचे और सुच्चे देश से आया था। इसके छकणे से बाबा मंगल दास जी का हृदय बसंत ऋतु के आकाश की तरह शुद्ध हो गया। अंदर कोई गैबी ही झलक

पड़ने लगी। कोई अनोखा ही रंग चढ़ गया। बड़ा सरूर सा आ रहा था। आँखें ज़बरदस्ती मिलती जा रही थीं। दुनियाँ मैली–मैली लगती है। संसार सपना नज़र आने लगा। अब किसी और ही देश जलवे नज़र आने लगे। अब कल्पना नहीं रही। महाराज जी उठे और कहने लगे, ''पिता जी। चलो विदा कर आयें।'' एक फरलांग महाराज चले आये फिर पीछे मुड़े मंगल दास जी धर्मशाला गाँव मुकंन्दपुर में आ कर आसन लगा दिया, यह अन्तिम आसन था। समाधि लग गई सरूप में लिवलीन हो गए। अब कोई भूख प्यास नहीं रही, कोई ग़ैबी ही नशा पिया हुआ, अनोखा ही अनन्द आ रहा है।

बस बुलाओ नहीं हमको, कोई नसा न सा कीआ है हमने।

अब दुनियाँ के रिश्ते सब दूर हो गए, अब किसी ऊँचे और सुच्चे देश की झलकें पड़ने लगीं।

बाणी।।

तन मन ठण्डा छाती सीतल छंद गोबिंद गुण गाए।
चसमा लंगीं आमदी चैन ऐसी नाहीं मिलदी बिच बज़ार ओहो।।

सात दिन और सात रातें निराधार नाम के नशे में ही बदेह होकर पड़े रहे। आठवें दिन सुबह चार बजे तड़के बड़ी तेज़ चमक वाली रौशनी हुई। पास बैठे सेवादारों की आँखें बंद हो गई। अमृत के वक्त देवतों को अमृत बाँटा जा रहा था। मंगल दास जी भी आज जीवन यात्रा संसार की पूरी करके किसी नयी दुनियाँ के वासी बनते धीरे–धीरे इस संसार से आँखें मीटते मीट गए। सुआस चलते चलते चलने से रुक गया। यह जो हँसता खेलता, सुनता बोलता, नाचता, ठण्डे –गर्म, मीठे स्वाद

परखता मिट्टी का खिलौना चुप–चाप, नहीं हिलता, नहीं बोलता, बड़े सुखों और आराम की नींद सो गया। मंगल दास जी जोति–जोत समाए। मुकन्दपुर के लोगों ने इकट्ठे हो कर संस्कार का प्रबन्ध किया। कुछ बुर्ज़ुग आदमी कहने लगे। महाराज जी राजा साहिब जी को भी पता देना चाहिए कि सभी लोगों ने सलाह अच्छी समझी। कुछ आदमी पंचायत के आप जी पास गए आप निकट ही खेतों में बैठे थे। मंगल दास जी के जोति–जोत समाने की सारी कहानी कह सुनाई। हाथ बाँध कर सभी ने बेनती की, ''अपने हाथों से चलकर संस्कार करो क्रिया कर्म कराओ।'' आप जी ने कहा, ''प्यारे गुरमुखो। आप जाओ जा कर पिता जी का संस्कार गाँव मुकंदपुर में ही कर दो। क्रिया कर्म पिता जी का हो गया है। पिता जी की आत्मा अपने सरूप में जा समाई है। धर्म राज के दरबार में अब कोई लेखा–जोखा नहीं रहा।''

हुक्म मान कर पंचायत ने वापस मुकन्दपुर आ कर पातशाह का हुक्म कह सुनाया। सारे गाँव की संगत ने इकट्ठे होकर एक पालकी बनाई। दुकानदार दुकानें बंद कर के मेवे ले आया। मंगलदास जी का स्नान करवाया गया। आप जी ने सफैद लट्ठे की तह खोली एक अलफ़ी बनाकर गले में डाली। धोती बना कर लगाई। महाराज के हाथों का बख्शा हुआ सिरोपाओ (लसूड़ी रंग का चीरा) बापू के सिर बाँधा गया, केसर गुलाब का छिड़काया गया मलमल पा दी गई। अब फूलों जैसे तपस्वी जी की सुंदर देह को हल्की सी चारआदमियों ने उठा कर बनी काठ की घोड़ी पर चढ़ा दिया, ऊपर सफैद धूप जैसा लट्ठे का चादरा पा दिया। यह झलमन झलमन करती पालकी को चार कहार उठा कर चल पड़े। ब्राह्मण लोग गरुड़ पुराण की सूत्र पढ़ते जा रहे थे।

इस सुन्दर काया को आग की भेटा कर आए। फुलियाँ का प्रसाद बाँटा। हरिद्वार जा कर बाबा मंगल दास जी के फूल उतारे

गए और भी सब क्रिया क्रम कराया। सप्ताहिक भगवत का पाठ करवाया, गरुड़ पुराण का भोग पवाया। इत आदिक क्रम मुकंदपुर के लोगों ने इस वैरागी जी के करवाए। इस तरह निरंकार की भक्ति कर के गाँव मुकंदपुर ज़िला नवांशहर में संत मंगल दास जी जोति–जोत समा गए। बोलो भाई जी वाहिगुरू।।

साखी भगत माने से हुई

एक दिन महाराज जी गाँव लड़ोए के खेतों में बैठे थे। माना सरदाई बना कर महाराज जी के लिए ले गया। माने के दिल में बड़ी ही खुशी थी। चलते हुए दिल सोच में पड़ गया। मन में कहता महाराज, जी के चोज तो सारे अवतारों जैसे ही हैं। हर दिन महांपुरुषों जैसी कहानियां देखते हैं। पिछले गुरू पीर जहां भी कोई बैठते थे, रहती दुनियां तक निशानी तीर्थों के रूप में रच देते थे। हमारे गाँव कोई तीर्थ या गुरुद्वारा बना दें तो अच्छी बात है। इस तरह माना मन में फुर्नों की माला फेरता आया। जब महाराज जी के आगे गए। सरदाई की गढ़वी आगे रख दी और चरणों में नमस्कार की। महाराज जी ने माने के अंदर की बूझ कर माने को एक नक्शा बना कर कहा, ''माना यह क्या है?'' माना को याद भूल गया कि मैं क्या कुछ दिल में माँग करता आ रहा था। कहने लगा, ''जी आपकी आप ही जानते हो'' महाराज जी की तरफ से हुक्म हुआ'' देखो माना बिजली घर बना हुआ है। पहाड़ के सीने को चीर कर संसार के कोने कोने अंदर रोशनी जगती देख, माना यह देख नहरें वग रही हैं। खेतों को पानी लग रहा है। ऐसी कई रमज़े माने को मारी। बचन माने से कर रहे हैं, काम परमात्मा की दरगाह में हो

रहा है। कोई गुप्त महफल जुड़ी हुई। जैसे कोई जज साहिब हुक्म लिखाई जाता हो, इसी तरह आप जी हुक्म लिखा रहे हैं। माने को हुक्म किया, ''माना! कुछ हटकर बैठ।'' जब माना पीछे दस कदमों पर बैठ गया। कई बड़े–बड़े इंजीनियर, महान शक्तियाँ, विश्वकर्मा जैसे देवते इस महफिल में शामिल हुए। कोई गैबी विचारें हो रही हैं। दुनियां का बंदा नहीं समझ सकता इस इलाही मीटिंग की बात को इस जुड़ी हुई महफिल के मैंबरों की लिखित पढ़त कहाँ हो रही है? इस बड़े इजलास की शोभा देव लोग में तेती करोड़ देवते भी कर रहे थे, इलाही दरबार है। माने की सुरत गुम हो गई। माना एक डक्का ले आओ। जब माना डक्का ले आया। डक्के को सरदाई की भरी हुई गढ़वी में खड़ा करने का हुक्म किया। माने के मुँह से सहज सुभाअ ही निकल गया, ''सरदाई में डक्का नहीं खड़ा हो सकता।'' डक्का सरदाई में खड़ा किया तो एक तरफ को गिर पड़ा। पातशाह का हुक्म हुआ, ''मानां। हमारी मर्जी अभी ही यहाँ अमृतसर बना देने की थी, अब समय पा कर बनेगा।'' माने को इस खेल का पता चला महाराज जी तो कोई नक्शा बना रहे थे। मेरे से भूल हो गई। सात बचन कह कर गढ़वी में डक्का खड़ा कर देना चाहिए था। माना लगा बेनती करने, ''सच्चे पातशाह। मेरी भूल माफ करो जो कुछ आप जी बनाना चाहते थे सो ही बना दो, ''माना बेनती करता बैराग करने लग पड़ा। महाराज जी ने माने को धीरज दे कर कहा, ''माना! तेरा नगर और वरों का दाता बन गया, तेरे गाँव का पानी दुखियों के दुख दूर करा करेगा, माना तेरे गाँव में दुनियाँ राजी हो कर जाया करेगी। तेरे गाँव लोग दूर–दूर से आ कर दर्शन करा करेंगे, माना तेरे गाँव का नाम दुख भंजन होगा, वैलायत में इस का नाम ऊँचा होगा।''

बैंत

पीरां पुरी है इस दा नां धारिया,
इहनू मन्नेगा कुल जहान माना।
इहदी धूम पैसी में दुनियां के
मूहरे निवेगाकुल जहान माना।
दूरों दूरों आवण लोको वरों सावण,
खाली जावे ना कोई जहान माना।
जे कोई दुखी आवे झट होए राजी,
कोई लगे न फीस जहान माना।
लाले आल महल्ले दा नां धरिया,
जिथे मिलेगा अमृत पान माना
सुक सड़ियां ते छाया दे मारियां दे,
करे पलक दे विच कल्याण माना।

इतने समय को माने का पोतरा गंगा सिंह आया। आ कर चरणों पर नमस्कार किया। गंगा सिंह भी माने के पास ही बैठ गया। माने ने देखा कि इस वक्त महाराज बहुत मिहरों के घर में बैठे हैं, कुछ घर के लिए भी माँग लें। अपने गंगा सिंह पोतरे की बाजू पकड़ कर बेनती की कि इस नलायक की रोज़ी का कुछ बना दो। आप जी सारे खज़ाने के मालिक हो, यह बहुत नलायक है कोई काम काज नहीं करता, यह तो अवांरा ही घूमता रहता है, इस को सुमत्त बख्शो जी। महाराज जी ने गंगा सिंह की तरफ मेहर की नज़र भर कर देखा। हुक्म किया, माना! जाओ दो रोटियां इस की हमने ला दी हैं।'' पता नहीं उस इलाही प्रीतम की एक बार देखने में क्या शक्ति, बरकतें थी गंगा सिंह के अंदर सुगन्धी की तरह सच्चा उपदेश रच गया।एक महीने के अंदर–2 ही फौज में जा भर्ती हुआ। अच्छा लोग सिपाही

बन गया। तीन साल जब नौकरी करते हो गया, एक बाजू पर जख्म हो गया, साहिब के पेश किया। हुक्म पहले ही जारी हो चुका था। दरगाही कलम वह चुकी थी, हुक्म हुआ, जाओ पैनशनियों नाम दर्ज किया। घर जाने की इजाज़त दी गई। गंगा सिंह ने अब सारी ज़िंदगी का राशन बुक करवा लिया। वाहवाह मेरे साहिब तेरी छुपी हुई रमजों का कौन भेद पा सकता है?

नदिया विचि टिबें देखाले थली करे असगाह।।
कीड़ा थापि देई पातशाही लसकर करे सुआह।।

गंगा सिंह गाँव झिंगड़ी बड़ी आराम की ज़िंदगी बसर कर रहा है, पैनशन लगी हुई है।

बोलो जी भाई वाहिगुरू।।

साखी संत भूरी वालों की हुई

एक दिन महाराज जी गाँव मल्ले की तरफ टहलते जा निकले। भाई जवाहर सिंह का पोतरा इंदर सिंह का पुत्र चरन सिंह जिसे महाराज जी मन्जी से उठाये ले जा रहे थे, हुक्म किया, ''बूझा। बाग में चला चल'' सीधे खेतों खेत मल्ले के बाग में चले गए। एक साफ सी जगह भंजी रख कर आप बैठ गए। इतने समय को माना सरदाई ले कर पहुँच गया।चरन सिंह को महाराज जी कहने लगे, ''बूझा। जाओ भूरी वाले परम हंस को बुला लाओ। माने को कहने लगे, भूरी वाले अच्छे बरकत वाले साधू हैं, अगर हम कहीं न मिले तो इस की सेवा ही कर लिये करना इनकी ही सेवा हमारी सेवा है। सुरें मेरे में ही आकर मिलती

हैं।'' भूरी वाले संत बहुत ही अच्छे और रंगे हुए साधू थे। इनकी चाली बड़ी ऊँची और सुच्ची थी। इनकी समाध गाँव माहलीं बनी हुई है। गाँव मल्ले ब्रेदियाँ की तरफ. इनके गाँव मल्ले बहुत ही सेवक थे। किसी को क्या पता कि महाराजा राजा साहिब जी बाग में क्या काम सँवारने के लिए आए हैं? गाँव मल्ले कोई कहर गुजरने वाला था। इस आने वाली अलामत को दुनियां के मालिक जीवों की रक्षा करने वाले संत भूरी वाले के भगतों को पाप करने से बचाने के लिए अपने प्यारे भगत संत भूरी वाले सेवादार समझ कर मेहरबान, भगत वछल, अनाथों के नाथ आने वाले समय को समझ कर (लड़ाई भविष्य होने वाली थी) पर उपकारी इस बाग में अमन का झण्डा गाड कर बैठ गए। इस अमन के झण्डे में ईर्ष्या की आग में सड़ते हुए लोगों को ठण्ड और शीतलता बख्शनहार ऐसी हवा छोड़ी। इतने समय को एक दीवान सिंह नाम का आदमी बाग में आया। दीवान सिंह ने देखा महाराज जी हमारे प्यारे प्रीतम आए ने। जैसे भौर फूलों पर लिपट जाता है, महाराज जी के चरणों पर गिर पड़ा। कहने लगा, ''जी! हमारे धन्य भाग है, आप जी ने दर्शन दें कर निहाल किया, दास को हुक्म होए छकने के लिए क्या लाऊँ? महाराज कहने लगे, ''काका। पहले भूरी वालों को बुला कर लाओ, गाँव में कलेश बड़ गया है।'' इतने समय में संत भूरे वाले भी आ गए। संतों नें आ कर नमस्कार की। महाराज जी ने आगे से पकड़ कर हुक्म किया, ''संत जी। गाँव की तरफ बहुत जल्दी चलें जाओ, आपके जाने से भला होगा। गाँव दो धड़े हो कर झगड़ने के लिए तैयार हैं। गाँव में कलजोगणां का पहरा है।'' संत भूरी वाले कहने लगे, ''सत बचन महाराज आप साथ चलो। साधू का हृदय बहुत कोमल होता है, यह किसी का बुरा होता हुआ देख कर सहार नहीं सकते।'' संतों का शरीर पानी–पानी हो गया। संत पातशाह की बाजू पकड़ कर कहते,

''आप भी हमारे साथ ही चलो, पार्टी बड़ी खतरनाक चल रही है, आज इस पार्टी का झगड़ा आप जी की मेहर के साथ दूर होगा।'' महाराज जी ने कहा, ''चलो हम आ रहे हैं।''भूरी वाले सन्त हवा से तेज़ गति से गाँव की तरफ चल पड़े। संतों का कलेजा धक धक करता था कि हमारे जाने से पहले कहीं फसाद न हो जाए क्योंकि महांपुरुषों का हृदय फूलों जैसा कोमल, आकाश जैसा निर्मल, दूई दवैत से अलवा होता है, किसी का बुरा नहीं होने देना चाहते, हृदय में दया का बाग उपलब्ध होता है, जहाँ दया हो वहाँ धर्म का निवास होता है। इस कर के संत कालजा पकड़े गाँव की ओर भागे जा रहे थे। संत जी साहिब एक वाड़े में से सीधे जहाँ बहुत बच्चों चीखें बजती सुनाई देते थे, उधर जल्दी–2 जा रहे थे। अभी झगड़न वाली पार्टी से पीछे ही थे। आगे दोनों तरफों के आदमी एक दूसरे पर गंडा से, गंडासे बरशों का वार करन वाले ही थे। संत भूरी वालों से आगे जा कर सफैद रंग की सफैद धूप जैसी गल अलफी, गोल गोल बाजू, नाक खण्डे की धार, मस्तक ऊँचा, नैन नशीले, हसमुख चिहरा, शीश पर सोने रंगा जड़ा हुआ बिजली की झलक जैसा दोनों पार्टियों के बीच जा कर हाथ खड़ा किया। इतने समय में संत भी पहुँच गए। खबरे किस ने हाथ उठाया? एक दूसरे पर संत जी हैरान थे। जब महाराज जी को आप से आगे लड़ाई के मैदान अंदर खड़े हुए देखा, लड़ने वाली दोनों पार्टियों के शरीर सुन्न हो गए। इतने डर में हुए, पता नहीं कहीं अंदर जा छुपे, कोई आदमी संत जी महाराज के सामने न डरता आए। सब मल्ले के लोग इतना अदब और भैअ रखते थे। महाराज जी इतनी झाकी दे कर कहीं अलोप हो गए। जब माने दीवान सिंह और चरण सिंह को पता चला महाराज जी ने गाँव में जा कर लड़ाई बंद की बड़े हैरान हुए। महाराज जी तो हमारे पास से गए ही नहीं। हमारे देखते–देखते यहाँ ही रहे

हैं। महाराज जी का हुक्म हुआ, बूझा। चारपाई उठा हम चलें। महाराज जी वहाँ से उठ कर गाँव झिंगड़ा की ओर आ गए। पीछे संत भूरी वालों ने सारा गाँव इकट्ठा कर के राज़ीनामा करवाया और कसमें दिवाई अगर फिर कभी ऐसा काम किया तो हम मल्ले गाँव में पैर नहीं पायेंगे। बहुत सारी हिदायतें कर के मल्ले गाँव में अमन किया।

बोलो भाई जी वाहिगुरू।।

साखी वतन सिंह को पुत्र बख्शिश करने की चली

एक दिन महाराज जी झिंगड़ां से उठ कर दरिया की ओर चले गए। सात दिन इसी ही तरफ आप जी रहे, सावण के दिन थे। बारिशें पड़ रही थीं। वन–पर्वत वनस्पति पर सब तरफ नूर का खेड़ा खिड़ा हुआ था। सब तरफ खुशी ही खुशी नाच रही थी। चारों ओर बहार छाई हुई थी। दरियाओं का पानी छल्ले मारता था, मिन्नी मिन्नी पौण रुमक रही थी। ऐसे सुहावने समय में कहीं सूखे और बिन भागों वाले कुएँ हरे करते हुए, औत जाते घरों को सौतर बनाते हुए महाराज नाभ कंवल राजा साहिब जी सतलुज दरिया की छल्लें देख कर सीधे ही मोरों वाले ढक के बीच से होते हुए रटैंडे की तरफ झिंगड़ा की जूह में भूले नंबरदार के कुएँ पर ऐकांत में ढले दिन आ खड़े हुए। निरंकार साथ लिव जुड़ी नज़र चौदह तबका पर जा कर फिरी। ऐसा दिल प्रभू की रचना देख कर विसमाद में हुआ। सुरत करतार के साथ जुड़न सार ही सब तरफ जा फिरी। किसी तरफ कोई हँसता और कोई रो रहा है। इस महांबली अवतार की नज़र जब तीन लोगों में घूमी, गाँव झिंगड़ी कोई रोता नज़रें पड़ा। आज इस दुखी की ओर से रहमत की नज़र से देखा गया। रोता नज़रें नहीं पड़ेगा पिछले रोया

हुआ भी भूल जाएगा, आज इस दुखी का नाम दुनियां में रौशन किया जाएगा। आज दुःखी की गोद में भगत पैदा होने का वर मिल जाएगा।

इस दुखी की फरियाद इलाही दरबार में सुनी जाएगी। महाराज जी मेहर के दाते खण्डों ब्रह्मण्डों के मालिक वत्न सिंह के खूह (कुएँ) पर दो वजे दिन के चले गए। वतन सिंह मोता सिंह को उठा कर हुक्म किया, ''वतन! जाओ गाँव जा कर इंदर सिंह को कहना दो सेर चीनी लेकर आए पानी तेरे कुएँ का डाल लेंगे।'' मोता सिंह पड़ी हुई चारपाई के पास बैठ गया। चरण पकड़ कर बेनती की, ''सच्चे पातशाह। दूध और मीठा मैं अपने घर में से ही ले आऊँगा।'' महाराज जी कहते, ''नहीं इंदर को ही कहना।'' वतन सिंह का कुआँ गाँव से एक मील पर है गाँव का कोई पता नहीं क्या गुजर रहा है? गाँव गया तो सारे लुहार वतन सिंह के कारखाने अफसोस में बैठे थे। वतन सिंह ने जा कर पूछा तो पता चला, कि वतन सिंह का लड़का गुजर गया है। चारे बच्चे इस से पहले मर चुके थे। वतन सिंह का दिल टूट गया था। ऊँची–2 रो रहा था, उसे लगा कि धरती का तख्त ही उलट गया था। माई संती को भी गशी पर गशी पड़ रही थी। वतन सिंह ने कुछ देर बैठ कर इंदर सिंह को महाराज जी का सुनेहा कह सुनाया। वतन कहता आप अफसोस में बैठे हो दूध और चीनी मैं अपने ही घर से ले जाता हूँ। वतन सिंह कहने लगा नहीं जो सतिगुरू का हुक्म है वैसे ही करूँगा। वतन सिंह ने कहा, ''ईंदर सिंह। झटपट जाओ यह दुनियां के रिश्ते तो झूठे ही हैं कभी जुड़ जाते हैं कभी टूट जाते हैं, मेरी उस प्रीतम जी के साथ बनी रहे।'' ईंदर सिंह जी ने घर जा कर सारा ही काड़ना दूध वाला डाल कर एक वलटोही दूध की भर ली चीनी की परात भर ली, दूध आप उठा लिया, चीनी की परात वतन सिंह को उठवा दी। आप जी का सिदकी सिक्ख इंदर सिंह अपने सगे भाई के

पुत्र का सिवा जलता छोड़ कर सतिगुरुओं का हुक्मनामा सुन कर एक मिनट भी नहीं ठहर सका। दूध मीठा ले के हाज़र हुआ, जा कर चरनों पर गिर पड़ा, गले में पल्लू डाल कर बेनती की, 'दास को क्या हुक्म हैं? दूध चीनी हाजर है, 'ईंदर! जल बना कर राहियों और घाहिओं को पिला देना। इंदर ने जल बना कर बेनती की, ''पहले आप छको।'' हुकम हुआ पहले भुल्ले नंबरदार को पिला। भुल्ले को बुला कर पहले पानी पिलाया पीछे से भाईयों को और राहियों को पिलाया, पानी काफी बच गया। महाराज जी ने वतन सिंह को कहा वो तलवंडी के हाली हल चला रहे हैं बूबे खां अनैत खां, गोर अली तीनों भाई हल चला रहे थे। महाराज जी कहते इन्हें पानी पिला दो। जल से विहले हो कर इंदर सिंह जी ने बेनती की, ''महाराज। वतन सिंह का चौथा लड़का भी मर गया है, वतन सिंह बहुत उदास हुए हैं, आप जी चलो कुछ धैर्य दो तो आप जी के बिना दुखियों का कौन सहाई है। लोक परलोक में आप की रहमते हैं। सतिगुरू मेहरबान हो कर बोले, ''लुहार लुहारी को आज पेश करो, आज ढाहिए चुराइए सब दफा कर दें।'' थिऔले का प्रसाद बना कर लाने का हुक्म किया, ''जाओ, कहना रोना नहीं है। देखो करतार क्या रंग करता है।'' इंदर सिंह जी ने महाराज का हुक्म वतन सिंह और संती को कह सुनाया। दोनों पति पत्नी ने महाराज जी का हुक्म सुन कर झट पर स्नान करके बस्तर बदल कर बड़ी सुच्चमता से प्रसाद तैयर किया। भगत भगतणी दोनों गले में पल्लू डाल कर दण्दी घास पकड़ कर झोली खोल कर, बड़ी दबी हुई चाल, नीची नज़र उस सोहने प्रीतम की ओर पुत्रों की दात लेने के लिए चल पड़े। आज झोलियां भर कर घरों को वापस आएंगे। धीरे–धीरे चुप–चाप चलते जहाँ आप जी हजूर मेहरों के साईं भगत वछल एक पानी गढ़वे बदले पुत्रों की दांते बख्शते थे, कड़ाह प्रसाद का डिब्बा आगे धर कर

चरनीं लग कर आसुओं की झड़ी लगा दी। पुत्र के विछोड़े से आग की तरह सड़ते आँसू वहाए। महाराज जी ने बहुत प्यार से वतन सिंह का सिर उठाया। हुकम हुआ, ''अब करतार भला करेगा। जाओ। सावधान हो कर बैठो।'' हजूर के सामने हाथ जोड़े बैठे हैं चरनों का ध्यान धरा हुआ है। उस पवित्र प्रसाद के अपने हाथों छोटे छोटे गोले बना कर छकने के लिए दिए सारा ही प्रसाद संती और वतन सिंह को छका दिया। कहा, ''जाओ। अब नहीं सोग होगा। भगत पुत्र जनमेगा, आपका नाम भी रौशन करेगा।एक साल से पहले–पहले ही भगत पुत्र का सोहना–सोहना मुखड़ा देख लिया। इस बालक के जन्म के साथ ही घर को चार चाँद लग गए। सोहने प्रीतम की बख्शिश हो कारण नाम भी प्रीतम रखा गया। इस के बाद और बच्चे पैदा हुए सब राज़ी खुशी हैं। प्रीतम दास बाई साल की उम्र में प्रगट हुए, हज़ारों ही रोगी इनके सामने आने से राज़ी हो जाते थे। यह बर्कतें सब नाभ कंवल राजा साहिब जी की ही थी। यह सब उनकी आत्मिक बर्कत का प्रताप था।''

बोलो भाई जी वाहिगुरू जी

साखी हाकम शाह को अंतिम समय दर्शन देने की चली

एक दिन महाराज गाँव झिंगड़ी ढाब के किनारे बैठे थे, पास माना और हरनाम सिंह, मोती सिंह, कृपा सिंह और ईशर सिंह और काफी संगत दर्शन करके रस मान रहे थे। चौदवी के चाँद जैसे सुन्दर मुखड़े की ठण्डी–ठण्डी रिश्मों की शीतलता ले रहे थे। महाराज जी संगत को उपदेश करते रहे थे।

तिंत्रण की कुड़ियाँ मदरसे के लड़के जू बिआह वाला मेल, ना हमेस है ठरावनी।।
मुसाफिर सराए मेला भारियां जहान बिच बेड़ी वाला पुरू ईहु जरुर छिड़ जावणा।।
बुदबुदा नीर इह शरीर नहीं देख भुल भजणे की बार इन पल नहीं लावणा।।
बुरज बरुद गया उठु भगवान दास बीतिया जो बेंला फेर हथ नहीं आंवणा।। (309)

इस ढंग से संगत को उपदेश किया। बैठे बैठे एक लंबी सी सांस ली। हरनाम सिंह को कहा, ''नामा! हाकम शाह याद करता है। हाकम शाह का अंत समय निकट आ गया है, अच्छा साधू तो कोई कोई मिलता है। ईशर कोटी जिसकी खुदा से रमज हो, ऐसे साधू का दर्शन किस्मत से ही प्राप्त होता है। ऐसे फकर का दर्शन ही अलामतें दूर कर देता है। ऐसे साधू के दर्शन करके कोटि ही जीव भव सागर से पार हो जाते है।'' आप जी ने ऐसे उचारन किया

कबित

आरफों की संगति में अब ही रंगत है पेख के पेशानी हांनी कोटन बीमारी है।।
नूर का बैहर आठ पैहर ही वगता है गैहर नां जांमे तामे लैहर न्यारी है।
पीएं जे प्याला शोक वाला उजियाला होए रहें मतलवा नहीं उतरे खुमारी है।।
हो जे नसीब पाएं कतरा हबीब तदों दास भगवान मिले रुतबा यह भारी है।।

इतना फल महांपुरुषों के दर्शन का आप जी ने बताया। इस तरह संगत को रौशनी पा कर झटपट उठकर गाँव करियाम की ओर चल पड़े। यहां कोई सच्चा प्रेमी आख़री ठण्डी–ठण्डी लम्बी साँस लेते हुए मंजी पर पड़ा यादकर रहा था। यह मुड्ड–कदीमां की रसम चली आ रही है, अगर कोई सच्चे दिल से याद करता हो, अपना बिरद समझ पर पैज रखता ही आया है। जैसे द्रोपति ने भीड. के समय याद किया

था ऐंरापत गमिंदर ने अन्तिम फरियाद की, एक छिन में आना पड़ा इसी तरह माहाराज जी साईं हाकम शाह को जिसकी आत्मा अन्तिम समय दर्शन को लोच रही थी। एक छिन एक पल में साईं की सारी सधरें पूरी हो गईं। साईं ने आँखें खोली, बड़े ध्यान से देखा, देख कर दिल जान रोम रोम शीतल किया। अन्तिम सलाम किया, फिर एक बार आँखें खोली, महाराज जी ने सिर पर हाथ फेरा। यह स्वास था वापस फिर साँस नहीं ली। आँखें आधी मीटी हुई साईं की बातें खत्म हुई, स्वासों की पूंजी खत्म हो गई, दाना–पानी खत्म हो गया।

कबीर सूता किया करहि उठि के ना जपहि मुरारि।
एक दिन सोवनु होएगो लांबे गोड पसारि।।

महाराज जी हाकम शाह को अन्तिम दर्शन देकर गाँव करियाम से भधाणियां की तरफ होते हुए दरिया के किनारे रत्ते टिब्बे आ निकले। हरी नरायण संतों के पास सात दिन ठहरे, मोरों वाले ढक्क में से होते हुए रहिये सम्मुख सिंह जी के वाड़े आ गए।

बोलो भाई जी वाहिगुरू।।

साखी रहिये के लोगों से हुई

जब महाराज जी के आने का पता लगा। गांव निवासी सब माई भाई छिप की तरह महाराज जी के दर्शन को आने लगे।

बंसी है आण बजाई जबे तब भूल गई सभ कार बिहारी।।
मंथरा औ गोकल मौहि लई अते मांह लई बृज की सभ नारी।।

जैसे कृष्ण की बंसरी की सरोंद सुन कर बृज की नारी घरों के काम काज छोड़ कर, सोए हुए साईं को छोड़कर बंसरी की मध्म सी सुर सुन कर मसतानी हो कर वन की ओर वाहो दाही नस पड़ती थीं। इसी तरह महाराज जी के दर्शन के लिए नर–नारी दौड़ पड़ते थे। दूध सरदाई लोग आप जी के पीछे–पीछे लिए घूमते थे। छकते किसी हक वाले कमाई की थी। कई–कई रोज़ आप जी निराधार नाम के ही आसरे पर रहते थे, किसी की कोई प्रवाह नहीं रखते थे, चाहे कोई कितना भी अमीर क्यों न हो। सामने आने के साथ दूध से पानी अलग कर देते थे। किसी की कोई मजाल नहीं थी, दिल में कोई फरेब या कुटलता रख कर बात करे झटपट आते ही बन्दे की निशा कर देते थे, जैसा भी कोई फुर्ना दिल में धार कर शरण आता था। आने वाले का फुर्ना खोल कर बता देते थे।

सहंस नृप का मगज लै बनिओ मगज फकीर।।
सलतनत सूखम पाएके रोशन होए जमीर।। दोहरा।।
आली मगज फकीर का बणिओ मगज खुदा।।
बेखुआहसु बेगरज है आरफ उरफ गदा।।

(भगवान बलास)

महाराज जी एक दिन सरकलों वाले कुएं ऊपर जा बैठे। अतर सिंह रहिपे दर्शनों के लिए गया। अतर सिंह के दिल में घोड़ी का फुर्ना उडारी मारता था। यह कामना रख कर आप जी के दर्शनों को गया था। सामने जा कर चरनों पर गिर पड़ा। आगे सतिगुरों का हुक्म हुआ। अतरा घोड़ी रख लेनी चाहिए, बड़े–बड़े आदमियों से मित्रचारा रखना चाहिए।'' बस दरगाही हुकम मिल गया, मुकंदपुर

के सरदार कुलदीप सिंह के साथ मित्रता हो गई। सरदार घोड़ियां रखते ही थे। एक काले रंग की घोड़ी अतर सिंह को भी दे दी। अतर सिंह की जिंदगी में कई वार दिन गरीबी के भी आए पर घोड़ी खुण्ड (कीले) पर ही खड़ी रही। अतर सिंह के मरने के साथ ही घोड़ी कीले से खुल गई। फिर वापस घोड़ी नहीं आई।

इतने समय में बशंबर तेली, मंगल झीऊर, करम सिंह जुलाहा गाँव से घास काटने के लिए चले। चलने के साथ ही बशंबर कहता, ''कनिआँ की ओर घास काटने चलते हैं, साथ ही सरकूला वाले कुएँ पर भगवान दास जी बैठे हैं। भगवान दास जी के दर्शन करेंगे।'' तीनों ही सरकूलां वाले कुएँ पर जा कर महाराज जी को नमस्कार की। बशंबर को महाराज ने पेट के बल लेटा दिया दो के कान पकड़ा लिए। सोटी (छड़ी) महाराज जी पास रखते ही थे। बशंबर के तीन चार वार छड़ी मारी अच्छी बुची पुआई कहते, ''फिर कहेगा भगवान दास, हम तो जम्मू वाले राजे हैं। बशंवर लेटा हुआ ही मिनन्नतें करता था फिर नहीं ऐसे कहूँगा। जम्मू वाला राजा कहूँगा।'' मंगल और करम सिंह थर–थर कांपते, चुप–चाप हाथ जोड़े खड़े थे। महाराज जी कहते, ''सुन ओ मंगल सिंह और करम सिंह फिर इस तरह नहीं कहना। नाभ कंवल राजा साहिब कहना।'' बशंबर को भी उठने का हुकम दिया। भैंसे गाय के लिए घास काट कर ले जाओ। ऐसे महराज जी बली सब फुर्नों से जानकार थे। सब जीवों के संकल्प, विकलप को जानने वाले थे चाहे कितनी भी संगत की भीड़ हो, चाहे कोई सैंकड़े कोह दूर बैठा। मन में फुर्ना धार कर दर्शन को आता था चाहे लाखों ही आदमी इक्ट्ठे हुए हों, जिस तरह का भी कार्ज हो कर देते थे। आये जज्ञासू की निशा कर देते थे।

बोलो भाई जी वाहिगुरू।।

साखी ईशर झीऊर से हुई

उन दिनों में आप जी अतर सिंह के खेत में कुल्ला पाकर रहते थे। उस स्थान पर एक बेरी का बूटा (पौधा) था। बेरी के बेर बहुत स्वाद थे। बेरी पर नूर बरसता था। ईशर झीऊर के दिन बंगा गया, वापस आते ही (महाराज गाँव जगतपुर की ओर बैठे थे, पास से रास्ता जाता था) ईशर के मन में आया कि जाते जाते महाराज जी के दर्शन कर चलें। ईशर के पास दो रुपये चाँदी के थे। मन में सोचने लगा, महाराज जी रुपये न ले लें। ईशर ने दो रुपए पगड़ी के कोने से खेल कर लंगोटी के कोने में बांध लिए। अगर महाराज जी हाला माँगेंगे तो पगड़ी खोल कर दिखा दूँगा। लंगोटी लगा कर ऊपर चाधरा बाँध लिया। अपने मन से अच्छा प्रबंध करके चला। महाराज कुछ ओर तरफ बैठे थे।

फसलों से रास्ता फूला पड़ा था। महाराज जी एक सण के खेत के बन्ने बैठे थे। ईशर ने जा नमस्कार की। महाराज जी कहने लगे, ''छज्जू दियाँ! कहाँ से आया?'' ईशर ''मैं बंगा से आया हूँ, दर्शन को मन कर आया।'' आप जी का हुकम हुआ, ''हालां तेरी ओर था।'' महाराज की ओर देख कर ईशर ऐसे ही जेब में हाथ मार कर कहने लगा, ''आज तो पास है नहीं फिर ले आऊँगा।'' आप जी कहते, ''देख तो कहीं लंगोटी के कोने न हों।'' ईशर कहता ''जी नहीं। पगड़ी देख लो।'' पातशाह ने डंडा उठाया कहते, ''खोल लंगोटी।'' जब महाराज ने लंगोटी का नाम लिया तो ईशर का शरीर पानी–पानी हो गया। टाँगें काँपने लगीं, हाथ काँपने लगे, लंगोटी के कोने से रुपये खोलने भी मुश्किल हो गया। सारा शरीर मुड़को मुड़की हो गया। ईशर बड़ा ही शर्मिंदा हो गया। महाराज जी के सम्मुख झूठ

बोला, पर्दा उठ गया, ईशर का पिता छज्जू महाराज जी का अच्छा सेवादार था। ईशर ने दो रुपये खोलकर महाराज जी के चरणों में रख कर नमस्कार की। दोनों कान पकड़ कर आप के सामने झूठ बोलने की क्षमा माँगी और कहा, ''मेरे गुनाहगार पर मेहर करना, मैं भूल गया हूँ जी। आप जी की गती तो नहीं समझा। महाराज जी कहते, ''हमें छज्जू का प्रेम याद आ जाता है कभी–कभी कोई काम करना पड़ता है।'' ईशर को घर जाने का हुकम किया। ईशर जब दस कदम गया तो फिर वापस आने का हुक्म किया। दोनों रुपये फिर ईशर को वापस कर दिये, ''आओ पैसे ले जाओ काका! पैसे हमने क्या करने हैं।

बोलो भाई वाहिगुरू

साखी माता साहिब देवी जी को दर्शन देने की चली

महाराज जी की आयु इस वक्त बतालीस वर्ष की थी। यह बात सन् 1903 की है। महाराज जी पहले–पहल गाँव झिंगड़ाँ रहे। औसतन 15 वर्ष गाँव रहपा ही रहे बीच–बीच सारे ही आते थे मजारे, झिंगड़ाँ, गोसलाँ, मूसापुर इस तरह विचरते रहते थे। एक दिन महाराज जी ने सरमुख सिंह जी को रात्रि के समय कहा, ''माता जी याद करती है कहीं शरीर न छोड़ जायें, जा कर आयें? कई वार रात्रि को माता जी को याद किया, सुबह होने पर महाराज जी ने सरमुख को कहा, ''चलो! जल्दी ही चलें, गुरमुख को साथ लिया सीधे गाँव मन्नणहाने पहुँच गया। मंजी पर पड़ी माता को दर्शन दिये। माता जी का अन्तिम समय था दुनियाँ के सभी नाते तोड़ बैठी थी। एक अन्तिम मन में इच्छा थी, वो भी परमात्मा ने पूरी कर दी। मन बहुत नर्म हो चुका था। जब साधुओं के भेस में सीस

पर जटाह सुनिहरी रंग का त्रिलोकी के छतर की तरह शोभा दे रहा था, मुख पर इलाही जोत को सामने बैठे देख कर माता जी का कलेजा पिघल गया। पानी की फुहार बनकर प्रेम के आँसू रोम–रोम में बह गया, दिल हलका फूल जैसा हो गया। माता जी ने अपने चाँद का हाथ पकड़ कर चूमा, फिर कलेजे से लगाया। माता जी के फूलों जैसे हाथ शहनशाह के शीश पर प्यार देना चाहते थे। थके हुए माँ के हाथ ऊपर नहीं थे उठाये जाते, बस अब यही अन्तिम इच्छा प्रभु ने पूरी कर दी। तन, मन शीतल हो गया। हलका–हलका प्यार का उबाला आ कर रुक गया अब बेशक प्राण निकल जायें कोई अफसोस नहीं है। सामने बैठ सुन और मन को मोह लेने वाले आँखों के तारे की तरफ एक बार बड़े ध्यान से एक लंबी सी साँस लेकर आँखों से प्यार का अन्तिम घूँट भर कर बस अन्दर को ही पी लिया। बस फिर नहीं आँख खुली न ही वापस किसी तरफ देखा। बस अब बोलना, चलना, खाना, पीना, हँसना, खेलना सब खत्म हो गया। ऐसे ही परउपकारी भगत वछल अनाथों के नाथ, पीरों के पीर, दुनियाँ को तारने वाले, महाबली अवतार हस्ती सरूप में निज घर सदा सलामत घर बन गया है। भवजल से बेड़ा पार हो गया है।

मिटि गए गवन पाए बिश्राम।।

माता जी का आप ने हाथों से संसकार किया। सरमुख सिंह जी को रहपे जाने का हुकम किया। आप जी एक महीना मनन्णहाने ही रहे। बाबे सरमुख सिंह को हर रोज परछादा बना कर गाँव मन्नणहाने लिजाने का हुकम किया। महीने के बाद महाराज जी फिर तेरह दिन बल्लोवाल रहे। गाँव वासी लोगों ने बहुत ही बेनती की। आप जी यहाँ ही रहा करो। महाराज जी कहते भाई हम ने कहा, "जन्म भूमि देख चलें रहेंगे तो रहपे ही" आप जी की मौसी गाँव बल्लोवाल रहती थी। ताहरपुर वाली मौसी का पुत्र बिशन सिंह भी

बल्लोवाल ही रहता था। महाराज जी की मौसी उनका बहुत ही ख्याल रखती थी। हमारे पास ही रहा करो। महाराज कहते "मौसी जी! हम आप के पास ही हैं, जब याद करोगे आकर मिलेंगे। आये, साधू सन्त की सेवा करती धर्म की किरत करनी बाँट कर छकना, शरन आये की रक्षा करनी।"

"कबीर मन निरमल भएया जैसा गंगा नीर।।
पाछे लागो हरि फिरै कहत कबीर कबीर।।

महाराज बल्लोवाल के लोगों को उपदेश करने, आगे गाँव रहपे आ गये। यह साखी मुनशा सिंह गाँव गोसला वाले ने सारी सुनाई थी। बाबे सरमुख सिंह के परछादा ले जाने की भी उन्होंने सुनाई थी। गोसला गुरूद्वारा मुनशा सिंह के खेत में ही बना हुआ है।

बोलो भाई जी वाहिगुरू।।

साखी सरकुला वाले कुएँ को अबाद करने की चली

सरकुला वाला कुआँ गाँव से पूर्व की ओर एक माई पूरन देई का था। पूरन देई विधवा हो चुकी थी। उसकी एक ही लड़की थी। महाराज जी सरमुख सिंह को कहने लगे, अगर पूरन देई ऐसे कुएँ ऊपर कुछ जगह छोड़ दे, यहाँ कोई जगह बना ले।" सरमुख सिंह के कहने पर एक घुमाह खेत पूरन देई छोड़ना मान गई। जब पूरन देई के देवर शोभा सिंह को पता चला तो उसने पूरन देई से मना करवा दिया। पूरन देई ने बाबा जी को कहा, "मेरा देवर जगह छोड़नी नहीं मानता।" बताते हैं कि ईटें सुटवाई हुई थीं, सुटा हुआ मलबा भी उठाना पड़ा।

"बिन करमां किछु पाईए नाहि जे बुहतेरा धावै।।"

अगर पूरन देई जगह छोड़ देती तो रहती दुनियाँ तक नाम रौशन रहता, कल्याण हो जाता, चौरासी के गेड़ खत्म हो जाते। महाराज जी इस तरफ ही उजाड़ में रहते थे। आप जी का जटाह वाल–वाल टूट कर पिछली तरफ को लहता (उतरता) गया। कई दिन थोड़े ही वालों के साथ लटकता रहा। एक दिन महाराज जी चरही के रास्ते में पता नहीं कहीं जटह गिरा आए। महाराज जी जब सरमुख सिंह पास आए तो सरदार हरनाम सिंह झिंगड़ा से दर्शन के लिए आया। मीहां सिंह, हरी सिंह, सरमुख सिंह, छज्जू, हरनाम सिंह ने सभी मिल कर चुरीओं के रास्ते में जटह की भाल करने (ढूँढने) लगे। ढूँढते–ढूँढते जटह मिल गई सभी ने लाख–लाख शुकर मनाया, लगे वारी–वारी जटों को नमस्कार करने, सरदार हरनाम सिंह ने सभी सेवादारों आगे बेनती की यह जटह मुजे बख्श दो मैं आप सब का बड़ा ही धन्यवादी हूँगा। हरनाम सिंह जी को जटह दे दीं। इस वक्त गाँव झिंगड़ी गुरबकश सिंह के घर शीशे के बरतन में पड़ी हुई हैं।

बोलो भाई जी वाहिगुरू।।

साखी रहपे तखत की चली

एक दिन महाराज जी सुरमुख सिंह जी की कोठड़ी में बैठे थे। बैठे–बैठे करतार से लिव जा जुड़ी। सच्ची दरगाह में से कोई फुरमान हुआ। संसार के जीवों के भले के लिए कुछ करना था। इस नगर में भवजलों पार होने का पुल बना देना था। महाराज बहुत मिहरों के बीच आए हुए थे। तीन दिन महाराज़ जी अन्दर ही रह। एक लस्सी का गिलास पी कर निरअहार ही रहे. एक दिन रात्रि के समय सरमुख

सिंह को हुकम किया, हमें बुलाना नहीं होगा। सावन के दिन थे। बारिश हो कर बंद हो चुकी थी। चाँद की चाँदनी धूप की तरह पृथ्वी पर पड़ रही थी, आकाश में तारे मोतियों की तरह चमक रहे थे ''गगन में थालु रवि चंद दीपक बने।'' ठंडी–ठंडी हवा पहाड़ों की चोटियों को चूमती हुई आशिकों के दिल को खुशियां दे रही थी। रंग रतड़े बहारों के मालिक सर्ब कला से भर हुए सरब शक्तिमान, नियासरों के आसरा, निपत्तयों की पत्त, मेहरों के साई, पापियों, राक्षसों ,पत्थरों, वृक्षों, जखों, किन्नरों, गन्धरवों, पशु–पक्षियों, माणसों के तारणहारे ने आज एक सप्ताह के बाद अन्दर से कुण्डी खोली, आवाज आई ''सरमुख! इधर आओ'' सरमुख सिंह जी हाजर हुए। नमस्कार की, अन्दर से चलती सर्द हवा सीने शांत कर रही थी, अन्दर बड़ी महान हस्तियाँ बैठी थी, बाबा जी को दर्शन करवाये, महाराज जी कहते ''सरमुख! कुछ देखा। जो कुछ आप जी ने दिखाया सोई देखा।'' सरमुख। जब भी मात लोक में कोई नया निजाम लाना हो कोई तीर्थ रचना हो, कोई कानून लागू करना हो, किसी राज्य की तबदीली करनी हो हमें बड़े–बड़े व्यक्तियों को इक्ट्ठे होकर कानून बनाना पड़ता है। मिसल तैयार करके निरंकार के हुकम अनुसार काम–काज किए जाते हैं। जैसा भी इस इलाही कौसल में कानून पास हो जाता है, फिर वापस जाता नहीं। साधू की रमज निरंकार से होती है। जैसे भी वचन साधू के मुखड़े से निकल जाये। व ही दरगाह में माना जाता है। जब वेद रचे थे बची हुई स्याही महांपुरुषों की रसना पर पाई गई थी। आज सरमुख। तेरे गाँव रहपे हमने बड़ा भारी तीर्थ रचा दिया है। सच्ची दरगाह में मंजूरी हो गई। कोई दिन ऐसा आएगा, तेरे नगर में दुनियाँ यज्ञ करा करेगी, यहाँ मेले लगा करेंगे, विलायत में तेरे गाँव की लोग कहानियाँ पढ़ा करेंगे।''

गाँव रहपे को कुल दुनिया में ऊँचा और प्रसिद्ध करने का वर दे

दिया। अब हुक्मनामे कहे हुए प्रगट हो रहे हैं। कोई चार बजे जब रात्रि एक पहर रहती थी सरमुख सिंह को हुकम किया ''लस्सी ले आओ'' बाबा जी दहीं की लस्सी बना कर गड़वी ले आये। महाराज जी एक सप्ताह के बाद अन्दर से निकले। छज्जू झिऊर ने आकर महाराज जी के स्नान करवाये, पीछे से और संगत भी दर्शन को आने लगी। दूसरे पहर दिन के बाबे बूलणशाह की जगह गाँव के पास बोहड़ के नीचे आप जी आ बैठे। काफी संगत आप जी के पास बैठी। भाई वीर सिंह खालसा बरादरी भी दर्शन के लिये आया। महाराज जी का हुकम हुआ, भाई। हीर वारिस शाह की सुनाओ। वीर सिंह झट जा कर किताब ले आया। हुकम करो कहाँ से सुनाऊँ? महाराज जी कहते जहाँ राँझा जोग लेने के लिए चला था।

''रांझे उठ के टिले दा राह फड़िया।
मता होया सू कन्न पड़वावणें दा।''

वीर सिंह काफी देर सुनाता रहा। जब दिन का समय हुआ, ''सरमुख!आज कोई जगह ढूंढनी है, दरगाही हूकम है आज तखत रचा ही देना है। सरमुख सिंह ने बेनती की ''जो आप जी का हुक्म है सो करो।'' महाराज जी बोहड़ के नीचे से उठे, सारे बैठे लोग आप जी के पीछे पीछे चल पड़े। गाँव से बाहर की ओर चल पड़े। काफी जलूस की शक्ल में आदमी साथ थे। आगे राजायों का राजा तारों में चाँद जैसा शोभा दे रहे थे पीर, बली गुझियां रमजे मारते किसी और देश के वासियों के साथ बातें किये जा रहे थे, जब गाँव दो सौ कदम आगे आये। बाबा सरमुख सिंह जी ने आगे हो कर चरण पकड़ कर बेनती की, ''राहों पूर्व की ओर का खेत तेरह कनाल का है, यह ले लो।'' महाराज जी ने एक मिट ठहर कर कहा, ''सरमुख! हमारी मलकियत आगे है,'' आगे चल पड़े कसोरूआं वाले छप्पड़ के किनारे जा खड़े हुए। संगत को रास्ते

में ही खड़े रहने का हुकम किया। आप जी कुछ समय खड़े होकर रास्ता कूद कर पूर्व की ओर जहाँ अब दरबार बना हुआ है, इस खेत के बीच आ खड़े हुए। हुक्म, किया, ''यह जगह है, अगर कोई छोड़ दे।'' बाबा हरी सिंह जी भी साथ ही थे। हरी सिंह ने झटपट हाथ जोड़ कर बेनती की, ''सच्चे पातशाह यह खेत आप जी का ही है। हुक्म करो दास हाजिर है। 'महाराज जी का हुकम हुआ, ''हरिया। सारा खेत छोड़ दो।'' यह नौ कनाल कुछ मरले जगह थी।

तनु मनु धनु सभ सऊपि गुर कऊ हुकमि मनिऐ पाईए।।

महाराज जी ने अपने हाथों गैंडे की सोटी से एक पाँच फुट मुरब्बे की लकीर लगाई। इसके बाद एक लकीर और बीस फुट मुरब्बे की लगाई। लकीर लगा कर पहली लकीर वाली जगह नमस्कार करने का हुकम किया। दूसरी लकीर के पीछे जोड़ा खोलने का हुकम किया। पाँच फुट मुरब्बे की जो लीक लगाई थी। उस जगह आप जी ने आपन हाथों वभूती इकट्ठी करवाई। तीन फुट ऊँचा थड़ा बनाया। हुकम हुआ, ''यह हमारा तखत है। यहां हमारा तखत है, यहाँ नमस्कार करनी।'' थड़ा बना कर प्रसाद बाँटा, संख, घड़ियाल बजाये। भगवान राम चन्दर जी का भी यह तप करने के बारे में बताया।

बोलो भाई वाहिगुरू जी।।

इस तख्त की रचना 30 जुलाई 1905 को की।

साखी बाबा हरी सिंह द्वारा बाग लगाने की चली

हरी सिंह ने धीरे–धीरे सारे खेत के आस–पास डण्डा थोहर की बाड़ कर दी। एक चारों ओर टाहलियों की कतार लगा दी। एक बोहड़ का पौधा किसी तारीख पर लाहौर गये, वहाँ से ले आये। आ कर महाराज जी के आगे रख कर बेनती की, ''इस पौधे को

बताओ कहाँ लगाएं?'' आप जी अपने हाथों से जो कि गुरुद्वारे के पास पश्चिम की तरफ लगा हुआ, आप जी ने हाथों से लगाया। बाकी खेत में आमों के पौधे लगा दिये। एक सुन्दर बगीची बन गई। इस बगीची के बीच में नाभ कंवल राजा साहिब जी का तख्त बना हुआ था। यह परमात्मा रूपी दरबार इस फुलवाड़ी को चार चाँद लगा रहा था। इस बने हुए तख्त की यात्रा पुरनमाशी की रात्रि को आकाश से देवते भी आ कर करा करते थे। इस दरबार की पवित्र धूलि मस्तक को लगा कर जाते थे, रास मंडल करा करते थे। यह तख्त 1930 को पक्का बना दिया था। चारों ओर चार-दीवारी बना दी थी। बोहड़ों का चौंता एक नई खूही चंदा सिंह झिंगड़ां वाले को ठेका दे कर लगवाई थी। यह खर्च सारा बाबे हरी सिंह ने किया था। सन् 1906 में एक खूही पर एक कुटिया बनाई थी। इस खूही की इँटें राहों से लाई गई थीं। चूने के लिए रोड बतौणी से लाये गए थे। रोड़े के लिए गाड़ियाँ गाँव झिंगड़ा से आईं थीं। सारी सामर्गी इकट्ठा करके दिन रविवार, प्रख नशत्तर को सवा पाड़ का ठप्पा लाया गया। संगत को बड़ा ही चाव चढ़ा हुआ था। खुशियों के गीत गा रहे थे। मंगल राम गोसलों वाले को मीहां सिंह रहपे वाले मिस्तरी एक गाँठ बाँधने की आज्ञा दी। पाड़ खोदा गया, सामग्री तैयार हो गई। सभी सेवादारों ने सरकार आगे बेनती की, कोई दिन मुकरर किया जाए, गण्ड गिरान की रस्म अदा की जाये। संगत की सलाह मशवरे से आप जी ने शुभ दिन देख कर दिन मुकरर कर दिया। सताईस हाड़ को दिन रविवार सब तरफ सुनाई कर दी कि ढले दिन चार बजे गण्ड गिराया जायेगा। बन्ना भराई लगा ढोल बजाने। काफी इक्ट्ठ हो गया। गाँव में से दो भागों में संगत चली। आगे ढोलकी शैणों से शब्द पार्टी शब्द पढ़ती जा रही थी। 'मैं बलिहारे

जावां जिने एहो थान सहाएआ' पीछे–पीछे माताएं–बुजुर्ग शब्द गाती जा रहीं थीं, ''साडे गुरां ने जहाज़ बनाया, आवो जीहने पार लगना।'' ''तूं देह दर्शन गुरु मेरे, संगत आई दर्शन नू'' सारी संगत शब्द पढ़ती जा रही थी। परातों में दाने पाकर ऊपर फुलकारियाँ रखी हुई थीं। यह जलूस इस तरह शोभा दे रहा था जैसे देवते पीर समुद्र से अमृत पीने के लिए जाते हुए शोभा दे रहे थे। जैसे सूर्य की परातें चमक रहीं थीं, सुच्चे रेशम का गोटा सूर्य की किरनों से टकरा कर मन को मोह जाता था। संगत का जलूस गाँव गुरुद्वारे तक रास्ता भरा हुआ जाता था। पाड़ के आस–पास घेरा डाल लिया। गण्ड गिराने के लिए जवानों ने रस्से पाकर खड़ा किया। दूसरी तरफ जवान लड़कियों ने जोडियाँ बना कर दोहे गाए। इस बेड़े को पार लगाओ राजा जी, इस बेड़ को पार लगाओ। इस प्रकार दोहे लगा लगा कर आकाश गूँजा दिया। इस राजे की संगत की रौनक ने इंदर के खाड़े को भी मात दे दी। महाराज जी के हुकम से ढेर लगा दिया। देव लोक से देवतों ने फूलों की वर्षा की। ऐसे उस्तुत की :–

''धन्न–धन्न राजा साहिब जी जिन दुखियों के दुख: निवारन खातिर अमृत का सोमा माता लोक में लाया।' इस खूही की नाली उसारने की सेवा मंगल राम ने की। जितनी भी खूहियाँ लगीं महाराज जी की इन सारी की सेवा मंगल राम गोसलां वाले ने की। इस लगी हुई खूही का पानी रोगियों के रोग दूर करता है। कोहड़ दूर करता है। स्नान करते ही बुखार उतार जाता है। महाराज जी गाँव रहिपे तीर्थ रच कर गाँव झिंगड़ां चले गए।

रहिपे को सवर्गपुरी बना गए।
बोलो भाई जी वाहिगुरू।।

साखी गुरुद्वारा दुःख निवारन गाँव झिंगड़ा के रचने की चली

महाराज जी रहपे से तख्त साहिब की रचना करके हरनाम सिंह के कहने पर गाँव झिंगड़ां चले गए। आगे सर्दियों की ऋतु आ रही थी। हरनाम सिंह ने महाराज की आसन गाँव के बीच अपनी बैठक में ही लगा दिया।

पोह माघ के दिन थे। बैठक के आगे एक थड़ा बना हुआ था। दिन को जब उस ऊपर बैठना, लोगों की आवाजाई बनी रहती। औरतों से महाराज जी बहुत नफरत करते थे। पास नहीं आने देते।

"आर की जावन है जो नरम नसान हो करके बिआन बारू जान को चलाएगी।।
मधम आवाज, नहीं सुनीए दराज, एह समझ लै राज जो निमाज से हिलाएगी।"

महाराज जी ज्यादा उजाड़ में ही राजी रहते थे। बसती में आने को बहुत ही नफरत करते थे। सर्दी की पहाड़ जैसी लम्बी लम्बी रातें बाहर ही काट लेते थे। सर्दी की झड़ी जैसे तूफानों की कभी भी प्रवाह नहीं करते। ऐसी पड़ रही सर्दी में लस्सी और सरदाई ही छकते थे। खिजां की ऋतु भी निकल चुकी थी। पतझड़ के बाद बसंत ऋतु आगे आ रही थी। भौरे फुलरियों पर घेरा पाये फिरते थे, वनस्पति पर कहर का नूर खिड़ा हुआ था. सब तरफ हरियावल झलकें मारती थीं। फूल अपने सीने में से संसार को खुशबू दे रहे थे। कुदरत रानी हार श्रृंगार करके खुशियों के सोहले गाती फिर रही थी।

बैंत

कुदरत रानी हार श्रृंगार लगा कर
रंग रंग के गीत पड़ी गाती है।
ऊपर ले चुनरी गोटे वाली सुन्दर,
साग गन्दलों का पड़ी खाती है।
खेतों में फिरती (घूमती) अमृत पा फसलें,
रंग रंग के फूल खिड़ाती है।
कहीं लिए फिरती (घूमती) साथ सखियों को,
सिलेहार बनकर भत्ता चाहती है।
कहीं जल करती कहीं थल करती,
कहीं पानी बेशुमार वगाती है।
कहीं हो कर मस्त मलंग घूमती
कहूं तख्त पर ताज बनाती है।
कहीं बन कीड़ा कहीं चराये भैंसे,
कहीं हीर सलेटी बन जाती है।
कहीं खाये चूरी कहीं चराये भैंसे,
कहीं दूध और दहीं बनाती है।
कहीं बने जोड़ी कहीं चुराये घोड़ी,
कहीं खुशियों के गीत पड़ी गाती है।
जोबन खिड़ा जैसा गुलाब दिखे,
जामे में न पड़ी समाती है।
सूट पहने घूमती पीले रंग का यह,
ऊपर चुनरी बसंती सहुाती है।
पौण देवता इसका वहा बना,
सैर चारों तरफ का पाती है।

इसे रंग कहर का आ चढ़ा,
यह आशिकों के मन भाती है।
कहीं पट्टियां गूँद गुलाब लाउंदी,
कहीं जुलफों पड़ी खोहांवदी है।
'गुरबख्श' इस से रहे डरकर,
पल में राओ से रंग कराती है।

ऐसे सुहावने मौसम की वायू भी तन–मन शीतल कर रही थी। महाराज जी दिन को ढाब के किनारे पर ही बैठे रहे। हरनाम सिंह ने प्रशादा ले कर जाना। कभी छक लेना कभी न छकना। हरनाम सिंह ने कई दिनों के बाद अर्ज की ''मेहरबान जीओ! कई दिन हो गए बाहर रहते हुए आज घर चलो। अगर मेरे से कोई गलती हो गई हो तो क्षमा करना। यह इन्सान गलतियों का ही पुतला बना हुआ है।'' महाराज जी कहने लगे, ''नामा! हमारे रहने के लिए गाँव से बाहर ही कोई जगह बना दो। गाँव में तो बहुत ही शोर रहता। साधू को तो दुनिया से किनारा ही पकड़ना चाहिए। साथ ही दुनियाँ के भले के लिए कोई जगह बन जाएगी। कोई राही अराम (विश्राम) ही कर लेता है।'' जब महाराज जी ने यह संकलप प्रकट किया, सरदार हरनाम सिंह ने मोती सिंह को और किरपा सिंह को पातशाह की कही हुई सलाह सुनाई। मोती सिंह और किरपा सिंह का दोनों भाईयों का जहाँ अब गुरुद्वारा दुःख निवारन साहिब बना हुआ है, यह सतारह कनाल जगह किरपा सिंह और मोती सिंह की पड़ी थी। इसमें अक्क पलाह, झाड़ियाँ, गरूनों के पौधे लगे हुए थे। मोती सिंह उस वक्त घर में जिम्मेदार सदस्य था। कुछ भी कर आये, घर में दखल–अंदाजी नहीं की जाती थी। किरपा सिंह खेती का काम करता और मोती सिंह अफसरों में सियासी कामों

में हिस्सा लेता था। हरनाम सिंह के कहने पर मोती सिंह महाराज जी के पास गया। चरन पकड़ कर बेनती की, ''सच्चे पातशाह हुक्म करो, दास हाज़र है। सतारह कनाल जगह आप के नाम लगा दी जाएगी। जो कुछ भी इसमें बनाने का हुकम करोगे बना देंगे। सन् 1906 में चेतर की संक्राति को इस दुःख निवारन धर्म अस्थान की नींव रखी गई। इस गुरुद्वारे की ईटें भी सब राहों से ही आई थी। नींव रखते वक्त मोती सिंह ने बेनती की, ''जी! मैं देग बनाकर ले आऊँ?'' महाराज जी कहने लगे देग बनकर आ रही है। थोड़े ही समय के बाद मंगल राम गोसलां वाला लुहार देग बना कर ले आया। नींव रख कर वो ही प्रसाद बाँटा गया। पहली सात ईंटें नाभ कंवल राजा साहिब जी ने अपने हाथों से रखी थीं। इस गुरूद्वारे की इमारत का खर्च सारा सरदार मोती सिंह ने ही किया। आप जी ने हर वक्त हाजर रह कर इमारत को पूरा करवाया सत करतार की धुन लाई छोड़ते थे। सेवा दास काम करने वाले मिस्त्री कर्मचारी थे। दरबार की अगली तरफ दीवार बन रही थी। कुछ दिनों बाद महाराज जी गाँव रहिपे आ गए। एक दिन टहलते–टहलते सरमुख सिंह को कहने लगे, ''सरमुख। आज कहीं मेरे सेवादार के चोट न लग जाए खतरा ही है।'' पैड़ से गिरने का कई वार आप जी ने कहा। गाँव मजारे का आदिधर्मी मुशी सेवा कर रहा था। अगली तरफ की पैड़ के दो रस्से टूट गए थे। मुनशी पैड के नीचे कुछ कर रहा था। ऊपर से सारी सामग्री फट्टे ऊपर काम करते आदमी धड़म करते गिर पड़े। मुनशी के ऊपर तखता गिर कर पीठ पर लगा और भी सामान सब मुनशी के ऊपर ही गिरा। जिस वक्त पैड टूटी महाराज जी रहिपे ही खड़े खड़े ''औह'' कह कह कर आगे को बाहें करके कोई रोक की। मुनशी के ऊपर गिरा तो बहुत कुछ था पर बाल बाल बच गए।

''ताती वाऊ न लगई पारब्रहम सरणाई
चओ गिरद हमारै राम कार दु:ख लगै न भाई।।

जैसे देवी चन्द वजीर की रक्षा गुरू गोबिन्द सिंह जी ने की थी। पहाड़ी से गिरते को फूलों की तरह हाथों में पकड़ लिया था, तैसे ही नाभ कंवल राजा साहिब जी ने अपने प्यारे भगत को चोट लगने से बचाया। इधर रहिपे पातशाह ने आवाज दी ''सूली से सूल बन गई भला ही हुआ। सुरमुख। जाओ मेरे मजदूरों का पता लेकर आओ।'' बाबा जी ने जा कर सारे सेवादारों को बताया कि कल पैड टूट कर नीचे गिर पड़ी। मुनशी नीचे आ गया था। ऊपरले आदमी भी बच गये और मुनशी के भी चोट नहीं लगी। सरमुख सिंह ने जो हुकमनामे पातशाह जी ने रहपे पैड. टूटने पर किये थे। वो सारी संगत को कह सुनाए। महाराज जी एक सप्ताह गाँव रहपे में रहे और फिर गाँव झिंगड़ां ही चले गए। एक दिन सेवा करने वाली संगत काफी इक्ट्ठी हो गई। ज्यादा आदमी देख कर मोती सिंह ने कहा। मैं घर जा कर कह आऊँ कि लंगर ज्यादा तैयार करना। आगे से महाराज जी की तरफ से हुकम हुआ। आज लंगर तैयार नहीं करना कोई और तैयार करके ले आ रहा है। कुछ समय बाद फिर मोती ने अर्ज की। फिर भी ऐसे ही हुकम किया। कुछ देर बाद कीरतन होता ढोलकी छैणे वजते पातशाह के प्रेमी शब्द पढ़ते आ रहे थे।

दूरों चल प्रदेसन आई, राजा जी तेरे दर्शन को।

यह लंगर गाँव रहिपे से संगत लेकर आई थी जितना समय गुरूद्वारा बनता रहा। आप जी ज्यादा पास ही रहते थे। आप जी के लिए एक कुर्सी रखी हुई थी। उस कुर्सी पर और कोई नहीं बैठता था। एक दिन आप जी मूसापुर की तरफ गए थे। मुकंदपुर से सरदार अमर

सिंह, मोती सिंह को मिलने के लिए आए। मोती सिंह ने वो कुर्सी महाराज जी वाली स. अमर सिंह के बैठने के लिए दे दी। कुछ समय बातें करके स. अमर सिंह मुकंदपुर वापस आ गया। शाम को जब पातशाह जी गुरूद्वार आए सीधे कुर्सी के पास जाकर खड़े हो गए। मोती सिंह को बुलाया, पूछा ''यह हमारी कुर्सी यहाँ से किस ने उठाई थी? मोती सिंह ने कहा, ''सरदार अमर सिंह आया था। उसको दे दी थी।'' महाराज जी ने पैर मार मार कर चूरा चूरा कर दी, कहते हैं, ''मोती मैं तो तुझे बहुत ऊँचा लिजाना चाहता था। तू अच्छा नहीं किया। अच्छा जाओ गाँव की प्रधानगी तो तुझे दे ही दी है।'' जब का पंजाब में पंचायतों का एक्ट चला है सरदार मोती सिंह के पोतरे की सरपंची चली आ रही थी। मोती सिंह का पोतरा बाहरले मुलकों में राजदूत भी रहा था। सारा परिवार अच्छी पदवियों पर है। वो कुर्सी महाराज जी ने मोती की उन्नित के लिए ही रखी हुई थी कोई राजगद्दी बख्शना चाहते थे। पर यह मिसल अधूरी रह गई।

महापुरुषों की छुपी हुई बातों का कोई भेद नहीं लगता। बातें किसी तरफ करते होते काम किसी तरफ बनता होता है। गुरूद्वारा दुख निवारन की इमारत पूरी करके ऊपर गुंबद बनाने की तैयारी की। बिशन सिंह रामपुरी ज़ैलदार के बेटे जगत को कहने लगा गुंबद ऊपर न बनाओ यह फक्कर लोग हैं। इन का कोई पता नहीं किधर चले जाएं। आप की मलकियत है कोठी की शक्ल में ही रहने दो। काफी समय इस का नाम कोठी ही प्रसिद्ध रहा। ऊपर गुंबद न बनने के कारण धार्मिक स्थान न बन सका। बाकी ईंटें चूना काफी था, गुरूद्वारे की अगली तरफ खूही लगाने के लिए टप्पा लगा दिया। टप्पा लगाते समय किरपा सिंह देग बना कर ले आया। एक लड़का मजारे का आदिधर्मियों का उत्तम पतासे लेकर आया।

इस उत्तम की कहना इस तरह है। उत्तम माने जिमींदार का काम करता था। जब 6 महीने उत्तम को काम करते हुए फसल काट कर घर ले आती। इस गरीब बच्चे को दाने देने थे, माने न सोचा इसे कोई इल्जाम लगा कर घर से निकाल देना चाहिए। फिर इस को दाने नहीं देने पड़ेंगे। बंगा जाकर थाने रिपोर्ट लिखवा दी। उत्तम ने मेरे पशुओं को ज़हर दे दी है। थानेदार ने सिपाही भेजा उत्तम को बंगा बुलाया। उत्तम को सिपाही पकड़ कर ले गए। उत्तम भला सा बहुत ही डरा हुआ रोने लगा। परन्तु गरीब भले की कोई बेनती किसी ने नहीं सुनी। दुनियाँ को कोई पता नहीं है झूठा या सच्चा है सच्च झूठ नितारने वाला जानता है कि उत्तम बेकसूर है, जैसे गुरू साहिब का कथन है :–

घट घट के अन्तर की जानत, भले बुरे की पीर पछानत।।
चीटी ते कुंचर असथूला, सब पर कृपा दष्ट कर दूला।। चौपई १०।

यह सच्चे प्रीतम के दर कभी कभी जोगियों वाली फेरी पा जाता था। इस लड़के को जब किसी भी तरफ से आसरा न मिला। उस ने परमात्मा रूपी हस्ती सारी ताकतों के मालिक के चरणों में बेनती की। सिपाहियों का पकड़ा हुआ उत्तम जैसे मती दास संगलों से कसा हुआ मुशकां बंधी हुई ऊपर से छड़ियों की मार पड़ती तो श्री गुरू तेग बहादुर जी तरफ को बेनती करता जा रहा था। इसी तरह उत्तम ने राजा साहिब जी के चरणों का ध्यान करके एक मन, अन्तर ध्यान होकर आँखों से आँसू गिरा कर ऐसे कहा, ''सच्चे पातशाह जी। सच झूठ का फैसला करना। मेरा तो एक तू ही आसरा है।'' उत्तम को थाने में पेश किया गया। थानेदार ने पूछा उत्तम डरता कांपता हुआ कहने लगा ''मुझे जिस किसी भी शप्थ दे दो मैं जहर नहीं दी।'' थानेदार के मन में दया आई। मन में आप जी बस गए। थानेदार

नर्म हुआ। चलो गाँव जाकर फैसला करेंगे। गाँव में आ कर सारा गाँव इक्ट्ठा करके गाँव के दरवाजे के आगे एक गाय के गले में एक धागा बाँधा। थानेदार ने माने को कहा, ''अगर तेरे पशुओं को जहर दी है, गाय के गले में से धागा तोड़ डाल।'' माने के पैर निकल पड़े, गाय के गले में से धागा तोड़ न सका। रुपये के पतासे उत्तम ने उस दिन सुखना सुखी हुई थी जो खूही के पाड़ के प्रसाद के रूप में बाँटे गए थे। खूही लग रही थी।

एक संत देवपुरी रायपुर गुजरवाल से आया करते थे, इन संतों की सरमुख सिंह के छोटे भाई चंदा सिंह, माई अंतरी, ज्यादा सेवा भावना के साथ सेवा करते थे। यह 6 महीनों बाद रहिपे आ कर दस दिन रहते थे, यह संत कथा करते थे। एक दिन इन्होंने संगत में राजा साहिब जी का हाल–चाल पूछा। चंदा सिंह ने कहा ठीक ठाक है। गाँव झिंगड़ां में एक कोठी बनवाई, अब खूही लगा रहे हैं। संत देव पुरी कहने लगे एक गाँव रहिपे भी बताते हैं कि जगह बनवाई है। संत कहते राजा साहिब जी दुआबे सरू का बूटा है। इनके वस में है। चार–चार गज की आग के लिपटों में पहाड़ जैसे अडोल रहना, जो सिलसिले रचने लग पड़े हैं। यह अच्छी बात नहीं, साधुओं को कोई अडम्बर रचने की जरूरत नहीं। जो आदमी काम कर रहे हैं। इनकी मज़दूरी भी देनी पड़ेगी, साधुओं के मकान ऐसे ही पीछे पड़े रहते हैं, इनमें लोग कुर्कम करने लग जाते हैं। उलटा पाप लगता है। दूसरे दिन देव पूरी इस ख्याल को मुख्य रख कर चल पड़े। राजा साहिब को प्रवितरी कर्मों से हटा दें। संत देवपुरी गाँव तलवंडी से निकल कर, कुछ आगे जा कर खड़े हो कर सीधे ही गाँव लड़ोए को उजाड़ो उजाड़ी हो गए (रनपुर गड़ी जाते थे) जब झिंगड़ां जाने से रुक गए चंद सिंह ने पूछा ''महाराज जी! झिंगड़ीं नहीं जाना, राजा

साहिब जी को मिलने के लिए।'' संत कहने लगे हमें राजा साहिब जी की तरफ से उत्तर मिल गया है. जब संत झिंगड़ां की ओर चले थे और आगे महाराज जी ऐसे कहते थे, ''किसी की चिंता है? जो कोई काम करवा रहा है, उसकी मजदूरी वो आप ही देगा। हूँ मुनशी! किसी के कामों में किसी का दख्ल क्या है? सही जब उत्तर पातशाह जी ने टहलते–टहलते दिये संत रास्ते में ही पीछे वापस चले गए।

ऐसी बर्कतों वाले साधू थे। चार मील दूर बैठे ही आपस में प्रश्न उत्तर किये। खूही का काम खत्म होने पर सामग्री बची थी। एक खूही समाध में लगवा दी गई। एक खूही गाँव गोसलां गुरुद्वारां मंजी साहिब में लगवा दी गई। एक हेड़ियाँ की जूह में लगवाई जो रौली वाली ही पहचानी जाती है। पाँचवी खूही रहिपे गुरूद्वारा तखत साहिब में लगवाई और एक कुटिया दरबार साहिब की अगली तरफ बनाई। यह सारा खर्च सरदार मोती सिंह का हुआ था। यह सारी खुहियाँ लगवा कर दमदमा साहिब की सेवा आरम्भ कर दी। बाहरले गाँवों से दान के रूप में सेवा करने के लिए संगतें आती थीं। लंगर भी बाहर से ही बन कर गाँवों में से आता था। एक दिन मजारे वाला नत्था सिंह, गाँव से आटा इक्ट्ठा करके परातों में पा कर माताएँ और माई भाई को साथ लेकर सिर ऊपर परातें चुक कर लंगर की सेवा के लिए भोजन लाया गया। महाराज जी गाँव गुणाचौर की तरफ एक खेत में बैठे थे। नत्था सिंह को एक खेत पीछे ही खड़े रहने का हुकम किया, कहते, ''आगे नहीं आना।'' नत्था सिंह कहता मेरे मन में कुछ गिला सा हुआ। हमने इतने प्रेम से लड़कियों के सिर ऊपर चुकवा कर सीधा लाय हमें पास आने का हुकम नहीं किया। जब यह बात नत्था सिंह के मन में आई नत्था सिंह को ऐसी झलक पड़ी महाराज जी के चारों ओर दूर–दूर तक सफैद वस्त्रों वाले शहीदों की फौज संगत के रूप में बैठी दर्शन करते

नजरीं पड़ी जब ऐसा देखा तो मन में डर सा लगा क्योंकि आगे जगह कोई भी खाली नहीं थी। कुछ मिनटों के बाद उस गुप्त सैना को चले जाने का हुक़म किया तो नत्था सिंह को आगे आने की आज्ञा दी। सारी संगत नमस्कार करके हाजरी में बैठ गई। नत्था सिंह को हुकम हुआ नत्थू परमात्मा देखना है। नत्था सिंह कहता जी आप की कृपा है। हम आप को परमात्मा के रूप में ही देखते हैं।

महाराज जी कहने लगे उसकी कुदरत से ही परमात्मा को पहचाना जाता है। इतने समय में गाँव गुणचौर से भी सीधे की परातें भर कर संगत ले आई। सब को लंगर में सीधा पाने का हुकम किया। इस तरह बाहर वाली संगत से सेवा करवा कर दमदमा साहिब का काम पूरा किया। यह खेत शेरू से चुड़वाया था, जिसमें दमदमा साहिब बना हुआ है।

बोलो भाई जी वाहिगुरू।।

साखी माई नन्दी से हुई

मोती सिंह के बड़े भाई किरपा सिंह की पत्नी की चालीस वर्ष आयु होने पर भी संतान न हुई। मोती सिंह के घर तीन पुत्र थे जगत सिंह, साधू सिंह, भगत सिंह। नन्दी सेवा भी बहुत करती थी। जगत सिंह कुछ बिशन सिंह की बातों में आकर नास्तक ख्यालों का बन गया था। बिशन सिंह ने बहुत कान भरे। सरदार मोती सिंह ऐसे ही राजा साहिब के पीछे लग कर घर का धन लुटाये जा रहा है। किरपा सिंह और नंदी का प्रेम बहुत पहले से भी दिन–भर–दिन बढ़ता गया। एक दिन नन्दी एक माई (माता) के साथ सुबह– किसी अफसोस के बहाने जिला अमृतसर माझे में एक संत के पास जाने लगी। साथ में पतासे बाँध लिए। घागरे में छुपा कर घर से चली धागा तवीत लेने के लिए गाँव के बाहर निकली तो आगे महाराज जी गुरूद्वारे के पूर्व की ओर एक आम के नीचे बैठे

थे। महाराज जी बैठे हुए देख कर घागरा पीछे रखकर नमस्कार करने को आगे बढ़ी तो महाराज की ओर से हुकम हुआ, ''चल नन्दी! पीछे वापस चल, चल घर ही सब कुछ मिल जाता तो और कहीं नहीं जाने की जरूरत। पतासे भी यहाँ ही बाँट देने थे।'' उस दिन ही नन्दी को हुकम किया आगे से अन्दर पैर न रखना। औरत को गुरूद्वारे के अन्दर जाने की मनाही कर दी। आदमी को भी स्नान किये बिन अन्दर जाने की मनाही कर दी। एक घड़ा पानी का भर कर रखने की आज्ञा दी। किसी रोगी को पानी पिला कर ठीक करने का हुकम किया। इस घड़े में से चरनामत के तौर पर पानी पिया जाता है, बहुत छाया के मारे सूखे कोहड़ी ठीक हो जाते हैं। तीस बत्तीस वर्ष न अन्दर औरत जाती थी, और न ही स्नान किये बिन अंदर जा कर माथा टेक सकती थी। सन् 37 में बन्तो गाँव कराला वाली को हुकम दे कर भेजा था, ''चल! आज झिंगड़ां के गुरुद्वारे में पानी का छीटा साथ ही धूफ दे आओ। ताला खोल कर चाबियां परीतू को दे आना।'' उस दिन सब को हक मिला था अन्दर जाने का। नन्दी को घर की ओर ही भेज दिया, एक वर्ष के बाद घर पुत्र जन्मा। सतिगुरुओं की बखशिश होने से घर में बालक पैदा हुआ। नाम भी गुरबख्श ही रखा। गुरबख्श सिंह भी माता की तरह प्रेमी है, तन मन, धन, करके गुरू घर की सेवा करता है।

बोलो भाई जी वाहिगुरू।।

साखी रत्तू को कैद में छुड़वाने की चली

सरदार मोती सिंह जी पातशाह के सेवादार के साथ गाँव झिंगड़ां के एक रत्तू नामक आदमी की धड़ेबाजी चल पड़ी। रत्तू कुछ लड़ाकू आदमी था, झगड़ा काफी बढ़ता–बढ़ता बढ़ गया। दूसरी

तरफ, मोती सिंह सियासी पार्टी के साथ भी काफी सम्बंध रखता था। मौके के अफसरों के साथ मिलाप मुलाकात भी रखता था। भगवान की माया बड़ी प्रबल है, अच्छे मलाहों की बेड़ियाँ भी माया की छल्लों से डोल जाती है।

फरीदा अज सो नाऊ समुंद मैं,
किया जाना किया होय

(सलोक फरीद जी)

गय उलझ अफसोस अनेक आलम,
रहे बिच अज्ञान दे अटबेली।

मोती सिंह ने रत्तू को झूठी तोहमत में किसी मुकद्दमे में फसाने का इरादा धार लिया। मोती सिंह ने अपने आदमियों को साथ लेकर रात्रि क समय एक बकरी अपनी मार कर रत्तू के वाड़े में गिरा दी। पंचायत इक्ट्ठी करके रत्तू के सिर तोहमत लगा दी कि हमारी बकरी चोरी उठा कर लाई गई है। रलू बकरियों का इज्जड़ रखता था। रत्तू बाहर मोती सिंह के खेत चरवा लेता था, इसी कारण ही बगावत बढ़ गई थी, रत्तू को कोई पता नहीं कि मेरे साथ ऐसा अत्याचार होने वाला है। मोती सिंह ने थाने जा कर रिपोर्ट दे दी कि मेरी बकरी रत्तू और जोती, मोती ने उठा ली है। मौके पर पकड़ कर पहरा लगाया गया है, पुलिस वालों ने रलू पार्टी को आ कर गिरफ्तार कर लिया। रत्तू का चलान नवांशहर तहसीलदार के पास भेज दिया, मुकद्दमा शुरू हो गया। रलू पार्टी जमानत पर आ गये थे, पेशी होती गई गाँव में कोई पता नहीं है। कौन झूठा है। या कौन सच्चा है। रलू को और मोती सिंह को ही पता था कि क्या कुछ किया गया है। जिस दिन हुकम होना था, उस दिन मोती सिंह तय की गई तिथि को जाने लगा।

रलू पहले ही उठ कर सुबह गले में पल्लू डाल कर गुरुद्वारा दुख निवारन में जा कर अरदास की। ''आज सच्च झूठ अगर न नतारा तो हम कभी मानेंगे नहीं, हम यह मानेंगे कि परमात्मा है ही नहीं, तेरे नाम को ही नहीं मानेंगे, तेरे नाम को ही लाज लगेगी।'' रलू आँसू बहा कर अरदास करके चल पड़ा। मन में राजा, राजा गाता और चरणों का ध्यान करते नवांशहर पहुँच गया। जब रत्तू ने सच्चे ह्दय के साथ अरदास की तो खण्डों–ब्रहम्डों के मालिक घट–घट की जानने वाले अपने नाम की लाज रखने वाले (सुनना अरदास दतार प्रभु) ढाबी बैठे थे। मोती सिंह और हरनाम सिंह तरीक को नवांशहर को चल पड़े। महाराज जी बहुत गुस्से हुए झिड़कें मार–मार कर मोती सिंह पानी–पानी (शर्मिंदा) हो गया कर दिया। महाराज जी कहते, ''मोती विसाह घात करना सब पापों से बड़ा पाप है, विसाह घाती कभी बख्शा नहीं जाता। ब्रह्म हत्या, कन्या हत्या, यह हत्या करने वाला तो बख्श दिया जा सकता है। पर विसाह घाती नहीं बख्शा जाता।'' महाराज जी ने मोती की ओर देखा तो बड़ा डर गया। बार–बार बेनती करने लगा। ''सतिगुरू मैं भूल गया, बख्श लो।'' महाराज आप भी नवांशहर को सीधे हो पड़े। मूसापुर जाकर एक भट्ठे पर जा कर खड़े हो गए। मोती सिंह ने फिर चरण पकड़ कर बेनती की जैसे आप का हुकम होगा। महाराज कहने लगे, ''हमारा संदेस हक नवां को देना, निहक्कीं चिड़ियाँ नहीं बाँधी जाती।'' कहा तो मोती सिंह को था भटठे पर खड़े हुए, पर कई मील से तहसीलदार के कानों तक आवाज पहुँचा दी, तहसीलदार हुकम लिख रहा था। आकाशबाणी के रूप में आवाज कानों में पड़ी। सुनहरी जटें सफैद चादरें की गिलती लगाई हुई, बिजली की चमक की तरह अपने दर्शन की झलक भी तहसीलदार को दी। तहसीलदार रत्तू को सजा लिखने ही लगा था।

तहसीलदार रुक गया। कोई अनोखी झलक थी सीना चाक (चीर) कट गई। कुछ समय ठहर कर फिर लिखने लगा, वही आवाज वही (चीर) झलक फिर दिखाई दी। तीसरी बार भी ऐसा ही हुआ। फिर तहसीलदार ने खड़े हुए दोषियों की ओर देखा। उसे वो बेगुनाह नज़र पड़े। उसने रत्तो को पूछा, ''सच्च, आप सच्चे हो कर झूठे हो? आप किस को मानते हो।'' रलू ने कहा, ''बिल्कुल सच्चे हैं, राजा साहिब के सेवक हैं।'' तहसीलदार भी नाभ कंवल राजा साहिब के पहले दर्शन कर चुका था। तहसीलदार कहने लगा, ''आपके बरी भी राजा साहिब करवा रहे हैं, मेरे कानों में आवाजें आ रहीं हैं निहक्की चिड़ियाँ नहीं बाँधी जाती।'' तहसीलदार ने मोती सिंह को अपने पास बुला कर कहा, ''सरदार जी! और जो काम कहेंगे करूँगा रत्तू को मैं सजा नहीं दे सकता।'' मोती तो पहले ही पानी–पानी हो चुका था। जैसे आप जी की इच्छा है करो। रत्तू जोती मोती बरी हो कर धन्न राजा साहिब, *धन्न राजा साहिब कहते हुए गाँव आ गए। जैसे मक्खन शाह* लुबाने ने छत पर चढ़ कर कहा था। गुरू लाधो रे, गुरू लाधो रे ऐसे ही रत्तू ने लोगों के बीच बात फैला दी। महाराज जी के दूध से पानी अलग करने की कहानी पूरे गाँव में फैल गई। महाराज जी मोती सिंह से कुछ नाराज हो गए। मोती सिंह महाराज के चरण पकड़ कर आँसुओं की झड़ी लगा कर कहने लगा, ''ऐसा काम फिर नहीं करूँगा। मैं भूल गया हूँ जी मेरा आप के बगैर कोई सहारा नहीं। आप की नराजगी मैं नहीं सहन कर सकता, अगर ऐसे रहोगे मेरे स्वास खत्म हो जाएंगे। 'आखां जीवा विसै मर जाऊ।।' जैसे चाँद अलोप होने पर चकोर मुरझा जाता है, सूर्य डूबने पर चकवी दुःख पाती है नीर बगैर मछली मर जाती है, आशिक माशूक के बगैर मर जाता है। ऐसे ही आप जी के दर्शन के बगैर मर जाऊँगा, जीऊँगा

नहीं। ऐसी दीनता भरी कलेजे को जंझोड़ने वाली प्यारी और प्रेम भरी बेनती सुन कर दयालू कृपालू दीना नाथ भगत वछल अपने प्यारे शिश को गले से लगाया, आगे स बुरे काम करने से कान पकड़ाये।

बोलो भाई जी वाहिगुरू।।

आगे साखी गुरूद्वारा गोसलां के मंजी साहिब की चली

मूसापुर से महाराज जी रलू का कार्य करके गाँव झिंगड़ां की ओर नहीं आये। मजारे की ओर होते हुए (कुछ दिनों बाद) गाँव सोतरां की ओर होते हुए गाँव सोतरां भाने जाट के (खूह) कुएं पर जा बैठे। भाना बड़ा प्रेमी गुरुमुख इन्सान था। महाराज जी जब भी इधर आया करते थे तो बड़े प्रेम से सेवा किया करता था। भाने का प्रेम देख कर महाराज जी भाने की गरीबी हटाना चाहते थे। भाना ढाई खेत जमीन का मालिक था। उस दिन भाना महाराज के लिए मकई की छल्लियाँ भून कर ले आया। छल्लियाँ खाकर महाराज ने लस्सी मँगवा कर छकी। भाने ने छल्लियाँ बहुत ही प्रेम से छकवाईं। छल्लियाँ खा कर पातशाह जी ने भाने को वर दिया ''चालीस खेतों का तू मालिक बन जायेगा।' और हुकम किया सबजी बीजा कर। दिन प्रति दिन भाने की किस्मत का सितारा चढ़ते सूर्य की तरह बढ़ने लगा। इस वकत भाना चालीस खेतों ज़मीन का मालिक है, सबजी बीजता है। महाराज के हुकम से, जैसे गुरू नानक देव जी ने सुल्तान की होलें खा कर चारों कूटों में निवेंगी का वर दिया था। इसी तरह नाभ कंवल राजा साहिब महाराज जी ने भाने को ढाई खेतों से चालीस खेतों का वर दिया छल्लियाँ खा कर। भाने को अमीर बना कर महाराज जी गाँव गोसलां गाँव के पश्चिम की ओर एक पीपल के नीचे बैठ गए। दिन के चार कु बजे का समय था। एक आदमी को हुकम किया

कि मुनशा सिंह को बुला कर लायो। मुनशा सिंह हाथ में खुरपा और चादर लेकर घास काटने के लिए जा रहा था, महाराज का संदेश सुन कर रासते में से ही वापस आ गया। आ कर हजूर के चरणों पर नमस्कार की। महाराज समाधी में मगन थे। मनशा सिंह ने महाराज जी को आवाज की तो महाराज जी की समाधी खुली, हुकम हुआ, ''मुनशा आ गया तू?'' मुनशा सिंह ''हाँ जी, आ गया हूँ, क्या हुकम है दास को?'' ''मुनशा सिंह आज कोई जगह ढूँढनी है। आज तेरे गाँव में कलप वृक्ष का बाग लगा दें लोग मन वांछत फल खाया करेंगे, माझे, मालवे को तो पहले ही भाग लगे हुए हैं। दुआबे को भी चार चाँद लगा ही दें। मुनशा! यह जो पृथ्वी तुम देख रहे हो यह सब रचना करतार की रची हुई है, यह सब धरती उपज़ाऊ है। यहाँ जिस किसी वस्तु का बीज बोया जाये उस किस्म के फल लगते हैं। धरती पर जहर वाली वस्तु गिरा दी जाये वो मिट्टी जहर वाली हो जाती है। उस मिट्टी को चीटियाँ चूस लें तो मर जाती हैं, जिस जगह ज्यादा पाप हो जाएं, उस जगह का स्वभाव तामसी हो जाता है। जिस जगह खुशबूदार वस्तुओं घी अमृत आदि का प्रभाव होगा वहाँ मन शीतल हो जाता है, जहाँ महापुरुष बैठ कर तपस्या करते हों वो पृथ्वी पवित्र हो जाती है। वो भूमि वीरों की दाती हो जाती है। जिसके निकट वाले वृक्ष भी चंदन बन जाते हैं। ऐसे ही संत पुरुषों की सेवा करके जीव उधर जाते हैं अमर हो जाते हैं, जैसे कोरे कागज़ ऊपर बादशाह की मोहर लग जाती है वो एक दमड़ी का कागज़ हज़ारों का ही बन जाता है। ऐसे जिस जगह पर गुरू पीर अवतार दरगाही मोहर लगा दें वो ही तीर्थ बन जाता है। गाँव गोसलां भी आज कोई तीर्थ बना दें. पवित्र भूमि पर परमात्मा रूपी लोगों की मलकियत बन जाती है और मलकियत भी तेरे खेत में है। आज हमें अपनी मलकियत ढूँढनी

है।'' मुनशा सिंह को साथ ले लिया। मुनशा सिंह के चारों ओर खेत थे, 26 घुमां का मालिक था। गाँव चक कराला की ओर देखते जब गाँव बतुली की तरफ गए तो मुस्लमान महाराज जी के दर्शन के लिए दौड़े आये। दो तीन मुस्लमान मुनशा सिंह के बहुत गहरे दोस्त थे, रामा, नत्थू, रहिमां। महाराज ऊधर से खेत देख कर आगे चल पड़े। मुसल्मान वापस चले गए। महाराज ने मुनशा सिंह को कहा, ''इन मुस्लमानों से ज्यादा प्रेम न करा कर इन्होंने इधर रहना नहीं इनके लिए तो हमने लकीर लगा दी है, यह जुदा कर दिये हैं।'' यह बात 1907 में कही। मुनशा सिंह कहता उस वक्त तो मुझे पता नहीं चला रमज है, सन्न 1947 में जब घटना हुई तो फिर समझ में आई। खेत देखते–देखते महाराज मुनशा सिंह के वाड़े आ खड़े हुए। मुनशा सिंह को प्रर्शादा छकने का हुक्म दिया। आप मंजी ऊपर वाड़े में बैठ गए। काफी संगत दर्शन के लिए गाँव से आने लगी। मुनशा सिंह पहले पातशाह के लिए दूध लाये। फिर बाद में प्रशादा छकाया। मंगल राम प्रर्शादा तैयार करके लै आया और सेवादार प्रशादा छक कर नौ बजे रात के वाड़े में इक्ट्ठे हो गए। 11 कत्तक, दिन बुधवार सन् 1907 पूर्मिमा की रात चाँद टहक रहा था। पहाड़ की बारिश की तरह रौशनी की किरनें मात लोक की तरफ इस तरह पड़ रहीं थीं जैसे पानी के तल ऊपर फर्श बिछा हो। 11 बजे मजे से उठ कर पूर्व की ओर चल पड़े और पीछे सारी संगत चल पड़ी जहाँ अब गुरुद्वारा मंजी साहिब बना हुआ है। हमारी मलकियत यहाँ है, राम चंदर जी भी बैठ कर तपस्या करते रहे हैं। इस जगह को मुनशा छोड़ दे।'' यह 17 कनाल खेत मुनशा सिंह का था और महाराज के नाम लगा दिए गए। उसी ही दिन इस जगह पर महाराज जी के लिए थड़ा बना दिया गया। एक कमरा चार खानों का महाराज जी को बना कर

दे दिया। इस दरबार के पूर्व की ओर एक छोटी सी कुटिया बनवाई और उस में आप रहने लगे। मंगल राम और मुनशा सिंह आप जी के अच्छे सेवक थे, एक दिन मुनशा सिंह महाराज के लिए पर्शादा लेकर गया तो आगे एक कहर का शेर बैठा देखा। मुनशा सिंह का शरीर सुन्न हो गया, खून जम गया। पैरों की मिट्टी निकल गई, डर के पीछे वापस जाने लगा। जब पीठ मुड़ी पीछे से आवाज आई, ''मुनशा! डरते नहीं हैं शेर चीतों में भी हमारा ही नूर है।'' जब पीछे मुड़ कर देखा तो पातशाह आप बैठे असली रूप में दर्शन देकर निहाल किया।

जल थल मूर्ख ते चतर में एक रस, पशुओं पखेरूओं में तिसदा ही नूर है।

मुनशा सिंह अभी भी काँप रहा था। एक वारी मीहाँ सिंह को भी ऐसे ही शेर के रूप में दर्शन दिये थे। कमादी के खेतों के बीच बाघ बैठे थे, मीहाँ सिंह डर के भागने लगा था कि भयानक रूप धारण करके सिक्खों सेवकों को परख लेते थे। मंगल दास सहिगुरू की बहुत सेवा करता था, उसका सपुत्र भी उसी चाल पर चला हुआ है। शिमले में रहता है दस नहुओं की कमाई में से दसवां दसबंध निकाल कर गुरुद्वारा में लाता है। एक नयी खूही लगवाई एक हलटी भी लगाई। सतारां कनाल के चारों ओर चार दीवारी करवाई और हर वर्ष आ कर सेवा हँस कर कर जाता है। इस गुरुद्वारे को महाराज जी ने बहुत बड़ा बनने का हुक्म किया हुआ है।

बोलो भाई जी वाहिगुरू।।

आगे साखी गोसलां से रहपे जाने की चली

महाराज नाभ कंवल जी गाँव गोसल से गुरुद्वारा मंजी साहिब बना कर रहपे बाबे सरमुख सिंह के पास आ गए। यहाँ जब दो महीने रहते हुए को हुए एक दिन गाँव के बीच में बाबे बूलणशाह की जगह

में बैठ गए। मीहाँ सिंह तरखाण की पहरे में खड़ा रहने का हुकम किया। मीहां सिंह ने बताया उस रात महाराज जी गुप्त रूहों से बहुत बातें किये जा रहे थे, कई मुलकों और राजघरानियों की मिसलें बनाते रहे। कई तरह की छुपी हुई रमजें मार रहे थे और कह रहे थे पाकिस्तान, हिन्दुस्तान अलग–अलग बना दें, जर्मन और बर्तानिया की जंग (युद्ध) की बातों के वचन, लिखवाए और किये। इसी तरह बड़े–बड़े व्यक्तियों से सारी–सारी रात वचन करते हुए बिता देते। दिन चढ़ते ही संगत दर्शन को आने लगी काफी इकट्ठ हो गया। संगत को उपदेश करते हुए कहा नाम जपना, धर्म की किरत करना, बाँट कर छकना आए अतिथी की सेवा करनी आदि उपदेश देकर संगत को चले जाने का हुक्म किया। इतने समय को मूसापुरिया सुन्दर सिंह का भतीजा हरनाम सिंह आया और नमस्कार की। गले में पल्लू डाल कर अर्ज (बेनती) की ''सच्चे पातशाह। आप जी को बसंत सिंह ने याद किया है।'' सुन्दर सिंह वाली चिट्ठी महाराज आगे रख दी। चिट्ठी में यह कुछ लिखा हुआ था, ''हे मेरे सतिगुरू। परी पूरन। सर्व स्थान हाज़रा हजूर!! मिहरों के दाते आपका नचीज, आजिज, निताणा शिष्य आप जी का रास्ता देख रहा है। हमने नाभे में नये मकान बनाये हैं, मकानों का उद्घाटन करना है और साधारण पाठ किया रखा हुआ है। आप इस गृह को चरण पा कर पवित्र करो, आप जी के आने पर भोग पायेंगे। जैसे राम चन्दर जी ने भीलनी के सूखे बेर खा कर मतंग ऋषि की कुटिया को पवित्र किया, कृष्ण भगवान जी ने बिदर की झोपड़ी को पवित्र किया। गुरू नानक देव जी ने ऐमनाबाद में भाई लालो को मान दिया। राजा जनक जी ने 96 करोड़ बीस लाख जीवों की बन्द खलासी की थी। ऐसे ही मेरा पापी का बेड़ा पार करो, दर्शन देने की कृपालता करना।'' महाराज

जी का प्रोग्राम तो पहले ही बना हुआ था, सुन्दर सिंह के मकान के उद्घाटन का तो ऐसे ही एक बहाना था जैसे गुरू नानक देव जी ने मिलना तो आप होना था, बहाना मर्दाने की भूख का रखा हुआ था। बावा जवाहर सिंह जी पहले ही हुकम कर चुके थे कि जो अमानत आप की मेरे पास थी मैंने दे दी है तेरी मिसल नाभे पटिआले निकलती है जो अमानत तेरी पटियाले दास जी के पास है, समय सिर जाकर ले लेना। उसमें बहुत बर्कते हैं। बताते हैं इसलिए कि बाबे बूलणशाह जी को बहुत पटियाले जाने के लिए प्रेरणा करते थे। महाराज जी ने पटियाले जाने की तैयारी कर ली।

बोलो भाई जी वाहिगुरू।।

साखी पटियाले साहब दास जी के मिलाप की चली

सन् 1907 में 15 नवंबर को महाराज जी रहपे से नाभे चले गए। सुन्दर सिंह दर्सन करके बहुत खुश हुए। गणेश घुमार मूसापुर का आप जी के साथ गया हुआ था। सुन्दर सिंह तो महाराज जी के दर्शन करके बिधर भगत की तरह बेसुध हुआ फिर रहा था। महाराज जी के हुकम से भोग के दिन, तय किये और भी इलाके के साधू महात्मा बुलाये गए। सब को यथा योग बस्तर आदि अर्पण किये, महाराज जी को सुच्ची पछमीने की चादर और अल्फी भेट की। भोग के बाद महाराज जी 6 महीने नाभे ही रहे। भाई सुन्दर सिंह जी आप के साथ सेवा के लिए हरदम (वक्त) रहते थे। ज्यादा महाराज जी बीड़ में रहते थे। 6 महीने नाभे ठहर कर पटियाले गुरदित्त सिंह खानखाना वाले भगत के घर चले गए। सुन्दर सिंह और गनेशा साथ ही थे। दो महीने पटियाले जब रहते हुए हो गए तो एक दिन महाराज जी ने चार बजे प्रभात भाई सुन्दर सिंह को

अवाज दी। महाराज जी ने कहा, ''मुन्दर! आज करतार की ओर से हुकम और का और ही हो गया है दर्गाही अवाजें आ रही हैं। आकाशवाणी हो रही हैं, अमानत की बिल्टी हो चुकी है, अमानत वाला अपनी अमानत संभाल लें। निरंकार की ओर से छपे आर्डर की पालना करो, रची हुई सृष्टि का उदार करो, जीवों को सीधे रास्ते लाओ, धर्म का उपदेश करो। मुन्दर खुदा की दर्गाह की ओर से आर्डर जारी हो चुके हैं, साथ ही महाराज जी ने एक स्वैया उच्चारण किया।

हैं सभ भेस ही संतन के जब पाए ब्रहम ज्ञान बहे।।
चाहे केस सवार बले दस्तार उतार चाहे बिआबान रहे।।
चाहे चढ़ तुरंग उमंग करे चाहे बस्तर रंग ज्ञान गहे।।
चाहे मोन को धार गुजार करे दम्म दास भगवान विज्ञान लहे।।

यह स्वैया गा कर स्नान करके चुप–चाप उठ कर मोती बाग में चले गए। मोती बाग की रौनकें, कई प्रकार की फुलवाड़ियाँ, नंदन बाग को भी मात पा रही थीं। इस रमनीक बाग के बीच छोटा सा तालाब है, इस तालाब के बीच एक कोठी बनी हुई है। इस कोठी के अन्दर एक महाबली तत्व सरूप अवतार एक हस्ती बहुत भारी संत करतार का ही रूप मस्त बिरती में बैठे हैं। ऐसे महाबली की धारणा बँधी हुई थी। इस चार दीवारी अन्दर कोई जोड़ा लिजा नहीं सकता था, न ही औरत को अन्दर जाने का हुकम था। बाहर से ही नमस्कार करके वापस जाने का हुकम था। सेवादार हर वक्त पहरे पर खड़े रहते थे, महाराज जी सूर्य उदय होने के साथ साहिब दास जी के दरबार में चे गए। गणेशा घुमार मूसापुरिया साथ था। महाराज जी के पैरों में सुच्चे तिल्ले से कढ़ाई वाला जोड़ा पहना

हुआ था। बात सुच्चे पशमीने की अल्फी पहनी हुई थी। ऊपर सुच्ची चादर ओढ़ी हुई थी। हाथ में गैंडे की छड़ी पकड़ी थी सुनहरी लटें सूर्य की चढ़ती हुई किरनों को मात पाती थीं। सफैद धूप जैसा रंग था। आप जी का सुन्दर मुख पर नूर चमक रहा था। उस वक्त आप जी के चिहरे की झलक लिखने से दूर थी। आदमी की क्या मजाल थी कि चेहरे की ताव सह सके, नैनों की अनोखी झलक पड़ रही थी। चौदवीं के चाँद की तरह संसार सो शीतलता भरी रिश्में बख्श रही थी। जज्ञासू प्रेमी सच्चे आशिकों के बेड़े पार कर रही थी। जब महाराज जी अपनी अमानत लेने के लिए मस्त साहिब दास जी के दरवाजे पर गए तो खड़े सेवादार ने अन्दर जाने से रोक दिया। कहते, ''जोड़ा उतार कर जाओ।'' ''जैसे भी आता आने दो। पातशाह है इसका तो एक देगा चढ़ता है और एक उतरता है। यह तो बाबा बली है आने दो, हटो आने दो।'' ऐसे तीन बार कहा ''यह तो हम से वसूली करने के लिए आया है जोरावरों की वस्तु संभालनी बड़ी मुश्किल है हम भी आज आज़ाद होंगे।'' ऐसे हुकम जैसे मस्त जी आगे से कहते थे। महाराज आगे अन्दर चले गए। महाराज जी ने मसतां के पास जाकर नमस्कार की। हाथ पकड़े फिर आसन पर बैठ गए कुछ देर आपस में गुफ्तगू की। उस वक्त पास में कोई नहीं था सब पीछे दूर से ही खड़े मुलाकात का नज़ारा देख रहे थे। कुछ समय के बाद मसतां ने उठ कर एक लकीर लगाई और कहा यह मेरी निकाली कार को लांघ सकेगा? महाराज लांघ गए, फिर दूसरी निकाली महाराज वो भी लांघ गए, फिर मस्त जी बैठ गए , कुछ मिन्ट बैठ कर तीसरी लकीर फिर निकाली ''यह लांघ कर बता'' महाराज जी वो भी सहजे ही लांघ गए। साहिब दास जी बहुत ही प्रसन्न हुए उठ कर सीने से महाराज जी को लगा लिया, हाथ पकड़ा बाहर चले गए। इसी तरह तीन दिन महाराज जी मसतां के पास आते रहे। तीसरे दिन पता नहीं क्या रंग दिखाया, फूलों जैसे सुन्दर शरीर को मसतां ने सीने से लगाया। नैनों से नैन मिलाये साथ जैसा रूप अपना

था उसी तरह का महाराज नाभ कंवल को बना दिया। एक पल में ही दाने से मस्ताने बना दिया। मस्त आप भी अल्फ नंगे थे और महाराज जी भी अलफ नंगे अवदूत बन गए। कहाँ सुच्ची अल्फी, कहाँ पशमीने की चादर कहाँ जोड़ा, कहाँ घड़ी सब उतार कर फेंक दी। इस रंग में होकर वायसराये की कोठी मोती बाग में नड़ों में जाकर लेट गए। मंजे बिस्तरे सब छोड़ कर कई दिन नड़ों (काहनों) में ही लेटे रहे। कुछ दिनों के बाद मुन्दर सिंह जी नाभे से दर्शन के लिए आकर सुन्दर सिंह से पता किया। सुन्दर सिंह ने सारा हाल कह कर सुनाया, महाराज जी बिरती में हो कर कोठी में लेटे हैं, न कुछ खाते हैं तथा न कुछ पीते हैं और न पास में किसी को खड़े रहने देते हैं. मुन्दर सिंह सुनते ही कोठी की ओर भागने लगा। जाकर सुन्दर प्रीतम जी के दर्शन किये। इस रूप में महाराज पातशाह को लेटे हुए देख कर एक वार तो सिर चक्कर खा गया, आँखों के आगे अँधेरा छा गया। मुन्दर सिंह हैरान था। बात क्या हुई महाराज तो कभी भी मिट्टी की रोड़ी भी नहीं थे लगने देते आज मिट्टी से भरे हुए हैं। महाराज जी ने सुन्दर सिंह को चिंता की नदी में गिरे हुए देख कर हुकम दिया, मुन्दर भाग चल मोती बाग में जा कर साधू के दर्शन कर लो।' मुन्दर सिंह चरण पकड़ कर बैठ गया। कहने लगा, ''मैं नहीं किसी को जानता, मुझे तो आप ही खुदा का रूप हो।'' दूसरी बार फिर हुकम हुआ, ''मुन्दर सिंह जाकर दर्शन कर, नानक के तुल का साधू है जाते हुए भाग ले लेना।'' फिर मुन्दर सिंह ने कोई बदल नहीं किया। हुकम पा कर मसतों के दर्शनों को चल पड़ा। साफ सुथरे लट्ठे की चादर लेकर एक रूपये की भाँग ले ली, काफी भाँग की पण्ड बंध गई, भाँग लेकर जाकर मस्तां के आगे हाजर हो गया, मस्त बहुत ही खुश हुए। ''बल्ला! बल्ला! कह कर थापी दी। महाराज जी मुन्दर सिंह को मसतां की ओर भेज कर आप सरहंद की ओर लटे को जा निकले।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी संत वीरम दास वधौसी वाले से हुई

सन् 1908 में जेठ हाड़ के दिनों में संत वीरम दास के डेरे आ ठहरे। एक महीना इसी ही इलाके में विचरते रहे। कुछ दिन कुरुक्षेत्र में भी रहे। इन ही दिनों में वीरम दास अच्छी योग बल्ल की पहुँच रखता था। लोग काफी मानते थे। एक दो चेले भी इसके अच्छी बर्कत वाले थे। एक दिन अपने चेले से सलाह बनाने लगा यह जो फकीर मस्त रूप में है, यह बहुत करामाती है जिस तरह राम चन्दर जी ने परस दास के चरण छू कर करामात खींच ली थी हम भी किसी दिन धोखा देकर चोरी इनके चरण छू कर करामात खींचे। उन दिनों में महाराज जी पर्शादा भी हाथ पर रख कर खाते थे। पानी भी उंजल से ही पी लेते थे, धरती पर घास–फूस पर ही लेटते थे।

रेत अक आहर कर रोड़ां की गुर करी विछाई।।
भारी करी तपस्या बड़े भाग हरि सिऊ बदि आई।।
वारां भाई गुरदास जी,

एक दिन महाराज जी छे सात दिन के बाद वीरम दास के डेरे आए, जल छकने लगे, वीरम दास ने अपने एक चेले को कहा कि तू इनके हाथों पर पानी डाल मैं चरण छू कर इनकी करामात खींच लूँगा। इस ख्याल से संत वीरम दास पातशाह के पास खड़ा हो गया जैसे कि वारिस शाह ने लिखा है।

झट चोर एवं चुगल की जीभ जैसे, छुपे रहें दीदड़े यार के जी।
चोर यार एवं छग न रहें छुपे, छुपे रहें न आदमी कार के जी।

महाराज जी वीरम दास की कुटलता को अन्तरआत्मा से पानी पीने से पीछे हट गए, वीरम दास को कहा, ''सुनाओ साधा चोरी करना

क्या धर्म है? किसी का हक खाना क्या बड़प्पन है मेहनत करो, मेहनत करने से खुद मालदार बन जाओगे।'' जब महाराज जी ने वीरम दास के मन की कुटलता बताई। वीरम दास का रंग पीला हो गया, शर्मसार हो गया। बहुत डरा, शरीर सुन्न हो गया, चेहरा पीला पड़ गया, खून जम गया, बोलने के सर्म्थ न रहा जैसे सन् पर चोर पकड़ा जाए, शर्म से मर जाता है। महाराज के दस्तूर देख कर बहुत बहुत डरता था क्योंकि जो कुछ भी हजूर के मुँह से निकल जाता था। वो पूरा हो जाता था। वीरम दास को डर लगने लगा कहीं शराप न दे दें। महाराज जी के चरण पकड़ कर रोने लगा। जाते–जाते नदरो–नदरी निहाल कर गए। ऐसे शांति के सोमे थे। सारी ज़िंदगी में किसी को शराप नहीं दिया। बहुत सारे पापी जीवों को सुधारां, आसमान के तारे गिने जा सकते हैं, जीव नहीं गिने जा सकते, जिन्हें राजा जी ने सुधारा है। इस इलाके से महाराज जी बार (पाकिस्तान) देश में चले गए. ननकाना साहिब गुरू नानक देव जी का जन्म स्थान जाकर देखा, कुछ दिन इसी ही इलाके में ठहरे। एक दिन टहलते टहलते एक जिमींदार के कुएं पर जा बैठे। महाराज जी को पर्शादा कहीं कोई खिला दे तो छक (खा) लेते थे नहीं तो नाम के ही अधार पर रहते थे, महाराज जब भगत के कुएं पर जा खड़े हुए उजागर सिंह हल चला रहा था। उजागर सिंह, ऊधम सिंह झिंगड़ा वाले का रिश्तेदर था। ऊधम सिंह ने ही यह साखी सुनाई थी। दर्शन करके उजागर सिंह के मन में बहुत शांति आई मुख का जलाल देखते सार ही दिल को यकीन हुआ कि आज मेरे कुएं पर भगवान ही आ गया है। जलाल का नज़ारा रोम–रोम में चाँद की चाँदनी की तरह छा गया। मन खुशी से झलकें मारने लगा। महाराज जी के लिए मंजी रखी। सावन के बादलों की तरह प्यार के आँसू बहा कर चरणों पर नमस्कार करके घर को भाग गया। ''सुच्चम, प्रेम से पर्शादा बना कर ले चलें, उम्मीद

है आज हमारे सेड़े हुए भाग्य हरे हो जायेंगे, आज हमारा सूखा बाग हरा हो जाएगा, आज हमारी अर्ज खुदा के घर सुनी गई होगी। आज भूने हुए दानों को पत्ते निकल पड़ेंगे। आज भोली। सारे पदार्थों की झोली भरकर घर को वापस आएंगे।'' भगत, भगतनी महाराज जी के हाज़र हुए। आगे महाराज जी समाधी में जुटे हुए थे। दोनों हाथों पर पर्शादा लिए खड़े रहे। प्यार अथवा प्रेम सुख और शांति के पुन्ज बनकर खड़े रहे। बहुत देर की तड़प की आग जैसे आँसू तप रहे सीने में से निकल रहे थे। वैराग से सीना साफ हो रहा था, दिल फूलों जैसा हलका हो रहा था। इतने समय को प्रीतम जी की समाधी खुली। आशा भरी अरदास लेकर हाथ जोड़ कर सुभागी जोड़ी आगे खड़ी थी। महाराज जी प्रेम देख कर बड़े खुश हुए। पर्शादा छका, वृद्ध जोड़ी को एक कन्या और दो पुत्रों का वर दिया। नाम जपना, धर्म की कित करनी, बाँट कर छकना और आये साधू की सेवा करनी। उजागर सिंह की मनोकामना थी घर में औलाद नहीं थी। काफी देर से साधू–संतों की सेवा करता था।

बिन बोले सब कुछ जानता किस आगे कीचै अरदासि।।

महाराज नाभ कंवल जी राजा साहिब ने उजागर सिंह के घर जा कर मन की इच्छा पूरी की, पुत्रों की बख्शिस करके, नाम दान दे कर निहाल किया।

बोलो भाई जी वाहिगुरू।।

आगे साखी बार देश की चली

सन् 1908 को बार देश ननकाना साहिब से आगे मुलतान के बीच की झाकी लेते हुए, प्रह्लाद के स्थान पर शमस तबरेज़ की जगह देखते हुए गुजरात शहर चले गये। गुजरात में संत नरायाण

दास जी अच्छी बर्कत वाले साधू थे। यहाँ पर महीने कुछ दिन महाराज जी ठहरे। इस इलाके की झाकी लेते हुए वापस अमृतसर में आये, अमृतसर चार महीने दस दिन ठहरे। रामदास सरां की ओर एक पंडाल था उसमें बैठे थे। काफी संगत आप जी के दर्शनौं का रस (आनन्द) ले रही थी। हाकम सिंह गाँव धलेते का नंबरदार स्नान करके लांघता जा रहा था। पास ही बैठे एक सेवादार को हुकम किया जाओ उस जाते हुए राहगीर को वापस ले आओ।'' सेवादार ने हाकम सिंह को महाराज का हुकम सुनाया। हाकम सिंह के पीछे मुड़ कर जब देखा तो आगे महाराजा नाभ कंवल राजा साहिब जी अल्फ अवदूत मस्त रूप में बैठे थे। हाकम सिंह दर्शन करके हैरान हुआ। कहने लगा, यह क्या खेल रची हुई है? कोई और ही खेल खेला गया है। महाराज जी ''हुकम! समय–समय की बात होती है जैसा निरंकार की ओर से हुकम होता है तैसे ही रंग में रहना पड़ता है।'' हाकम सिंह को आगे जाने का हुकम किया। आप कुछ देर अमृतसर में ठहर कर एक साल दस महीने बार देश की तरफ माझे की संगतों को तार कर सन् 1909 में फिर दोआबे गाँव राजपुर समराड़ी के बीच भाई सेवा सिंह के तालाब के किनारे जाकर बैठ गए। तीन दिन तीन रातें ठहर कर गाँव रहपे आ गए। गाँव से पूर्व की ओर झाड़ी वाले कुएं के साथ हरी सिंह के वाड़े आगे एक रोड का ढेर पड़ा था, ढेर से ढास लगा कर बैठ गए। आज दो साल के बाद सुन्दर प्रीतम जी क दर्शन हुए। रहपा निवासी संगत महाराज के आने की खबर सुन कर ऐसे दर्शन के लिए व्याकुल होकर उठ भाग जैसे काहन की बंसरी की धुन सुन कर बृज की गोपी, गोप वृंदावन के नर–नारी महाराज जी के दर्शनों को आये जैसे पपीहा सुआती बूंद को पा कर तृप्त हो जाता है। बहुत देर की प्यास तप

रहे सीने की तड़प बुझा कर सच्चे प्रेमी उसी सुन्दर माही के दर्शनों का आनन्द ले रहे थे। उस नूरी, ठण्डी, शीतलता भरी अमृत जैसी झलक के नजारे ले रहे थे। अल्फ अवदूत निरंकार से लिव लीन होकर जुड़े बैठे थे। संगत चकोर की तरह बड़ी नीझ (बड़े ध्यान) से उस इलाही मुख के दर्शन कर रही थी। इतने समय को एक संत अमरदास गाँव से पूर्व की ओर रहते थे, वो भी दर्शन को आये। दूर से ही देख कर मन में मुस्काये कि राजा साहिब जी ने शरीर की बुध नहीं रखी। अमरदास जी के मन की अवस्था को समझ कर महाराज जी कहने लगे, ''ऊपर से साधू नमस्कार करता है अन्दर से कुछ और ही समझता है।

- *बुद बुदा नीर यह शरीर नहीं देख भूल भागने की बार इक पल नहीं लावना।।*
- *कहा विसासा इस भांडे (बर्तन) का इतना सा लागे ठनका*

(पन्ना–1253)

संत अमरदास अपने आप को बहुत चतुर अच्छा, विद्वान ऊँची चाली जैसे समझता था। महाराज जी सब दिलों की जानने वाले चाहे कोई कितना भी आलम हो आते ही निशा कर कर देते थे। अमरदास जवाब सुन कर शर्मिंदा हो गया। बाबा सरमुख सिंह जी के पूछने पर अमरदास जी ने अपने मन की सारी बात खोल कर बताई। सरमुख सिंह, हरी सिंह, मीहां सिंह, छज्जू झिऊर इन्हें लगा कि अँधेरा सा छा गया है। महाराजा के आने पर इन्हें लगा कि चाँद उदय हो गया। धरती पर पैर नहीं लग रहे, सावन की झड़ियों जैसे आँसू बहाते हुए तपे हुए सीने को दर्शन करके ठण्डा किया क्योंकि यह सच्चे प्रेमी थे। इनके लिए सतिगुरूओं का वियोग असहनीय था। जैसे जल के बिना मछली का

जीवन नहीं होता, चकवीं सूर्य के बगैर मुरझा जाती है, सच्चे प्रेमी गुरू के दर्शन बगैर मुरझा जाते हैं। भादों के दिन थे पूरा दिन पड़ रही गर्मी में अल्फ अवदूत, नंगे रोड़ों की ढेरी के साथ ढास लगा कर लेटे रहते, न वचन करते थे, पर्शादा भी हाथ पर ही छकते थे। दूसरे दिन गुरूद्वारा तख्त साहब अपनी कुटिया में जा बैठे। कुछ दिन यहाँ ठहर कर एक दिन रात को उठ कर गाँव झिंगड़ां की ओर जा निकले।

बोलो भाई जी वाहिगुरू।।

आगे साखी झिंगड़ी जाने की चली

महाराज बार देश की संगत को दर्शन देकर पापी जीवों का उदार करके 1909 को भादों में आये थे। कुछ दिन रहपे ठहर कर फिर झिंगड़ा गए। मुकंदपुर और झिंगड़ा के बीच एक छप्पड़ था, उसके किनारे पर जा बैठे। इसका कुआं भी इसी तरफ था तो आगे जा कर देखता है कि महाराज बिल्कुल अलफ नंगे छपड़ी के किनारे बैठे हैं। गाँव झिंगड़ां का भूल्ला नंबरदार कुदर्ती उस छप्पड़ की ओर को निकला। दर्शन करके बहुत हैरान हुआ। बड़ी ही धीरजता के साथ महाराज जी के चरणों पर गिर पड़ा बेनती की, ''सच्चे पातशाह! यह क्या खेल रचा हुआ है?'' महाराज जी समाधी से जुड़ कर निरंकार से लिवलीन था। करतार के चरणों में लीन हुए थे। भुल्ले को कोई उत्तर नहीं दिया। उठ कर गाँव की ओर चला गया. गाँव जाकर सरदारों के घर जा बताया। सारे गाँव में यह खबर सुन कर खुशी की लहर दौड़ गई। लोग प्रेम में मस्ताने होकर उस मारूथलों में सुन्दर प्रीयत्म के दर्शन को एसे भागते जैसे काहन की बंसरी सुन कर गोकल के गोप और गोपियाँ भागते थे। सरदार हरनाम सिंह तथा और गाँव के लोगों ने महाराज जी के जाकर दर्शन किए। पातशाह को मस्त रूप में देख बहुते प्रेमी वराग में ही मस्ताने हो

गये. बेनती की, ''सच्चे पातशाहो! नगर में जा कर चरण पाओ।'' सरदार हरनाम सिंह का प्रेम देख कर महाराज जी संगत के साथ चल पड़े। सरदार गुरबख्श सिंह के घर जा कर स्नान किया। माई नंदी परांठे बना कर चीनी और माखन थाल में रख कंर महाराज जी के आगे रख दिया। आगे से पातशाह जी ने चीनी, घी तथा परांठे कुत्ते को डाल दिये। आगे से बोले, ''यह तो खाना गृहस्थियों का है, साधू का खाना तो बेसन का प्रर्शादा, लस्सी तथा प्याज के साथ होता है।'' उसी वक्त नंदी बेसन पीस कर चनों का पर्शाद तथा ऊपर प्याज रख कर लाई, महाराज जी ने हाथों ऊपर ही रख कर प्रशादा छक लिया। कोई पात्र नहीं लिया। प्रशादा छक कर फिर बाहर उजाड़ं में ही चले गए, जितने भी आशिक ,फकीर दुनियां के सुखों से उदास हो कर इस संसार के झूठे रिश्ते को समझते इनकी असली मित्रता पहाड़ों की चोटियों के साथ होती है, मारूथलों तथा टिब्बों, वनों तथा पर्वतों पर बह रहे दरियाओं के साथ दोस्ती होती है, पानी की छलें, शीहों तथा शेरों, नागों के साथ याराने लगे हुए होते हैं। क्योंकि आशिकों को रंग मजीठी चढ़ा हुआ होता है।

रंगि हसिह रंगि होवहि चुप भी करि जाहि।।
परवाह नाही किसे केरी वाझू सच्च नाह।।

ऐसे ही परमात्मा की रज़ा में गुजरते रहते हैं। परमात्मा की रज़ा के साथ बातें करते हैं। महाराज इसी ही इलाके में छप्पड़ पर आकर बैठ गए। न कोई गले में बस्तर था, न कोई पलंग बिस्तरा, न कोई महल मन्दिर, रात दिन बाहर ही खेतों में रहा करते थे। अलप अहार, अलप निंदरा, ऐसी उच्ची–सुच्ची आप जी की चाली था। दुनियां ऐसे दस्तूर को देख कर दंग रह गई थी। दंग भी क्यों न होय? पड़ रही बर्फ, वग रहे ठकों पड़ रही बारिशों, चमक रही बिजली, पहाड़ों जैसी लंबी–लंबी सर्दी की रातें,

बब्बर शेर की तरह बाहर ही जंगलों में काटते थे। ऐसी सख्त धारणा को देख कर सिक्ख सेवकों प्रेमियों का कलेजा फटता था। आप तो रजाई के सुख लेते थे, सारी दुनियाँ का वारिस सुन्दर प्रियतम, माता साहब देई का चाँद बाहर गर्मी तथा सर्दी शरीर पर सहता था परन्तु ऐसी गर्मी कोई साधारण मनुष्य नहीं सहन कर सकता। आप गर्मी, सर्दी के मालिक थे, एक दिन गाँव के बहुत सारे आदमी इक्ट्ठे हो कर गाँव से चले इस खयाल से कि बेनती करें कि पहले की तरह महाराज जी वस्तर पहना करें तो अच्छी बात है, जब गाँव में यह इक्ट्ठे हो रहा था तो पास बैठे हवलदार नत्था सिंह को महाराज कहने लगे, "नत्थू आज पंचायत इक्ट्ठी हो रही है।" इतने समय में गाँव से काफी आदमी इक्ट्ठे हो कर निकले, संगत ने जा कर चरणों में नमस्कार की और बेनती की, "सच्चे पातशाहो! आपका हुकम हो तो आप जी के लिए वस्तर ले आएं।" नम्रता भरी बेनती सुन कर एक रुमाल ले आने का हुकम किया। हरनाम सिंह रुमाल के साथ ही एक चादरा भी बना कर ले आया। धीरे–धीरे अर्ज करते–करते महाराज जी के कुछ दिनों बाद एक चोला भी पहना दिया परन्तु निकट किसी को नहीं थे लगने देते। दूर से ही सलाम करके लोग पीछे हो जाते थे। अगर कोई मन अन्दर कुटलता रखकर पेश होता था तो आते ही तबीयत साफ कर देते थे। इतने बली, ईश्वर कोटि त्रिकाल दर्शी, तत्वंते सभ भूत, भविष्य, वर्तमान जानने वाले थे।

घट–घट के अन्तर की जानत, भले बुरे की पीर पछानत।।
बोलो भाई जी वाहिगुरू।।

आगे साखी साहिब दयाल के उदार की चली

महाराज जी इसी ही तरफ कई दिन बैठे रहे। कभी उठकर सतलुज दरिया के किनारे पर जा बैठते थे। पानी की लहरों के नजारे

देखते रहते थे, दरिया की सैर करके मुकंदपुर के बीच साहिब दिखा के लिए आब–ए–हयात के प्याले लिए बैठे थे। आज दिल किसी अनोखे ही रंग में रंगा पड़ा था। मन अन्दर खुशी की लहर दौड़ पड़ी थी। आज किसी और ही देश की झाकियों के नज़ारे दिमाग में घूमते हैं। आज साहिब दयाल को कोई नहीं कि मेरा कमाल पीर आबे–हयात का प्याला लिए बैठा है। आज सारी पिछली मजदूरियों की मेहनत मिल जाएगी। आज सारी सेवा का मेवा अमृत फल मिल जाएगा। जन्म मृत्यु के संकट काटे जाएंगे, आज चमड़े की कैद से हमेशा के लिए आजाद हो जाऊँगा, क्योंकि महापुरुष की सेवा की हुई व्यर्थ नहीं जाती। महापुरुषों की सेवा कुलों का उदार कर जाती है। साधू की सेवा निरंकार की सेवा ही मानी जाती है। साधू की सेवा करने से लोक, प्रलोक में मुख्य उजाला हो जाता है। साधू की सेवा करने से सब लेखे खत्म हो जाते हैं। साहिब दयाल महाराज जी की सेवा बड़े प्रेम से किया करता था। बहुत सुन्दर जोड़ा सच्चे तिल्ले से कढ़ाई करके महाराज जी के लिए प्रेम से लाया करता था। पहले 40 (चालीस) वर्ष पातशाह जोड़ा पहनते रहे थे। बचपन से ही साधू संत की सेवा करना, बाँट करन छकना, धर्म की किरत करनी, धर्म की कमाई करके अन्न खाये तो सीना बहुत जल्दी साफ हो जाता है। कबीर जी ने भी लिखा है

कबीर मनु निरमलु भैया जैसा गंगा नीर।
पाछै लागो हरि फिरै कहत कबीर कबीर।।

(पन्ना–1367)

आज साहिब दयाल जी की सारी सेवा स्थान पड़ी।

साध संग धर्म राय करे सेवा।।
साध के संगि शोभ सुर देवा।।

साहिब दयाल जी ने महाराज जी के चरणों पर आ कर सिर (शीश) रख दिया, बड़े समय से दर्शनों का प्याास था। क्योंकि दो साल बाद सतिगुरुओं के दर्शन हुए, दिल तड़प रहा था, नैन लोच रह थे, दर्शन करके सीना सर्द हो गया। पातशाह ने सरदाई छकते–छकते दो घूट साहिब दयाल की ओर किये और हुकम किया ''लो मेरे प्यारे। आबे हयात का प्याला।'' जब वो पवित्र सरदाई का घूट रगों में गया तो साहिब दयाल के कवाड़ खुल गए, दिव्य दृष्टि खुल गई, मजीठी रंग में रंगा गया।

नानक नदरि नदरि निहाल

हुकम किया साहिब दयाल ''जांओ। तुझे सिक्खों में दाखिल कर लिया है।'' हुकम किया अब घर नहीं जाना साहिब दयाल को भेज दिया। सतिगुरुओं का हुकम मान कर चल तो पड़ा परन्तु अभी घर का कुछ प्यार था। गुनाचौर के पास जा कर फिर घर की ओर चल पड़ा। साहिब दयाल इस बात को भूल गया था कि मेरा कामिल पीर सभी बातों में स्मर्थ है। सब स्थान पर देख रहा है जिसके शीत प्रसाद में इतनी शक्ति है, जिसके छकन से ब्रहम ज्ञान की प्राप्ति हो गई है। जिसके छकने से त्रिलोक की खबर हो गई है, यह नहीं था जानता सारी कला कुदरत मेरे मुर्शिद के हाथ में ही है। किसी को जिन्दगी दे चाहे मार दे, कला दे सकता है खींच भी सकता है, भर भी सकता है, खाली भी करवा सकता है। जो गुंगो को गीतों के पाठ करवा जाता है. पिंगले एवं लूलों को पहाड़ों की सैर करवा सकता है। घर–घर के जानने वाले से कोई चोरी कैसे रख सकता है? जब साहिब दयाल घर की ओर चला तो दिखना भी बंद हो गया। फिर डर के कारण पीछे वापस आ गया, दिखने लगा बैठ गया। कुछ समय के बाद घर की ओर चला। फिर पता नहीं क्या कला खींची बैठे तीन मीलों से जो सतिगुरू की ओर से कृप्या हुई

थी वहाँ पर दिव्य दृष्टि फिर बंद हो गई। जो रोशन हुआ था। ज्ञान का चिराग बुझ गया। जब यह दशा हुई फिर रोने लगा। न घर के लिए रहा, न साधू रहा। बेड़ी न पार, न उरार, बीच में दरिया के ही झूले खाने लगी। मन वैरागी हो गया। वापस गुम हुई वस्तु को ढूँडता घूम रहा, पर वक्त गया हाथ में नहीं लगात। साहिब दयाल जैसे शर्म का मारा व्यापारी सर्मिंदा होकर माथा फोड़ रहा हो। इसी तरह यह दशा साहिब दयाल की हो गई। शर्म का मारा वापस सतिगुरुओं के सामने भी नहीं जाता। और जो महाराज जी के प्रेमी थे, उनकी मिन्नतें करता रहा मेरी तो बात खजूर पर चढ़ कर गिरने वाली हो गई, मेरी टूटी हुई गाँठने वाला कोई सूरमा मेरे पर तरस (दया) करे। मैं उसका दास हूँगा। बुल्ले शाह की तरह दूर–दूर से पीर को मनाता घूम रहा है। काफी देर साहिब दयाल वियोगी की तरह घूमता रहा। खाना पीना हँसना, बोलना सब जाता रहा वैराग से मन शुद्ध, साफ और पवित्र हो गया। 'वस्तु अंदरि वस्तु समावै दूसरी होवै पासि। एक दिन बाबा सरमुख सिंह ने महाराज आगे साहिब दयाल बारे अर्ज की, सच्चे पातशाह

जैसा बालकु भाए शुभाए लख अपराध कमावै।।
करि उपदेसु झिड़के बहु भाती बहुड़ि पिता गलि लावै।।
पिछले औगुण बखसि लए प्रभु आगै मारगि पावै।।

साहिब दयाल बहुत म्नितें करता फिरता है, बहुत पछता रहा है। ''सरमुख सिंह तेरा कहना नहीं मोड़ सकता, अच्छा पेश करो।'' महाराज जी का हुकम मिला। सरमुख सिंह जी ने झटपट साहिब दयाल के पास मुनशी नाम का एक आदमी भेज कर बुलवा लिया। मुनशी भी मजारे का आदिधर्मी ही था। साहिब दयाल संदेश सुन कर उसी वक्त चल पड़ा। शरीर थर–थर काँपता, टाँगें काँप रहीं थीं। दूर से ही गले में पल्लू डाल कर मिन्नतें तरले करते हुए

सतिगुरूओं के पेश हुआ। आ कर चरणों पर गिर पड़ा। साहिब दयाल का वैराग बेशुमार टूट पड़ा। आगे से सतिगुरू मेहरबान हो कर बोले, ''साहिब दयाल नज़र ऊपर उठा, देखूं तेरी नज़र साफ है?'' साहिब दयाल ने बहुत झुकी हुई नज़र से, तपड़ती नजर से सतिगुरूओं की तरफ देखा तथा जब नेत्रों से नेत्र मिले फिर ऐसा रंग चढ़ा। साहिब दयाल को कोई सुध न रही, भरपूर कर दिया। सरदार हरनाम सिंह को इशारा किया। ''नामा! कोई नयी झझर पानी की भर कर ले आओ'' महाराज जी ने खुद बाँहों में लेकर साहब दयाल को उठाया परन्तु उसको कोई सुध बुध नहीं है, नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात, ऐसा नशा पिलाया। मेर कामिल पीर ने नाम की शक्ति भर दी। उठा कर भरी हुई पानी की झझर मुँह को लगाई इतनी तेजी नाम की थी कि झझर पानी की पी गया। पानी पिला कर पातशाह ने आप खड़ा किया। और कहा, ''साहिब दयाल! अब तेरी कमाई पूरी हो चुकी है। एक वन में दो शेर नहीं रह सकते। आप जी ने दयाल साहिब को मुलतान की तरफ चले जाने का हुकम दे दिया। बाबा जी का कुछ पता नहीं कि किधर चले गए? बाद में घर वालों ने बहुत ढूँढा परन्तु कहीं भी नहीं मिले। देर बाद एक दिन फतेह सिंह ने पातशाह के चरणों में बेनती की, ''सच्चे पातशाह! कहीं साहिब दयाल के बारे में बताओ। दर्शनों को मन बहुत लोच रहा है। आप की नज़र तो आकाश पाताल में काम करती है। त्रिलोकी नाथ हो मुझे बताओ जहाँ भी हो मैं जाकर दर्शन कर लूँ। बठिंडे स्टेशन का इशारा किया। यह हुकम पातसाह से लेकर फतेह सिंह बठिंडे जा कर जब स्टेशन पर उतरा। एक पीपल के नीचे के थड़ा बना हुआ था। उस थड़े पर एक फकीर मस्त गोदड़ ऊपर लिए हुए पड़ा ता। मस्तों को देख कर किसी से पूछने चला गया कि यह मस्त कहाँ के हैं, नाम क्या है? पूरी पहचान न

लगी। जब पूछ कर वापस आया तो वहाँ देखा वहाँ कुछ भी नही था। बहुत ढूंढता घूमता रहा कोई पता न चला किधर चले गए। थक–हार कर घर आ गया। ऐसी ही महाराज नाभ कंवल राजा जी की नज़र में शक्ति थी। पापी जीवों को भव सागर से पर कर देते थे, जिस तरफ मेहर भरी नज़रों से देखते थे।

बोलो भाई जी वाहिगुरू।।

आगे साखी और चली

झिंगड़ां से उठकर महाराज गाँव रहपे बाबे सरमुख सिंह के पास गये. कुछ दिन ठहर कर कुरुक्षेत्र की ओर जा निकले। सूर्य ग्रहण का मेला जाकर देखा। दो ढाई महीने इसी ही तरफ विचरते रहे। बाद में मूसापुरी मुन्दर सिंह का पिता वजीर सिंह बीमार हो गया। महाराज जी को बहुत याद करने लगा। मुन्दर सिंह, बसंत सिंह को कहने लगा, ''जहाँ भी महाराज जी का कोई किसी को पता नहीं कि किधर को निकले। वजीर सिंह का अन्तिम समय था। अन्तिम आँसू बहाते हुए पातशाह को याद करता रहा. महाराज जी को वजीर सिंह ने प्रेम की खींच पाई। महाराज जी कुरूक्षेत्र की झाकी लेते हुए सरहंद रोपड़ की सैर करते हुए गाँव मूसापुर (जिस दिन वजीर सिंह ने अकाल चलाना करना था) मुन्दर के घर के आगे फलाही के नीचे आ कर बैठ गये। मूसापुर से एक मूला सिंह, अन्धेरे में किसी काम की ओर जा रहा था, पातशाह को बैठे देख कर नमस्कार की वापस मुड़ कर आ कर मुन्दर सिंह को बताया कि पातशाह आपकी फलाही के नीचे आ कर बैठे हैं। मुन्दर सिंह नंगे पाँव ही सुनकर भागा. इतने समय को पातशाह भी उठ कर घर

की ओर आ रहे थे। महाराज सीधे जल्दी जल्दी वजीर सिंह की मंजी के पास जाकर खड़े हुए। अन्तिम स्वास था। मन में बहुत इच्छा थी, सतिगुरूओं के दर्शनों की प्यास थी। अंत समय दर्शन देकर वजीर सिंह की मनोकामना पूरी की और मोक्ष बख्श बेड़ा पार किया। आप जी के खड़े–खड़े ही वजीर सिंह के स्वास खत्म हो गए। मुन्दर सिंह का घर उस वक्त कच्चा ही था। महाराज जी छत पर चढ़ कर बैठ गए। वजीर सिंह का संसकार करने का हुकम किया। संस्कार करने के बाद पीछे से संगत महाराज जी के दर्शनों को आने लगी। मुन्दर सिंह ने बड़ी सी परात पताशों से भर कर, महाराज के चरणों में आ कर रख दी। और भी लोग दर्शन भेटा कोई कुछ, कोई कुछ लाये। मिशरी, सौगी, छुहारे आदि के सरकार के आगे ढेर लग गये। पाँच रुपये के पताशे मुन्दर सिंह उस वक्त लाया था। कच्ची छत पर बहुत सारी संगत इकट्ठी हुई। प्रताप सिंह और नरंजन सिंह भी दर्शन के लिए आए, आगे देखा तो सारा कोठा संगत से भरा हुआ था। प्रताप सिंह के मन में वहम हुआ, इतनी दुनियां कच्चे कोठे ऊपर बैठी है, कोठा गिर जाएगा। पीछे वापस जाने लगा, आगे महाराज जी ने दिल की बूझ कर हुकम किया, ''भाई आगे आ जाओ, यह कोठा गिरता नहीं, यह तो और भी पक्का बन रहा है। यह तो आज कोठी बन गई है। आज जहाँ बड़ी–बड़ी बिल्डिंग बननी हैं।'' जब महाराज जी ने ऐसा कहा तो प्रताप सिंह और नरंजन सिंह झूठे हो गए। परताप सिंह और नरंजन सिंह नमस्कार करके संगत में ही बैठ गए। महाराज संगत को उपदेश देकर निहाल कर रहे थे। कोई नौ–दस बजे तक संगत को उपदेश देकर प्रशाद बाँटने का हुकम किया। संगत में प्रशाद बाँटा गया। सब को जाने की छुट्टी दे दी गई। कोठे से उठ कर महाराज जी गाँव के पश्चिम की ओर

एक झुंड सा था, उस में चले गए। गणेश घुमार और मुन्दर सिंह भी साथ ही थे, हुकम किया, ''गणेश स्नान करने के लिए पानी ले आओ।'' मुन्दर सिंह और गनेश ने चौकी पर पानी की गागर ले जा कर स्नान कराया। गनेश ने भी महाराज की सेवा काफी समय की। शरीर छोड़ जाने कारण उनसे.कोई वचन नहीं लिए गए। और कई बुजुर्ग आदमियों से पता चलता है कि गनेश ने बहुत देर सेवा की। वहाँ ही महाराज जी ने मुन्दर सिंह को प्रशादे के लिए हुकम किया। प्रशादा छकने के बाद, मुन्दर सिंह को गाँव की तरफ भेज गिया। आप पहाड़ की ओर जा निकले। आनन्दपुर साहिब, कीरतपुर साहिब, इस इलाके की सैर करते हुए वापस एक दिन कावां के मजारे आ ठहरे। यहाँ एक महीना कुछ दिन रहे। इस इलाके के लोगों को उपदेश करके आगे गड़शंकर के इलाके को जा निकले। धीरे–धीरे टहलते–टहलते सुज्जों और कितने के बीच मोरांवाली जाकर बैठे।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी सुज्जों की चली

1909 में महाराज 13 मघ्घर को मूसापुर से पहाड़ की ओर को चले थे। माघ के दिनों में महाराज सुज्जों की जूह में आ बैठे। उन दिनों में महाराज जी के ऊपर पतली सी चादर थी। रात दिन बाहर उजाड़ में ही रहते थे। अठरह बीस दिन, इसी की तरफ रहे, न कुछ खाया, न पीया। नाम के ही उदार पर रहते थे। जब ऐसी चाली गाँव के लोगों ने देखी सुनी, बहुत सारे आदमी महाराज जी की सेवा में जाने लगे–हरजिंदर सिंह, हरमुख सिंह नरंजन सिंह, वरियाम सिंह, सीतल सिंह, कर्म संह, भगवान सिंह, लहना सिंह, जिनमें से हरजिंदर सिंह महाराज जी को प्रशादा छकाया करते थे। नरंजन सिंह और हरजिंदर

सिंह जी की तरफ से कथा सुन कर लिख रहा हूँ। जो कौतक सुज्जों में आप जी ने की। नरंजन सिंह के खेत में गुरुद्वारा बंगला साहिब बना हुआ है। जब पहले–पहले महाराज इस गाँव की जूह में आए, डंगर चारने वाले लोग आ कर बातें करते थे, गाँव में एक फकीर है, परमात्मा का रूप ही उतरा हुआ है, न कुछ खाता है, न कुछ पीता है। पोह माघ की सर्दी में बाहर ही रहता है। नंगे पाँव है, न कोई ऊपर कपड़ा है, पता नहीं इतनी सर्दी में कैसे बाहर रहते हैं? पता नहीं गर्मी, सर्दी इनके हुकम में चलती है? न कोई मंजी लेते हैं, न कोई कपड़ा है। एक गले में अलफी ही पहनी हुई है। सर्दी से पड़े हुए पानी जम जाते हैं। हरजिंदर सिंह ने बताया जब कभी हमें सेवा के लिए बेनती करते थे तो दूर से ही पीछे वापस भेज देते थे। जब इस तरह एक महीना कुछ दिन गुजर गए। गाँव वासी लोगों का दिल काँप उठा। इतनी कठिन साधना वाला तपस्वी कोई निरंकार का रूप ही हमारे गाँव की जूह में, हमारे गाँव को भाग्य लगाने के लिए आया हुआ है। महाराज कई वार इधर–उधर दूर पास चले जाया करते थे। वापस फिर इसी ही तरफ बैठ जाया करते थे। सारी सर्दी का समय इन खेतों में गुजार दिया। सर्दी बीतने के बाद बसंत ऋतु आने पर खिज़ा के बाद, वापस फिर सब तरफ हरियावल ही हरियावल नज़र आने लगी। फसलों पर वनों पर्वतों पर कहर का नूर खिड़ा सा नज़र आने लगा। फूलों की क्यारियाँ ऊपर भँवरे पड़े गूँज रहे थे। खेतों में गन्दलें फूट–फूट कर खेतों को रंग लगा रही थीं। फागुन चेतर के दिनों में गाँव के लोगों ने महाराज जी के चरणों में बहुत बेनती करके, गाँव के पश्चिम की ओर, नरंजन सिंह के खेत में एक कुल्ला बना दिया। महाराज कुल्ले में रहते रहे। एक दिन हरजिंदर सिंह महाराज जी के लिए प्रशादा लेने के लिए गया। महाराजा जी ने आगे से हरिजंदर सिंह को इशारा किया, ''देख !

हरजिदंर, क़ितने बड़े महल पड़े हुए है। कितनी–कितनी बड़ी कोठियां पड़ी हुई हैं। देख! हीरे लालों से जड़ी हुई हैं। उस वकत सुज्जों में कोई पक्का मकान नहीं था। आज सुज्जों में कोई कच्चा मकान नजर नहीं आता। सब लोग माला–माल हैं, बड़ी–बड़ी इमारतें हैं। यह भविष्य वचन आप जी ने चाली साल पहले ही रमज़ में हरजिंदर सिंह को बताये। एक साल आप जी उस कुल्ले में रहे। उस के बाद सीतल सिंह के खेत में एक फलाही था। फलाही का टहना एक तरफ को लमक रहा था। फल ही पर मण्हा बना कर रहते रहे। एक साल के बाद हजिंदर सिंह का भाई वरियाम सिंह जो चीन में रहता था, वो भी आप जी का बहुत बड़ा सेवक बन गया। मन में शौक उठा महाराज जी के लिए एक बहुत सुन्दर बंगला तैयार कराऊँ। हरजिंदर सिंह को कहने लगा, ''भाई साहब जी! अगर आप कहें तो अपने खूह पर एक चीन के फैशन का बंगला बना दूँ सच्चे पातशाह रहा करेंगे।' हरजिंदर सिंह कहने लगा, ''इससे अच्छी और कौन बात है?'' लकड़ी तथा ईंटे ले आये, जिस दिन नींव की ईंट रखनी थी, महाराज जी के चरणों में बेनती की, ''सच्चे पातशाह। अपने पवित्र हाथों से बंगला साहिब की नींव रख आओ।'' ईंट रखने के लिए महाराज जी आए। वहाँ ईंटें गिरी पड़ी थीं, यहाँ बंगला साहिब की नींव रखनी नियत हुई थी। हरजिंदर सिंह का खूह छोड़ कर आगे चले गए। एक जगह पर जा कर खड़े हुए, ''यह जगह है हमारी। अगर छोड़ दे।'' खैर सभी लोग सेवादार साथ ही थे। सब ने बेनती की, ''सच्चे पातशाहो! यहां हुकम करो वहां ही बंगला साहिब नाम दिया जायेगा।'' वो खेत निरंजन सिंह का था। नरंजन सिंह को पहले ही गाँव भेज दिया था कि देग बना कर ले आओ। नरंजन सिंह जब देग बना कर ले आया, महाराज निशान देही नरंजन सिंह के खेत में ही दे रहे थे। नरंजन सिंह देख कर बहुत खुश हुआ, वैराग में आँसू

बहाता हुआ, चरणों पर गिर पड़ा, मन खुशी से गद–गद हो उठा। नींव खोद कर बंगला साहिब की इमारत की ईंट रखी। सरकार का हुकम यह हमारा तख्त बहुत बड़ा 16 खेतों में होगा, 7 खेतों में तो मेरी संगत की आई हुई गाड़ियाँ ही खड़ी करेंगे, दो खेतों में मेरी संगत के जोड़े ही रखे होंगे। यह हुकनामा देकर आप फिर उसी ही मणे पर चले गए। सन् 1911 दिन बुधवार 13 सावन को बंगला साहिब की नींव रखी थी। हरजिंदर सिंह ने कहा कि मैं गढ़शंकर से मिस्तरी ले आऊँ, जाते–जाते पातशाह महाराज जी की आज्ञा लेने गया, तो आगे से हुकम हुआ सेवादार आप ही आ जाएंगे। कुछ देर हुई तो मंगल राम गोसलां से, मीहाँ सिंह रहपे से, मूसापुर, भरोमजारे, झिंगड़ां से लकड़ी का तथा बाकी सब काम करने वाले सेवादार पहुँच गए। इमारत शुरू कर दी। बंगला साहिब बहुत सुन्दर बन गया। नीचे सुरंग बनाई। एक छत ऊपर जाकर बनाई दो छतें बन गई। उपर वाली छत को महाराज देवतों की छत कहा करते थे, हर रोज़ धो कर धूप देकर बिछाई करवा देते थे। उस छत पर आम आदमी नहीं था जा सकता। एक सेवादार सीतल सिंह की डिऊटी थी, हर रोज़ स्नान करवा कर धूप देना। बंगला साहिब पूरा तैयार होने के बाद गाँव से बीबियाँ तथा काफी और संगत प्रशाद बना कर शब्द पढ़ती हुई महाराज जी के दर्शनों को आईं। जब गाँव से संगत निकल पड़ी दो खेत गुरुद्वारे के पीछे ही थे। उठ कर आवाज दी, यहाँ से ही प्रशाद बाँट कर नमस्कार करके वापस चले जाओ। संगतें शब्द पढ़ रही हैं ''तू दे दर्शन गुरु मेरे सब संगतें आई दर्शन को'' महाराज जी कहते थे, ''सुनूँगा! फिर सुनूँगा। अभी यहाँ से वापस चले जाओ। उस वक्त सूनूँगा जब मेरा तख्त 16 खेतों में प्रफुलत होगा।'' अभी तो हमने निशान ही लगाया है। पर वहाँ खड़ी हुई बीबियों ने शब्द पढ़ा, ''तू दे दर्शन गुरू मेरे असीं कौण वेले

दीआं खड़ीआं'' हरजिंदर सिंह को हुक्म हुआ कि यहां से ही पीछे चले जाएं। काफी लोगों का प्रेम बढ़ता गया। पांच घुमां ज़मीन बंगला साहिब के नाम कर दी। महाराज जी जब मणे पर ही रहते थे। उन दिनों में महाराज जी के पांच घर बहुत सेवक बन गए। बंगला तैयार होने पर महाराज जी बंगले में ही रहने लगे। रहिपा, झिंगड़ा, मजारा, गोसलां, भरोमाजरा और मूसापुर काफी सेवक हर रोज़ दर्शनों को जाया करते थे। कोई पंद्रह बीस आदमी महाराज जी के पास ही रहा करते थे। सरदार हरनाम सिंह झिंगड़ा वाले को महाराज सदा साथ में रखते थे। कहा करते थे कि यह हमारा वज़ीर है, कभी–कभी यह भी कह देते थे जिस ने मेरा दर्शन करना हो वो नामे का ही दर्शन कर ले, तो मेरा ही दर्शन हो जाता है। सरमुख सिंह जी रहिपे से हर रोज सूर्य की टिक्की निकलती से ही सूजों पहुंच जाते थे। दर्शन कर के वापिस शाम को फिर रहिपे आ जाना। इस तरह संगत की आवाजाई काफी बनी रहती थी।

बोलो भाई जी वाहेगुरू।।

साखी वरियाम सिंह को यमराज से छुड़ाने की चली

हरजिंदर सिंह के पिता भाई वरियाम सिंह बिमार हो गए। वह महाराज जी के बहुत प्रेमी थे। ग्रहदशा के कारण कई दिन कष्ट में रहे। एक दिन स्वास रुक गए, शरीर ठंडा हो गया। वरियाम सिंह जी के मृत शरीर को जब शमशान ले गए, धर्मराज उठ कर खड़े हुए। आगे दूतों को कहा। जल्दी करो इसे वापिस करके आओ। दो भयानक डरावनी सूरतें, दो–दो सींग चौड़ी–चौड़ी आँखे वरियाम सिंह को पकड़ने लगे। धर्म राजी एकदम यमदूतों को बोले। ''पीछे हटो,आप

इसके समीप नहीं जाओगे, यह तो राजा साहब के दर्शन करता रहा है, सेवा भी करता रहा है, (दूसरे नर रूपी दूतों को इशारा करते हुए) इसे वापिस ले के जाओ। इसकी 25 साल आयु शेष है।'' वरियाम सिंह फिर जी उठा और सारी कहानी उस ने उठ कर सुनाई। 25 साल तक और जीवित रहा। इस प्रकार जो राजा साहब जी की सेवा सच्चे मन से करे उसे यमराज भी तलब नहीं होती। बाकी की सारी ज़िंदगी वरियाम सिंह ने राजा साहब के गुणगान में व्यतीत कर दी। एक दिन नरंजन सिंह महाराज जी के लिए प्रसादा लेकर गया। फिर एक धारणा पढ़ता रहा कि सतिगुरू होंगे सहाई बेले अंत के, तुम्हारे सेवक कऊं भऊँ कुछि नाहिं जमु नहीं आवे नेरै'' ऐसा महापुरुषों की सेवा का फल है। महाराज जी कुछ गुप्त रहस्य प्रगट कर रहे थे। जर्मन, ब्रिटेन आदि देशों के नाम लेकर कुछ बता रहे थे। सन 1912 में अंग्रेज़ों व जर्मन की लड़ाई के रहस्य बता रहे थे। अद्भुत बातें कर रहे थे। नरंजन सिंह प्रसादा हाथों में ही लेकर खड़ा रहा क्योंकि महाराज जी का नूरानी तेज़ सहन करने योग्य नहीं था। कुछ समय बाद महाराज गालियाँ देने लग पड़े। निरंजन सिंह कहता कि मेरे बैठे–2 की कौड़ी धड़कने लग पड़ी। पता नहीं किस से गुस्से हो रहे थे। जब थोड़ी देर बाद 40 साल की औरत कितणा गाँव से धीरे–धीरे चली आ रही थी, काफी दूर थी, महाराज जी कहने लगे, ''नरंजन! उठ, जलदी कर, रोटी पड़ी रहने दे, हमें तो और ही कामों से फुरसत नहीं। वो डण्डा उठा,यह जो मुँह उठा कर चली आ रही है इस के गिट्टे तोड़ दे।'' हुक्म कौन टाल सकता था? नरंजन सिंह आज्ञा पा कर सोटी ले कर दौड़ पड़ा, उस ने आती हुई स्त्री को कहा, मेरे आगे–आगे भाग नहीं तो मुझे हुक्म बजाना ही पड़ेगा। बूढ़ी औरत

बेचारी डर कर भागने लगी। नरंजन सिंह कभी एक कँधे कभी दूसरे कँधे से घुमा कर मारी जाए। काफी दूर चले गए, कितने के नज़दीक आकर पीछे मुड़ा। जब निरंजन सिंह वापिस आया तो महाराज जी बोले–''नरंजन। न लड़की तेरे न मेरे, मैं जोड़ी कहाँ से बना दूँ?'' बूढ़ी (औरत का यह संकल्प था कि मेरे बेटे की शादी हो जाए) हमें कोई और काम दिखता है, जर्मन की लड़ाई लगी हुई है, कई काम करने वाले पड़े हैं।'' ये वचन महाराज ने 1912 में कहे थे, सन 1914 में लड़ाई लग गई। दो साल पहले ही रहस्य बताया था, फिर प्रसादा ग्रहण किया। नरंजन सिंह को छुट्टी मिली तथा सारी कहानी हरजिंदर सिंह व नरंजन सिंह ने दास को सुनाई।

बोलो भाई वाहिगुरू।

आगे साखी लड़ाई की चली

बँगला साहिब तैयार होने के बाद चढ़ते सूर्य की तरह दिन प्रतिदिन रौनकें बढ़ने लगीं। कुछ लोग गाँव में इस रौनक को बढ़ता देख कर ईर्ष्या करने लगे। कुछ एक गाँव के लोगों को भ्रम में डालने का पाखण्ड करने लगे। गाँव के दो धड़े बन गए। इस संत के पीछे दुनिया लगी है, हो सकता है हमारी ज़मीनें छीन कर मार पीट कर गाँव से बाहर निकाल दे। ऐसी एक बगावत की लहर गाँव से में पैदा कर दी। जो गाँव में उपजाऊ ज़मीन है, सारी ज़मीन पर राजा साहिब का कब्जा हो गया है। बीचों बीच काफी लोगों में कुटलता की लहर चली, जब बँगला साहिब की तैयारी करते हुए माताओं को कह दिया था कि फिर गीत सुनूंगा अबी समय नहीं। दूसरी बात कि महाराज़ भोजन हरजिंदर सिंह

व नरंजन सिंह के ही घर का किया करते थे। कई लोग कह देते हैं कि सभी हमारे घर का भोजन भी महाराज जी को करा दिया करो, इस प्रकार यदि हरजिंदर सिंह किसे के घर का भोजन ले जाते तो महाराज जी कहते और बनाकर जाओ। ऐसा आपने़ कई बात कौतुक किया परंतु एक बार हरजिंदर सिंह एक काफी कुटलता वाले जीव के घर से खाना बना कर ले गया। भोजन सामने रखकर प्रणाम किया।

महाराज जी घट–घट की जानकारी रखने वाले व प्रत्येक जन के बुरेभले संकल्पों को जानने वाले महाराज जी ने हरजिंदर के तीन चार चपेड़ें जड़ दीं, पाँच सात गालियां भी दीं। हरजिंदर को पानी–2 कर दिया। हरजिंदर के पैर धरती से उखड़ने लगे, आँधी आ गई क्योंकि हरजिंदर झूठा था। महाराज जी ने पहले हिदायत दी कि हमारा भोजन किसे के घर से नहीं लाना। लोगों के दिल को पहले ही समझ चुके थे। अपने सिख सेवकों को पहले ही यह विद्या सिखाया करते थे–ऐसे पैंतरा बदलते हैं, ऐसे वार कर के दूसरे के बार को रोका जाता है। आप भी महाराज बहुत फुर्तीले थे। गतके के भी अच्छे खिलाड़ी थे। काफी अपने सिक्ख सेवकों को लड़ाई के ढंग बताते रहते थे। महापुरुषों को सब कुछ ज्ञात होता है जो उस निरंकार की रज़ा में चलते हैं–

- *तेरा कीया मीठा लागै। हरि नाम पदार्थ नानक माँगै।।*
- *बेखुवाहस बेगरज है आरफ उरफ गदा।*

ये लाभ हानि की कोई परवाह नहीं करते। इन्हें अपने यार को खुश रखना होता है, सब कुछ आप ही करना होता है, बहाना चाहे किसी को भी बना लिया जाए। जैसे गुरू हर गोबिंद जी ने बाज का बहाना लेकर मुगलों से जंग शुरू की थी। गुरू गोबिंद सिंह जी ने

प्रसादी हाथी के बहाने राजाओं से जंग शुरू की, गुरू अर्जुन देव जी ने चन्दू की लड़की के रिश्ते को नामंजूर किया व आप शहीदी पाई। रामचन्द्र जी ने सीता. के बहाने रावण को मारा। श्री कृष्ण ने महाभारत का युद्ध कौरवें व पाँडवों के बहाने करवाया। दुनिया भर के यौद्धा मौत के घाट उतार दिए गए। इसी तरह महाराज जी सन 1912 में सावन भादों के दिनों एक आने वाला समय बताना चाहते थे। महापुरुषों की रमज राही वेदों के रूप में ही कर मात लोग में प्रगट किया जाता है। कई बाते महापुरुषों की रमज़ खुदा के साथ होती है जो दरगाही कानून होता है। महापुरुष हज़ारों साल आने वाले भविष्य के बारे में लिख जातें हैं। उनकी नज़रों में वर्तमान घटनाएं सभी आ चुकी होती हैं। चौदह तबक भक्त की नज़र के नीचे रहते हैं पहुँचे हुए फकीर की निगाहें कोटि–2 खण्डों ब्राह्मणों में जा पहुँचती हैं, इतनी बख्शिसों के साथ बी अपने मालिक की रज़ा में विचरते हैं। खुशी, गमी, हर्ष, शोक, मान अपमान, राज, रंक एक समान समझते हैं। उसकी रज़ा में हमेशा खुश रहते हैं–

चिन्ता ता की कीजिए जो अनहोनि होई।
इही मारगु संसार को नानक थिरु नहीं कोई।।

1912 में सावन भादों के दिनों में अंदर की शक्ति से समूह संगत को एकत्र कर लिया। अपने आत्मबल से ऐसी तार खींची जैसे मंत्र पढ़–पढ़ कर, आहुतियां पा–पा कर राज जनमेजा ने सारी दुनियाँ के नाम खींच लिए थे। काफी संगत इकट्ठी हो गई। साऊणी की फसल प्रफुल्लित थी. मक्की व कपास हुलारे ले रही थी। सभी को आदेश हुआ कि आज किसी ने नहीं जाना है। चाँदनी रात आने पर हिन्दुस्तान में सर्वे करने व सड़क बनाने की निशान देही देने लग पड़े।

रात में एक सड़क की निशानदेही करवा दी। टोकरियों व कहियों के लिए पहले ही आदेश हुआ था। एक चार करम चौड़ी सड़क मुहल्ले की तरफ खींच डाली, एक मोराँवाली व एक कित्तणें की तरफ रातों रात सारी मक्की की फसल कटवाकर सड़कें निकलवा दी। दिन चढ़ते ही लोगों ने देखा कि मक्की की फसल उखाड़ कर सड़कों में दबा दी गई है। पूर्णिमां की रात्रि थी, चाँद भी शीतल अमृत वर्षा रहा था। ठण्डी–ठण्डी चाँदनी अरसां से फर्शों तक पानी की डल की तरह छाई हुई थी। रातों–रात सेवादारों में गाँव सुजों का नक्शा ही बदल दिया। यह सारी लीला देखकर गाँव वाले बहुत घबरा गए। कुछ मिलिट्री अफसर भी थे सूबेदार शिव सिंह, प्रताप सिंह, इन्द्र सिंह, भोला सिंह, चन्दा सिंह, खुशहाल सिंह, नम्बरदार हीरा सिंह, नरायाण सिंह, हरि सिंह। सभी ने एकत्र होकर मशविरा किया कि अब क्या होना चाहिए? महाराज के सामने जाने की किसी की हिम्मत नहीं थी, पता नहीं रसना से क्या निकल जाए? सामने जाकर बात करनी शेर की मूँछ को हाथ डालने जैसे थी। जालन्धर डी. सी. दफ्तर में जाकर रोए। एक विनती पत्र दिया कि एक साधू ने हमारा सारा गाँव बर्बाद कर दिया। सारी फसलें काटकर सड़कों में दबा दीं, हमारे तो बच्चे भूखे मर जाएंगे। सरकार हमारी मदद करे, उसको आगे से कोई नहीं मोड़ सकता। उसके साथ एक भारी गिरोह है जो हर समय उसके साथ रहता है। अपने आप को राजा साहिब कहलाता है। एक हरनाम सिंह नामक आदमी को अपना मन्त्री बताता है, हजूर चल कर मौका देखा जाए। जब डी. सी. गाँव में आया तो नंबरदार खुशहाल सिंह, सुबेदार शिव सिंह का पिता हरी सिंह, प्रताप सिंह आगे बढ़कर दबी हुई मक्की की फसल दिखाना चाहते थे। जहाँ से भी कही से जगह

उखाड़ी जाए वहाँ से कोई भी मक्की की फसल या टाण्डा दबा हुआ नहीं मिला। पता नहीं कहाँ सारी फसल अलोप हो गई, आखिर शर्मिन्दा होना पड़ा। ताजी कटी हुई फसल तो सब को दिख रही थी पर हाथ में कुछ नहीं आया। सभी इस कौतुक को देखकर हैरान थे। जैसे आगे को बन्दा खड़ा हो पर हाथ लगाने ने कुछ भी नजर न आए, ऐसे महाराज ने कौतुक दिखाए। जब डी.सी. साहिब ने यह कौतुक देखा तो मन में घबरा गए, क्योंकि अफसर लोग बड़े बुद्धिमान होते हैं, पूर्व जन्म से बलवान होते हैं। डी. सी. ने कहा कि चलो हमें भी ऐसे महाबली के दर्शन कराओ, ये महापुरुष तो लोगों को दरगाही संदेश सुना रहे हैं।'' महाराज जी की ओर चल दिए, आप जी मणहे पर बैठे थे। डी. सी. के पैरों में बूट थे। अभी पन्द्रह कदम पीछे ही थे कि महाराज जी दबका मारकर बोले–'पीछे मुड़ जाओ, आगे आकर क्या लेना है?' डी. सी. कुशहाल को पूछने लगा क्या कर रहे हैं? नंबरदार ने इंगलिश में समझाया कहते हैं–''पीछे लौट जाओ, जूतों के साथ आगे नहीं आना।'' डी. सी. उसी समय बूट खोल दिए, हाथ जोड़कर आगे बढ़ा, जाकर चरणों में नमस्कार किया, आगे महाराज मुस्करा कर कहने लगे, '' साधू के दर्शनों के लिए इस तरह आते है साधु की चरणों में से ऐसे ही झुककर आते हैं।'' बड़े प्यार से पीछे चले जाने की इजाज़त दी। बूटों तक डी. सी. पिछले पैरीं ही आया था। गाँव के लोगों को कहा– ''खामोश रहो, महापुरुषों की खेलें दुनिया की नज़रों से परे होती हैं, दुनिया क्या जानती है कि महारापुरुष किस भूमिका में कौतुक करते हैं? मनमुख क्या जाने के फक्कर किस रूप में विराजमान होते हैं? महापुरुषों का हँसना, रोना, बोलना, चलना, फिरना, कोई खास माइने रखता है।'' डी. सी. जालंधर चले गये।

गाँव के लोग ईष्या से जलने लगे और अन्दर ही अन्दर जहर घोलने लगे। एक महीने बाद बँगला साहिब के पास कुआँ था। आधी चाँदनी रात में प्रताप सिंह ने कुआँ जा जोड़ा, महाराज ने कुआँ छुड़ा दिया प्रताप सिंह ने गाँव में आकर लोगों में हाहाकर मचा दी, ''ओ गाँव के लोगो! क्यों सोए पड़े हो? आज मेरा कुआँ छुड़ा दिया कल को गाँव से भी निकाल देगा।'' सारा दिन लोगों में से पीटकर सारा गाँव इकट्ठा कर लिया। बँगला साहिब पर हमला करने का पक्का मन बना लिया। प्रताप सिंह, इन्द्र सिंह, हरी सिंह नारायण सिंह, भोला सिंह, हीरा सिंह, खुशहाल सिंह, चन्दा सिंह ये सभी धड़े के आगे थे। कोई आठ बजे सारे गाँव में घड़ियाल फेर कर इकट्ठे हो कर लाठियाँ हाथों में ले कर हमला बोल दिया। जब बँगला साहिब के पास पहुँचे तो सेवादार पार्टी के सेवक भी बैठे थे। मजारे के प्रताप, फतेह सिंह, सुजों के शीतल सिंह, नरंजन सिंह, उत्तम सिंह, हरजिंदर सिंह, वरियाम सिंह, भगवान सिंह कर्म सिंह ये आदमी थे। जब गाँव वाले जत्थे ने हमला करना चाहा तो सेवादारों ने महाराज के चरणों में टाकरा करने की बिनती की और महाराज ने हुक्म दे दिया, ललकार मारी, सेवादार पार्टी का हौसला इतना बुलंद हो गया कि वे चिड़ियों के काफिले पर बाज की तरह झपट पड़े। शीतल सिंह व उत्तम सिंह दोनों वीरों ने इन्द्र सिंह व प्रताप सिंह पर हमला किया

बैंत

जीहनूँ रंग लग जाए प्रेम वाला,
घोड़ी मौत दी हस के जा चढ़दे।
दस दस के बंद कटवांदे ने,
उत्ते चरखड़ियां दे झूटे जा लैंदे।।

नहीं मरन तों डरन आह भौरे,
आशिक रस्से मौत दे गल पा जांदे।
समस तबरेज़ वरगे कई आरिफ़
खल आपणी हथीं लुहा लैंदे।
मतिदास, दिआले जिहे कई आशिक,
बाज़ी जान ते हस के ला जांदे।
ससी वरगीआं कई सोहल कलियाँ,
मारूथलां विच्च जान गवा जांदे।
सोहणी डरनी ना मरन तों मूल देखो
कच्चा देख के वी नदी विच्च ठिल्ल जांदे।
गुरबख्श सिंह दूर डेरे इन्हां आशिकां दे,
कौफ़ मौत दे तों अग्गे लँघ जांदे।।

एक–एक को डंडे मार कर ढेर कर दिया। पानी नहीं मांगा दोनों जत्थेदारों को गिरा दिया। दोनों जत्थेदारों को दोख कर बाकियों ने पीछे को रास्ता पकड़ लिया और जान बचा कर फसलों में जा छिपे। प्रताप सिंह व इन्द्र सिंह को होश नहीं आई। बाकी सभी लोग गाँव में जाकर इकट्ठे हो गए, प्रताप सिंह व इन्द्र सिंह का कोई पता न लगा। हीरा सिंह व हरी सिंह ने शोर मचाकर लोगों को इकट्ठा किया और कहा, "दो लोगों को मरवा कर आप वापिस घरों में घुस गए, तुम्हें शर्म नहीं आती, कहीं डूब के मर जाओ।" इस प्रकार सभी को उकसाकर इकट्ठा करके फिर धावा बोल दिया। फिर दोनों तरफ से काफी लड़ाई हुई। एक झीवरों के लड़के ने पातशाह की बाजू पर लाठी मारी महाराज जी के ग्रुप को तो कोई चोट नहीं लगी लेकिन गाँव वाले ग्रुप के चौदह लोग घायल हो

गए। दोनों ग्रुपों ने बँगा अस्पताल जा कर अपने पर्चे कटवा लिए। बेशक सेवादार पार्टी के चोटें तो नहीं लगीं पर सरदार हरनाम सिंह सरकारी अधिकारियों में अच्छी पैठ थी। पर्चे बराबर के ही कटवा लिए। महाराज जी के ग्रुप के सात लोगों पर पर्चा दर्ज हुआ। महाराज जी एक, हरनाम सिंह दो, निरंजन सिंह तीन, वरियाम सिंह चार, उत्तम सिंह पाँच, शीतल सिंह छः और कर्म सिंह सात। दूसरे ग्रुप के लोग थे–निहाल सिंह नंबरदार, हरि सिंह, हीरा सिंह, प्रताप सिंह, इन्द्र सिंह, चंदा सिंह, भोला सिंह, नारायण सिंह वैरागी। जब डाक्टर ने 14 लोगों का पर्चा काटकर थानेदार के पास भेजा तो दूसरे ग्रुप के सहित 21 थे पुलिस ब्यान लेने अस्पताल गई, सभी के ब्यान लेने के बाद गाँव सुजों नाभ कँवल राजा साहिब जी के ब्यान लेने गए। सौधें खान थानेदार ने ब्यान दर्ज कि एव मौका मुआइना किया। बँगला साहिब से दो खेत की दूरी पर एक कुएँ पर जा बैठे। थानेदार सौंधे खान ने तीन सिपाही भेजे, जाओ बाबा जी को बुला कर लाओ। सिपाही गए, पर अब सामने कौन जाए? गीदड़ की क्या ताकत कि वह शेर के सामने आ जाए। दूरों घूम घुमाकर वापिस आ गए, बोले जनाब। हमारी हिम्मत नहीं उनके सामने जाने की, आप जाकर पूछलें। सौंधे खान आप तो उठकर चल दिया लेकिन टाँगे काँप रहीं थी, शरीर अचेत हुआ जा रहा था, रंग पीला पड़ रहा था। सामने जाकर दूर से ही पूछा, ''बताओ, आपकी किसके साथ लड़ाई हुई है?'' महाराज जी बोले, ''जाओ! लौट जाओ! हमारे साथ कोई नहीं लड़ा है।'' थानेदार सौंधे कान ने फिर कहा, ''ब्यान करो।'' और भूमि पर एक तख्ते पर बैठ गया। तख्त पोश पर बैठते ही महाराज जी का गुस्सा स्फुटित हो गया, ''बोले तुम्हारी क्या हैसियत है हमारे तख्त पर बैठने की? बाहर हो जा, हरामज़ादा, सूअर का बच्चा।'' ऐसी गालियाँ देकर थानेदार को पानी–पानी कर दिया।

थानेदार हल्का सा होकर थर–थर काँपता हुआ दौड़ा, कहीं ऐसे ही न मारा जाऊँ। बँगा का रास्ता पकड़ा और मुकद्दमा मैजिस्ट्रेट के भेज दिया। दोनों तरफ के सबूत लेकर दोनों ग्रुपों के लोगों को 27–11–1912 को एक–एक महीने की सज़ा हुई। गाँव वाले ग्रुप को 25 रुपए प्रति व्यक्ति जुर्माना हुआ। हरी सिंह को 100 रुपए जुर्माना हुआ। नरंजन सिंह के अनुसार जेल में सज़ा के दोनों ग्रुपों को कागज़ कूटने का काम दिया गया। महाराज जी की पार्टी के कागज जल्दी ही बारीक हो जाते तथा दूसरी पार्टी को काफी समय लगता और उनके काफी कोड़े बरसाए जाते। अपील करने पर गाँव वाले ग्रुप के सारे लोग बरी हो गए, महाराज जी के सेवक रह गए। फिर 27–12–1912 को घर आ गए। जब गाँववासी रिहा हो कर आ गए तो एक मजारा वासी ने महाराज जी के चरणों में अर्ज की कि आपके अन्दर सभी शक्तियाँ विराजमान हैं। अपने सेवकों को सज़ा से बचाया क्यों नहीं? महाराज जी ने कहा, ''भूरियाँ वाले राजे कीते,मुगली ज़हर प्याले पीते।'' भाई! जैसा कोई सतिगुर को देखता है, वैसा ही फल प्राप्त करता है। सत्य के मार्ग चलते–2 रास्ते में हज़ारों की आपदाएँ रुकावट बनती हैं। निरंकार से रिश्ता तब जुड़ता है जब दुनिया के रिश्ते समाप्त हो जाते हैं। कच्चे पक्के का पता तब लगता है जब टणका कर देखा जाए।

- *सच्चा झूठा हीरा सट्ट लगी ते मामलू होवे पित्तल ते सोना पाके देख विच्च आग दे।*
- *कबीर कसौटी राम की झूठा टिके न कोई, राम कसौटी सो सहै जो मर जीवा होई।।*
- *सूरा सो महिचानिये जो लरै दीन के हेत, पुरजा पुरजा कट मरै कबहु न छाड़ै खेत।*

यदि मनसूर हस कर सूली न चढ़ता तो आशिकों में नाम दर्ज न होता। शाह शमश तबरेज़ खाल अपने हाथों न उतारता

तो फकीरी वेष निन्दित होता। गुरू तेग बहादुर मती दास, भाई दयाला, गुरू अर्जुन देव जी, तारू सिंह, मनी सिंह जैसे सच्चे परवाने बनकर शहादतें ना देते तो भारत माँ की कोख़ सुलक्ष्णी न होती। आज भारत शहीदों की धरती न मानी जाती, ऋषि–मुनि अवतारों की धरती न मानी जाती।भगतों व संसारियों का मेल नहीं हुआ करता। भाई। जिस ने भी हमारी सेवा की है, हमारा हुक्म माना है उसकी सूली से सूल बन जाती है।

सन्त का निन्दक महा हत्यारा।
सन्त का निन्दक परमेश्वर मारा।।
सन्त का दोषी बिगड़ रूप होई जाइ।
सन्त के दोषी को दरगाह मिलै सजाइ।।

भाई! समय–2 पर किए गए कर्मों का फल मिलता है, ऐसा ही हुआ, जिसने महाराज जी की बाजू पर लाठी मारी थी वह कोढ़ी होकर मरा। जैसे–2 कोई बढ़–चढ़कर महाराज जी से ईर्ष्या करता रहा, उतना ही पाता गया। महापुरुषों की शक्ति तार भी सकती है, मार भी सकती है। इनका स्वभाव ऐसा बन चुका होता है जैसे कि पवन का स्वभाव सभी को एक जैसी शीतलता देता है।

ब्रह्म ज्ञानी का इहै गुनाउ
नानक जो पावक का सहज सुभाउ।

महापुरुषों की दृष्टि समदृष्टि बन चुकी होती है। जैसी भावना से इन्हें कोई निहारता है, वैसा ही फल मिल जाता है। यदि एक बर्तन में पानी डालकर ऊपर से व्यक्ति अपना प्रतिबिम्ब देखें तो

जैसा किसी का चेहरा होगा वैसा ही नज़र आएगा। मुँह काला हो तो काला, यदि गोरा हो तो गोरा नज़र आएगा। पानी का कोई कसूर नहीं। इसी तरह पापों का रंग काला है, पुण्यों का रंग लाल सफेद हैं, ''जिहा बीजै सो लुणै करमां संधड़ा खेत।'' पर ऐसी खेल सुजों में बरताई।

बोला भाई वाहिगुरू।

साखी हरी सिंह को माया की बख्शिश करने की

नाभ कंवल राजा साहिब जी के अद्भुत कौतुक देखकर आस–पास के लोगों में एक प्रेम लहर चल पड़ी। दुःखी प्राणी महाराज जी के दरबार से दूध, पुत्र, माया आदि पदार्थों की ज़रूरत पूरी करके, झोलियाँ भरकर घरों को जाते। हरी सिंह रहिपे वाला भी महाराज का एक अनन्य भक्त था। वह मायावी तौर से काफी कमज़ोर था। मन हमेशा माया के बारे सोचता रहता था। माया के बिना गृहस्थी का जीवन अधूरा है। माया के साथ गृहस्थी स्वर्ग है, माया के बिना नर्क ही नर्क है। अठारहवाँ नर्क मातलोक में गरीबी को ही माना गया है। ऐसे योग्य पीर के होते हुए भी गरीबी के दिन काटते रहे तो गुरू सेवा करने का क्या लाभ? यदि गुरू पूरा शाह सेठ हो तो भी कमी नहीं? ऐसे पीर के चरणों में तो चारों पदार्थ हमेशा मौजूद रहते हैं। कहीं मेरी दरिद्रता भी मिटा दें जैसे कृष्ण भगवान ने सुदामा की दरिद्रता मिटाई थी। दिल में कई नई–नई इच्छाएं लेकर भाई हरी सिंह बँगला साहिब पहुँच गया। महाराज जी बँगले की ऊपरी छत, जिसे देवताओं की छत कहा जाता था, पर बैठे थे। गले पल्ला पा कर मन की फरियाद आगे रखकर चरणों में गिर पड़ा। मन गृहस्थी

की चोटें खाकर दुखी हो चुका था। ज़रूरतों का पहाड़ सिर को दबाए जा रहा था क्योंकि अकेला काम करने वाला व पीछे 10 जीव खाने वाले थे। लड़कियों की कबीलदारी आदमी को नियन्त्रित कर लेती है जैसे मकड़ी तारों का जाल बनाकर मक्खी को बाँध लेती है वैसे ही गृहस्थी को घर की मजबूरियाँ बाँध लेती हैं। जब हरी सिंह ने विरह वेदना से नमस्कार की तो अपना अनन्य सेवक जानकर एक मिंट भी घबराने नहीं दिया। महाराज ज़ी बोले, ''हरी सिंह! क्या हाल है?'' हरी सिंह ने देखा कि इस समय महाराज मेहरबान हैं, अब वर माँगने में संकोच कैसा? समस्त पदार्थों की झोली भरकर घर को जाऊँ। हरी सिंह ने गले में पल्ला बाँधकर विनती की, ''सच्चे पातशाह जी। माया की तंगी है। कबीलदारी लम्बी है, लड़कियों की शादी करनी है, रात की नींद हराम हो चुकी है, दो लड़कियों की शादी करनी है। महाराज ने अपने प्रेम भगत की फरियाद सुनकर आदेश किया, ''हरी सिंह! हाथ निकाल।'' हरी सिंह ने दोनों हाथ आगे कर दिए। फिर हुक्म हुआ कि पल्ला कर, आज तेरा पल्ला भर दूँ। तीन पैसे अपने पवित्र कर कमलों से पल्ले में डाल दिए और हुक्म हुआ कि आज तुझे बहुत बड़ा सेठ बना दिया। तेरी साहूकारी चलेगी, आज हमने आपको खज़ाने की चाबियाँ दे दीं हैं। जितनी मर्जी माया निकाल कर खर्च करना, ये तीन पैसे नहीं समझना। कोठी की गही में रखकर धूप देते रहना। बस फिर क्या था, हरी सिंह के घर में लक्ष्मी का वास हो गया। चढ़ते सूर्य की तरह दिन रात किस्मत का सितारा चमकने लगा। मिट्टी का सोना बनता जा रहा था। हर तरफ से हर तरह माया आने लग पड़ी। साहूकारी चल पड़ी। दुनिया में 10 कनाल जगह महाराज के नाम पर दान की थी। 70 गुणा यहाँ फली भूत हो गई है। इस समय ट्यूबवैल लगे हुए हैं, नौकर काम कर रहे हैं। 15 से 40 गुमाँव ज़मीन

बनी हुई है, जिस समय माया की बखशिश की थी उस समय हरी सिंह के सात लड़कियाँ ही थीं। महाराज जी की कृपा से घर में पुत्र पैदा हुआ जिस का ज्ञान सिंह नाम रखा गया। आपने पिता जी के पद चिन्हों पर चलता हुआ ज्ञान सिंह भी सुबह शाम महाराज जी के दरबार की सेवा करता है। हरी सिंह एक अच्छा दौलत मन्द बन गया। जायदाद खरीदी। हजारों लोग घर पर सवाली बैठे रहते थे। माया की अधिकता के कारण मन में कुछ चतुराई का झण्डा प्रबल हो गया। लोगों को बेवकूफ समझने लगा। लोगों को अक्ल नहीं, लोगों को पैसा बनाना नहीं आता, ऐसी सियाणप भरी बातें करनी शुरू कर दी। एक दिन महाराज जी के दर्शनों को गया। महाराज गाँव मजारा में करतार सिंह के घर बैठे थे। महाराज जी के चरणों में प्रणाम किया। पातशाह बोले, ''हरी सिंह। अब तू नहीं बोलता कि जो करता है राजा ही करता है।'' हरी सिंह के हाथ खूँटा था। महाराज जी कहते, ''हरी सिंह। यह खूँटा तुम्हारे पास है, पहले सीधा ही होता था, हमने ही इसका खूँट मोड़ा था।'' हरी सिंह कहने लगा, ''सच्चे पातशाह ज़ी। आपकी कृपा से ही मुड़ा है।'' महाराज जी ने मन के भ्रम को साफ कर दिया। मन में अहंकार नहीं रहने दिया क्योंकि अपने सेवक का भला जो करना था। बोलो भाई जी वाहिगुरू।

साखी धुन्ना मल्ला सेठ जी के साथ हुई

धुन्ना मल्ल सेठ नवाँशहर का निवासी था। घर में अथाह सम्पत्ति थी। दुकानें चलती थीं। कोठियाँ धन धान्य से भरी पड़ी थीं। सभी काम नौकर ही करते थे। साहूकारा चलता था। पानी भरने वाले, पँखा झलने वाले, आगे पीछे गुलाम हमेशा खड़े रहते थे। इतना होते हुए

भी एक चीज़ की कमी थी जो कहीं से पूरी नहीं हो रही थी। पुत्र, प्रेम, ईमान ये तीनों चीजें कहीं धन से नहीं खरीदीं जा सकतीं। ये तो करतार की बखशिश से ही प्राप्त हुआ करती हैं। धुन्ना मल्ल सेठ को किसी ने राजा साहिब के दरबार के बारे में बताया। एक राजा साहिब का दरबार है जहाँ सभी बदनसीबों के भाग्य हरे हो जाते हैं। यह राजा साहिब का ही दरबार सुना है जहाँ फूटी किस्मतें पुनः सुरजीत की जाती हैं। यहाँ सूखे बाग हरे हो जाते हैं। यह मालदार सेठ महाराज जी के चरणों में आ गिरा। दिल में विश्वास लेकर दरबार पर बैठ गया, जब खैर पाएगी तो उठूँगा, नहीं तो मैं धन से भरी कोठड़ी व सेठानियों का क्या करूँगा? सेठानी व सेठ हर रविवार को दरबार में आते, संगत के चरणों की धूल मस्तक में लगाते, संगत के जूठे बर्तन माँजने की सेवा करते, धन की सेवा भी करते। एक गागर चाँदी के रुपयों की लंगर सेवा के लिए भेंट की–

जिस धन कओ चार कुण्ट ओठ धावहि सो धन हरि सेवा ते पावहि।।

अंकर करम प्रगट हो आया। धुन्ना मल्ल की माया का लँगर चल पड़ा। साध संगत लंगर ग्रहण करके आर्शीवाद देने लग पड़ी। 'अन्न का दाता सदा सुखी', जब सँगत खुश हुई तो परमात्मा भी खुश हुआ, क्योंकि परमात्मा ज्योति स्वरूप होकर सभी जीवों में बैठकर सब खेल रचाता है। बस मेहनती की मेहनत समय पर मिल जाती है।

एक दिन धुन्ना मल्ल व उसकी धर्मपत्नी पातशाह जी के पास आए। गर्मी के दिन थे, फलों का लिफाफा भर कर महाराज जी के आगे नतमस्तक हुए। सच्चे पातशाह, मेहरों के दाते वरों के मालिक दो सालों

की मेहनत के बदले धुन्ना मल्ल व उसकी पत्नी जिस चीज़ की कोई कीमत नहीं पा सकता, वह पुत्र की दात आज धुन्ना मल्ल को दो फल देकर पूरी कर देंगे। ये भिक्षु आसन लगाकर महाराज जी का ध्यान घर कर बैठे थे, दिल धड़क रहा था, कभी–2 महाराज जी के नूरानी चेहरे को दबी नजर से निहार लेते हैं। दिल बहुत सूक्ष्म होकर पातशाह के सत्य वचनों को ध्यान से सुनना चाहता है। आज उम्मीद बड़ी है कि खैर मिलेगी पर डर भी है कि कहीं ऐसे ही न मोड़ दें। पर नहीं, इससे पहले इस तरह बिठाकर बातें नहीं की थीं। कुछ देर बाद उस जोड़ी को रहमत भरी निगाहों से देखा। लिफाफे में से दो आम निकाल कर एक सेठ व एक सेठानी को देते हुए हुक्म किया इन्हें खा लो। उसके बाद घर जाने का हुक्म दिया। नमस्कार करके घर चले ए। दोनों फल दोनों ने खा लिए, जैसे कि महाराज ने पहले धुन्ना मल्ल को फल दिया था, उसी तरह पहले लड़का फिर लड़की हुई। फल देते समय यह भी हुक्म हुआ था कि कबीलदारी साँझी ही अच्छी होती है। महाराज जी की कृपा से घर आबाद हो गया। सभी तरफ से बधाइयाँ आनी शुरू हो गईं। घर में पुत्र होने की खुशी में लड्डूओं की परातें बनाकर महाराज जी के पास बाँटने के लिए चले आए। धुन्ना मल्ल लड्डूओं की परातें बनाकर बंगा तक बांटता चला गया। उन्हीं के दिनों महाराज जी मजारे आए। धुन्ना मल्ल जब दर्शन करने आता तो साथ जज आया करता था। धुन्ना मल्ल को साथ बिठा लेते व जज को जूतों में खड़ा रहने का हुक्म होता था. जज हाथ जोड़कर वहीं खड़ा रहता जब तक हुक्म न होता। यह किसी को पता नहीं था कि जज किस मतलब के लिए आता था? काफी देर आता रहा। ज्ञात हुआ कि अपनी तरक्की की चाह लिए आता है। महापुरुषों के दर्शनों का फल कभी व्यर्थ नहीं जाता। दर्शन करने

मात्र से ही कुछ समय बाद सब जज से सैशन जज बन के जालंधर जा लगा। फिर वह भी धुन्ना की तरह लड्डू लेकर महाराज जी के पास आया। महाराज जी ने दूर से ही पीछे मुड़ जाने के लिए कहा। महाराज खेतों में ही बैठे थे। जज का मन था कि मैं समीप जाकर दर्शन करूँ व प्रसाद भी चरणों में रखकर मानसिक खुशी प्राप्त करूँ। पता नहीं महाराज ने मलन आहार समझकर आगे आने की आज्ञा नहीं दी, वहीं से वापिस हो गया। जब जज लड्डूओं की परात ढेरी कर के वापिस चला गया तो महाराज जी ने पास बैठे बारिये भाने से कहा, ''भाने! सहुरा ज़हर की परात उठाकर चला आ रहा था। सुख श्रेणी तो धर्म की कमाई की स्वीकार की जाती है।'' पता नहीं कौन से गरीब के खून से निचोड़ कर लड्डू बना लाया है, किसी कुत्ते, बिल्ले जानवर ने मुँह तक नहीं लगाया। धुन्ना मल्ल को पुत्र की बख्शीश व जज की तरक्की तो सुज्जों बैठे ही महाराज ने कर दी थी। फिर सन् 1913 में महाराज जी गाँव सुजों से मजारे करनाणे वाली तरफ एक कुएँ पर आ बैठे। सन् 1909 में सुजों गए थे। फिर 1913 में फिर वापिस मजारे आ गए। सुजों का प्रसंग समाप्त।

बोलो भाई जी वाहिगुरू।।

साखी साईं गाँव झिंगड़ा वाले के साथ हुई

महाराज नाभ कँवल राजा साहिब जी गाँव मजारा में वरियाम सिंह के कुएँ पर रहने लगे। कभी–2 गाँव झिंगड़ा भी चले जाया करते। एक दिन की बात है, आप ढाबी लाला जी के दरबार में बैठे थे। पास में भाई गुरबख्श सिंह, माई नन्दी तथा और भी काफी संगत दर्शन के लिए आई हुई थी। नूरानी चिहरे की ठण्डी–2 किरणें संगतों

को शीतलता प्रदान कर रही थीं। गाँव से साईं भी दर्शनों के लिए आया। समाधियों की हद में जोड़ों के साथ ही आ गया। महाराज जी साईं को बोले, ''साईं! जोड़ा पीछे खोल कर आओ, आगे के लिए समाधियों की हद से पीछे जोड़ा खोलकर आना होगा।'' साईं झटपट पीछे हट के, जोड़ा खोलकर, गले में पल्ला पाकर, डरता काँपता हुआ बहुत ही अधीनगी के साथ महाराज जी के चरणों में आ गिरा। प्रेमी बहुत था पर घर में माया की तरफ से बहुत गरीबी थी। गरीब होने के कारण बहुत दबा हुआ सा रहता था। गरीबी इन्सान को तार भी जाती है, डुबो भी जाती है। गरीबी में यदि धर्म न छोड़े तो इसे शुद्ध, पाक, पवित्र कर जाती है। पातशाह लिखते हैं–

जे गत चाहत है मन मूर्ख तओ निरवाण की बाण को पायो।
शीघ्र काज सवार लेहु तुम सुरत औ शब्द की सार को पायो।।
नाम जिसे पुर बेगम शहर सैल करो ताहि कदम टकायो।
दास भगवान इह खोज लबो फिर महल खमोश के बीच समायो।।

भूख से विलखता इन्सान जब परमात्मा के आगे फरियाद करता है तो अन्तः करण शुद्ध होता है। अन्तः करण शुद्ध होते ही धर्म का स्रोत इन्सान के हृदय में बन जाता है। ये गरीबी के गुण हैं। साईं का मन गरीबी के थपेड़े खा–खाकर राल जैसा नर्म हो चुका था। साईं के मन की इच्छा थी कि हज़ारों कँगालों को मायाधारी बना दिया, मुझ गरीब को भी यदि रहमत भरी नज़रों से देख लें तो क्या मुश्किल है? मेरा कामिल पीर सर्व कला समर्थ है। साईं की इस मनशा को भाँपते हुए नन्दी को पातशाह ने हुक्म किया, ''साईं को जिस वस्तु की आवश्यकता हो साईं को दे दिया करो, साईं हमारा बन्दा है।'' महाराज जी इस घर को

अपना ही घर समझते थे। इस घर पर आपकी बहुत कृपा थी, यदि कभी कोई चीज़ खिलानी हो तो भी नन्दी के पास ही भेज दिया करते थे, यदि किसी को माया दिलानी हो तो भी नन्दी से ही दिला दिया करते थे। एक दिन हेड़ियाँ का एक आदमी अपनी माई की गति करवाने गंगा जी चला। महाराज जी गुणाचौर के पूर्व में ही खेतों में बैठे थे। उस जाते मुसाफिर को पास बुलाकर उससे सारे पैसे ले लिए। उसे घर वापिस जाने का हुक्म दिया। ''जो काम आप का हरिद्वार होना था, वह यहीं कर दिया।'' वह घर वापिस चला गया। घर वालों को सारी बात बताई। घर वाले कहने लगे, ''आप ऐसे ही वापिस आ गए, हरिद्वार जाकर गति कराके आओ, अपने पैसे राजा साहिब से वापिस ले लो।'' वह आदमी राजा साहिब के चरणों में आकर विनती करने लगा, ''हमारे घर वाले नहीं मानें। मेरे पैसे वापिस दे दो, मैंने हरिद्वार ज़रूर जाना।'' महाराज जी ने कहा, ''वो पैसे तो हमने जिस कार्य के लिए जाना था, उस कार्य में लगा दिए हैं। यदि तुझे विश्वास नहीं तो जितने पैसे तेरे थे उतने पैसे नन्दी से ले जा।'' इसी प्रकार महाराज मोती सिंह के घर को भी अपना ही घर समझते थे। वहाँ से उठकर महाराज गुरूद्वारा दुःख निवारण साहिब जा बैठे। साई भी भाई सुन्दर सिंह के साथ गुरुद्वारे की सेवा में रहता था। साई पातशाह के चरणों में नमस्कार करके बैठ गया। महाराज साईं को कहने लगे, ''साईं आज तुझे माया दे दें, तुझे जागीरदार ही बना दें, तेरे गुजारे के लिए पाँच रुपए बहुत हैं।'' चाँदी के पाँच रुपए साईं के पल्ले डाल दिए। कुछ दिनों बाद कर्म सिंह बब्बर को उसके भाई ने ही पकड़वा दिया। जब बब्बर लहर चली थी तो सरकार को हाथों पैरों की पड़ गई थी। घरों में लोग बहुत तंग किए गए थे। इनकी गिरफ्तारी के पोस्टर जगह–2 लगाए गए थे। सभी घरों के माल कुर्क किए हुए थे। बब्बर दलीप सिंह गोसल की छत तक भी उतार कर ले गए थे।एक

दिन कर्म सिंह, मास्टर दलीप सिंह व एक इनका होशियारपुर से साथी गाँव झिंगड़ा में आए। किसी ने पुलिस को जाकर रिर्पोट दे दी। पुलिस आई पर बब्बर पार्टी के सामने जाने की हिम्मत न हुई। इन शूरवीरों को पता चला कि उनके पीछे पुलिस लगी है। बड़ी दलेरी से बाहर निकल आए। पुलिस ने पीछा नहीं किया। इन बब्बर शेरों के सामने कौन जीते जी मौत को लगा सकता था। पुलिस ने इनको पकड़ने पर पूरा ध्यान नहीं दिया। सरदार हरनाम सिंह पहले ही इस पार्टी से कुछ सम्बन्ध रखते थे। महाराज जी की संगत के कारण बब्बर पार्टी से पीछे हट गए। धीरे–2 एक दूसरे पर से विश्वास भी उठने लगा। एक दूसरे से ईर्ष्या भी करने लगे। सरदार हरनाम सिंह ने अन्दरखाते इन्हें पकड़वाने की कोशिश की। जालन्धर जाकर पुलिस कप्तान के पास पुलिस पार्टी की सारी शिकायत दर्ज करवाई। पुलिस अधिक्षक ने अपने रिकारर्ड में हरनाम ही का नाम सरकारी सहायक लिख लिया। थाना बंगा के सभी अधिकारी निलम्बित कर दिए। सरदार हनराम सिंह की सरकारी दरबार में बहुत मान्यता थी। कुछ दिनों बाद करम अपने साथियों के साथ दोबारा अपने घर में आकर सो गए। कर्म सिंह के आँख लगते ही कर्म सिंह के भाई ने सारा असला काबू करके बाहर से ताला लगा दिया। रातों रात पुलिस को खबर कर दी। पुलिस ने आकर तीनों साथियों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस कप्तान क्रैशर सरदार हरनाम सिंह पर बहुत मेहरबान था, सारी नेकनामी साईं व सरदार हरनाम सिंह को मिली। पाँच–पाँच सौ रूपए, जागीर व एक–एक लाईसैंसी पिस्तौले इनाम में सरकार से मिले। साईं को उस दिन पता चला कि जो 5 रुपए दे के हुक्म किया था उसी ने 500 रुपए का जागीरदार बना दिया है। धन्य है मेहरों के दाते, अनाथों के नाथ, भाग के भाव बादशाहत बख्शीश कर देते हैं।

बोलो भाई वाहिगुरू।

आगे साखी बिशन सिंह के परिवार की चली

बिशन सिंह सरदार मोती सिंह के बड़े भाई थे। बहुत ही योग्य व गुणी इन्सान थे। बिशन सिंह जी खेती का काम करवाते थे। मोती सिंह घर के मुखिया थे, गाँव के बाहर भी उनकी चौधर का काफी सिक्का चलता था, दानी भी बहुत थे। मोती सिंह के घर तीन पुत्र खेलते थे। बिशन सिंह के घर काफी उमर हो जाने पर भी औलाद नहीं हुई। पुत्र की दात के बिना घर सूना लगता है। जैसे मन्दिर दीपक बिना सूने लगते हैं। चांद के बिना रात सूनी लगती है। दूल्हे के बिना बारात सूनी लगती है, फूलों के बिना तरवर सूने लगते हैं। वैसे ही पुत्र बिना माता की गोद भी सूनी लगती है। एक दिन माई नन्दी को किसी माई ने बताया कि माझे में एक साधू है, उसके धागा बना के तवीत पाने से पुत्र की प्राप्ति हो जाती है। नँदी महाराज पर तो भरोसा रखती पर उस माईके कहने से उस साधु के पास जाने को तैयार हो गई। किसी गाँव में मकाण का बहाना बना कर चल पड़ी। थोड़े पताशे कपड़े में लपेट कर ले गई। जब बाहर निकल, महाराज गुरुद्वारे के पिछवाड़े एक गुरने के नीचे बैठे थे. नन्दी महाराज जी के पास गई क्योंकि महाराज जी को छोड़कर और कहीं जाने को जी नहीं करता था।अभी नन्दी काफी पीछे थी। महाराज जी ने हुक्म किया, ''नन्दी कहीं भी जाने की कोई आवश्यकता नहीं, जो कुछ छुपा कर ले जा रही है, लाओ। यही बाँट देते हैं।'' वही पताशे नन्दी से लेकर संगत में बाँट दिए। पुत्र पैदा होने का उसी दिन वर दे दिया। उसी दिन से गुरुद्वारा दुख निवारण साहिब में औरत को जाने पर सख्त मनाही कर दी। भाई सुंदर सिंह और हरनाम सिंह को हिदायत हुई कि दरबार के अन्दर कोई स्त्री न आए। बहुत देर यह

नियम बना रहा। अन्दर कोई स्त्री नहीं जा सकती थी। उसके बाद नन्दी की पवित्र कोख से भाई गुरबख्श सिंह का जन्म हुआ। बहुत ही योग्य सुशील स्वभाव के राजनीतिक व्यक्ति हैं। गुरबख्श सिंह बहुत खूबसूरत, जवान, हँसमुख चेहरा था। जवानी उसके चेहरे पर ठाठें मार रही थी। गुरबख्श सिंह का विवाह दुर्गापुर में बीबी करतार कौर के साथ हुआ। काफी देर तक मन की मुराद पूरी नहीं हुई। शादीशुदा होने पर भी घर में औलाद नहीं हुई। फिर दूसरी शादी करवाई, उससे भी कोई औलाद नहीं हुई। काफी ज्योतिषियों व डाक्टरों के चक्कर में घूमें पर मन की मुराद पूरी न हुई,, मन बहुत निराश रहने लगा। सभी सहारे छोड़कर आखिर सतिगुरां का पल्ला पकड़ लिया। मन ही मन कई ताहने मिहणे मारते रहते, ''यदि हमारी लाज नहीं रखी तो लोग हमें कुछ नहीं कहेंगे, आप के नाम को ही लाज लगेगी।'' जब मेरी मेरी मिट जाए तब प्रभु कारज सवारे आए' जब द्रौपदी ने सोचा कि मेरा इस समय दुर्योधन के दरबार में कोई सहायक नहीं, पाँचों पति, चाचे, ताए, बहन, भाई, भीषम जैसे राजनीति के पुंज सभी सिर नीचा करके देख रहे हैं। भीम, अर्जुन जैसे यौद्धे भी नींवीं नज़रों से देख रहे थे।अपने बल की भी कोई आस न रही। फिर उस सर्वशक्तिमान, सर्वकला सम्पूर्ण, सर्वव्यापी हाज़रा–हज़ूर शक्तिमान का ध्यान किया। पंचाली को राज सभा में राम नाम सुध आई, फिर ऐसी लाज बचाई जैसी कि दुनिया की कोई ताकत नहीं बचा सकती थी। ऐसे ही गुरबख्श सिंह एक दिन राजे का पल्ला पकड़कर ही बैठ गए। एक दिन सुबह अमृत वेले न कुछ खाया न कुछ पिया। करतार कौर बहुत निराश होकर झिंगड़ा से उठकर गांव मजारे पहुँचकर उस महाबली के दरबार पर आ कर खड़ी हो गई। आगे आप किरपे के चुबारे में बैठे थे। दरवाजा खोला, करतार कौर को पास

बैठ जाने हुक्म दिया। करतार कौर का मन बहुत बैरागी हो गया। माता सुलखनी का नक्शा आँखों के सामने आया, मन में अरदासें कर रही थी, '' बड़े–बड़े पापियों के बेड़े पार किए, मेरा गरीब का सूखा हुआ बाग हरा करो जी। माता सुलक्खनी को सात पुत्रों का वरदान दे के निहाल किया था, मुझे भी आज खाली ना मोड़ना। आप वही रूप हो।'' झोली फैलाकर राजा के दरबार में समाधि लगाकर मन्नत माँग रही थी। संगत बाहर कीर्तन कर रही थी। सतिगुरू मेहरबान जब जिज्ञासु का हृदय साफ देखते हैं जब मनुष्य की तरफ बुद्ध की चालाकी छोड़कर उस वरां के दांते का असारा मांगता है। तो एक पल में अपने प्यारे भक्तों की लाज रख लेते हैं। ''करतारो। ले आज तुझे सात पुत्रों वाली बना दिया है, आज तुझे साहनी भी बना दिया।'' एक उंजल अपने पवित्र हाथों से चीनी भर कर करतार कौर को बखशीश दी। उसी समय वहीं बैठे खिला दिया। फिर हुक्म हुआ, करतारो और खा ले, करतार कौर की सेहत कुछ ढीली रहती थी। और नहीं खायी एक ही बार खायी। सभी दातों की झोलियाँ भर के घर जाने का हुक्म हुआ। घर जाकर सारी कहानी गुरबख्श सिंह को कह सुनाई। गुरबख्श सिंह ने हुक्मनामा सुनकर करतार कौर को कह दिया कि तेरे सारे कार्य सम्पूर्ण हो जाएंगे। गुरबख्श सिंह महाराज जी के अनन्य सेवक होने के नाते सारे गुप्त रहस्य समझ जाते थे। करतार कौर के घर सात पुत्र हुए। एक कन्या, एक पुत्र दूसरी शादी वाली कुलदीप कौर के पेट से हुआ। गुरबख्श सिंह का ज्येष्ठ पुत्र दो साल का हुआ तो बीमार हो गया। बहुत इलाज करवाया पर कहीं से भी आराम न आया। एक दिन करतार कौर व गुरबख्श सिंह बच्चे को लेकर गाँव मजारे गए। महाराज जी मिस्त्री करतार सिंह के घर बैठे थे। पुत्रों के दर्द बड़े–बड़े इन्सानों को चिन्ताओं

के दरिया में बहा देते हैं, क्योंकि पुत्रों का फल सभी फलों से प्यारा होता है। पातशाह के चरणों में रखकर महाराज जी के आगे विनती की, ''सच्चे पातशाह! इसे तन्दरुस्ती बख्शो, इसकी तकलीफ हमसे सही नहीं जाती। महाराज ने मोती सिंह के परिवार की फुलवाड़ी समझ कर झट से मेहर भरी नजर डाली। महाराज जी के पलंग के नीचे चार पानी की कटोरियां भरी रहती थीं। आज भी करतार सिंह के घर उसी तरह पड़ी हैं, उन कटोरियों में से पानी निकाल कर स्नान कराने का हुक्म दिया। जब उस दौरी के पानी से करतार सिंह के घर आकर नहलाया, पता नहीं उस पानी में क्या अमृत भरा हुआ था, एक पल में बच्चे का दुख दूर हो गया। चेहरा एकदम दमक उठा। 'दुख भंजन तेरा नाम' ऐसे ही दर्शनों में बर्कतें थीं।

बोलो भाई वाहिगुरू।

साखी मस्त पटियाले वाले साहिब दास जी की ज्योति–जोत समाने की चली

एक समय की बात है महाराज जी ने गुरुद्वारा दुःख निवारण साहिब खूही पर स्नान किया। हरनाम सिंह ने स्नान कराया, फिर गुरुद्वारे के अन्दर चले गए। कुछ देर बैठे व समाधि लग गई। दिन के चार बजे बहुत डरे। महाराज जी उठकर एकदम दरिया की तरफ चले गए। बहुत तेज रफ्तार से चले। इन्द्र सिंह, हरनाम सिंह, सुन्दर सिंह और भी कई सेवादार पीछे भागे। महाराज जी जब मण्ड में पहुँचे तो सूर्य डूब गया था। चारों तरफ अन्धेरा ही अन्धेरा छा गया। डरावनी रात, मण्ड साँय साँय करने लगा। सुन्दर सिंह तो वहीं महाराज से कहीं बिछुड़ गया,

बाद सभी लोग इधर उधर बिखर गए। किसी को कुछ नहीं मालूम हो रहा था कि महाराज जी किस तरफ चले गए। एक हरनाम सिंह ही महाराज के साथ चलता गया। दरिया के किनारे पहुँचे। पानी बहुत तेज बहाव में बह रहा था। महाराज पानी की सतह पर ऐसे चले जा रहे थे जैसे कोई साधारण फर्श पर चल रहा हो। आप अगले किनारे पर जा निकले पीछे सच्चा प्रेमी हरनाम सिंह भी चल पड़ा। एक बार हरनाम को कहा, ''नामा! पीछे मुड़ जा, डूब जाएगा, पानी बहुत है।'' हरनाम सिंह कहता, ''वापिस नहीं जाऊँगा नहीं बेशक डूब जाऊँ। आप ही बेड़ी, आप ही तुल्ला आप ही पार लघाऊँदा।'' दरियाओं के बीच मण्ड में जा बैठे। हरनाम सिंह को कहा, ''नामा! पीछे जाओ, हमारा क्या है? साधु तो चाहे कहीं भी चला जाए, साधु को कोई देश नहीं, न ही कोई घाट है, हम किसी काम जा रहे हैं, जाना बहुत जल्दी है। '' रात साँय–2 करते मँड में काटी तो 11 बजे महाराज जी कहते, ''देख नाम! कर्ता के रंग।'' एक नजदीकी गाँव में गोली चल पड़ी, उस गाँव में डाका पड़ गया। रात डरावनी थी मण्ड के सूअर घुर–घुर करते फिर रहे थे, रात बीत गई, दिन निकलने वाला था। हरनाम सिंह को पीछे मोड़कर आप एक मिनट में अलोप हो गए। एक सैकिण्ड यानी पलक झपकते ही आप पटियाला पहुँच गए। आगे मस्त साहिब दास ने दरवाजे बन्द किंए हुए थे। अपने भण्डार के मालिक की प्रतीक्षा कर रहे थे। महाराज जी के जाने से सभी दरवाजे खोल दिए गए। आप अन्दर गए, पता नहीं क्या कुछ वचन किए, सेवादारों को हुक्म हुआ कि लेपन करो। शुद्ध जल की गागर मँगवा कर चौंकी पर बैठ कर स्नान किया। सफेद लट्ठे की चादर बिछाई, कुशाओं का आसन बिछाकर जैसे साँप कांज छोड़कर चला जाता है, ऐसे चोला त्याग कर सचखण्ड चले गए। आखिर अपने प्रीतम से मुलाकात करके

जीवन यात्रा समाप्त करके अपने स्वरूप में समा गए। बाद में महाराज जी ने संस्कार की सामग्री मँगवाकर, जहाँ मस्तों से महाराज जी ने बात की थी उसी जगह चिखा बनाई। जब शहर के लोगों को पता चला कि मस्त साहिब दास जी जोति जोत समा गए हैं तो सारा शहर मेवों की परातें भर कर लाने लगा। महाराज पटियाला ने चन्दन की लकड़ी भी लाकर चिखा में रखी। काफी राजा, महाराजा, सेठ आपके सेवक थे। सभी रानियाँ, महारानियाँ, सेठानियाँ थालों के थाल भरकर गिरी छुहारे लाकर अँगीठे में डाल रहे थे। 21 कनस्तर घी के इक्ट्ठे हुए थे। मस्तों का अँगीठा एक हवन कुंड बन गया। चँदन की चिखा चिनकर मस्तों का स्नान गुलाब आदि डालकर करवाया गया। नाभ कँवल राजा साहिब जी के हुक्म से सुच्चे पसमीने की गले में अल्फी डाली गई। शहर में बहुत बड़ा जलूस निकाला गया। मस्तों की पावन देह को पालकी में रखकर सारे शहर की परिक्रमा की गई। परिक्रमा के बाद काठ की घोड़ी पर उठाकर फूलों जैसी देह को चिखा पर रखकर अग्नि भेंट कर दी गई। संस्कार करके महाराज जी पुनः झिंगड़ा ही आ गए। आ के समाधियों में खूही लगवाई। तीसरे ही दिन आप पटियाले से वापिस आ गए थे।

बोलो भाई जी वाहिगुरू।।

आगे साखी जी मजारा में लंगर का नक्शा बनाने की

एक दिन महाराज जी टहलते–टहलते गुरुद्वारा दुःख निवारण साहिब के अन्दर आ कर बैठ गए। संगत दर्शनों के लिए आने लगी। गाँव मूसापुर के मिस्त्री करतार सिंह दर्शनों के लिए आया। काफी संगत आपके सन्मुख बैठी थी, महाराज जी नाम जपना, धर्म की किरत करनी, वँड छकना, आए साधु सन्त की सेवा करनी आदि उपदेश दे रहे थे।

करतार सिंह मूसापुर वाले को हुक्म किया, लंगर का नक्शा बनाओ। करतार सिंह ने नक्शा बनाकर चरणों में रखकर नमस्कार किया। नक्शा बना देखा, फाड़ दिया। बाबे को हुक्म किया ''माना! उठाओ बर्तन, कर्म सिंह के खेत में लंगर खाना बना दें।'' कर्म सिंह को बुलाकर कहा, ''कर्म सिंह ! लंगर के लिए दमदमा साहिब के पास का खेत छोड़ दो, संगत के आराम व प्यासे मुसाफिरों के पीने के पानी की जगह बना लें।'' कर्म सिंह व जवाहर सिंह ने खेत छोड़ दिया। माने से बर्तन रखवा लिए। जगत सिंह ने प्रीतम सिंह को सिखाकर अपनी पार्टी में मिला लिया। कर्म सिंह को कहा, ''अभी तो हमारा डाला हुआ सुरमा नहीं निकलता, आप और डाल रहे हो।'' जगत सिंह उन दिनों महाराज के खिलाफ चलता था। मोती सिंह भी गुरुद्वारे के लिए दी गई जगह पर अपना हक करना चाहता था। इसलिए कर्म सिंह को लँगर के लिए खेत न देने के लिए उकसाया। ज्यादा उकसाने पर कर्म सिंह बाबा माने को कहने लगा, ''हमारे घर वाले नहीं मानते। कहते हैं, हमने खेत लंगर के लिए नहीं देना। यहाँ रसोखाना न बनाओ, और किसी के खेत में बना लो।'' यह कर्म सिंह वाली बात बाबा माने ने नाभ कँवल राजा साहिब जी को बताई। महाराज जी ने पहले ही नक्शा बनवाकर फाड़ दिया था। हुक्म किया, ''माना! उठाओ बर्तन आगे चलते हैं।'' चलते–चलते जिस जगह अब मजारे लँगर बनाकर रखा जाता है, गाँव वाली तरफ सन् 1916 में जेठ के दिनों में एक रीस के बूटे के नीचे माने को बैठ जाने का हुक्म हुआ। तवा पुरात रखवाकर कहा, ''आए गए को किसी भूखे प्यासे को यहाँ बैठकर अन्न पानी छका दिया करो।'' आप घटारों की तरफ के लट्ठे को जा निकले। बाबा मूला घटारों में रहता था, मूले के घर से सारा सीधा लंगर का सामान एक बोरे में

डालकर गठरी बाँध कर लँगर की सामग्री देकर भेज दिया। आप गाँव जिंगड़ां आकर भाई जवाहर सिंह के सपुत्र भाई इन्द्र सिंह को हुक्म किया, ''चल इन्द्र! आज अपने हाथों लंगर का मुहूर्त कर। नत्थू के आप जी के घर से तवा परात व अन्य लंगर के बर्तन ले आना।'' इन्द्र सिंह ने आज्ञा अनुसार उस रीश के नीचे चूल्हा भट्टी बनाकर पहले-पहल लंगर तैयार किया, छोटे-छोटे बच्चों को छकाया। बाबा माने को लंगर की सेवा संभाल दी। यह जगह सारे गाँव की साँझी शामलाट 10 कनाल पड़ी थी। आप महाराज जी अधिकतर वरियाम सिंह के खूह पर ही रहा करते थे। पहले एक थड़े पर बैठे रहते थे। फिर छोटा सा एक दो खाने का कमरा बनाकर रहते रहे। यहीं महाराज जी के साथ उन दिनों कुत्ते रहने लग पड़े। एक पलंग इसी साँझी जगह, जहाँ अब समाधि बनी हुई है, एक कमरा बनवा कर रखवा दिया, कई बार सिक्ख सेवकों को इस पलंग की ओर नमस्कार करने भेज देते थे। कभी-कभी आप भी वहाँ विराजमान होते। इसे महाराज अकाल तख्त कह कर बुलाया करते थे। धीरे-धीरे इस रसोईखाने की बहुत चढ़ती कला हो गई। पहले-पहल कई बार बाबा माने ने इस सेवा को छोड़ कर घर चले जाना, क्योंकि यहाँ अक्क, पलाश, गरूनियाँ के बूटे हुआ करते थे। जब माना इस सेवा को छोड़ कर घर चला गया तो मानें का सिर दर्द शुरु हो गया। बहुत इलाज करने से भी सिर न हटा। एक दिन बहुत सिर दर्द हो रहा था, महाराज जी के दर्शनों के लिए उठ कर चल दिया। आप जी गाँव लड़ोए के टिब्बों में बैठे थे, पास में चरण सिंह जिसे आप बूझा कहकर बुलाया करते थे चरण सिंह सरदाई लेकर महाराज जी के पास ही बैठा था। इतने में माना दर्शनों के लिए गाँव से निकल पड़ा, अभी दो खेत पीछे ही था, आगे से सतगुरु

ने हुक्म किया, ''माना! यहीं से वापिस हो जा चल रसोईखाने में चलकर आते जाते साधु सन्त की सेवा किया कर, सिर दर्द तभी हटेगा। माना वहीं से सलाम करने लगा, सिर दर्द पता नहीं कहाँ उड़ गया। मुड़कर दोबारा सिर दर्द नहीं हुआ।

बोलो भाई जी वाहिगुरू।।

साखी सौणमल्ल की प्रथाई चली

सौणमल्ल गुणाचौर का खत्री व बहुत बड़ा सेठ था। जायदाद बहुत थी। काफी शहरों में दुकानें किराए पर चल रहीं थीं। महाराज जी के लंगर के पश्चिम की तरफ गाँव तक सौण मल्ल का बाग लगा हुआ था। हर तरह के फल लगे हुए थे। बीच में एक कोठी भी बनी हुई थी। महाराज जी के यहाँ रहने के कारण संगत की आना जाना बहुत बढ़ गया। यह सौणमल्ल काफी नास्तिक विचारों वाला था। आई संगत को बहुत नफरत से देखता, कई बार सँगत को कड़वे वचन भी बोल देता। एक बार पहले की बात है बाबा साहिब दयाल ने इसके बाग कें हलट की टिंड से पानी जा पिया। इतने में सौणमतल आ गया। साहिब दयाल को बहुत गालियां दी। कहने लगा, ''मेरी टिंड भ्रष्ट कर दी है।' मिट्टी की टिंडों वाला हलट था। उस भ्रष्ट हुई टिंड के पाँच रुपए लेकर साहिब सिंह को छोड़ा। जब महाराज जी को इस बात का पता चला। अपने प्यारे भक्त की हानि हुई सुनी, बाग में आ कर हुक्म किया, ''यहाँ किसी का बाग ही नहीं है।'' मजारे के कई लोग साथ भी थे। यह वचन किए कि ''सौणमल्ल का तो यहाँ नामो निशान ही नहीं है। लाओ हल चला कर बाग उखाड़ो व फसलें बीजो।'' दस मरले में बाग में तम्बाकू लगा हुआ था, सारा ही उखाड़ दिया। बस तम्बाकू को मुख्य रखकर सौणमल्ल

की सभी तरफ से जड़ें उखाड़ दीं। सौणमल्ल के बाग के माली ने सारा हाल कह सुनाया

'गई रूह कलबूतों, कमान थीं तीर छुटा,
इह मुड़ के फिर न आँवदे ने।'

महापुरुषों की रसना से जो भी कुछ निकल जाता है, अभी तक कोई शक्ति नहीं जो साधु की कलम चली हुई को मोड़ सके। सूर्य निकलने से रुक सकता है, दरिया ऊपर की तरफ बह सकते हैं पर साधु के वचन कभी व्यर्थ नहीं जा सके। 'साधु बोले सहज स्वभाव, साधु का बोला बिरथा न जाइ।' साधु की रमज़ करतार की रमज़ मानी जाती है। महाराज जी के मुख से सौणमल्ल के बारे जो वचन निकले थे वे पूरे हो गए। सौणमल्ल सेठ की किस्मत का सूर्यास्त हो गया। धूनी ही बुझ गई। जो शहरों में दुकानें थीं, सभी वरौले बन कर उड़ गई। यही पता लगता था कि आज पटियाला में सौणमल्ल की दुकानों की निलामी हो गई है। जायदाद भी सारी दिनों में ही खत्म हो गई। पहले जब सौणमल्ल कभी बाहर सैर के लिए निकलता तो लोग उठकर खड़े हो जाते। रथ में बैठकर जाया करता था। फिर उसी सौणमल्ल का न कोई बाग रहा, न धन दौलत रही, न खूह रहा, न जमीन रही। बुरे हाल हो गए, भिखारी बन गया। एक दिन अपनी जवान लड़की महाराज जी के पास भेजी कि फिर दोबारा कहीं मेहर की नजर कर दें, दोबारा चरण पकड़े। लड़की ने बहुत याचनाएँ कीं, लेकिन दरवाजा बंद था। आप ने कोई जवाब ही नहीं दिया। सौणमल्ल के परिवारजन काफी मिन्नतें कर रहे थे। महाराज जी ने कोई जवाब ही न देना। एक दिन बहुत अर्जे करने लगी तो आगे से पातशाह बोले, ''किसी साधु की वग गई होणी ए।'' बस धीरे–धीरे सब माल धन व आप भी इस संसार से आँखें मूँद गया। लड़के को

कहीं सजा हो गई है, उसका कोई पता नहीं है भी कि नहीं। इस समय सारे बाग की जगह रसोईखाने की दीवारों तक की सारी जमीन में मजारे के जमीदारों के हल चल रहे हैं। यह फल सौणमल्ल की और पीढ़ियों को भी सन्त का दोषी होने का मिला। साध संगत के अपमान का फल मिला। तभी शास्त्रों में लिखा गया है कि 'सन्ता सेती मसकरी कुल डोबण दी रीत।' यदवों ने दुर्वासा ऋषि को मज़ाक किया था, सारी कुल का नाश हो गया।

बोलो भाई जी वाहिगुरू।।

आगे साखी जगत सिंह की प्रथाई चली

जगत सिंह सरदार मोती सिंह का बड़ा पुत्र था। जगत सिंह के ख्याल कुछ नास्तिक से थे। जैलदार बिशन सिंह गाँव रायपुर डब्बे वाले की सह पर गुरुद्वारा दुःख निवारण पर अपनी जायदाद में बना हुआ समझ कर अपना हक जताता था। इसीलिए गुरुद्वारे पर गुंबद नहीं बनने देता था। उस समय वचन दिया कि गुरुद्वारा साबित ही न होए, कोठी ही रहे। धीरे–धीरे झगड़ा बढ़ गया, महाराज जी का हक तुड़ावने के लिए मुकद्दमा कर दिया। गुरुद्वारे में ताला लगा दिया, किसी को कड़ाह प्रसाद भी न बाँटने देते, इसलिए कि गुरुद्वारा साबित न हो। जगत सिंह मामा ईश्वर सिंह साधु बना हुआ था। जगत सिंह ने उसे लाकर बिठा दिया। अपना कब्जा रखने के लालच में अपना ही बन्दा लाकर बिठा दिया। जब लगभग चार दिन ईश्वर सिंह को बैठे हुए हो गए तो आप सब कुछ जानने वाले दरिया की तरफ से टलहते–टहलते गुरुद्वारे में आए। जगत सिंह के मन की कुटिलता जानकर गुरुद्वारे में आ बैठे। ताला खोलकर कड़ाह प्रसाद की देग अपने हाथों बनाकर संगत को बरताई। गुरबख्श

सिंह को हुकम हुआ कि जगते को बुला लाओ। माने को महाराज जी ने गाँव हेड़ियां वाले सूबेदार बिशन सिंह को बुलाने के लिए कहा, ''माना! जाओ बिशन सिंह को लेकर आओ, हमने सभी गुरुद्वारों में कमेटियाँ बनाने का हुक्म जारी कर दिया है। बिशन को जा के कह दो कि अमृतसर सभी गुरुद्वारों के बन्दोबस्त के लिए कमेटियाँ बनाओ।'' गुरबख्श सिंह जगत सिंह को ले आया। जगत सिंह महाराज जी के सामने आया, जगत सिंह को हुक्म किया, ''जगता! ऐसे आदमी यहाँ नहीं रखे जाते। इसको कान से पकड़ कर बाहर निकाल दो।'' जगत सिंह में महाराज जी का हुक्म मोड़ने की हिम्मत न थी, आपके सामने आते ही बन्दे के होश गुम हो जाते। महाराज के चेहरे का जलाल बन्दे के नेत्र नहीं सह सकते थे। जगत सिंह अपने मामे को कँधों से पकड़कर बाहर धकेलने लगा, कान में धीरे–धीरे कहता है, ''अब चला जा, पुनः आ जाना।'' ईश्वर सिंह बड़ा शर्मिन्दा होकर जगत सिंह को कहने लगा, मेरे को पहले यहाँ क्यों लाया था? यदि आज आप मुझे नहीं रख सकते तो फिर नहीं आऊंगा।'' जगत सिंह ने कहा, ''मामा जी! आप चले जाओ, फिर जैसे मर्जी करना।'' ईश्वर सिंह व जगत सिंह चुपचाप गुरुद्वारे से बाहर हो गए। फिर कभी ताला नहीं लगाया न ही कभी किसी को कड़ाह प्रसाद बाँटने व चढ़ाने से रोका। आप जी तो मस्त ख्यालों में रहते थे। कभी ऐसे कार्यों में दखल नहीं देते थे। जगत सिंह यह नहीं जानता था कि यह दरगाही घर रहती दुनिया तक के लिए बंना दिया गया है, यह किसी घर का नहीं रहा। इस घर की चमक रहती, दुनिया तक रहेगी इसी को अपना घर नहीं कह सकता, कोई चुरा नहीं सकता, यह तो अमर हो चुका है। यह दुनिया को भी अमर करेगा। यह गंगा, यमुना, पराग, त्रिवेणी, मक्का–मदीना, हजूर, खडूर दुनियाँ का कल्याण

बन गया है। यहाँ बड़े–बड़े असाध्य रोगी राजी होकर जाएंगे। 'ऐसा दर तेरा जिहड़ा पापियाँ नूँ तारदा' अकाली लहर 1927 में शुरू हुई। सभी गुरुद्वारों में कमेटियाँ बनाकर पुजारियों से छीनने शुरू कर दिये थे। आने वाली घटनाएँ मात लोक में बता दिया करते थे, जैसे गुरु तेग बहादुर ने दिल्ली छत पर चढ़कर कहा था–मैं अपने टोपी वाले शिष्य का इन्तजार कर रहा हूँ। ऐसे महाराज ने पहले ही हुक्म सुना दिया था। गुरुद्वारों में कमेटियां बना दीं। अंग्रेजों के हिन्दुस्तान छोड़ने से 10 साल पहले एक हुकम किया, ''जाओ! बँगीं डोंडी कर आनी थी। टोपी वाले को कहना कि हिन्दोस्तान छोड़कर चला जाए।'' यह हुक्म दरगाही हुक्म था, मातलोक के अवतार मौके के मालिक होते हैं। जो दरगाह का कानून बनता है वह अवतारों के हाथों तक ही बनता है, जैसे श्री राम चन्द्र जी के आने की कहानी महर्षि बाल्मीकि ने पहले ही लिख दी थी। जैसे गुरू नानक देव के आने की कथा भविष्यत पुराण में लिखी गई थी। कई बार आप जी कहते हैं, खड्डियों पर भी टैक्स ला दिए हैं। चूल्हों को भी टैक्स लगा दिए हैं। साइकलों को भी टैक्स, दुकानों को भी टैक्स वह सभी बातें अब पूरी हो रही हैं, जो करतार की दरगाह में कानून बनता है, बड़ी–बड़ी हस्तियाँ मौके के गुरू पीर इसमें शामिल होते हैं। जैसे सरकार पाँच वर्षीय योजना बनाकर कभी कोई कार्य तो कभी कोई कार्य शुरू कर देती है। ऐसे ही करतार की दरगाह में हजारों साल पहले आने वाले समय की मिसलें लिखी जाती हैं। वे असैम्बली में काम करने वाले महापुरुष, करतार के सलाहकार मात लोक में बने कानून को प्रकट कर देते हैं। कई ग्रन्थों में शास्त्रों में लिख जाते हैं।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी समाधियों में खूही लगवाने की चली

एक दिन महाराज जी मूसापुर से टहलते–टहलते हेड़ियाँ के टिब्बों से होते हुए समाधि आ निकले, हरनाम सिंह साथ में ही थे। समाधि अन्दर आकर कहने लगे, ''नामा! समाधि के बाहर एक और खूही लगानी चाहिए। पहली खूही लाला के दरबार के आगे है, जिसमें से दुःखी लोग अमृत ले जाते हैं, बाहर खुले पानी से स्नान के लिए व अन्य प्रयोग के लिए और खूही लगानी चाहिए। महाराज जी का हुक्म मिलने की देर थी कि सेवादारों ने सलाह करके ईटें लानी शुरू कर दीं। और सामग्री इक्ट्ठी करनी शुरू कर दी। खूही खोदने का दिन निश्चित करके सारे गाँव की संगत ने इकट्ठी होकर महाराज जी के चरणों मे विनती की, सब सामग्री तैयार है, ''आप चलके टप्पा लाओ।'' हरनाम सिंह के दिल में था, खूह लगे तो गुरबख्श सिंह के खेत में लगे। खूह तो संगत के पैसों से ही लग जाना था, सेवादारों ने सेवा कर देनी है, गुरबख्श सिंह के छः खेत साथ लगते थे, इसके खेतों में होगा तो अपने खेतों को पानी ला लिया करेगा। गाँव की संगत चाहती थी कि खूह लगे तो किसी साँझी जगह लगे, किसी की मलकीयत न बने. यदि किसी मलकीयत में लगेगा तो मालिक खेत वाला ही रहेगा। इस तरह गाँव की संत की खींचोतान बन गई। यह सवाल संगत ने महाराज के आगे पेश कर दिया। खूह लगे तो साँझी जगह में लगे नहीं तो हमारी नाराजगी है। एक अतर सिंह नाम का आदमी कहता, ''खूह लगेगा तो समाधियों के साथ वाली साँझी जगह में लगेगा नहीं तो यहाँ भी सुज्जों की तरह होगा।'' जब इतनी बात अतर सिंह ने कही तो महाराज डंडा लेकर सभी को मारने लगे और तो सभी उठकर भाग गए, पर भोला नंबरदार महाराज जी के काबू में आ गया,

भोले को महाराज ने लातों से मारा, फिर कहने लगे, ''फिर इनको लेकर चलेगा।'' भोला लेटा पड़ा ही दुहाइयां पा रहा था, भोले ने लेटे–लेटे ही कान पकड़े हुए थे, बाकी सभी कोई एक खेत कोई दो खेत छोड़कर दूर खड़ा हो गया, फिर डर के मारे कोई नजदीक न आए। इधर गाँव मजारे पंजाब सिंह के खूह व गाँव झिंगड़ां की पंचायत के पीछे फिर रहे थे और इनके साथ ऐसी खेल हो रही थी। गाँव झिंगड़ां में समाधियों में आकर उसी समय खूह का टप्पा अपने हाथों लगा कर चले भी गए। जब पंचायत आकर देखे तो पाड़ खोदे हुए थे जिस जगह गाँव की संगत चाहती थी, उसी जगह पाड़ खुदाना शुरू कर गए। इस कौतुक को देखकर सभी लोग हैरान रह गए दोनों तरफ एक ही समय दर्शन देने की बात सुनकर धन धन होने लगी। एक बार तालाब की खुदाई हो रही थी, तालाब पर संगत को दर्शन दिए, उसी समय गाँव में भी दर्शन देते रहे। यह तो छोटी सी बात है, विदेशों में अपने सिक्ख सेवकों को दर्शन दे दिया करते थे।

बोलो भाई जी वाहिगुरू।।

आगे साखी हीरा सिंह को कनाडा में दर्शन देने की चली

हीरा सिंह गाँव रहिप्पे का था, वह कनाडा में गया हुआ था। पहले हीरा सिंह बुहत गरीब था। काफी साल कनाडा में सफर लाया। एक दिन हीरा सिंह घोड़ों से हल चला रहा था। नाभ कंवल राजा साहिब जी सफेद चादर लपेटे हुए, हाथ में सोटी जो हिन्दुस्तान में रखते थे पकड़ रखी थी। चेहरे का नूर उस समय ऐसे झलक रहा था कि चाँद, सूर्य को भी मात दे रहा था। उस समय आप जी पर इतना नूरानी रंग चढ़ा था कि इन्सान की कलम लिख नहीं सकती। चौदहवीं के चन्द्रमा

के समान शीतलता भरी किरणें जिस पर पड़ जातीं थी, भवसागर से पार कर जातीं थीं। इसी रंग में जा हीरा सिंह को दर्शन दिए। हीरा सिंह देखकर बहुत खुश हुआ जाकर चरणों में गिर गया। महाराज जी ने सिर पर हाथ रखा। हीरा सिंह के सब रोग शोक दूर कर दिए। हीरा सिंह की आँखें नशे से मिलती जातीं, इतना प्रेम का सरूर चढ़ा। विनती की, ''सच्चे पातशाह! मेरी झोंपड़ी में चलो, जैसे बिदर का भला किया मेरा भी करो। जैसे भाई लालो को गरू नानक जी ने तारा, झण्डोवाणी को मान दिया, मेरा पापी का भी भवसागर से बेड़ा पार करो।'' महाराज कहते, ''हीरा ! ऐसे ही कभी मन में रहिपे के लोगों की याद आ जाती है। सरमुख सिंह का प्यार देखकर रहिपे के सारे जीवों का ध्यान रखा जाता है, भला करना ही पड़ता है। रहिपे के जितने भी जीव जन्तु हैं, सभी की मिसल हमारे ही पास है। हमें तो रहिपे के पशु पक्षी भी तारने पड़े हैं। हाला जब हिन्दुस्तान आएगा तो लेंगे।'' यह वचन हीरा सिंह से करके दर्शन देकर बिजली के लश्कारे की तरह देखते ही देखते आँखों से लोप हो गए। आप के दर्शन की ऐसी झलक पड़ी ऐसा दिल प्रेम की तलब से खींचा गया व रोम–रोम में शीतलता व आकर्षण पैदा हो गया। मन प्रेम की डोरी से खींचा गया। अब मन टिकता नहीं, तोड़ लगी हुई है, कब अपने देश जाकर सोहणे प्रियतम के दर्शन करूँ। अपने गाँव वालों यह कौतुक जाकर बताऊँ। छः महीने बाद कनाडा से भारत आ गया। गाँव रहिप्पा में आकर महाराज जी के मिलाप की सारी कहानी कह सुनाई। कुछ दिनों बाद सरमुख सिंह के पुत्र ठाकुर सिंह को साथ लेकर 100/ रुपए भेंट चढ़ाने चला। महाराज करतार सिंह के घर बैठे थे, चरणों में 100/– रुपए रखकर माथा टेका। महाराज जी आगे से बोले, ''हीरा! हमने क्या करना है, पैसे वापिस अपने घर ही ले जाओ

आपके काम आएंगे। हीरा! पहले तुझे लंगोटी भी लगानी नहीं आती थी, हीरा सिंह न बन सका, हीरा ही रह गया।'' भेंट मनजूर नहीं की, उसी तरह पीछे मोड़ दिया। कुछ साल गाँव रहिपा में रहा फिर एक दिन घर वालों के साथ गुस्से होकर चुपचाप ही रात को थोड़े से पैसे लेकर दोबारा वापिस कनाडा चला गया। पता नहीं उस समय कोई रहमत की नजरें करने गए थे। हीरा सिंह चीज ले न सका। तभी तो कहा था कि हीरा सिंह न बना, हीरा ही रह गया पर आने पर घर वालों की तरफ से पूरा सम्मान भी न मिला। सभी रिश्तेदारों बहन भाइयों से निराश होकर कनाडा चला गया। महापुरुषों की रमजें जो भी समझ जाता है उसका बेड़ा पार लग जाता है। हीरा सिंह कुछ देर कनाडा में रह कर कालवास हो गए। महाराज नाभ कँवल राजा साहिब जी ऐसी शक्तियों के मालिक थे, जहाँ भी कोई याद करता था, एक मिन्ट में सहायता करते थे, दर्शन दे देते थे।

बोलो भाई वाहिगुरू जी।

आगे साखी सूरापुरी सुन्दर सिंह के साथ हुई

एक दिन महाराज गाँव मजारे दरवाजे के सामने करमी के घर बैठे थे। सुन्दर सिंह सूरापुर से दर्शनों के लिए आया। सुंदर सिंह दर्शन करके नमस्कार करके चरणों में ही बैठ गया। इतने में एक 10–12 साल का बालक माथा टेकने आया। उस बालक ने हलके–हलके चौंसी जैसे कपड़े डाले हुए थे। बालक गरीब घर का था। महाराज जी ने उस बालक के गले में पड़े वस्त्र पकड़कर मुंदर सिंह की तरफ इशारा किया, कहा, ''मुंदर! ऐसे ही कपड़े पहनकर गुजारा कर लेते हैं।'' मुंदर सिंह, बसन्त सिंह, सुन्दर सिंह, वजीर सिंह के सुपुत्र थे 70 घुमां के मालिक

थे। घोडियाँ रखा करते थे। नाभा पटियाला में इनकी कई दुकानें थीं, ठेकेदारी भी करते थे। महाराज जी के प्रेमी बहुत थे। जिस दिन से महाराज जी ने उस गरीब बच्चे को अपने हाथों के स्पर्श से अमीर बना दिया, मुंदर सिंह के घर गरीबी ने डेरा ला लिया, धीरे–धीरे सारी दुकानें गिरवी रख दीं। सारी ज़मीन भी गिरवी रख दी। सभी चीजें गरीबी के तराजू में तुल गईं। गरीबी का बहता दरिया सब कुछ बहा कर ले गया। मुंदर सिंह के घर से अमीरी अपना बिस्तर समेट कर न जाने कहाँ चली गई। पतझड़ रूपी उदासी ने घर में पक्का डेरा ला लिया। मुंदर सिंह के मन से अमीरी के जजबात सपने बन कर उड़ गए। हालत बड़े नाजुक हो गए, गरीबी ने मुंदर सिंह को कोठाली में डालकर ढाल दिया। ऐसी हालत में भी यह सच्चे सिक्ख अपने कालमपीर की सेवा से भरोसे से पीछे नहीं हटे।

भगवान दास गुरू चाहिए जैसे आह नगर,
पकड़ हथौड़ा ज्ञान का सीधे देवे कर।।

ज्ञान रूपी हथौड़ा, अहिरन रूपी धीरज बखशीश करके भरोसा देकर अपने सिक्खों सेवकों को पार करना था।

फरीदा मनु मैदान करि टोए टिब्बे लाहि।
आगे मूल न आवसि दोजक संदी भाह।।

जब मन शुद्ध हो जाए तभी शुद्ध वस्तु पाई जाती है। बुद्धिमान लोग कहते हैं, शेरनी का दूध सोने के पात्र में ही रहता है, और किसी धातु के बर्तन में नहीं डाला जाता। कामिल मीर में यह शक्ति होती है जैसे लोहे को सन्ही से पकड़ कर ऊपर से हथौड़ा मारकर

लोहे को सीधा कर देता है, ऐसे ही पूर्ण गुरू सेवक को ऊपर से लगाता है व आन्तरिक प्रेम से विमुख नहीं होने देता। शक्ति सहने का बल प्रदान करके पास कर लेते हैं।

भांडा भाऊ अमृत तित ढालि। घड़ीए शब्द सची टकसाली।।

जैसे किसान पहले किसी सधी हुई जमीन देखकर झट से बीज बो देता है। पहले अन्दर पैदा हुए विकार, ईर्ष्या, काम, क्रोध, आदि व्याधि आदि मन में से बुरे संकल्प समाप्त हो जाएं व जिज्ञासु के अन्दर पूरी सफाई देखने के उपरान्त मेहर की नजर से निहाल कर देता है. मुंदर सिंह गरीबी की हालत में भी धर्म से नहीं हारा। गरीबी के दिनों में लंगर की सेवा करने लगा। सच्चे दिल से सेवा की। पन्द्रह साल जब सेवा करते बीत गए। सर्दी के दिन थे, एक दिन महाराज जी रसोईखाने में एक दो खन का कमरा था वहाँ विराज गए। आधी रात के बाद रात ढली, महाराज जी ने आवाज दी, ''मुंदर! आज यदि कोई सुनता है तो पेश हो मिसल पेश है। करतार की तरफ से हुक्म हो रहा है। आज यदि कोई पेश हो जाए तो रंगा जाएगा।'' मुंदर सिंह रजाई में पड़ा कहता रहा, ''मुझे तो माया की जरूरत है नाम का रंग किसी और को दे दो। आपके सामने नहीं होंगा। नाम के रंग में रंगकर मेरी बुद्धि बदल दोगे। मुझे और कुछ नहीं चाहिए, माया का गफा बख्शो। मेरे मन में माया की तृष्णा है।'' महाराज जी ने बहुत समझाया मुंदर माया का क्या लेना, नाम रूपी धन लो जिससे सब कुछ प्राप्त होता है। तेरा भी कल्याण होगा और भी कई तर जाएंगे। इसी धन की मन में इच्छा कर। पर बार–बार यही माँग रहा है। महाराज जी कहते, ''जाओ मुंदर! कितनी माया चाहिए, एक लाख दे दें।'' मुंदर, ''नहीं जी, एक लाख से मेरा क्या बनेगा।''

महाराज कहते, ''दो दे दें।'' ''नहीं जी, और मेरा लाखों का हिसाब चले तो मेरे मन की भूख शांत होगी। मैं तेरे सारे मन्दिर बनवाऊँगा।'' अच्छा कहते हुए, ''मुंदर! तुझे लाखों ही दिए।'' बस उसी दिन से मुंदर सिंह के घर लक्ष्मी का निवास हो गया, बिगड़े काम बनने लगे। दिन प्रतिदिन किस्मत का सूर्य चमकने लगा। सारे खूह जो गिरवी रखे थे, छुड़ा लिए गए। दुकानें भी पुनः वापिस ले लीं। ठेकेदारी का काम पुनः शुरू हो गया। दोबारा साहूकारी चल पड़ी। कच्चे कोठों की जगह पक्की कोठियाँ बननी शुरू हो गई। ठेकों में लाखों की बचत होने लग पड़ी। वही वचन जो कभी कच्चे कोठे पर बैठ कर किए थे ''ये कच्चे कोठे नीहं ये तो पक्की कोठियाँ बनी हुई हैं'' सब पूरे हुए। महाराज जी के मंदिर की सेवा भी मुंदर सिंह के परिवार ने ही की। समाधि के ऊपर गुंबद इन्होंने ही बनाया। गुंबद तैयार करके ऊपर कलश बजरी का बनाकर रखने लगे मुंदर सिंह के भतीजे को महाराज जी ने आकर दर्शन दिए व आवाज लगाई, ''हमारे सिर पर पाथी बनाकर रखने लगा है, सोने का कलश बना के चढ़ा।'' उसी दिन अमृतसर जा के मिलखा सिंह सोने का कलश बना लाया। इस समय मुंदर सिंह के परिवार करोड़ों में खेलते हैं।

बोलो भाई जी वाहिगुरू।।

साखी माली राम खटकड़ां वाले के साथ हुई

माली राम गाँव खटकड़ कलां झंडा जी का रहने वाला था। स. भगत सिंह शहीदे आजम के खानदान में से था। घर में पदार्थ, माया, जायदाद काफी थी। माया का नशा इन्सान को अहंकार का रोगी बना देता है। 'मायाधारी अति अन्हा बोला' दातां देने वाले को इन्सान भूल जाता है। अपनी सियाणप को बड़ा मान बैठता है। दुनियां वाले आपके

कौतुक देखकर हैरान थे। माली राम की पत्नी हरनाम कौर को भी दर्शनों की इच्छा हुई। अमीर होने के नाते कभी घर से बाहर पैर नहीं रखा था। जिन्हां नूँ लग्गे प्रेम तमाचे बाहर दे कम्मों गइयां।' माली राम से चोरी छुपके कभी–कभी दर्शन करती रहती। धीरे–धीरे माली राम को भी पता चल गया। हरनाम कौर मजारे राजा साहिब के जाती है। माली राम ने कभी साधु संगत नहीं की थी। साधु संगति के बिना ज्ञान का चिराग नहीं जलता है। ज्ञान के बिना पाप–पुण्य का विचार नहीं होता। माली राम कई बार इस बात का क्लेश भी करता रहता। हरनाम कौर मीरांबाई की तरह नाम के रंग में रंग गई। हरनाम कौर की बड़ी लड़की हरबंस कौर दर्शनों को जाती थी। चार लड़कियाँ थीं। एक दिन आप जी चार आने दिए और साथ हुक्म किया, ''चार–चार अन्ने के चारों लड़कियों के नाम पताशे बाँट देना।'' पता नहीं क्या कारण था? या इसमें कौन सी बर्कतें थीं? रास्ते में जाती हुई ने चार अन्ने की तौड़ी ले ली, मिट्टी का बर्तन लेकर एक पासे रखा तो तौड़ी ठाह करके टूट गई। यह कौतुक देखकर बहुत घबराई कि हुक्म नहीं माना गया। हरबंस कौर कहती, ''माता जी! महाराज जी कौन सी किसी ने चार पुत्रियाँ बताई थीं, आप ही जाणी जाण हमारा भला कर रहे थे।'' जब फिर कभी दोबारा दर्शनों को गई तो आगे से आवाज दी, ''आगे आ जा तौड़ी वाली हरबंस कौर।'' वह पिछली बात जो तौड़ी के लिए हुई टूट गई थी। इस प्रकार बेअन्त कौतुक देखकर प्रेम के रंग में रंग गई। एक दिन माली राम कहता कि मैं आप देखूँगा कि अन्तर्यामी है कि नहीं। सुबह उठकर अपनी भैंस से दूध निकाला। जगदीश ब्राह्माण की गौ से भी दूध निकाला, मेले झीऊर को बकरी से भी दूध निकाला। तीनों दूध चो कर बाल्टी भर ली और चल दिया। गाँव मजारे जाकर

आप जी के दर्शन किए, संगत काफी थी, आप पीछे चुप करके खड़ा हो गया। मन में सोचता है कि यदि तीनों किस्मों का दूध बता दें तो मैं मानूँगा। आगे से सतिगुरु आवाज देकर कहने लगे, तीन दूधों वाले! तू भी आगे आ जा। जब ऐसा सुना तो उसके पैरों तले से जमीन खिसक रही थी व थर–थर काँपने लगा। अहँकार का टीला ढह गया। आगे बढ़ा व चरणों में नमस्कार की, हुक्म हुआ, ''माली दूध कुत्तों को पिला दो। एक सेर दूध रख लेना। झिंगड़ां जाकर और पानी पाकर समाधों के स्नान करा के आओ।'' आप जी का सदा के लिए सेवक बन गया। जब भी जाना नया नजारा देखना। सीना साफ हो गया। बाकी सारा जीवन आप जी की सेवा में बिताकर जीवन सफल किया।

बोलो भाई जी वाहिगुरू।।

आगे साखी मान सिंह मंडेरां के साथ हुई

मान सिंह मंडेरां निवासी जाट बिरादरी का था। गृहस्थ आश्रम में रहते हुए साधुओं जैसा जीवन पवित्र आत्मा, धर्म की कमाई करनी। मान सिंह के परिवार का आप पर बहुत भरोसा था। मान सिंह का पुत्र चैन सिंह बीमार हो गया। पिछले जमाने में बच्चों को बगलों व नमूनिए की बीमारी बहुत हुआ करती थी। कई कुछ किया, बारह सींग नमदा बाँधा पर दुःख बढ़ता ही गया। सर्दी का मौसम था। आगे रात पड़ रही थी। पुत्र की तकलीफ माता–पिता से नहीं देखी जाती। दशरथ, श्रवण के माता–पिता पुत्र वियोग में मर गए थे। हज़रत इब्राहिम पुत्र की कुर्बानी नहीं देख सका था। पुत्र सबसे मीठा फल है। एक अकबर ने बीरबल को पूछा, ''हिन्दू ग्रन्थों में कई जगह लिखा है कि भगवान अपने प्रिय भक्तों की रक्षा के लिए नँगे पाँव दौड़े थे, क्या उनके पास और कोई

सेवक या नौकर नहीं था?'' बीरबल को कहा कि इस बात का जवाब दो। बीरबल कहता कुछ दिनों तक दूँगा। बीरबल ने किसे मूर्तिकार से अकबर के पुत्र सलीम जैसा बुत तैयार करवा लिया। सलीम के नकली बुत को रखकर सलीम को कहा, जब बादशाह बाग में तालाब के किनारे बैठे होंगे तो बादशाह के देखते ही अपना पैर पानी में फिसल कर इस बुत को पानी में फैंक देना, आप पीछे छिप जाना। जब बुत गिरा, बादशाह देख रहा था, उसने नँगे पाँव दौड़कर बुत्त को पकड़ा। बुत्त नकली था, बादशाह बहुत शर्मिंदा हुआ। उस दिन बीरबल ने बादशाह को पूछा कि आप नँगे पाँव कपड़ों के साथ पानी में क्यों घुसे? आप जी के पास अनेकों ही सेवक बैठे थे। आपने उनको हुक्म क्यों नहीं किया? बादशाह कहता, 'इतना समय नहीं था।' बीरबल ने कहा, 'ऐसे ही हमारे भगवान की बात है।' मान सिंह की पत्नी करतार कौर कहने लगी, बड़े डाक्टरों के मालिक राजा बली के चलें यदि खैर मिल जाए। बच्चा उठाकर मियाँ बीबी रात के अन्धेरे में मजारे की तरफ चल दिए, डरावनी रात थी। चारों तरफ सन्नाटा छाया था, कुत्ते भौंक रहे थे। करतार कौर का दिल सहमा हुआ था कि चोर डाकू कहीं मार न दें, कुत्ते बिल्ले कहीं खा न जाएं, चरणों का ध्यान करती, राजा राजा करती है। क्या देखती है? सच्चे पातशाह साथ–साथ चले आ रहे हैं। कुत्ते भी आप जी के साथ ही थे। चार फुट की सोठी पकड़ी थी, आप कभी आगे कभी बराबर हो जाते। मान सिंह को बताया कि सच्चे पातशाह साथ ही चले हुए हैं। मजारे गए तो आप जी किरपा के चौबारे पर टहल रहे थे। वहीं सोटी हाथ में पकड़ी हुई थी, चैन को चरणों में रखकर आँसू बहाते हुए नमस्कार की, सतिगुरू मेहरबान होकर बोले, ''रसोई खाने की पहली खूही में से जल निकाल कर काके को स्नान करा दो।'' लंगर में जाकर स्नान कराया। चैन गुलाब

के फूल की तरह टहक उठा। पुत्र को राजी करके घर आए। मान सिंह के पौत्रों का जन्म भी आपकें हुक्म से ही हुआ। इस समय भी आप जी पर बहुत भरोसा रखते हैं। चैन सिंह पर दुबई में कत्ल का केस बन गया। रहिपे गुरुद्वारा साहिब में अखण्ड पाठ की सुख की व बरी हो गया। चैन सिंह का काका बलविन्दर बहुत बीमार हो गया। प्रीतम कौर मान सिंह की बहू ने अरदास की कि अखण्ड पाठ करवाएंगे। बच्चा राजी हो गया। सभी जीवों के कर्मों की गति आप जी की मुट्ठी में है। ऊधम सिंह साधपुर से दर्शन के लिए आया, हुक्म हुआ, ''काका! घर चल! घर मेहमान आए हैं। नाम भी गुरनाम रख लेना।'' ऊधम सिंह घर आया तो लोग बधाइयां देने लगे। ऊधम सिंह कहता कि बधाइयां तो राजा जी ने मजारे बैठकर ही बता दीं थीं, नाम भी रख दिया। गुरनाम बड़ा होकर कनाडा चला गया, घर में नौ निधियाँ बारह सिद्धियां हो गई। सारा परिवार सुखी जीवन बिता रहा है।

बोलो भाई जी वाहिगुरू।।

आगे साखी कर्म सिंह रायपुर डब्बे वाले के साथ हुई

पोह माघ के दिन थे, भयंकर सर्दी पड़ रही थी। छप्पड़ों के पानी कोरे से जमे हुए थे। जानवर शीत से मर रहे थे। सभी जीव घरों में छिपे हुए थे।

भिनी रैनड़िये चमकन तारे।
जागनि सन्त जना मेरे राम प्यारे।।

अन्धेरी रातों में हकीकी इश्क में रंगे हुए रात खेतों में, निरंकार के साथ ध्यान लगाकर बैठे रहे। चार बजे के समय कर्म सिंह के बाड़े

में जा घुसे। कर्म सिंह का पिता हाकम सिंह बेलणा चला रहा था। जब आपका दर्शन हुआ तो भक्त बिदर की तरह प्रेम में मस्त हो गया। पलंग लगा दिया, आप जी बैठ गए। विनती की, ''आग जला दें, सर्दी बहुत है।'' कहते, ''कोई जरूरत नहीं, अपना काम किए जाओ।''कर्म सिंह ने दूध निकाल कर बाल्टी रखी, ग्रहण करने की विनती की, धन्यभाग जो आपने दर्शन दिए हैं। इतने में रस की मट्टी भर गई, बर्तन उठवाकर अपने चारपाई की तरफ रखवा लिया, उसमें दूध की भरी हुई बाल्टी डलवा दी। हाकम सिंह को गड़वी लेकर पास बिठा दिया। इतने में दिन निकलने वाला हो गया। जानवर खुशी के गीत गाने लगे। गाँव के सभी काम के लिए चल पड़े। युवतियाँ दूध रिड़क रही थीं। दूध निकाल रही थीं। गाँव में पता लग गया। आप जी हाकम सिंह के बाड़े में बैठे हैं। गाँव की संगत दर्शनों के लिए आने लगी। हाक़म सिंह को हुक्म किया, ''आई संगत को रस पिलाओ।''सारा गाँव दर्शनों को आया। काफी दिन चढ़ने तक एक मट्टी रस की समाप्त नहीं हुई। बाँट कर खाना, आए गए की सेवा करनी, सभी जीवों में एक नूर का करिश्मा बता कर धर्म की कमाई करनी, ऐसा उपदेश करके गाँव मजारे करतार सिंह के घर आ बैठे। कुछ दिनों बाद कर्म सिंह, बेअन्त सिंह, बाबू प्रीतम सिंह जालंधर जा रहे थे, रास्ते में जाते–जाते कर्म सिंह बेअन्त सिंह कहने लगे–राजा साहिब के दर्शन करके आगे जाना है। बाबू प्रीतम सिंह सिर से रोडा था, साथ वालों को उपदेश करने लगा, केश मुना के रखने चाहिए, काफी उपदेश करता गया. जब आप जी सन्मुख गए तो बेअन्त सिंह, कर्म सिंह को अपने पास बिठा लिया। बाबू जी को पीछे मोड़ दिया। कहते चलो यहाँ रोडों का काम नहीं। बाबू जी बाहर चले गए, पीछे से कहने लगे, किसी की कहना नहीं मानते। धर्म पर अडिग रहते हैं,

सुबह स्नान करके जपुजी साहिब का पाठ करते हैं. एक बार दोबारा की बात है। कर्म सिंह, साधु सिंह व बेअन्त सिंह प्रतापू के खेतों में से जा रहे थे। प्रतापू का लड़का घुग्गी उनके साथ लड़ पड़ा, कर्म सिंह की पग गिर गई। घुग्गी ने पग नहीं दी। कर्म सिंह के मन में बहुत गुस्सा उठा। आपके दर्शनों को आए हुए के साथ ऐसा बर्ताव किया। जब आप जी के चरणों में जाकर नमस्कार की, दो रुपए देकर हुक्म किया, ''काका पग ले लेते हैं। (उस समय दो रुपए अच्छी पग आ जाती थी) इन लोगों को तो पता नहीं यहाँ तो सड़क निकल जानी है।'' पहले जाने को रास्ता नहीं था, उस जगह अब सड़क निकली हुई है। आप जी के सभी वचन सत्य हो गए। ऐसे कौतुक हजारों ही लोगों को दिखा देते थे। एक दिन आप जी गुणाचौर के पूर्व वाले पासे रौली वल्ल की खूही पर पीपल के नीचे बैठे थे। गर्मियों के दिन थे, चार पाँच बजे का टाइम था, एक बारात कहीं से शादी का डोला लेकर आ रही थी। गहनों की पोटली विचौली के पास बंधी हुई थी। गहनों की पोटली खूही में फैंकवा दी। बिचौली को कच्ची तेलियाँ आने लगीं। सामने कौन जाए? शेर की मूँछ को हाथ लगाना, मौत को गले लगाने वाली बात है। 'अशक भौर फकीर ते नाग काले बाझ मन्त्रां मूल न की लिए जी' बूढ़ी घर गई, जाकर उसकी सास को साथ लेकर फिर आप जी के चरणों में विनती की। आप जी का हुक्म हुआ, ''भाग जा, पीछे मुड़कर नहीं देखना और न ही कभी गहने लेकर चलना।' कई बार इस तरह के कौतुक दिखाए, गहने उतरवा कर खूह में फैंक देने। विनती करने पर सरहाने के नीचे से निकाल देने, कई बार ऐसे कौतुक देखने में आए।

बोलो भाई जी वाहेगुरू।।

साखी पाखर सिंह झिंगड़ां वाले के साथ हुई

एक दिन नाभ कँवल राजा साहिब जी गाँव मजारे से उठकर खेतों में टहलते–2 झिंगड़ां के पश्चिम की तरफ जा निकले। फागुन के दिन थे, ठंडी–ठंडी हवा चल रही थी। आकाश साफ था। बारिश हो कर बन्द हुई थी, फसलें नई–नई लग रही थीं। सरसों के फूल खिले हुए थे। गेहूँ की फसल पूरे यौवन पर थी। पतझड़ के बाद नई कोपलें आ रही थीं। सभी तरफ हरियाली ही नजर आ रही थी। बसन्त ऋतु छः ऋतुओं की बड़ी बहन बसन्ती सूट पहनकर खेतों के किनारे पर घूम रही थी। इसके हुसन का कहर आया हुआ था। नूर डुल–डुल जा रहा था। दिन ढलने लगा था। साग तोड़ने मुटियारें टोलियों में खेतों की तरफ चलीं। खेतों के रक्षक भी पहरा लगाकर बैठे थे। पाखर सिंह अपनी पैली की राखी बैठा था। उसी तरफ को अरशों फर्शों का मालिक, अनोखी चाल, बर्कतों का मालिक, नूर का सितारा, जिसका नूर डुलकां मार रहा था, अरशी प्रीतम जी आ निकले। पाखर सिंह नमस्कार की, हँसमुख चेहरे फूलों की तरह खिले हुए, मोतियों की तरह वचन बोले, ''काका! किसका पुत्र है?'' लड़का, ''जी, हरनाम सिंह का पुत्र हूँ।'' महाराज, ''यहाँ क्यों बैठा है?'' पाखर, ''जी साग की रखवाली के लिए बैठा हूँ।'' महाराज, ''काका! साग और किसी को भी तोड़ लेने देना चाहिए, गरीब जनता ने भी कहीं से खाना है।'' इतने वचन पाखर सिंह से करके गाँव की तरफ चल दिए। रास्ते की तरफ बेरी के काँटों की बाड़ की हुई थी। काँटे भी ताजे काटकर गाड़े गए थे, कीकर की शूलें भी थीं। महाराज जी नँगे पैर काँटों पर पैर रखकर रास्ते की तरफ निकल गए। पाखर हैरान था। नंगे पैरे शूलों पर रखकर पातशाह आगे

निकले, फूलों जैसे कोमल आपके चरणों में कोई काँटा नहीं चुभा। जिस जगह महाराज चरण रखकर जाते थे, काँटे साग की गंदलों की तरह रेशम का रूप बन गए। पाखर सिंह ने अपने पिता हरनाम सिंह को सारी कहानी कह सुनाई, हरनाम सिंह कहता, ''काका! महाराज जी को काँटे क्या लगने हैं? काँटों को बनाने वाला भी आप ही है सृष्टि के मालिक जो हैं।'' आगे जाकर महाराज जी बिशन सिंह के बाड़े में जा बैठे। सारे गाँव में महाराज जी के आने की खबर बिजली के करंट की तरह फैल गई। सभी माई–भाई दर्शनों के लिए दौड़े आने लगे। एक जाट बंगा मण्डी में कनक बेचकर आया, उसके पास चाँदी के रुपए बाँधे हुए थे। उसने भी सलाम की, उसके रुपए रखवा लिए। मुट्ठियां भर–भर के रास्ते में बिखेर दिए। बच्चे उठा–उठा कर भागते गए। दो रुपए पाखर सिंह ने भी उठा लिए। पाखर सिंह ने घर जाकर अपने पिता को दिए, हरनाम सिंह ने दो रुपए और मिलाकर चार रुपए की नियाज बनाकर गुरुद्वारे जाकर बच्चों में बाँट दी। पाखर सिंह को कहा, ''काका! आगे से महाराज के पास से पैसे नहीं उठाने, घर में बहुत कुछ दिया हुआ है।''

बोलो भाई जी वाहेगुरु।

आगे साखी सुन्दर गाँव मजारे वाले के साथ हुई

सुन्दर गाँव मजारा का रहने वाला था। जिमींदार जाट था, खेती का काम करता था, सुन्दर की उमर 60 साल हो गई, घर कोई औलाद नहीं हुई। 25 खेत जमीन पुत्र के बिना काट–काट खाते थे। पुत्रों के बिना घर के सारे पदार्थ जहर लगने लगते हैं व बेकार हो जाते हैं।

जिर घर दीपक न बले बाल खड़े बार।
तिस का किया डन्नना सो डनिया करतार।।

एक बार अकबर ने बीरबल व अन्य दरबारियों से प्रश्न किया, सारी दुनिया में सभी फलों में से कौन सा फल मीठा है किसी ने आम तो किसी ने केला बताया। बीरबल ने पुत्र रूपी फल सबसे मीठा बताया. क्योंकि और फल खाने से मन को शान्ति मिलेगी, पर पुत्र के पीठ पीछे होने से, सीने से लग जाने से कलेजे में ठण्डक पड़ जाती है। आँखो के सामने आने से ही सीना सरद हो जाता है। सुन्दर के तीन भाई और थे, बाकियों के लाणे चलते थे। यह अकेला ही ठेडे खाता फिरता था। एक दिन सुन्दर करनाणे की तरफ खेतो में हल चला रहा था। दुखियों के दुःख भंजन, मेहरों के दाता ग्यारह बजे दिन के आम वाले खूह पर आ बैठे। इस खूह पर भी महाराज बहुत देर रहते रहे। सुन्दर हल के पीछे वृद्ध अवस्था में खींचा जाता था। पुत्र की कमी ने मन में बड़ी कमज़ोरी की हुई थी। हल खड़ा करके महाराज जी के चरणों में आकर सिर रख दिया, मुँह से तो कुछ नहीं बोला, मन में फरियाद करता था, ''जैसे औरों बेड़े तारे हैं, मुझ पापी का बेड़ा भी कहीं पार लगा दो, मेरा घर भी बस जाए।'' सुन्दर की इस हलीमी व विनम्रता को देखकर महाराज जी ने रहमत भरी दृष्टि सुन्दर पर डाली। हुक्म किया, ''सुन्दर! दो कनाल जगह संगत के आराम के लिए छोड़ दो।'' सुन्दर, ''जी मैं अपने ताये को पूछकर छोड़ूँगा।'' सुन्दर अपने ताए के पास चला गया। महाराज जी का हुकमनामा सुनाया, ताया कहने लगा, ''सुन्दर! भाग जा, यह मौका ही होता है, जो कुछ महाराज जी कहते हैं वह कर दे। वैसे भी सारा रकबा ऐसे ही जाना है, शायद इसके पीछे कोई जड़ लग जाए।'' सुन्दर ने गले में पल्ला डालकर विनती की, ''मैं दो कनाल जगह छोड़ता हूँ।''

जिस तरफ लंगर पकाकर रखा जाता है उस तरफ सुन्दर का खेत था। दो करनाल जगह लंगर के लिए छोड़ दी। एक पुत्र पैदा होने का वर सतगुरु से प्राप्त हुआ। साठ साल की उमर होने पर घर में पुत्र का पैदा हुआ। यह खुशी भरा दिन सतगुरु की कृपा से देख लिया। पुत्र जन्म हुआ। सतगुरु की बख्शीश थी, नाम भी बख्शी रखा। बख्शी धीरे–धीरे जवान हो गया। एक पुत्र का बाप कभी ऊँचा सास नहीं ले सकता था। हर समय दुश्मनों का भय लगा रहता। बाकी सुन्दर के शरीक कई बार दबके मार कर डरा देते थे। सुन्दर का एक पुत्र है, जब हमारा जी चाहे धूनी शान्त कर देंगे। इन बातों से डरता सुन्दर अपने पुत्र को गाँव धलेता में अपनी बहन के पास छोड़ रखता था। एक दिन सुन्दर भी अपने भाइयों से लड़ पड़ा। बाकी भाई कहने लगे, ''क्यों औखा हो रहा है। तेरी तो धूनी बुझा देंगे, तेरा दीवा गुल्ल करके छोड़ेंगे।'' इकलौते पुत्र का बाप सुन्दर का कलेजा बाहर को आने लगा। हर समय दिल धक–धक करता रहता था। इतने दबके में ही गाँव से चोरी–चोरी खेतों खेत धलेते को चला गया। धलेते गया तो पता लगा कि बख्शी गाँव लड़ोआ में ससुराल गया है। सुन्दर के दिल की धड़कन और बढ़ गई, धुलेते से उन्हीं पैरों लड़ोए को भागा। हाय पुत्र! कहीं गाँव न चला जाए। इंस तरह पागलों की तरह अपने आप से ही बातें करता दौड़ा जा रहा है, जैसे राम जी के वियोग में महाराज दशरथ प्राण छोड़ गया था। श्रवण के नेत्रहीण माता–पिता के प्राण निकल गए थे, ऐसा ही हाल का सुन्दर को हो रहा था। सुन्दर खेतों से दौड़ा जा रहा था। आगे क्या देखता है कि महाराज लालो मजारे की जूह में बैठे हैं। पिता–पुत्र महाराज जी के पास इकट्ठे हो गए। बख्शी भी राह छोड़कर महाराज जी के दर्शनों के लिए उधर को निकल आया, सुन्दर का हाल देखकर महाराज जी ने हुक्म किया, ''सुन्दर! चल आराम से घर बैठ, रास्तों में ऐसे नहीं भटकते

फिरते। मेरे लाए बूटे को कोई उखाड़ नहीं सकता, मेरे होते कोई मार नहीं सकता।

जा कउ मुश्कल अति बनै ढोई कोई न देइ।
लागू होवे दुश्मनां साक भी भजि खलै।।
सभो भजै आसार चुकै सभु असराऊ।
चिति आवै ओसु पार ब्रह्म लगै न तती वाऊ।।

महाराज का हुक्म पाकर सुन्दर निर्भय होकर बख्शी को गाँव में रखने लगा। कभी भी कोई बाल बाँका न कर सका। सैंतालीस की वारिशों में बख्शी अपनी हवेली के अन्दर सोया हुआ था, आधी रात को कोठे की छत गिर पड़ी, बख्शी मिट्टी की लकड़ों के नीचे आ गया। कोई किसी तरफ आवाज न सुनें। जोर की बारिश हो रही थी, आँधी चल रही थी, चारपाई सारी चूर–चूर हो गई। सिरहाने बाल्टी पड़ी भी टूट गई पर बख्शी के ऊपर लकड़ियाँ व सामान फूलों की भान्ति गिरा। कोई चोट नहीं लगी पर किसी तरफ निकल नहीं सके। उसी समय राजा को याद किया, चीखें निकल गईं, ''आप तो कहते थे मेरे होते कोई मार नहीं सकता, मैं तो अनआई मौत जा रहा हूँ।'' इतने में बल–बल की आवाज कानों में पड़ी, आँखों के आगे दर्शनों की झलक पड़ी। यकीन हो गया कि सतगुरू जी आ गए हैं। इतने में दूसरे कमरे में पड़ा नौकर जाग गया, उठ के देखे तो सारा ही मकान गिरा पड़ा है, शोर मचाया, लोग इकट्ठे हो गए। सारा मलबा उठाकर नीचे से बख्शी को निकाला। शरीर पर कोई खरोंच तक नहीं आई थी। इस तरह हाथ देकर बचा लिया। यह करिश्मा महाराज जी के जोति जोत समाने से आठ साल बाद का है। सचखण्ड से आकर सिक्ख सेवकों की रक्षा करते रहते हैं।

याद करे जैसे एक पल में तेंदुए की तारों को काट कर अरापत हाथी को बचा लिया था यहाँ अपने सिक्खों सेवकों को आगे बचा लेते थे। बालो भाई राजा साहिब की जय।

बोलो भाई जी वाहेगुरू।

साखी इन्द्र कुब्बे को पुत्र बखशणे की हुई

इन्द्र गाँव मजारा का रहने वाला था। वह जात का जाट था। उसने पाँच शादियाँ करवाईं। जब भी शादी करवाता, शादी करवाते ही घर वाली मर जाती। पहले दो शादियाँ एक ही गाँव गोविन्दपुर में हुईं, तीसरी ढंडवाड़ी, चौथी सरनपुर गढ़ी, वह भी मर गई। उसके बाद कोई मुल्ल वट्टे भी रिश्ता न करे, क्योंकि जो भी ब्याही जाती, मर जाती। उम्र 60 साल की हो गई। बहुत कोशिश की, पर काम कोई नहीं बना। आखिर राजा साहिब के चरणों में आ गिरा। रात को हाथ जोड़कर दरवाजे पर खड़े रहना। एक दिन महाराज जी कहने लगे, ''इन्द्र! क्यों लोगों की लड़कियाँ मारने लगा है? अब आराम कर।'' इन्द्र कहता, ''यदि आपके होते हुए भी मैं दुनियां से औतरा ही गया तो आपके नाम को लाज लगेगी, मेरा गरीब का क्या जाता है?'' महाराज जी ने हुक्म किया, ''जा, राहों के टिल्लों में शादी करवा लेना।'' दरगाही हुक्म हो गया, धीरे–धीरे बात बनती–बनती बन गई। एक रिश्ता राहों में हो गया। ज्योतिषियों ने बताया कि शादी करके पहला डोला किसी दूसरे के घर लाना, फिर अपने घर आना। यह विधि ज्योतिषियों को पूछकर शादी कर लाया, फिर मन में सोचा पहले किसी के घर डोला ले जाएं, मन में आई पहले महाराज जी के दर्शनों के बहाने और किसी के घर जाया जाएगा। महाराज मिस्त्री

करतार सिंह के घर बैठे थे। इन्द्र नव विवाहिता को साथ लेकर मिस्त्री के घर की ओर चल दिए। महाराज उसके जाने से पहले ही उठकर घर से बाहर गली में निकल गए। खूंडा आप के पास था, आते हुए इन्द्र के पीछे मारने लगे। कहते, ''औरों के घर स्त्रियां फालतू हैं मरने के लिए? दौड़ चल पीछे।' यह बात इन्द्र को ही पता थी और किसी को खबर नहीं थी। इन्द्र मुड़कर राजू लंबरदार की पौड़ी चढ़कर उसके अपनी स्त्री को ले जाकर फिर अपने घर चला गया। कुछ दिनों बाद बाहर विदेश में राजू की घर वाली मर गई। पहले घर में पैर पाने से इन्द्र की पाँचवी पत्नी बच गई, फिर घर में सन्तान न हुई, फिर ज्योतिषयों को पूछा, उन्होंने विधि बताई, एक कपल गाय दान की जाए, त्रिवेणी के साथ फेरे लिए जाएं, गिट्टों को संगल पाकर उल्टा होकर खूह में लटके, हम मन्त्र पढ़–पढ़ कर आहुतियाँ डालेंगे तो घर में औलाद होगी। ज्योतिषियों के कहे अनुसार सारी हवन सामग्री इक्ट्ठी की गई, जब इन्द्र को उल्टा करके खूह में लटकाने लगे, इन्द्र घबरा गया, चिल्लाने लगा दोहाइयाँ पाने लगा। कहता, ''मुझे छोड़ दो, मैंने कुछ नहीं करना है, यदि मेरी जान न बची तो मैं पुत्र का मुँह कब देखूँगा।'' खूह में उल्टा लटका हुआ मैं मर जाऊँगा, बचूँगा नहीं।'' वहीं से उठकर महाराज जी के चरण पकड़ने निकल पड़ा। उस दिन महाराज वरियाम सिंह के खूह पर बैठे थे। छोटी सी कुटिया को कुंडी लगा कर बैठे थे। सूरज अलोप हो चुका था, रात अन्धेरी हो चुकी थी, चारों तरफ अन्धेरा ही अन्धेरा छा चुका था। इन्द्र ने रात के आठ नौ बजे अलख जगाई। बाहर से दरावजे की देहली को सलाम करके दस्तक दी। अन्दर से महाराज जी बोले, ''इन्द्र! इस समय कहाँ भटक रहा है।'' इन्द्र ने दुःखी ह्दय से अर्ज की, ''सच्चे पातशाह जी। मेरा बदकिस्मत का क्या यही हाल

होगा? आपके होते क्या मैं दुनिया से औतरा जाऊँगा। या तो आज मुझे पुत्र बख्शो या मैं आज जीवित मुड़कर घर वापिस नहीं जाऊँगा। औरों के कितने ही उजड़े घर आपने आबाद कर दिए। मुझ पापी का भी बेड़ा पार लगा दो।'' इन्द्र के बहुत विनती करने पर आपने हुक्म किया। एक जल की गागर भर लाओ। इन्द्र गाँव से एकदम पानी की गागर भर लाया। दरबार पर जाकर आवाज़ लगाई। आगे महाराज चुपचाप दूसरी तरफ मुँह करके लेट गए। इन्द्र ने दोबारा आवाज नहीं दी। गागर लेकर सारी रात खड़ा रहा, इन्द्र का शरीर सुन्न हो गया, सर्दी से खून जम गया। जब दिन का चढ़ाव हुआ, पूर्व की तरफ आकाश में लाली कड़ी रात अपनी सफ लपेट कर आगे को चलने लगी। रात ढलने लगी, जानवरों ने चीं–चीं के शब्द गाने शुरू कर दी। महाराज जी ने पासा बदल कर कहा, ''ओहो! इन्द्र खड़ा ही है।'' महाराज जी ने खुदा–खुदा की आवाज की, इन्द्र को हुक्म हुआ, लाओ पानी की गागर स्नान कर लें। खूह से कुछ दूरी पर बेरी का बूटा था, स्नान करके इन्द्र को हुकम दिया, ''चल इन्द्र! बेरी के नीचे चल।'' इन्द्र जब बेरी के नीचे गया तो क्या देखता है कि दो खड़प्पे साँप लड़ रहे हैं, बहुत भारी हैं। इन्द्र चिल्लाता हुआ पीछे को भागने लगा। महाराज जी कहते, ''इन्द्र! डरो मत, ये दोनों साँप जफ्फी में पकड़ कर उठा लो, कुछ नहीं कहते।'' ''सच्चे पातशाह! मुझसे नहीं उठाए जाते, मुझ दुःखी पर मेहर करो। दो फुट ऊँचे खड़े साँप लड़ रहे हैं, मैं नहीं उठा सकता।'' महाराज कहते, ''जा, अब देख क्या है?'' जब दूसरी बार देखने लगा तो वहाँ कुछ भी नजर नहीं आया। महाराज जी कहने लगे, ''इन्द्र! पिछली कोठड़ी घर में दिया जलाया करो व अदब भी रखा करो, उस जगह का एक लड़का तेरे घर होगा।'' पातशाह की कृपा से घर में लड़के का जन्म हुआ। कुछ दिनों का होने

के बाद महाराज जी के माथा टिकाने लेकर गए। पहले महाराज जी ने गोविन्द नाम रखा था बाद में घर वालों ने तरस–तरस कर होने के कारण तरसेम नाम रख दिया। इन्दर के घर पिछली कोठड़ी में एक वर्मी है। उसमें कोई इच्छाधारी नाग रहते थे, इनके प्रकोप के कारण घर आबाद नहीं होता था। इन्द्र को नाग लड़ने का जलवा यही दिखाया था कि ये गुप्त रूहें पशु, पक्षी, नाग आदिक सभी जीव आप जी के हुक्म में चलते हैं।

बोलो भाई जी वाहेगुरू।

आगे साखी गुणाचौर के मामदीन राजपूत की चली

सौंधे खाँ के तीन पुत्र मामदीन, बाबू खाँ, गामे खाँ थे। इनके तीन औरतें थीं। पुत्र किसी के पेट से ना हुआ। तीन सौ घुमाँव के मालिक थे। पुत्र किसी के भी नहीं हुआ। उम्र 60 साल हो गई थी। तीन सौ घुमाव के मालिक घर औलाद के बिना सखणा काट खाता था। बड़ी–बड़ी हवेलियाँ डरावनी लगती थीं। पुत्र की कमी के कारण मामदीन का दिल मुरझाया रहता था। दुनिया भर के पदार्थ अच्छे नहीं लगते थे। काफी कुछ करके भी कहीं से खैर न मिली। काजी, सैयदों ने बहुत टूणे, हवन किए, सभी तरफ से निराश होकर पीरों के पीर, अनाथों के नाथ, निआसरियां के आश्रय, बेघरों को घर बख्शण हारे, मेहरों के साईं, हिन्दू मुस्लिम खत्री ब्राह्माण ऊँच–नीच सभी के निवाजक, सबके तारणहार, जिसके नयनों की झलक से लाखों ही तर जाते हैं, उस नाभ कंवल राजा साहिब जी की ओट लेकर दृढ़ निश्चय से चरण पकड़ लिए। राजपूतनियाँ भी अल्ला बली समझकर महाराज जी के हर रोज दर्शन किया करती। घर से

निकलते वक्त सात–सात सलामें करके निकलना। शिकार खेलना छोड़ दिया। साधुओं वाली वृत्ति धारण कर ली। रब्ब की सेवा की हुई व्यर्थ नहीं जाती।

कबीर कमाई आपणी निष्फल कदे न जाई।
सत समुन्दर टप के फिर मिलेगी आई।।

महापुरुषों की सेवा का कोई मूल्य नहीं आँक सकता। साधु की सेवा करने से चार पदार्थ जो मिल जाते हैं। 'चार पदार्थ जे कोई माँगे साध जना की सेवा लागै।' एक दिन महाराज जहाँ अभी तालाब है वहाँ जा बैठे। मामदीन को पता लगा तो छोटी औरत को साथ लेकर महाराज जी के चरणों में आ कर माथा टेका। इस मँगता जोड़ी के अन्दरूनी भाव को महाराज जी ने पूरा किया। ''मामू! यह खेत छोड़ दो, यहाँ जानवरों के पानी पीने के लिए मठ के नाम पर एक टोबा बनवा दें।'' मामदीन हाथ जोड़ कर कहने लगा, ''मेरा मुझ महि किछु नहीं जो किछु है सो तेरा। तेरा तुझ कऊ सौंपते किया लागै मेरा।।'' वह सारा खेत मामदीन ने सतगुरू के आदेशानुसार छोड़ दिया। एक पुत्र का वर दिया। इतने में बँगा से एक लाला फलों की एक टोकरी लेकर आया। एक सेब उस में से उठाकर मामदीन की पत्नी के हाथों में रखा व खाने का हुक्म किया। वह शुकराना करते हुए खा गई, ''जाओ तुम्हारी मुराद खुदा पूरी करेगा।'' एक साल के अन्दर घर पुत्र पैदा हो गया। उस बच्चे का नाम खालक खाँ रखा गया। खालक खां भी महाराज जी के घर का बहुत प्रेमी हुआ। जब 1947 में अदला–बदली हुई तो सारा परिवार राजा साहिब के गुरुद्वारे में समाधि के बैठ गए। अपने घरों का सामान व गेहूँ की बोरियाँ भी लंगर में छोड़ दीं। एक इसी खानदान से हादी खाँ लडका था, जिसे महाराज नैब करके बुलाया करते थे। एक दिन नैब खाँ के साथ एक

और लड़का दर्शनों के लिए गया। राह में बातें करने लगा, यदि हमारे घर राजा साहिब बैठे तो हम बाहरी लोगों को घर में न घुसने दें। जब महाराज के सम्मुख गए तो नमस्कार किया। महाराज जी गालियाँ देने लगे। कहने लगे, ''भाग जाओ। आपके घर सत्तर है तो हमारे घर में भी सत्तर है।'' उसे दबकाया कि किसी भी गुणाचौर के बन्दे को अन्दर नहीं आने देना, धक्के मारके बाहर निकाल दो। हादीं खान बहुत सहमा हुआ कान पकड़ कर विनती करने लगा, ''सच्चे पातशाह! मैं फिर कभी ऐसी बात नहीं सोचूँगा।'' महाराज जी के हजूर काफियाँ गाता था। ऐसी दिल की बात बताई तो और ज्यादा प्रेम पक्का हो गया। घर का काम भी छोड़ दिया, हर रोज दर्शन किया करता था। एक दिन महाराज जी ने अपने वस्त्र दिए व हुक्म किया, ''हादी खाँ तुम्हारे लिए हमने पाकिस्तान बना दिया है, अब आप पाकिस्तान चले जाओ घबराना नहीं, हमें सदा अंग संग समझना। तेरी जायदाद भी पाकिस्तान में बना दी है।' बाकी इसी रौले–रप्पे में परिवार के जीव मर मुक्क गए। हादी खाँ सारी जायदाद का मालिक बन गया। यह हुक्म पाकिस्तान बनने से दस साल पहले हुआ था। यह साखी बिशन सिंह गुणाचोर के चौकीदार ने सुनाई थी।

बोलो भाई जी वाहेगुरू।

साखी महँगे के साथ हुई

एक दिन की बात है, महाराज जी चार बजे उठकर गाँव से पूर्व की ओर चल पड़े। गाँव मजारे का महँगा दाती, दौड़ी लेकर घास काटने जा रहा था, ''महँगे! चल मीयाँ साहिब के जाकर आएं।'' महँगे को साथ लेकर मीयाँ साहिब की कब्र पर चले गए. यही मीयाँ साहिब कोई मुसलमान फकीर अच्छी पहुँच वाला हुआ है। गाँव करनाणे की जूह में इनकी

खानगाह बनी हुई है, जब मीयाँ साहिब की समाधि के पास गए। महाराज, महँगे को कहा, ''महँगा! मीयाँ अभी आया नहीं पर मीयें की कब्र को सलाम कर दे, मीयाँ अच्छा इमानदार आदमी था।'' महँगा कहता, ''कहते हैं कि मेरे सिवा किसी को मानना नहीं, जितने भी अवतारी हुए हैं मैं ही आया हूँ।'' महाराज बैठ गए और कहने लगे, ''काका! जो जीव किसी के साथ हमदर्दी के साथ एक कदम भी चला हो उसका मान करना चाहिए, चाहे छोटा ही हो।'' महँगा! मैं बेई तक सारी लकीर उठा देनी हैं। महंगा! मैं सतलुज को गुस्से होने पर बड़े–बड़े लोगों से मीटिंग की। सभी अवतार हस्तियों ने इकट्ठा होकर दरिया को कहा, यह काम न कर, सब के कहने पर भी दरिया नहीं माना। मैंने कहा, ''मैं एक भी रोड़ी मिट्टी नहीं उखाड़ने दूँगा। दुआबा तो हमने ही आबाद किया था। मैं इसका एकथोड़ा थल भी उखाड़ने नहीं दूंगा। सतलुज सबसे आकी होकर चल पड़ा उस समय सबसे आगे होकर मीयाँ साहिब हमारे साथ बाँध लगाने चला था। इसीलिए मैं मीयाँ जी की इज्जत करता हूँ। हमारा लगाया बाँध सतलुज दरिया तोड़ न सका। जब सर्वे किया था, उस समय भी मीयाँ साथ में ही थे।'' यह वचन महाराज जी ने बहुत साल पहले ही किए थे। दोआबा में नहरें बड़ी देर बाद आयीं।

बोलो भाई वाहेगुरू जी।

साखी मौला बख्श स्वामी जी

यह मौला बख्श रौल जाति का जिला कैमलपुर का था। यह सी. आई. डी. इंस्पैक्टर था। यह ज़िला जालन्धर में तैनात था। महाराज नाभ कँवल जी का जलवा देखकर यह साधु बनके इनका माहौल देखने गाँव मजारे आया। महाराज गाँव के पूर्व की तरफ

दरवाजे के सामने बैठे थे। इस मौला बख्श ने पूरा साधुओं वाला रूप धारण किया हुआ था, गले में तसवी हाथ में चिप्पी, ताजी–ताजी हजामत सिर मुँह मुंडवाकर पूरा परमहँस बना हुआ था। जब महाराज जी के सामने आया, आकर सलाम किया बोले ''मौला! कैमलपुर भी राजा के नाम पर बसा। अटक दरिया भी राजा के हुक्म में बहता है। मौला ! कुछ नजारा देखना?'' इतने ही वचन कहने से मौला की सूरत गुम हो गई। बसन्त ऋतु के आकाश की तरह ह्दय निर्मल हो गया। ऋद्धियां–सिद्धियां प्रकट हो गई। मौले को कोई पता नहीं लगा, सी. आई. डी. के कामों का नयनों के वार से सैयद खाँ की तरह मुरीद हो गया।

कबीर सतगुरू सूरमे बाहिआ बानु जु एक।
लागत ही भुई गिर परिआ परा करेजे छेक।।

आया तो दुनियाँ के बाली को परखने था, पर आप ही परखा गया। यह मौला बख्श माधो दासी वैरागी की तरह पहले भी अच्छा जादूगर था। काफी हेर–फेर करना जानता था, जादूगर माना जाता था लेकिन पीरों के पीर के सम्मुख होने से सारी सिफ्तें गुम हो गईं। बंदा बहादुर की तरह बँदा बन गया। अब कीले हुए साँप की तरह मजारे की जूह से बाहर नहीं जा सकता था। अफसरीयां सभी बह गईं। अब कोई पता नहीं कि कहाँ हमारा देश रह गया? कहाँ अटक दरिया बहता है? एक दिन मौले को हुक्म किया। एक काले रंग की दो ढाई फुट सोटी देकर कहा, ''लो मौला! इससे जो मर्जी कराते रहना।'' सोटी देकर भेज दिया, मौलो की अन्तरआत्मा की चारों तरफ धाक पड़ गई। वाक सिद्धि चल पड़ी। जो कुछ भी जबान से निकल जाए, सब सच्च हो जाता था। जहाँ भी जाना लोग पीछे–पीछे भागते फिरते। तालाब पर चौबारा बनाकर बैठ

गया। लोगों ने कई घोड़ियाँ चढ़ने के लिए दीं। जिधर भी जाए, माया इकट्ठी कर लाए। किसी को दूध, पुत्र व किसी को माया की बख्शिश होने लगी। अपने हाथों से बड़े–बड़े रोगियों को एक चुटकी राख की देकर ठीक कर दिया करते। जो भी वचन किसी दे, सच हो जाए। एक दिन गाँव मजारे में मुनियादी करवाई कि आज कोई काम न करे। संक्रान्ति का दिन था, जो काम करेगा उसे साँप काट जाएगा। मजारे का एक लड़का काम पर जाने लगा, सचमुच उसे साँप ने डस लिया। उसी समय उसे स्वामी जी के पास ले आए, स्वामी उस समय रसोईखाने बैठा था। स्वामी ने एक शीशे के गिलास में संतरे का रस निचोड़ कर अपने हाथों उस लड़के को पिला दिया। उसी समय जहर अमृत का रूप धारण कर गई। लड़के का बाल भी बाँका न हुआ। यह साखी मेरी देखी हुई है। दास भी सन्तों के दर्शन करने गया हुआ था। मिट्टी के ढेले को सोना बना देता था। एक बार राजा साहिब जी ने ठाकुर सिंह रहिप्पा को हुक्म किया, "ठाकुर! रहिप्पे में हाला बहुत ज्यादा हो गया है, कइयों के पास तो दो–दो हजार हो गया है, लोगों का कहना–हमारा हाला दे जाते या प्रति घर 20 सेर दाने इकट्ठे करके वहँगियों में डालकर रसोई खाने में छोड़ जाएं। यह बात गाँव जाकर बता देनी। चौकीदार का काम होका देना है। यदि नहीं देंगे तो आश्विन शुरू होते ही हाला ले लेंगे। सबसे पहले बछुओं से लेंगे, यह घर की बात है।" खैर भाईया जी ने आकर बताया कि यह हुक्मनामा महाराज जी का है, लोगों ने पूरा ध्यान नहीं दिया। आश्विन शुरू होते ही पहले बछुओं के कई पशु मरे, पशु थोड़े ही समय में मर गए। गाँव में आँधी आ गई, सभी लोग ठाकुर सिंह के पास इकट्ठे होकर आए, नाभ कंवल राजा साहिब जी पास जाकर विनती करो, हमारा बहुत नुक्सान हो रहा है। ठाकुर सिंह लोगों के कहने पर गाँव मजारे गया। स्वामी के पास अर्ज की, स्वामी

जी दो मुट्ठियाँ धूड़े की लंगर में से ठाकुर के पल्ले बाँध दी और कहा कि जाकर 20 सेर आटे में लिकार प्रतिघर दो--दो चम्मच देने लोगों को कहना कि इसमें और आटा मिलाकर पेड़ा बनाकर पशुओं को दे देना। ऐसा करने पर पशु उसी दिन मरने से हटकर राजी हो गए। इस बात का बहुत असर हुआ, एक बैल नत्था सिंह का बीमार हो गया। नत्था सिंह ठाकुर सिंह को कहने लगा, ''हमारा बैल ठीक नहीं हुआ, आप स्वामी जी के पास एक बार फिर जाओ। ठाकुर सिंह फिर मजारे गया, मौले का पता किया, स्वामी गुणाचौर गया हुआ था। ठाकुर सिंह सोचने लगा कि पहले राजा साहिब के दर्शन करके जाता हूँ, स्वामी जी को बाद में मिल लूँगा। जब महाराज जी के सामने गया, ''ठाकुर! चल गाँव भाग जा। अभी बल्लोवाल की तरफ के खूह वालों का हाला रहता है, स्वामी जी के पास जाकर क्या लेना है? पहलवान के तो हाथ ही दो होते हैं।'' ठाकुर सिंह के मन की शंका दूर कर दी कि स्वामी के अन्दर जो ताकत काम कर रही है वह हमारी ही शक्ति है। फिर ठाकुर सिंह स्वामी को नहीं मिला। आते को नत्था सिंह का बैल मर चुका था। एक दिन स्वामी गाँव रायपुर डब्बा गए, थोड़े समय में ही 500/- रुपए इकट्ठा कर लाए। वापिस आया घोड़ी पर सवार था, रसोखाने आकर कहने लगा, ''देखो हमारी करामात, जाते-जाते 500/- रुपए ले आया हूँ।'' मुंदर सिंह कहता, ''मौला बख्श! तेरे अन्दर क्या शक्ति है? यह राजा की छिटी दी हुई काम कर जाती है।'' मौले ने छिटी फैंक दी कहता, ''जो कुछ कर रहा हूँ, मैं खुद कर रहा हूँ।' स्वामी को मान हो गया। मान सब कुछ नष्ट कर देता है। जैसे

हर जीओ अहंकार न भावई वेद कूकि सुणावई।

जब अहंकार हो जाता है तो बड़े-बड़े ऋषि-मुनि पीर-पैगम्बर सब खत्म हो गए। जब मौला बख्श क कुछ रौशनी हुई, दुनियाँ को

शक्तियाँ दिखाने लगा तो इसे स्वामी कह कर बुलाने लग गए थे। एक दिन चार सेठ दिल्ली की तरफ से ले आया, महाराज जी के पेश हुए, अर्ज की, ''सच्चे पातशाह ! ये सेठ मैं दिल्ली से ले आया ये सरोवर को एक बार पक्का करने की अनुमति माँगते हैं।' आगे से हुजूर का हुक्म आया, ''मौला बख्श! यह तो मैंने जानवरों के पानी पीने के लिए मणे के नाम पर टोबा खुदवाया था। सरोवर तो आकर हमारा गागर मल्ल बनेगा। यह गागर मल्ल मारवाड़ देश का होगा, अभी समय नहीं है। पहले हमने सर्वे करना है।'' उस समय सन्त जी महाराज जी के दर्शनों को आए थे। यह स्वामी जी से महाराज जी ने जो वचन किए उस समय सन्त अवधूत जी भी पास खड़े थे। उसके बाद स्वामी कुछ ज्यादा ही अहंकार में हो गया, कइयों के गहने भी उतरवाकर खा पी जाता था। साथ में अमलियों की पार्टी रखने लग पड़ा। एक दिन सतगुरू के दर्शनों को गया। नाभ कंवल राजा साहिब अपने घर पलंग पर बैठे थे। स्वामी ने जब सलाम किया, वह काले रंग सोटी जो बख्शिश की थी, जिसमे अठारह प्रकार की ऋद्धियां–सिद्धियाँ बन्द करके दी हुई थीं, वह सोटी आप जी ने अपने हाथों में लेकर दोबारा एक बार स्वामी जी को दी और कहा, ''ले मौला अब इसमें रोटी का गुजारा है'' बस अन्तर में जो ज्ञान का चिराग जल रहा था, सब बुझ गया। जब अज्ञानता की अन्धेरी चलती है, ज्ञान रूपी चिराग बुझ जाता है। यह अहंकार इन्सान को अर्श से फर्श पर गिरा देता है। लाखों ही लोग अहंकार मारे ठेडे खाते हुए देखे हैं। रावण जैसे वेदों के बक्ता अहंकार की नदी में बहते देखे हैं। दुर्योधन जैसे शस्त्रधारी भीम से ठेडे खाते देखे हैं। बारो योजना छत्त झूले देह गिरज न खाई। कंस जैस महाबली एक क्षण में खाक कर दिए। हरणाखश जैसे दैंत माण ने घर से बेघर किए।

मौला यह नहीं समझ सका कि यह जो ताकत काम कर रही है इसका मालिक कोई और है, जिसकी ताकत,

- *छिनु मोह राऊ रंक कऊ करई राऊ रंक करि डारै।*
- *खिन महि नीच कीट कऊ राज।। पारब्रह्म गरीब निवाज।।*

नज़राने से ही गूँगों को ज्ञान बख्शिश करके पंडित बना दे।

- *नारी ते जो पुरुष करावै पुरुषन ते जो नारि।।*
- *हरन भरन जाका नेत्र फोर।। ता का मन्त्र न जाने होर।।*

जो एक क्षण में खण्ड ब्रह्मंड साज सकता है और ले भी सकता है, वह महाबली अवतार हस्ती, बह्म ज्ञानी, आप परमेश्वर, इतनी सिद्धियों का स्वामी एक जीव को कला लेन–देन में क्या देर कर सकता है? स्वामी जी की किस्मत का सूरज छिप गया। शरीर का भाग जाता रहा। स्वामी जी के सुखों के स्वर्गीय हुलारे, सब बरौले बनकर आसमान में जा छिपे। मौले की ऐसी अवस्था हो गई जैसे गुलाब के फूलों का अर्क निकाल कर पीछे से फोकट की हालत हो जाती है। निचोड़े हुए नींबू की तरह हो गया। वह मौला जिसे लोग लाख–लाख सिजदा करते थे, वही मौला जिसकी धूमें सारे मुल्क में रहीं थीं। यह वही इन्सपैकटर है, जिसे अंग्रेज सरकार ने एक काबिल आफिसर समझ कर एक सी. आई. डी. रैजीमैण्ट की बख्शिश की हुई थी। अब राजा राम माया फेरी, न आफिसर रहा, न साधु रहा, आज मौला रोटी से भी आवाजार फिरने लगा। महाराज जी के लंगर में संगतों के जोड़ों में बैठा हाथ में मिट्टी का प्याला मँगतों की दशा में देखा, लगभग दो दिन तक ऐसे ही फिरता रहा। फिर पता नहीं किधर चला गया।

बोलो भाई जी वाहेगुरू।

आगे साखी रसूलपुर की संगत का कोहड़ दूर करने की चली

एक दिन करन कारन, भक्त वछल, अनाथों के नाथ, परिपूर्ण, सर्व कला समर्थ, बड़े–बड़े रोगियों का रोग दूर करने हेतु, पापी जीवों का उद्धार करते, पशु–पक्षियों का उद्धार करते, पत्थरों को तारते हुए मजारे से उठकर टहलते–टहलते दिन के दस कु बजे, खेतों खेत सीधे गाँव रसूलपुर की जूह में जा पहुँचे। आगे पशु चराते बाल–बच्चे महाराज जी *की शरण में आने लगे। कईयों* के पाक भी चलती थी। रसूलपुर पर खारिश की बिमारी जिसका पाव भी कहते हैं। गाँव में कोहड़ की शिकायत अधिक थी। अठारह किस्म का कोहड़ शास्त्रों में लिखा है। जिसमें खारिश भी शामिल है, इसको भी कोहड़ ही कहा जाता है। खारिश से दुःखी जीव कुरला रहे थे। बख्शीश सिंह ने हाथ जोड़ कर बहुत ही हलीमी से विनती की, ''हे सच्चे पातशाह! हमारे गाँव में लोग खारिश से बहुत तंग परेशान हैं, शरीर दोजख की आग में जल रहे हैं। रात दिन जीव कुरलाते हैं। सच्चे पातशाह! जैसे राजा जनक ने कुँभी नरक के जलते के हाल पर *तरस किया था, वैसे ही हम पापी जीवों के हाल* पर मेहर करके, बिगड़े हुए खून को साफ करके, हमें तंदरुस्ती बख्शो जी। जैसे रजनी के पिंगले पति का उद्धार किया था वैसे ही किसी छप्पड़ टोबे को भाग लगाकर हमारा कल्याण करो।'' महाराज जी मेहरों के दाते एकदम मेहर के घर आ गए, हुक्म किया, ''चलो भागो चलो। गाँव काहमे की ढाब में स्नान करो, जो भी स्नान करेगा, आराम आता जाएगा।'' बस हुक्म की देर थी, गाँव में जैसे–जैसे लोगों महाराज जी के हुक्म का पता लगा तो लोग सब काम–काज छोड़कर नाभ कंवल राजा साहिब जी के *दर्शनों को* आने लगे। महाराज सभी को गाँव काहमा की ढाब की तरफ भेजते जा रहे थे। स्नान करके सब लोगों का शरीर कँचन जैसा हो गया था। सभी

लोग 'धन धन महाराज जी' खुशी से उच्चारते हुए नाचते उछलते अपने घरों को जा रहे थे। महाराज जी सस्ता सा सौदा देकर सभी को रोगों से मुक्त कर गए।

बोलो भाई जी वाहेगुरु।

साखी अमर चन्द बठल्ला वाले साथ हुई

मूसापुर, रसूलपुर होते हुए महाराज नाभ कंवल गाँव नागरा में एक जिमींदार जट के कोठे पर जा बैठे। सभी गाँव वासी दर्शनों को आने लगे। कोई दूध, कोई दही, कोई मक्खन के पेड़े आदि सोहणे प्रियतम को भेंट कर रहें थे। आगे बैठे हुए सोहने माही के नयन नूर से भरे हुए, ज़िस किसी को रहमत भरी नज़र से निहार लेते थे, बस मुक्ति व भक्ति की झोलियाँ भर जाते थे। चौर्गिदे में बुलबुले फूलों जैसे सोहने प्रीतम की चाँद से शीतल मुख की अमृत किरणों की शीतलता ले रही थीं। सूर्य भगवान भी तेजी पकड़ रहा था। नाम के रसिए बैठे खुशी के गीत गा रहे थे। गर्मी की बूँदें मस्तक पर मोतियों की तरह चमक रहीं थीं। इतने में दो बन्दे (एक नवयुवक गाँव जब्बोवाल का रहने वाला था, दूसरा लगभग 40 साल का अमर चन्द बठल्ला का जो चन्नण का फूफा लगता था) दोनों गाँव नागरा से रेहड़े पर लकड़ियाँ लेने आए थे। जब चन्नण व अमर चन्द को महाराज जी का पता लगा कि गाँव नागरा में कोठे पर पातशाह बैठे हैं। रेहड़ा छोड़कर पशु बाँधकर दोनों महाराज जी के दर्शनों को आ पहुँचे। बड़े प्यार सत्कार से गले में पल्ला डालकर चरणों में गिर गए। प्रणाम करके पीछे होकर बैठ गए। हुजूर का हुक्म हुआ, एक सेवादार को इशारा किया, झट से चारपाई मँगाई। अमर चन्द को चारपाई पर बैठने का हुकम किया। अमर चन्द कहता, "जी सच्चे

पातशाह, मैं आपके बराबर चारपाई पर कैसे बैठ सकता हूँ, मैं इसके योग्य नहीं हूँ।'' सरकार का पुनः हुक्म हुआ, ''आज तुझे चारपाई के योग्य बना दिया है, आज से नाम भी ब्रह्मा दास ही रख दिया है।'' जब महाराज जी ने दूसरी बार हुक्म किया तो अमर चन्द उठकर चारपाई पर बैठ गया। साथ में चन्नण भी उठकर बैठने लगा तो महाराज जी चन्नण को कहा, ''पीछे हटकर बैठ जा, साधुओं के बराबर नहीं बैठते।'' चन्नण पीछे हटकर बैठ गया। कुछ समय अमर चन्द को बिठा छोड़ा, महाराज जी आप और भी कई लोगों से बात कर रहे थे। जैसे कोई जज बैठा हुक्म लगाए उसी तरह मिसल लिखकर अमर चन्द को तोर दिया। अमर चन्द लकड़ी रेहड़े में भरकर गाँव बठ्ल्ली चले गए। कुछ दिन हुए गाँव शाम चौरासी जिला होशियारपुर में अमर चन्द का चाचा एक काफी बड़े डेरे का मालिक था। सौ घुमाँव रकबा जमीन का था। वृद्ध होने के कारण अपने भतीजे को पास बुलाकर गद्दी का महन्त बना दिया। गद्दी पर बिठाकर उदासी साधुओं का डेरा होने के कारण नाम भी ब्रह्मदास रख दिया। उस दिन अमर चन्द को चारपाई पर बैठाने के फल का पता चला। अमर चन्द से ब्रह्म दास हो गया। काया और से और ही हो गई। अमर चन्द ब्रह्मा दास बनकर इस समय शाम चौरासी बैठा है।

खिन महीं नीच कीट कऊ राज। पारब्रह्म गरीब निवाज।

धन राजा जी तेरी लीला न्यारी। कहाँ तो अमर चन्द को कोई जानता तक नहीं था, आज दुनिया नमस्कार करती फिरती है। ''कीड़ा थापि देई पातशाही लश्कर करे सुआह'' एक सप्ताह से पहले–पहले गद्दी नशीन चन्नण का फूफा बन गया। चन्नण के दिल में इच्छा हुई कि मैं दोबारा कहीं दर्शनों को जाऊँ। एक दिन चन्नण छोकरां से गाँव को लकड़ियों के लिए जाता था। महाराज जी के दर्शन करने गाँव मजारे गया। आगे

पता लगा कि महाराज जी तो भरो मजारे के खेतों में बैठे हैं। चन्नण भरो मजारे की तरफ मुड़ गया। गाँव जाकर पता किया तो पता लगा कि महाराज जी मक्की व कमादियों में बैठे हुए हैं। जब पहले अमर चन्द को चारपाई सौंपी थी तो ज्येष्ठ–आषाढ़ के दिन थे। श्रावण, भादों के दिन थे, गर्मी भी कहर की पड़ती थी। दोपहर ढल चुकी थी। दो ढाई का समय था, धरती तवे की तरह तप रही थी, जीव ज़न्तु सभी तड़प रहे थे। फसलों को वट चढ़ रहा था। छाया में बैठे नाभ कंवल राजा साहिब जी एक कमाद के खेत में चौकड़ा लगाकर बैठे थे। चन्नण गाँव जब्बोवाल का पूछते–पूछते एक खूह पर जा पहुँचा व एक नवयुवक जाटों का लड़का खूह पर हल्ट चला रहा था। उससे महाराज जी का पूरा पता लगा। खूह से आगे कमादी के खेत में महाराज जीवों के उद्धार के लिए घोर तपस्या कर रहे थे। चन्नण के पास तीन मुर्गों की टाँगें बाँधी हुई थीं। चन्नण खूह पर मुर्गों को एक तूत से बाँध गया कि महाराज जी गुस्से होंगे, जब महाराज के दर्शनों के लिए आगे बढ़ा तो गालियाँ पड़ी व बोले, "साधूपन कहीं नजदीक पड़ा है, चल एकदम पीछे मुड़ जा, जो तूत पर टाँग आया है, उनसे क्या गुनाह हुआ है? जीवों पर रहम करते हैं।" आगे से जब महाराज जी ने ठोकर मारी तो चन्नण का शरीर थर–थर काँपने लगा। महाराज जी ने पहले चन्नण को पीछे रहकर नमस्कार करने का हुक्म दिया। चन्नण सोचता था कि मैंने चरणों पर हाथ रखकर नमस्कार करनी है। पीछे महाराज ने मुर्गे टाँगे हुए बताकर धीमा किया। चन्नण धीरे–धीरे घर की ओर रवाना हुआ। राजा जी फिर निरंकार से लवलीन हो गए। चन्नण पहले डाकू था, उस ठोकर ने वेद पाठी बना दिया। साधु की नजर पारस बना जाती है, जिस पर भी रहमत हो जाए।

बोलो भाई जी वाहेगुरू।

साखी भरो मजारे के जाट मल्लू के साथ हुई

महाराज जी दूसरे दिन कमादी के खेत से उठकर गाँव गोसल की तरफ टहलते हुए निकल पड़े। आगे गाँव से काफी दूर पश्चिम की तरफ मल्लू खेत में हल चला रहा ता, जो उसने हाले पर ले रखा था। तीन गुमां जमीन थी, दो साल से मल्लू ही बीज रहा था। महाराज जी हल चलाते मल्लू के पास पहुँचे तो मल्लू ने हल रोककर महाराज जी को नमस्कार की। आगे से महाराज जी बोले, ''मल्लू! तुझे ये खेत डाल दिए हैं।'' उस समय सारी जमीन वीरान पड़ी थी, कोई खूह नहीं था। मल्लू कहता, ''खूह के बिना फसल कैसे होगी।'' फिर हुक्म हुआ, ''खूह लगा लेना।'' बाद में उसी समय कह दिया, ''खूह दो लगा दो।'' महाराज जी हुक्म लाकर गोसल की तरफ चल दिए। कुछ देर बाद गाँव भरो मजारे इस्तेमाल शुरू हो गया। पहले मल्लू की जमीन गाँव के चारों दिशाओं में थी, फिर इस्तेमाल में सारी मुकंदपुर–बँगा सड़क के साथ–साथ इकट्ठी हो गई। जमीन तो इकट्ठी हो गई। खूह की कमी पूरी करने के लिए सड़क के पश्चिम पास खूह लगाने लगा। मल्लू के लड़कों की आपस में अनबन हो गई, एक से दो खूह लगाने की सलाह बन गई। बख्शी पहलवान ने सड़क से गाँव की तरफ खूह लगाया। नामू ने सड़क से पश्चिम की तरफ लगाया, जहाँ खड़े होकर महाराज बन्ने का हुक्म लगा गए थे, उसी जगह बन्ना पा गए थे। दो खूह लगाने का हुक्म कर गए थे, दो खूह चलते हैं। इसी तरह सहज ही रेख में मेख मार जाते हैं।

बोलो भाई जी वाहेगुरू।

आगे साखी मल्लू व बख्शी पहलान के साथ हुई

दूजी साखी मल्लू व बख्शी पहलवान के साथ इस तरह हुई कि एक दिन फिर महाराज जी दूसरे वर्ष महाराज जी एक दिन ज्येष्ठ–आषाढ़ के दिनों में भरो मजारे की ढक्की में टहल रहे थे। दोपहर का समय था। महाराज को शिशरया पलाहां में देखा कि अपने बापू मल्लू की महाराज के बारे में बताया कि वह ढक्की में है। जिमींदार कणक की गहराई कर रहे थे। मल्लू के बड़े लड़के ने जब महाराज जी के बारे में सुना तो उसने मल्लू को बताया। आप जाकर पूछ लें, अपनी भरियाँ किसने उठाई हैं? मल्लू लाहण खिलारते–खिलारते तंगली हाथ मे लेकर महाराज जी के पास पहुँच कर विनती की, ''महाराज! मेरी एक अर्ज सुनें'' आगे से महाराज जी का हुक्म हुआ, मल्लू पीछे हट जा, हमें किसी के साथ बात करने दो। दो गुप्त रूहों से बातें करते–करते ढकी में दो छोटे–छोटे छप्पड़ थे। एक को महाराज मडियाली आणा व दूसरे को फत्तूआणा कहते थे। आप कई बार यहाँ स्नान किया करते थे। और लोगों को भी यहाँ स्नान करने के लिए हुक्म करते थे। मल्लू को कहा, ''तू फत्तूआणे के टोबे में स्नान कर ले और भी किसी सुनते गिनते को बता दिया कर आप भी स्नान कर लिया कर।'' मल्लू को तो अपनी भरियों की चिन्ता थी। यदि भरियों का पता बता दे तो अच्छी बात है। बार–बार यही पूछता, बताओ भरियाँ किस ने उठाई हैं? अधिक पूछने पर महाराज जी बोले, ''मल्लू! क्यों हमारे पीछे पड़ा है? पूल्ले तो चार ही हैं. कोई लंगड़ा चूड़ा उठाकर ले गया था, किसी जाट ने उठवा दी हैं तो आप ही जेल जाएंगे। चल भाग जा, अपना काम कर।' मल्लू की अच्छी तरह खिंचाई की जब

चार पूल्लों का नाम लिया तो मल्लू की देह काँपने लगी। चार ही भरियाँ उठाई थीं। मल्लू नमस्कार करके पीछे मुड़ा तो बख्शी पहलवान ने आकर माथा टेका। महाराज जी ने बख्शी को कहा, ''घड़ी गुट में लगाई हुई बहुत सज रही है, उतार लेनी थी।'' पहलवान गुणाचौर से किसी सोए हुए की घड़ी उतार कर लाया था। पहलवान को कहा, ''किसी का हक खाना हराम होता है, चोरी कभी नहीं करते, चोरी यारी बुरे काम, निन्दा, झूठ विश्वासघात पाप के सहभागी हैं, इनसे बचकर रहते हैं। जो इनसे बच जाता है उसका मानस जन्म सफल हो जाता है। शील संजम प्रियह आज्ञा मानें तिसु नर को दुख न जमाने। सभी इन्द्रियाँ संयम में आ जाएं तो साधु बन जाता है, सब वैर, विरोध, वैराग्य जतसत दिमाग में आ जाता है तब साधु बन जाता है, पाक हो जाता है।'' जब पहलवान को यह उपदेश किया तो बख्शी ने घड़ी जेब में से निकाल कर महाराज जी के आगे रख दी, और कान पकड़े, ''प्रभु जी! मैं दोबारा चोरी नहीं करूँगा, अब क्षमा कीजिए, मैं भूलनहार हूँ जी।'' महाराज जी पहलवान को सच्चा उपदेश देकर और कणक गाहुंदे हुए जमींदारों को फत्तूआणे स्नान करने का हुक़म देकर आगे चलते रहे।

बोलो भाई राजा साहिब जी की जय।

आगे साखी नागरे के लोगों के साथ हुई

भरो मजारे की ढक्की में से उठकर महाराज जी गाँव नागरे पूर्व की तरफ जा खड़े हुए। चन्नण सिंह नामक बन्दे को बुलाया। चन्नण सिंह ने हुक्म सुनते ही हवा की तरह महाराज के चरणों में नमस्कार की। गले में पल्ला पा के विनती की, ''क्या हुक्म है दास को?'' हुक्म हुआ, ''चन्नणा! और बन्दे गाँव से बुला ला।'' चन्नण

सिंह ने उसी समय हरकारे का रूप बनकर सारे गाँव में जाकर ढिंडोरा फेरा जो महाराज जी के आने की खबर सुने बस भाग ले। लोग मन में दर्शनों की लालसा रखते थे। बली अवतारों के दर्शन भी सौभाग्य से ही होते हैं। दर्शनों के प्यासे लोग सोहने प्रियतम की तरफ ऐसे भागे जैसे अमृत के स्रोत पर 33 करोड़ देवता इकट्ठे हो गए हों। आगे नाभ कंवल राजा साहिब जी,

- *नीचो ऊँच करे मेरा गोविन्द काहू ते न डरै।*
- *नदिया विच टिब्बे दिखाले बली करे असगाह।।*

ऐसी रंग फेरियाँ करने वाले, दातों के मालिक गाँव भुखड़ी की तरफ एक बरोटे के नीचे खड़े हो गए। काफी लोग याचकों की तरह हाथ जोड़ कर चन्न जैसे सोहणे मुखड़े को निहार रहे थे, होठों की फड़कन देख रहे थे कि पता नहीं आज क्या बख्शिश करेंगे। नागरा की संगत महाराज जी की बहुत प्रेमी थी। जब स्याणे लोग पहुँच गए तो आपने हुक्म किया, ''चन्नण! समझ लो, आज नागरियाँ का बसीमा यहीं लगा दिया है।'' इसी जगह यहां पर बन्ना बना दो। एक व्यक्ति का हुक्म किया चल यहां पर सीधी लकीर खींच दे। लोग कहते महाराज जी भुखड़ी के लोग हमें यहां पर कैसे बन्ना पा लेने देंगे। भुखड़ी का वसीमा तो हमारी दीवारों के साथ लगता है। महाराज जी बोले भाई आपका वसीमा यहां पर लगा दिया है। इतना हुक्म करके महाराज जी चले गए. लोग हैरान थे कि यहाँ हमारे गाँव का बन्ना कैसे बनेगा। बस दरगाही हुक्म हो चुका था। धीरे–धीरे गाँव नागरा वाले बुखड़ी की जमीन खरीदने लग गए। बाहर चले गए। जहाँ महाराज जी बन्ने का हुक्म लगा गए थे, वहीं बन्ना चला गया। इस्तेमाल होने पर नागरा व भुखड़ी का वसीवां दोनों गाँवों के दरम्यान हो गया।

बोलो भाई जी वाहेगुरू।

साखी जागर सिंह नागरा की हुई

एक दिन महाराज नाभ कंवल राजा साहिब जी नागरा की ढक्की में बैठे थे, करतार के साथ लग्न लगी हुई थी। ठाकुर सिंह रहिप्पे से किसी पशु की तलाश में आपके दर्शनों के लिए आया। प्रणाम किया तो सतगुरू का हुक्म हुआ, ''ठाकुर! भाग जा। गाँव नागरा के नंबरदार को कहो, दो सौ रुपए हाले का तेरे पास है।'' महाराज ने पीछे से आवाज देकर कहा, ले के आना, यदि दो सौ न दे तो सौ ही ले आना. यदि सौ भी न हुए त आठ आने ही ले आना या दो आने ही ले आना। यदि किसी का काम करना ही हो तो जहाँ तक रियायत हो सके करनी चाहिए। यह वचन सच्चे पातशाह ने फरमाए। आपका आदेश सुनकर ठाकुर सिंह ने गाँव नागरा में जाकर जागर सिंह को कह सुनाए। नम्बरदार जी आगे से कहने लगे, ''क्या करने हैं दो सौ रुपए सरकार ने? ऐसे ही बच्चों को लुटा देने हैं।'' हुक्म का पालन नहीं किया. ठाकुर सिंह ने मुड़कर अ'पको सारा हाल कह सुनाया। ठाकुर सिंह को तीन बार मुड़–मुड़ कर भेजा तीसरी बार भी कुछ नहीं दिया, अच्छा जी कह कर मोड़ दिया। दोबारा ठाकुर सिंह ने सारा हाल कह सुनाया व विनती की मेरे पास से दो रुपए ले लो। आगे से सतगुरू बोले, ''ठाकुर! घर भाग जा। पहरेदार का काम पहरा देना है। घर वाला जागे या न जागे यह उसकी मर्जी है, करतार का हुक्म है जीवों का भला करना, जो भी हुक्म मानेगा उसका भला होगा।'' ठाकुर सिंह नमस्कार करके चला गया। रात को नम्बरदार व उसकी पत्नी की लड़ाई हो गई। लड़की कुएँ में छलाँ लगा कर मर गई। सारे गाँव में हाहाकार मच गई। नंबरदार और

पुलिस ने आकर लाश कुएँ में से निकाली, नम्बरदार को दो सौ रुपए जुर्माना लगा। गाँव में लोगों की मिन्नतें की फिर पछताने लगा। उस समय सतगुरु के हुक्म का ज्ञान हुआ। 200/– रुपए का काम आठ आने या दो आने में हो रहा था तो करवा न सका, सतगुरू की रहमत को समझ न सका। बिना किस्मत के भलाई के मार्ग पर पैसा नहीं लगता है। ज़ीव गफलत की नींद में सोया हुआ आँख नहीं झपकता। समय बीतने पर पछताता है। निरंकारकी रहमत को इंसान बिना भाग्य के समझता नहीं है।

बोलो जी वाहेगुरू।

साखी नागरा के लोगों के साथ हुई

ज्येष्ठ आषाढ़ के दिनों में एक दिन भक्त–वछल, दुख भँजनहारे, अनाथों के नाथ एक वृक्ष के नीचे बैठे रागियों से कीर्तन सुन रहे थे। लोग आप के नूरी मुखड़े के दर्शनों का रस ले रहे थे। इतने में सन्त अवधूत जी दर्शनों को आए। आगे से सतगुरू जी का हुक्म हुआ, ''साधु! चलो गाँव नागरा में मुणसा सिंह, चन्नण सिंह, जागर सिंह दो–दो हजार रुपए इनकी तरफ है, आकर हाला दे जाएं या साधु आप लेकर आना।'' सन्तों ने महाराज का हुक्म दोनों तरफ कह सुनाया। सभी ने हाँ हूँ कर दी। तीन बार सन्तों को मुड़–मुड़ भेजा लेकिन 2000 रुपए नहीं दिए। 200 रुपए की विनती की वह भी नहीं दिए। तीसरी बार भी संतों को कुछ न दिया। जब किस्मत का उल्टा चक्कर चलता है तो राजा जनमेजा, छत्रधारी दुर्योधन वेदों के ज्ञाता रावण जैसे धुरन्धर बाजी हार जाते हैं। युधिष्ठर जैस धर्म पुंज भी रोए। गुरुवाणी का कथन है–

''सहंसर दान दे इन्द्र रुवाइया। परस राम रोवै घरि आइआ।
अजै सु रोवै भीखिआ खाई। ऐसी दरगाह मिलै सजाइ।।
रोवै राम निकाला भइया। सीता लखमणु बिचुड़ि गइया।

यहां तक कि

रोवहि पाण्डव भए मजूर। जिन कै स्वामी रहता हदूरि।।

बाबा आदम जैसे समय को नहीं संभाल पाए। और जीवों की तो क्या गति है? कुछ जिनों बाद दोनों पक्षों की बहुत लड़ाई हुई। दो आदमी लड़ाई में मारे गए। मुणसा सिंह व चन्नण सिंह की पार्टी जो दरवाजे के सामने साँझी जगह थी, जिसकी वजह से लड़ाई हुई थी, लड़ाई के बाद सभी लोग इकट्ठे हो गए। आपके चरणों में लगे विनती करने।'' कृपा करो, मेहरबान! हम भूल गए हैं, आपका हुक्म न मान सके तो ही दुःख पाया।' आगे से सतगुरू बोले, ''अब कुछ नहीं हो सकता। दस–दस साल सजा होगी।'' समुन्द सिंह आपके सेवक थे। उसे पहले ही कई बार आदेश हुआ, ''जहाँ सौ लोग इकट्ठे हों वहाँ तूने नहीं जाना।'' यह लड़ाई तब हुई जब नकलें हो रहीं थीं। बहुत सारे व्यक्ति इकट्ठे हो कर नकलें देख रहे थे। दान करने से सेवा करन से आधी विआधीयां सभी खतम हो जाती है। इन्सान का मुख्य धर्म है सतगुरू के हुक्म में चलता रहे तो सदा सुख बना रहता है।

बोलो जी वाहेगुरू।

साखी पण्डित बसन्त सिंह भधाणों के साथ हुई

पण्डित बसन्त सिंह गाँव भदाणों के निवासी थे। नामधारियों में प्रसिद्ध व माने हुए विद्वान थे। पण्डित जी भरो मजारे रात अपने किसी गुरू भाई के घर ठहरे। सुबह होते ही बाहर शौच आदि जा रहे थे। अमृत वेला 4 बजे का समय था, चन्द्रमा अलोप हो

रहा था, प्रभात होने वाली थी, जानवर चीं चीं करने लगे थे, आकाश की तरफ से रोशनी आ रही थी, लाली का छत्र तनता जा रहा था, सितारे अलोप ह रहे थे। ठण्डी–ठण्डी पवन चलने लगी थी, सोए हुए प्रेम को जगा रही थी। बागों में फुलवारियाँ महक रहीं थीं, ऐसे में पण्डित जी का दिल प्रकृति की टक्कर खाकर किसी अनोखी ही रँगत में रँग गया। अन्दर एक प्रेम की रों बह रही थी। उस प्रीतम प्यारे के प्यार में ऐसी लिवलीन हुई कि रोम–रोम प्रीतम जी की याद में जुड़ गया। जैसे बाबा बुल्लेशाह जी कहते हैं, ''राँझा–राँझा करती नी मैं आपे रांझा होई, सद नी मैनूँ धीदो राँझा हीर ना आखो कोई।।'' पण्डित जी ने मन में अरदास की ''ऐसे क्षण मे राजा साहिब जी दर्शन दें तो मैं जानूँ। आप नानक अवतार हो, कृष्ण स्वरूप हो, राम सिंह स्वरूप हो, राजा जनक का अवतार हो, जब पण्डित जी ने परेम मग्न होकर ऐसी धारणा बोली, चली जाण रामा जिन्द तेरे हावे।'' आप जी करतार सिंह के कोठे से उठे व डोगर के अन्दर जा पहुँचे। एक पल से जहां कोई सच्चा प्रेमी प्रेम के बाण से जख्मी हो कर पड़ा बलबल करते अन्दर से कुण्डी ला के प्रेम के बाण से घायल प्रेमी पण्डित जी के आगे प्रकट हो गए। पण्डित जी चरणों में गिर पड़े। दोनों भुजाओं से उठाकर छाती से लगाया, प्यासे ह्दय को शान्त किया, हुक्म हुआ, ''निहाल! निहाल। तू तो मेरा अँग हैं।'' पण्डित जी की मनोकामनाएं पूरी हुईं। गाँव से अनोखे आदिधर्मी नामधारी को बुलाया, शब्द पढ़ने का हुक्म दिया। एक क्यारे में आप खड़े हो गए दूसरी में अनोखे को खड़ा किया। अनोखा एक कड़ा व गिलास जैसे नामदेव जी अपने पास हर समय खड़ताल रखते थे यह अपने पास कड़ा और गिलास रखा करते थे। नामधारियों वाली धारणाएं पढ़ा करते थे। आपके साथ नृत्य करते

व इस प्रकार धारणाएं बोलते–

यार दे बूहे ते मर चलीए आशिक नूँ लाज लगे।
आशिक आशिक हर कोई कैंहदा टेढ़ी पगड़ी धर के।
सिर तों परे इश्क दा डेरा जित्थे बन्दा पहुँचे मर के।
माँ समझाए मुड़ जा हीरे कलां जगा न सुतीयाँ।
नहीं तां पुठी खल लहा के तेरा मास खुवावां कुत्तीआं।
हस के अगों हीर पई आखे
खलड़ी लहिसी तां की होसी मेरा चाक सुआसी जुतीआं।

पण्डित जी को दर्शन देकर, अनोखे को निहाल करके आगे चलते बने।

बोलो जी वाहेगुरू।

साखी परीते मजारे वाले के साथ हुई

एक दिन नाभ कँवल राजा साहिब जी गाँव के पश्चिमी तरफ एक हलट की पैड़ पर बैठे थे, गाँव कटां से बूझा मल्ल भैंस लेने आया। करतार से परीते ने भैंस मोल ली, 80 रुपए का सौदा हुआ, 2 रुपए दलाली के लेने किए। परीता भैंस को गाँव से कुछ दूर छोड़ कर वापिस आ गया था। आप जी का हुक्म हुआ, ''इस मेहमान को गाँव छोड़कर आओ, इसके साथ साकाचारी पा लेनी थी।'' परीता उसे गाँव छोड़कर वापिस आ गया। उसके बाद बूझे की शादी हुई। बूझे के घर लड़की जन्मी 50 साल के बाद परीते के लड़के के साथ शादी हुई। एक दिन आप रात के समय रसोखाने में आए। मुंदर सिंह, परीता लंगर में आप सेवा करता था। पातशाह जी ने मुंदर सिंह को कहा, ''कस्सी कही लाओ, महंगे को आज माया का खजाना बता दें, पिछला हमारा धन पड़ा है जब हमने जम्मू का राज किया था।'' दमदमा साहिब की ओर

इशारा किया जो झिंगड़ां की जूह में है। चार खेत चल कर रुक गए, कहने लगे, ''मुँदर! रहने दें, दो रुपए परींते का खर्च है।'' रसोखाने के साथ एक रीस का बूटा था, उसके नीचे खुड्ड में से दो रुपए हर रोज उठाने का हुक्म दिया। परीता अफीम–डोडे का अमली था, काम–काज कुछ नहीं करता था। छः पुत्रियाँ थीं, कुछ दिन ऐसे ही दो रुपए उठाता रहा। एक दिन देखा कि चाँदी के रुपयों का काफी ढेर लगा था, सारे ही उठा लिए। दूसरे दिन गया, कोई पैसा नहीं था शर्मिन्दा होकर वापिस आ गया। महाराज जी के चरणों में आ कर विनती करने लगा, ''सच्चे पातशाह! मेरा गुजारा कैसे होगा?'' हुक्म हुआ, ''हमारी गागर पानी से भर लाओ।'' दो रुपए उसके पास पड़े थे उसने उठाकर जेब में डाल लिए। एक माई दर्शनों के लिए आइ उस ने एक रुपए से माथा टेका फिर ठाकुर सिंह रहिपा से आया उस ने भी एक रूपये से माथा टेका। वो भी उस ने जेब में डाल लिया। फिर हुक्म हुआ, नाली साफ कर। नाली में से एक सोने की मुँदी हाथ लगी। उस समय अन्दर से आवाज दी, ''चल भाग चल! तेरा काम हो गया. बूढ़ी वाला रुपया वापिस कर दे, यह हमने स्वीकार नहीं किया।'' हाला लेकर दुःखी जीवों का काम करते थे।

बोलो जी वाहेगुरू।

साखी कुकर निस्तारा

एक दिन गुणाचौर का सलामत (राजपूतों का लड़का) शिकार खेलते–खेलते नागरे की ढकी में जा पहुँचा। एक वृक्ष की नीचे महाराज जी बैठे थे। सलामत के पास दो कुत्ते थे जो डोरियों के साथ पकड़े

हुए थे। एक का रंग सफेद व दूसरे का पीला था। दोनों कुत्ते सुन्दर व शिकारी थे। जब इन्होंने सतुगरू के दर्शन किए। नूरी नयनों की झलक इन पर पड़ी तो चरणों में लेट गए। अपने मालिक का ध्यान छोड़ दिया। सलामत्त ने बहुत कोशिश की लेकिन वे न उठे। फिर आखिर सलामत ने महाराज जी के चरणों में विनती की कि इन्हें पुनः शिकार खेलने की सामर्थ्य बख्शें। महाराज जी बोले, ''सलामत, ये अपना भला चाहते हैं। पिछले जन्म घोर पाप के कारण इन्हें कूकर योनि मिली, अपने किए हुए गुनाहों की माफी माँगते हैं। ये पिछले जन्म में राजे ही थे। ये उधार के लिए हमारी शरण में आ गए हैं। भला करना ही पड़ेगा।'' यह हुकमनामा सुनकर राजपूत चुपचाप अपने घर चला गया। फिर कुत्ते घर ले जाने की कोशिश नहीं की। इतने में सन्त अवधूत जी महाराज जी के दर्शनों को आए, आगे से सतगुरू जी का हुक्म हुआ, ''साधु! हमारे कुत्तों के लिए करतार सिंह के घर से प्रसादा बना के ले आओ।'' बीबी कर्म कौर से धड़ी भर अनाज पकवा कर ले आए। महाराज जी के पेश हुए, सारे प्रसादे एक तरफ पोणे पर रख देने का हुक्म हुआ। सन्तों ने सारे प्रसादों का ढेर वहाँ लगा दिया। आप पीछे हटकर बैठ गए। एक मिनट बाद पीले रंग वाले कुत्ते ने ढेरी में से दो प्रसादे उठाकर एक तरफ रख दिए और दो प्रसादे उठाकर एक तरफ होकर खाने लग गया। जब दो प्रसादे उसने खाने शुरू किए तो बाकी वहाँ स्थित दस बारह कुत्तों में से किसी के हिस्से एक आया तो किसी के दो सभी झपट पड़े। इतने में महाराज जी अवधूत को कहने लगे, ''यह भी पिछले जन्म राजा था, इसकी आज्ञा सभी मानते थे।'' इसी तरह यह आठ साल तक दोनों कुत्ते आपके साथ रहे। एक दिन महाराज जी करतार सिंह के घर दलान में बैठे थे। इन दोनों कुत्तों को अन्दर बुलाया। ये

दोनों कुत्ते पूँच हिलाते हुए महाराज जी के चरणों में लेट गए। हुक्म किया, ''आज जो कुछ खाना है, खा लो। आज आपके जन्म जन्मान्तरों के कष्ट काट दिए हैं।'' उन दोनों कुत्तों को इशारा करके, खिड़की के आगे अन्दर वाली तरफ पेड़े व फलों का ढेर लगा हुआ था, उसमें से उनको खाने का हुक्म किया। दोनों कुत्ते जो कुछ भी उनका दिल किया, लगे हुए ढेर में से खा रहे थे। चक्क कराल की बन्तो जिसे महराज जी भागीरथी कहते थे, को कहा, ''लैम्प जलाओ।'' बन्तो ने लैम्प जगाया। कहने लगे, ''इन दोनों कुत्तों के सिर पर लालटैन घुमाते जाओ। भागीरथी आज इनका चौरासी वाला चक्कर सारा ही काट दें।'' जितनी देर कुत्ते कुछ खाते रहे, बन्तो सिर पर लालटैन घुमाती रही। कुत्ते खा हटे, कुत्तों की तरफ इशारा करके उसे बोले, ''जाओ! आपका आना जाना सब खत्म कर दिया, बाहर चले जाओ। शरीर छूट जाएगा, कल्याण होगा।'' बहुत ही भरे मन से पातशाह ने दोनों कुत्तों को तोर दिया। दोनों कुत्ते प्रणाम करके घर से बाहर निकले। गाँव मजारे की जूह छोड़कर नागरा की जूह में जाते ही दोनों के शरीर छूट गए। पीछे बन्तो को महाराज जी कहने लगे, ''भागीरथी! ये पिछले जन्म में राजे थे। इन्होंने बहुत विश्वास के साथ हमारा पल्ला पकड़ा, तभी इनका बेड़ा पार लगाना पड़ा। भगीरथी जिन्होंने सत्गुरू को जहाज रूप समझा, वही भवसागर से पार हुए।'' एक और कुत्ता था। बूढ़ा होने पर उसके कीड़े पड़ गए। कीड़े पड़ने पर बदबू आने लगी। कर्मी ने एक दिन कुत्ते को घर से बाहर कर दिया। जब कुत्ते को कर्मी ने बाहर निकाला तो महाराज जी उठ कर चल पड़े। कर्मी को कहने लगे, ''ले कर्मी! हम तो फिर चलते हैं।'' जब कर्मी ने महाराज जी की इतनी बात सुनी तो उसने समझा कि महाराज जी नाराज होकर जा रहे हैं। यह बात कर्मी सह

न पाई। गले में पल्ला डालकर विलाप करती हुई महाराज जी के चरण पकड़कर बैठ गई।'' सच्चे पातशाह! मैं भूल गई, मेरी भूल माफ करो, आगे से मैं कभी भी कुत्ते को नफरत की नजर से न देखूँगी, यदि आप घर से चले गए तो मैं मिट्टी का तेल डालकर आत्मदाह कर लूँगी। आपकी नाराजगी नहीं सह पाऊँगी।'' जब कर्मी की ऐसी दया हुई तो महाराज जी बैठ गए। कुत्ते को बाहर से बुलाया, कुत्ता महाराज जी के पलंग के नीचे आकर बैठ गया। एक सप्ताह महाराज जी एक ही जगह इसी पलंग पर बैठे रहे। सातवें दिन पलंग के नीचे ही इस कुत्ते का शरीर छूटा। उसे बाहर उठाकर दबवाया गया। ऐसे परोपकारी कूकरों, शूकरों, जखों, किन्नरों, भूतों, प्रेतों का उद्धार करने वाले दयालु, कृपालु मेहरों के दाते, दया के पुँज थे, जिनके दर्शनों से घोर पापी भी एक पल में उधर जाते थे।

बोलो भाई जी वाहेगुरू।

साखी चरण सिंह झिंगड़ा वाले के साथ हुई

गाँव झिंगड़ां निवासी चरण सिंह भाई जवाहर सिंह जी का पोतरा इंद्र सिंह को पुत्र महाराज जी की अनन्य सेवक, हर समय महराज जी के नाम के रँग में रंगा रहता। फरीद की तरह पिंजर सूखा हो चुका था। एक दिन बैठे–बैठे मन में लाला हमीर चन्द की याद यूँ ही ठाठें मारने लगी। बहते दरिया की तरह चरण सिंह को वैराग्य का चोला दे गई। चरण सिंह लम्बे–लम्बे साँस लेने लगा। चरण सिंह सच्चा प्रेमी, मन में पक्की धारणा दार के बैठ गया। लाला जी साक्षात प्रकट होकर दर्शन देंगे तो अन्न पानी ग्रहण करूँगा

अन्यथा मर जाऊँगा, कुछ भी नहीं खाऊं–पीऊँगा। जब ऐसी हालत में बैठे हुए एक सप्ताह बीत गया तो नाभ कंवल राजा साहिब जी के दर्शनों की झलक पड़ी। झलक ऐसी थी कि चरण सिंह खिंचा ही गया। सचमुच मन दर्शनों के लिए विह्वल हो उठा। महाराज जी आगे पंजाब सिंह के कुएँ पर बैठे थे। चरण सिंह नाम की खुमारी में डूबा हुआ, दिल व शरीर हलका फूलों जैसा, सीना साफ, आँखे मिलती जा रही थीं, नशे में झूमता हुआ सतगुरू के चरणों में गया। अभी चार कदम पीछे ही था। आगे से सतगुरू बोले, ''बूझा! अन्न नहीं छोड़ते, मोरों वाले ढक्क में भी हमीं फिरते होते थे।'' लाला जी पहले–पहले जब फतियाबाद से आए थे, मोरों वाले सरदारों के मुनशीयाणे का काम करते रहे थे। चरण सिंह के मन की इच्छा जानकर पातशाह रमज मारी और कहा, ''चरणा! मर्तवा अव आगे से बड़ा है। चल घर जा के काम करते हैं, रोटी खा लेते हैं, खाना नहीं छोड़ता। यह कह कर चरण सिंह के मन का भ्रम दूर किया। चरण सिंह को भी यकीन हो गया क्योंकि लाला जी जब झण्डी वाले के पूजा अर्चना करते थे तो ढक्क में ही रहा करते थे। चरण सिंह को महाराज जी ने ब्रह्म का ज्ञान कराया। देह का मान, शरीर का मर्तबा निरंकार की शक्ति से ही ऊँचा नीचा माना जाता है। जितनी कोई नाम की कमाई करता है, आत्मा उतनी ही प्रबल होकर संसार में पखट होती है। स्वरूप का पुतला भी कमाई के अनुसार शक्तिशाली होता है, स्वरूप के पुतले को भी अवतार माना जाता है। 'सति पुरखु जिनि जान्या सतगुरू तिसका नाऊँ।।' सभी अवतार एक निरंकार की ही ज्योति लेकर संसार का भला करने के लिए महापुरुषो की काया को पवित्र, पाक, निर्मल पापों से हीन करके

उस में सवासधारी होकर मातलोक में आते हैं जीवों के भले के लिए संसार सीधा रास्ता दिखाने हित वेदों व तीर्थों की रचना अकाल पुरुष स्वयं ही करता है।

आपीने साज्यो आपीनै रच्यो नाउ।।

स्वयं से बिछुड़ी हुई आत्माओं को स्वयं में अभेद होने की युक्ति आप ही बताता है। बोलता, बताता, हसता,खेलता भोगता है।

आपे उझड़ि पाइदा पियारा आपि विखाले राह।

जैसे महाराजा राम चन्द्र ने हनुमान जी के पूछने पर माता सीता की ओर से हनुमान जी को माया का रूप वर्णन करके बताया था, ब्रह्म का ज्ञान करवाया था। सीता ने हनुमान को कहा, ''हनुमान! ये जो आप साँवले सरूप मूर्त रामचन्द्र, राजा दशरथ के पुत्र को देख रहे हो यह माया का ही रूप है। अयोध्या का राज सिंहासन यह सब माया ही है। यह जो आपके सामने सीता स्त्री बैठी है यह माया रूप ही है, जैसे ही कृष्ण ने ऊधम को द्वारा गोपियों को मोह दूर करने हेतु उपदेश दिया था कि जाओ मेरे शरीर से प्रेम न करो, मुझे ब्रह्म स्वरूप जानकर जो प्रेम करेगा वह सदा मेरे साथ मिला रहेगा, कभी भी हमारे से जुदा न होगा, शरीर का मोह न करोगी तो शोक होगा।'' शरीर नित्य नहीं है, क्योंकि यह माया का ही रूप है। यदि आत्मा का मिलाप हो जाए तो कभी वियोग नहीं होता, आत्मा का अस्तित्व परमात्मा के साथ है। आत्मा परमात्मा का मिलाप हो जाए तो कभी शोक नहीं होता। जब बुद्धि रूपी कन्या पति रूपी परमात्मा को पा लेती है तो कभी विधवा (रंडी) नहीं होती। ''अकाल मूर्त वर पाइया अविनाशी, न कदे मरै न जाइया।''

महाराज नाभ कंवल राजा साहिब जी ने ब्रह्म का ज्ञान करके निहाल किया, आपने भी इसी कारण भगवान दास नाम हटाकर नाभ कंवल राजा साहिब कहलाया, क्योंकि भगवान दास शरीर का नाम है, नाभ कंवल राजा साहिब खुदा का नाम है। जो सिक्ख सेवक मोह के कारण भी नाम ले तो निरँकार ही नाम जपा जाए।

- *तुम हो सब राजन के राजा।।*
  आपे आप गरीब निवाजा।।
- *कोई हरि दे समान नहीं राजा।।*

कबीर जी ने भी खुदा को राजा कह कर जपा है। ऐसे ही महाराज अपने आप को नाभ कंवल राजा साहिब कहाते थे। उपदेश भी यही किया करते थे कि राजा साहिब जपा कर। आखिर आकर कहा, ''बूझा! सभी अवतार हमीं आए हैं, चलो! घर जाकर काम किया करो।'' चरण सिंह का भ्रम दूर होगा। सभी तरफ राजा साहिब जी की ही जोत काम कर रही है।

आगे साखी गँगा के सन्तों के साथ हुई

सावन भादों के दिन थे। सन्त मण्डली हरिद्वार से राजा साहिब जी का नाम सुनकर दर्शनों को आई। सभी के मन में बात आई व चर्चा की कि यदि ये अन्तर्यामी होंगे तो जान जाएंगे कि हम कहाँ से आए हैं? ऐसी बातें कर रहे थे जैसे किसी का इम्तिहान लेना हो। गाँव झिंगड़ां से हरनाम सिंह, सन्त निरंजन दास के पिता हरी लाल जी तथा और कई लोग महाराज जी के दर्शनों को जा रहे थे। रौली वाले कुएं पर सन्त व झिंगड़ा की संगत रास्ते में ही इकट्ठे हो गए। वचन करते–करते गाँव मजारे राजा साहिब के दरबार चले गए।

संगत की काफी भीड़ लगी हुई थी। आगे कीर्तन चल रहा था, महाराज संगत को खुले दर्शन कर निहाल कर रहे थे। साधु मण्डली ने हाथों में चिप्पियाँ धारण की हुईं, भगवें वस्त्र धारण किए हुए, गले में अल्फियाँ धारण किए हुए ऐसे लग रहे थे जैसे ब्रह्म के पुत्र सनक, सनंदन, सनत कुमार, औगिन्द्र, रुद्र, विष्णु के दरबार पर दर्शनों के लिए खड़े हों इस प्रकार सन्त मण्डली शोभा दे रही थी। प्रणाम करके पीछे हटकर सारी मण्डली बैठ गई। महाराज जी बोले, ''हरी पाल! गंगा की पौड़ियां राजा के नाम पर ही बनीं हुई हैं। नामा! चलो साधुओं को भोजन कराओ। रसोखाने ले चलो, साधु दूर से आए हैं।'' जब यह आदेश सन्तों ने आपे मुखारबिन्द से सुना तो यकीन हुआ कि सचमुच जो सुना था वही देखा। मन बहुत ही प्रसन्न हुआ, दर्शनों के बाद मन के सारे भ्रम दूर हो गए। बार-बार नमस्कार करने लगे। हमारी दूर से की गई यात्रा सफल हुई जो हमें महाबली ब्रह्म ज्ञानी अन्तर्यामी पूर्ण महापुरुषों के दर्शन हुए हैं। आज हमें प्रयागराज त्रिवेणी का दर्शन हुआ। हरनाम सिंह ने पातशाह के आदेश अनुसार सन्त मण्डली को रसोखाने में ले जाकर भोजन कराया, सरदाई पिलाई। आपके मन की ख्वाहिशें साधुओं ने हरनाम सिंह को बताई हमारे मन में ये अटकलें चल रहीं थीं कि यदि अन्तर्यामी हुए तो खुद बता देंगे कि हरिद्वार से आए हैं। हमारा मन दर्शन करके निहाल हुआ।

आगे साखी कर्म कौर के पुत्र को राजी करने की

कर्म कौर गाँव मजारा की रहने वाली जाटों के घर की शान आप में बहुत श्रद्धा रखती थी। एक बार की बात है कर्म कौर का बड़ा बेटा बहुत बीमार हो गया। दस्त व उल्टियों से बच्चा नींबू की

तरह निचुड़ गया। दवा दारू बहुत दिया, लेकिन आराम नहीं आया। एक दिन रात के समय बच्चे की तकलीफ माँ से देखी न गई। कर्म कौर ने दिल में ही अरदास की, ''हे प्रभु! सब ताकतों के मालिक! मुझ गरीब का भी बेड़ा तार दो। मेरा इकलौता पुत्र तेरे बनाए संसार के बाग में है, वो भी सूख चला है, कोई होश नहीं, होंठ नीले हो गए हैं, आँखें बीच धँस गई है यह मेरा लाल आँख नहीं खोलता है।'' कर्मी बच्चे को गोद में लेकर बैठी गर्मियों के मौसम में विनती की माला फेर रही थी। मन में अटूट विश्वास की मेहरों के दाते अवश्य मेरा सूना बगीचा हरा करेंगे। मेरे लाल को मौत के शिकंजे से अवश्य छुड़ाएंगे। उधर सब घट के ज्ञाता, अनाथों के नाथ, दुःखी ह्दय की ठण्डी–ठण्डी फरियांद सुनकर पता नहीं कहां से चुपचाप अन्धेरी रात में उस दुःखियारी बुढ़िया के पास आकर खड़े हो गए। कर्म कौर ने बच्चा उठाकर चरणों में रख दिया। कर्मी की चीखें निकल पड़ीं। सावन के बादलों की तरह आँसू बहने लगे। रोती हुई बुढ़िया को देखकर महाराज जी ने कहा, ''चल, तेरे लाल के पास हम बैठते हैं, नीचे उतर कर चक्की से आटा पीस।'' सूर्य आकाश की तरफ निकल रहा था। कर्म कौर ने पाँच सेर आटा पीसा। इतने में दिन भी निकलने लगा। जब आटा पीसकर कर्मी हटी तो महाराज ने अपने कुत्ते आटे के चारों तरफ आटा खाने के लिए लगा दिए, बाकी बच्चे उस आटे की रोटियाँ बनवा कर समस्त परिवार को ग्रहण करने का आदेश दिया। कर्म कौर आदेश मिलते ही जूठे ही आटे की रोटियाँ बनाकर बाहर काम वालों को खिला आई तथा बाकी परिवार वालों को खिला दीं। प्रसादे खिला कर जब घर वापिस आई तो बालक गुलाब के फूल की तरह टैह–टैह करता खेल रहा था। बच्चे को

कोई तकलीफ न रही, ऐसे लगने लगा जैसे बच्चा कभी बीमार ही न हुआ हो। एक अपने ऊपर से सफेद वस्त्र आपने कर्म कौर को दिया। कहा, ये ले हमारा चादरा, कभी भी घर में तेरा बच्चा या कोई और जीव बीमार हो जाए तो यह हमारा चादरा ऊपर दे देना, सभी संकट दूर हो जाएंगे। कभी डाक्टरों के पास न जाना, हमारा यह चादरा अलामतों की कार होगा. महाराज जी का दिया हुआ चादरा कर्मी के घर पड़ा है। पूजा की जाती है, घर में किसी भी तरह का कोई रोगी हो, चादरा छूने से ही रोगी ठीक हो जाता है।

बोलो जी वाहेगुरू।

आगे साखी और चली

एक बार महाराज किरपे के चौबारे में से उठकर कोठे के ऊपर से कर्म कौर के कोठे पर आ खड़े। कर्मी के घर पक्की पौड़ी बनी हुई है। धीरे–धीरे पौड़ी उतरन लगे। पौड़ी उतरते हुए आवाज देते हैं, ''जैसी मैं आवै खस्म की वाण तैसड़ा करी गिआन वे लालो।'' यह कोई दरगाही सैंत कर्मी को आकर दी। नीचे उतरकर दलान में मूर्तियां लगी हुई थीं। कुछ तो अपनी सोटी से उतार दीं। कर्मी को कहने लगे, ''कर्मी! सफेद कपड़ा ले लेना था, मुकाणें भी संभालनी पड़ेंगी।'' ऐसे जैसे भविष्य के आदेश कर्मी को बता जाते हैं। तीसरे दिन कर्मी का ज्येष्ठ स्वर्गवास हो गया। उस दिन पता लगा आप के हुक्मनामों का। कृपा सिंह रात को राजी खुशी सोया, अन्त समय कृपा सिंह के पास पहुँच गए. अपने घर से जब महाराज उठने लगे, बोल दिया, ''करतारा! कृपा को विदा कर दें।'' दो घण्टे आप जी कृपा सिंह के पास पहले पहुँच गए. अन्तिम समय दर्शन देकर उद्धार किया,

फिर पुनः जाकर अपने घर ही जाकर बैठ गए। यह कौतुक देखकर लोग बहुत हैरान हुए। एक दिन कर्म कौर महाराज जी के दर्शनों को गई। महाराज जी करतार सिंह के घर बैठे थे। कर्मी के माइके एमें गाँव में थे। महाराज जी कहते, ''कर्मी! एमें जा आना था, कहीं माई चढ़ाई न कर जाए। चल! घर चली चल! कोई बन्दा आप ही आकर ले जाएगा।'' दूसरे दिन सचमुच ही सुनेहा आ गया, एमां गाँव से कर्मी को लेने बन्दा आ गया। आकर कहा कि माई बहुत लाचार है। कर्मी अभी घर नहीं पहुँची थी। माई पहले ही कालवश हो गई। अन्तिम मिलन न हो सका। कर्मी बेचारी को मृत मां का ही मुख देखना नसीब हुआ। ऐसी हजारों ही बातें आपकी देखने व सुनने में आती हैं। एक खानखाना गाँव का भगवान सिंह था, महाराज जी उसे भाना ही बुलाते थे। भाने को कई बार कर्मी के घर भेजा करते व कहते ''भानिआं! कर्मी तेरी पिछले जन्म की बहन है, जाकर राम–सत कह आया कर।'' बहुत सारे लोगों के पिछले जन्म के नाम लेकर बुलाया करते थे। कइयों को यह कह कर एक दूसरे के पास भेज दिया करते थे कि ये तेरा बापू है, ये तेरा भाई है, ये तेरी माँ है।

बोलो जी वाहेगुरू।

आगे साखी मजारे के इन्द्र की चली

इन्द्र गाँव मजारा का रहने वाला जट नाभ कंवल राजा साहिब जी का बहुत प्रेमी था, पर घर से कुछ गरीब था। इन्द्र के चार लड़के हुए। लड़के जवान होने पर गरीबी की हालत में होने के कारण व्याहे नहीं गए। इन्द्र के घर वाली हमेशा इसी ख्याल में खोई रहती। कई रिश्तेदारों के साथ बात करके अपने भाइयों की सलाह से बड़े लड़के बन्ते के

लिए कोई मुल्ल का रिश्ता तैयार किया। कुछ रिश्तेदार इकट्ठे होकर कहने लगे भाई, बन्ते को मुल्ल का रिश्ता हो रहा है, करवा लो। इन्द्र को महाराज पर बहुत भरोसा था। इन्द्र ने कहा कि घर बैठे महबूबों को मैं राजा साहिब जी की सलाह लेकर आपको बताऊँगा। घर बैठे रिश्तेदारं को ऐसे ही छोड़ कर महाराज जी की ओर गया। आगे महाराज जी रसोखाने में टहलते फिरते थे। इन्द्र ने जाकर नमस्कार किया और हाथ बाँध कर खड़ा हो गया। इन्द्र मुँह से कुछ बोला नहीं, मन में विचार चल रहा था कि किस प्रकार महाराज जी से बात करूँ। आगे से महाराज जी ने पहले ही हुक्म किया, ''इन्द्र! चल ऐसे अतिथियों को घर से विदा कर देते हैं। ऐसे अतिथियों को तो घर में बैठे न दें। वे तो 2000/– रुपए में रिश्ता करवा रहे हैं, हम तो सवा रुपए में दो बार विवाह कर लेते हैं।'' वे आए हुए अतिथि 2000/– रुपए मूल्य में विवाह करवाते थे। महाराज जी का आदेश सुनकर इन्द्र बहुत खुशी से उछला। इन्द्र का मन खुशी से झूम उठा। आते ही अपने घर बैठे मेहमानों को कहने लगा, ''जाओ! मैंने लड़के का मूल्य देकर शादी नहीं करनी है, मेरा लड़का बेशक कुँवारा ही रह जाए, मैं तो राजा साहिब का आदेश मानूँगा।'' मेहमान चले गए, कुछ दिनों बाद एक आदमी आया, इन्द्र को आकर पूछा, भाई साहब आपका लड़का शादी योग्य बताते हैं, इन्द्र ने कहा, ''लड़के तो मेरे चार हैं, पर जमीन सिर्फ ढाई खेत हैं, तेरी मर्जी रिश्ता करदे या न कर।'' वह आदमी बोला, ''भाई साहिब मुझे सब कुछ आपके घर नजर आ रहा है।'' मैंने रिश्ता जरूर करना है। रिश्ता हो गया, शादी भी हो गई, बड़ी खुशियाँ मनाई गईं। दो साल बाद बन्ते को ब्याही हुई मर गई। गाँव में हाहाकार मच गई। मुश्किल से गरीब का बेड़ा बन्ने लगा था, कुछ न बना, आगे के लिए कोई जड़ भी न लगी। मरासण राजे महाराज

जी के दरबार में आकर कहने लगी, ''महाराज! इन्द्र बेचारे का मुश्किल से बेड़ा ठिकाने लगा था, कोई बात न हुई, बन्ते की स्त्री बेचारी मर गई।'' अन्दर बैठे दरगाह के मालिक ब्रह्म ज्ञानी सब सृष्टि के कर्ता बोले, ''चल बहन! इन्द्र के घर जा कर कह–रोना नहीं।'' उनको कहना ढोल बजाना। लोगों को आपके बचनों पर श्रद्धा बहुत थी। राजो ने महाराज का आदेश इन्द्र के घर जाकर कह सुनाया रोना बन्द करके ढोल बजा दिया। घर स्त्री मरी पड़ी थी। एक महीने के अन्दर ही बन्ते का दोबारा रिश्ता हो गया। ऐसे ही जैसे महाराज ने पहले हुकम किया था कि सवा रुपए के साथ दो बार लड़का ब्याह लिया करते हैं। वही बात सत्य हुई। इस समय इन्द्र पौत्र, पौत्री, दोहते दोहतियों वाला है। एक छोटा सा जमींदार इस तरह जिन्दगी गुजार रहा था, अब स्वर्ग व सुखों भरा जीवन व्यतीत किया। महाराज जी की दया मेहर से एक दिन दर्शनों के लिए गया, आगे से सतगुरू ने हुक्म किया, ''इन्द्र! सफ़ेद कपड़े पहनकर दरवाजे ही बैठे रहते हैं।'' बस ऐसे ही सारी जिन्दी गुजार दी। बड़े–बड़े अमीर इस तरह सुख ले सकते हैं। इन्दर इतना भरोसे वाला था कि एक दिन एक सभा में बात चली कि जब महाभारत का युद्ध हो रहा था तो भीम सेन ने हाथी घुमाकर आसमान में फैंके, इन्द्र कहता कि तब मानूँगा यदि राजा साहिब कह दें कि ठीक मारे थे। इन्द्र उठ के महाराज के पास पेश हुआ। विनती की, सच्चे पातशाह जी! क्या यह सच है कि भीम सेन ने हाथी आसमान में फैंके थे।'' महाराज जी कहते, ''हाँ–हाँ इन्द्र मेहनत चाहे कोई कर लेवे।'' मेरे सामने की बात है। दास उस समय महाराज जी के पास खड़ा था, महाराज करतार सिंह के घर बैठे थे। सर्दी का मौसम था।

बोलो भाई वाहेगुरू।

साखी मजारे वाले जट्ट के साथ हुई

गाँव मजारे के जट्ट जिमींदार खेती का काम करने वाले करतार के घर लड़के नौजवान हो गए। करतार ने मन मे सुखना की, ''सच्चे पातशांह जी! मेरा लड़का ब्याह हो जाए तो 25 रुपए का कड़ाह प्रसाद चढ़ावांगा।'' महाराज जी की मेहर से लड़के की शादी हो गई। खुशियाँ मनाई गईं। बहुत ढोल ढमाके बजे, बारात विवाह करके घर लौटी। दूसरे दिन सुखी हुई सुख कड़ाह प्रसाद बनाने लगे। सुहागिन जोड़ी का माथा भी टिकवाना था। पचीस रुपए रसद जब तोलने लग तो करतार ने कहा, ''इतना प्रसाद तो बहुत हो जाना है, आधा प्रसाद बना लो, आधा फिर किसी दिन चढ़ा लेंगे, आप भी छकेंगे साथ में लागियों को भी मिल जाएगा, साथ में कई डंग टपाएंगे।'' साढ़े बारह का प्रसाद बना के नवविवाहिता लाड़े का पल्ला पकड़कर नींवीं नजरों के साथ पीछे–पीछे चल पड़ी। ढोल ढमाके के साथ मेलणें गीत गाती हुईं, खुशियों के सोहले गाती हुई सोहणे प्रीतम के दरबार चली गईं। आगे संगत की बहुत भीड़ बनी हुई थी। कीर्तन भी हो रहा था। घर बने हुए कड़ाह को एक परात में डालकर पीछे–पीछे करतारा आ रहा था। जब भीड़ में से निकलता हुआ काफला शब्द पढ़ता हुआ आगे बढ़ा तो घट–घट के अन्तर्यामी नत्था सिंह के घर बैठे थे। हुक्म हुआ, जो पीछे परात लेके खड़ा है उसे आगे आने दो, जब करतार आगे बढ़कर आगे हुआ, महाराज बोले, करतार! चल घर जाकर अपना डंग टपाओ। अरे मुझे लागियों के साथ जोड़ दिया। पच्चीस की सुखना करके लागियों का सारता है, चल भाग जा, पीछे मुड़ जा।'' जब महाराज जी ने करतार को संगत के बीच ही दबका मारा तो संगत के बैठे ही सच्ची बात कही, करतारा झूठ हो गया। करतारे की गर्दन

नीचे झुक गई। शरीर थर–थर काँपने लगा। कान पकड़ कर चरणों में गिर गया, अधमरे साँप की तरह सिर नहीं उठाया, ''सच्चे पातशाह! बख्शो, अब मेरी भूल माफ करो, मैं सवा पच्ची रुपए का प्रसाद करके अभी लाऊँगा।'' उसी समय घर जाकर सारा प्रसाद बनाकर महाराज जी के दरबार में लाकर संगतों में बर्ताया। जैसे मक्खन शाह लुबाणे से गुरू तेग बहादुर ने पूरी सुख ली थी वैसे ही श्री नाभ कंवल राजा साहिब जी ने करतारे को बताकर पूरी सुख ली।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी ननकाणे के एक जट्ट के साथ हुई

एक सिक्ख गाँव ननकाणा साहिब गुरू नानक देव जी की नगरी का था जिसकी उम्र 50–55 साल की थी। उसका घर औलाद से सूना था। जैसे चिराग के बिना मन्दिर सूना होता है। 'जिस घर दीपक न बैर, बाल न खेडी बार, तिसका क्या भन्नणां सो भन्नियां करतार।' बहुत धागे तवीत टूणे टमाणे किए, किसी से पुत्र की बख्शिस न मिली। डाक्टरी इलाज भी किए, लेकिन पुत्र की प्राप्ति न हुई। इन्सान मनसूई ताकतों के पीछे भटकता फिरता है लेकिन सर्वशक्तिमान परमात्मा को भूला रहता है। गुरू की शरण निराश होकर आने से सभी कार्य रास आ जाते हैं। इस गुरसिक्ख ने नाभ कंवल राजा साहिब जी की शोभा सुन कर 100 रुपए के कड़ाह प्रसाद की सुखना की, 22 संक्रान्तियों तक चौकियाँ भरता रहा। 22वीं सक्रान्ति पर महाराज जी ने पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया। जब पुत्र हुआ तो उजड़ा हुआ घर फिर बस गया। पुत्र के जन्म की खुशी में गाँव मजारे सुखी हुई सुखना चढ़ाने आया। गाड़ी में बैठा सोचता,

शायद राजा साहिब को मेरी सुखना का ध्यान ही नहीं हो, 100 रुपए प्रसाद क्या चढ़ाना, 50 का ही बाँट देते हैं। जब बंगा में गाड़ी से उतरा तो 50 से भी मन मुकरने लगा। सवा पाँच रुपए का प्रसाद करवाने का पक्का मन बना लिया। रसोखाने जाकर पाँच रुपए की रसद लेकर कड़ाह प्रसाद की पुरात भरके सतगुरू जी के पेश हुआ। आगे से सच्चे पातशाह बोले, "सिक्खा! 100 की सुखना करके 5 रुपए का। जो जुबान करिए पूरी करनी चाहिए। तब नहीं था पता जब नाक रगड़ता था।" यह तो नहीं कहा कि बना कर ले आओ लेकिन सच्चाई प्रकट कर दी। सच्चाई सुनते ही उस दानी पुरुष के पैर थिरक गए, सफेद दाढ़ी काँपने लगी, बहुत डर गया, पाँव पकड़ कर विनती करने लगा। मुझ गुनाहगार को बख्श दो, मैं भूल गया था, मेरा उजड़ा हुआ घर आपकी दया मेहर से बसा है। सौ रूपए निकाल कर चरणों में रख दिया। हुक्म हुआ, इसका कड़ाह प्रसाद लाकर संगत में बाँटा जाए। ऊधम सिंह झिंगड़ां वाले ने यह साखी सुनाई। उसे ननकाणे वाले सिख ने सुनाई थी। ऐसे लाखों ही उजड़े हुए घर आपने बसाए व कईयों का उद्धार किया।

बोलो भाई वाहेगुरू।

साखी बनारसी फलपोते वाले के साथ हुई

एक दिन महाराज जी करनाणे वाले रास्ते पर जाकर बैठ गए, रात को किसी को भी पता नहीं कि महाराज उठकर किधर चले गए। आपके कुत्ते भी साथ ही थे। बनारसी दास किसी जमींदार के लड्डू गाँव मूसापुर देने चला था। पीपा लड्डूओं से भरा हुआ था। बनारसी ने महाराज

जी को बैठे हुए देखकर नमस्कार किया। जब नमस्कार कर के आगे जाने लगा तो महाराज जी बोले, ''काका! पीपे में क्या है?'' बनारसी (नाइयों का लड़का) कहने लगा, ''जी, सच्चे पातशाह! निशानी के लड्डू हैं, गाँव फलपोते से आया, मूसापुर जाना है।'' महाराज कहते, काका! मेरे कुत्ते भूखे हैं, कुत्तों को लड्डू खिला दे। बनारसी डरते हुए लड्डू पाने लगा, आधा पीपा खिला दिया। कुत्तों को लड्डू खिला कर आगे जाने का हुक्म दिया। बनारसी पीपा उठाकर चल पड़ा, मन में बहुत डरता है, मैं क्या कहूँगा? गाँव के नजदीक जाकर पीपा खोलकर देखने लगा कि नहीं तो पीछे मुड़ कर बंगा से ले आऊँ, घर वाले गुस्से होंगे। ऐसा सोचते हुए जब पीपा खोला तो पीपा नको नक्क भरा हुआ था। बनारसी हैरान हो गया, वहाँ बैठा ही लाख–लाख नमस्कार करने लगा, ''धन्य है तू! धन्य है तेरी लीला। मेरे ही हाथों पीपा खाली करवा के दोबारा भर दिया मेरे गरीब की लाज रख ली।'' ऐसे चमत्कार संगत में दिखाकर हर रोज हैरान कर दिया करते थे। आप निरंकार जोत रूप हो के जीवों को धर्म में लगा रहे थे। खुदा की शक्ति प्रकट करते हैं।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी सरदारा सिंह रसूलपुरी को वर्मा में दर्शन देने की चली

सरदारा सिंह गाँव रसूलपुर तहसील जगराओं, जिला लुधियाना के सन्त अवधूतों के छोटे भाई थे। सरदारा सिंह नाभ कंवल राजा साहिब के बहुत प्रेमी व श्रद्धालु थे। सरदारा सिंह वर्मा में रहते थे। काफी समय तक वहाँ रहने के कारण कई मित्र–दोस्त बन गए,

इलाके में काफी जान पहचान हो गई। एक दिन सरदारा सिंह व उसके दो साथी सात मील दूर आसाम के रहने वाले कुछ दोस्तों को मिलने उनके घर गए। रात को भोजन कर के सो गए। अगले घर वालों के मन में बेईमानी आ गई, घर पर सलाह की कि तीन बन्दे चंगे नरोए काबू में आए हैं, इन्हें काबू करके जादू से गुलाम बना लें। जिंदगी भर इनसे काम लेंगे। तीनों बन्दे सोए पड़े थे, उन पर जादुई कारवाई शुरू कर दी। जब कीलने का काम शुरू, उधर भगत वछल, सिखों सेवकों, बन्धन काटने वाले, दुष्ट–दमन, अपने सेवक की लाज बचाने अपने भगत को काबू में देखकर आधी रात के समय जैसे भाई मरदाने को गुरू नानक जी ने ढाका बँगाल में मेंढा बने हुए को छुड़ाया था, उसी अंधेरी रात हजारों कोसों का रास्ता पार करके महाराज एक पलक में वर्मा पहुँच गए, जहाँ तीनों परदेसी राही काबू किए हुए थे। अन्दर जाकर सरदारा सिंह के सिरहाने जाकर बाजू पकड़ कर हिलाया, साथ ही दर्शन दिए। हुक्म किया, ''सरदारा! उठ जल्दी बाहर हो जा।'' सरदारा सिंह घबरा कर उठा। महाराज दर्शन की झलक दे गए, साथं ही बाहर जाने का हुक्म किया। सरदारा सिंह चुपचाप उठा, घर से बाहर निकला। छोटा सा डंडा हाथ लगा, वही उठाकर बाहर रास्ते में चला गया। पिछले गाँव जाने के लिए जंगली रास्ता था। रास्ते में हिंसक जानवर भी बहुत थे। सरदारा सिंह जानवरों की भयानक आवाजें सुनकर बहुत घबराया। मन प्रबल करके सत्गुरू के चरणों का ध्यान करके चला जाता है, जब सरदारा आधे रास्ते गया तो आगे से बब्बर शेर निकला। जैसे ट्रक की रोशनी आँखों को पड़ती है इसी तरह शेर के नेत्रों की रोशनी चमकें मारे। वह मस्त चाल में चला जा रहा था। जब शेर को आते सरदारा सिंह ने देखा

तो एक बार तो सारा शरीर बेजान सा ह गया। फिर महाराज जी के चरणों में अरदास की, ''हे मेरे सच्चे पातशाह! जैसे पहले पीछे से निकाल कर लाए, यहाँ भी आपकी मेहर से ही बचाव होगा।'' सरदारा सिंह ने सोटी हाथ से नीचे फैंक दी। गर्दन नीचे करके हाथ जोड़कर रास्ते में ही खड़ा हो गया। मन सतगुरू के चरणों में लगा दिया, फिर क्या था? शेर तीस कदम पीछे से ही रास्ता काटकर एक तरफ से आगे निकल गया। सरदारा सिंह की जान बच गई। लाख–लाख शुक्र करता, ''धन्य सच्चे पातशाह जी! आज मुझे मौत के मुँह से निकाल लिया है।'' सरदारा सिंह अपने पहले वाले घर आ गया। उधर दूसरे दोनों साथियों के हाल सुनो उन्हें जादू से काबू कर लिया गया था। ऐसे कीला कि उस गाँव की हद से बाहर न जा सके। यदि बाहर जाएं भी तो अपनी सुध न रहे। आजीवन उनकी ही चाकरी की।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

अगली साखी सरदारा सिंह के साथ हुई

सरदारा सिंह वर्मा में कुछ समय बिता कर सिंघापुर चले गए। कुछ समय बाद चीन व मलाया की जंग लग गई। चीन ने मलाया व सिंघापुर पर कब्जा कर लिया। सिंघापुर में जो हिन्दुस्तानी लोग रहते थे उनका माल धन चीनी लोग सब लूट लेते थे। काबू आने पर जान से ही खत्म कर देते थे। मारते भी बड़ी निर्दयता से थे। सरदारा सिंह व कुछ उसके साथी भी एक दिन कुछ चीनियों के हाथ आ गए। कुछ तो भाग गए लेकिन ये तीन बन्दे हाथ आ गए।

तीन दिन इन्हें पकड़ कर बन्द रखा। तीसरे दिन कोई आफिसर आया, इनकी पेशी हुई बयान लिए व गोली मारने का हुक्म हुआ। तीनों ही जवान एक कतार में खड़े कर लिए, गोली चलाने का हुक्म होने ही वाला था। साहब ने हुक्म किया कोई बात करना चाहते हो तो कर लो, सरदारा सिंह बोला– हमारी किसी के साथ कोई बात नहीं है। अपने मालिक के साथ बात कर लें, सरदारा सिंह की वृत्ति एकदम नाभ कंवल राजा साहिब के चरणों में जुड़ गई। खड़े–खड़े ही आँख लग गई, जैसे भीम चन्द कलूरीए की देवी चन्द नज़ीर का मन गुरू दशमेश के चरणों में जा लगा था। जब पहाड़ी की चोटी पर सलाइयाँ गर्म करके आँखों में फेरने लगे थे।

जा कऊ मुश्कलु अति बनै ढोई कोई न देई।
लागू होवै दुश्मना साक भी भज खले।
सभो भजै आसरा चुकै सभु असाउ।
चित आवै उस पारब्रह्म लगै न तत्ती वाऊ।

सरदारा सिंह का मन नाभ कंवल के चरणों में जुड़ गया, जैसे द्रोपदी की फरियाद पासा खेलते कृष्ण भगवान को एक पल में जा सुनी थी। इसी तरह सरदारा सिंह की अरदास मजारे बैठे भगत–वछल नाभ कमल राजा साहिब जी को जा सुनी। हजारों कोसों दूर से सिक्ख की आवाज कानों पड़ते ही एक क्षण में घोड़े पर रखे हुए हाथ को पकड़ लिया। सरदारा सिंह को जाकर दर्शन दिए, सिर पर हाथ रखा आकाशवाणी की तरह कान में आवाज आई, ''काका! हमारे होते हुए तुझे कोई नहीं मार सकता।'' साहब के गोली चलाने वाले मन को ताले लगा दिए ऐसी चाबी लगाई कि बन्दूक के घोड़े से हाथ पीछे हट गया। मन

में दया रानी ने डेरा ला लिया, खड़े कैदियों को पास बुलाया, कहा, ''बताओ! क्या चाहते हो? तुम्हें मारते नहीं यदि काम करना चाहते हैं तो काम करो यदि इण्डिया जाना चाहते हो तो इण्डिया चले जाओ, यदि सरकार की नौकरी करनी है तो नौकरी करो।'' एक कहने लगा मैं इण्डिया जाना चाहता हूँ, उसे इण्डिया भेज दिया। सरदारा सिंह से पूछा, ''यदि तू इस आदमी का जिम्मेवार है तो इसे भी काम देते हैं।'' सरदारा सिंह के साथ वाला जो दूसरा आदमी था उसे भी काम दे दिया। कोई माल था उसे ऊपर पहरे की ड्यूटी लगा दी। सरदारा सिंह ड्राइवरी का काम जानता था, वह साहब की कार चलाने लग गया। दूसरा आदमी दो साल नौकरी करके कोई दो लाख का सामान चुरा कर किसी दूसरी तरफ चला गया, आखिर पकड़ा गया, पकड़े जाने के बाद उसका कुछ पता नहीं लगा। सरदारा सिंह पाँच साल रहकर इण्डिया आ गया। एक लाइसैंसी पक्की राइफल व दो सिपाही उसे इण्डिया छोड़कर गए वो भी साहब के हुक्म से।

बोलो जी वाहेगुरू।

आगे साखी सीबो रहिप्पे वाली को पुत्रों की बख्शीश की चली

एक दिन महाराज नाभ कंवल राजा साहिब जी अपने घर पलंग पर बैठे थे। करतार के साथ ध्यान लगा हुआ था, मुक्ता–भुक्ता के दरबार खुले थे। दरगाही कलमें बह रहीं थीं। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पदार्थ हाजिर थे। अठारह ऋद्धियां सिद्धियां हाथ जोड़कर खड़ी थीं। इतने में करतार सिंह के घर वाली नत्था सिंह की नूँह बीबी नसीब कौर सतगुरू के लिए अधरिड़के दही की गड़वी लेकर हाजिर हुई। बहुत प्रेम से

नमस्कार करके विनती की, ''सच्चे पातशाह! श्वासों के सहाई होना, मैं गरीब निरासरी को चरणों में ठिकाना देना।'' जब दर्द भरी शबरी वाली प्रबल जन की विनती सुनी, मेहरबान मेहरों के दाता ने जरा रहमत भरी नजरों से एक बार देखकर कहा, ''ले आज अवतार कौर! तुझे आज बर्तनों की मंजाई दे ही दें।'' अपने स्नान करने वाली गागर में से एक गड़वा जल का भरने का हुक्म हुआ। कहा, ''ले जा इसमें और जल डालकर स्नान कर ले।'' सीबो ने नलके की तरफ आकर और जल डालकर स्नान किया। कोई अमृत जैसा पानी अपनी गागर में से बख्शीश करके जिस सारे तीर्थों का फल इकट्ठा करके कुँभ लगाकर सोई हुई किस्मत का खेत हरा किया। स्नान करने के बाद पास बुलाकर हुक्म किया, ''अवतार कौर! ले आ तुम्हारे पास कितने रुपए हैं?'' तीस रुपए सीबो के पास थे। दो–दो रुपए बुलाकर लागियों को दिलाए। कहा, ''आज तुझे कबीलदारनी बना दिया है। तेरी किस्मत में तो औलाद हैं न थी। जिसने हमें पानी का घूँट भी पिलाया हो, दो सलाइयाँ सुरमा भी डाला हो, उसका भी हमने मुआवजा दे दिया है। आज तुझे भी बर्तनों की सफाई का कुछ दे ही देते हैं।'' दो आम महाराज जी ने सिरहाने से उठाकर सीबो के पल्ले में डाले, एक आम पल्ले में से गिर गया। जब उठाने लगी तो महाराज जी कहते, ''बहुटी! रहने दे, जो गिर ही गया उसका क्या उठाना, तेरे योग्य एक ही काफी है।'' महाराज के बख्शे हुए फल के हुक्म अनुसार दो लड़के हुए। पहला मर गया, एक राजी खुशी इस समय इंग्लैंड में गया हुआ है। ऐसे शक्तिमान दुनियां में कोई विरले ही होते हैं जिनकी एक एक बात में बड़ी–बड़ी बरकतें होती हैं। ऐसी हस्तियों के जो हुक्मनामे होते हैं वो दरगाही कानून ही बन जाते हैं।

बोलो जी वाहेगुरू।

आगे साखी धन्नो ददियाल की माई साथ हुई

धन्नो गाँव ददियाल की निवासी थी। इसकी लड़की बकापुर धमाई ब्याही गई थी। लड़की की शादी को दस साल बीत गए लेकिन कोई बच्चा नहीं हुआ। इसका पति अभागी समझ कर इसे मायके घर ददियाल छोड़ गया। आप दूसरी शादी कराने के चक्कर में घूमने लगा। धन्नो बेचारी निरासरी हो गई। पुराने समय में सामाजी तौर पर लोग औरत को पैर की जूती समझते थे। औरत जामे की जद्दी जायदाद नहीं होती थी। आकाश वेल की तरह एक पति के आसरे ही जिन्दगी कटती थी। माँ को बेटियों का बड़ा दर्द होता है। धन्नो इधर उधर हाथ पाँव मारने लगी, टूणे–टामण, धागे–तवीत, जैसे कोई डूबते हुए हाथ पैर मारता है, वैसे धन्नो माई ने भी कोशिश की। एक दिन करतार सिंह मजारे वाला ददियाल ससुराल घर गया। पहले करतार सिंह ददियाल में ब्याहया गया था। धन्नो करतार सिंह को कहने लगी, ''करतार सिंह! आपके घर राजा साहिब जी रहते हैं, मेरी पुत्री के लिए राजा साहिब जी से कोई वचन ले दो, मेरी पुत्री का वसेबा हो जाए। लोग कहते हैं कि उनके चरणों में जो भी जाता है उनके मनोरथ पूर्ण होते हैं।'' करतार सिंह कहता, ''माई आप खुद ही आकर विनती करना, वहाँ सिफारशी काम नहीं बनते।'' करतार सिंह के साथ ही माई धन्नो मजारे आई। धन्नो माई करतार सिंह के घर आ गई। महाराज दरवाजे के सामने दौले के घर बैठे थे। रात को प्रसादा छकने के बाद संगत की आवाजाई कम हो गई, खाली समय था। करतार सिंह की माई जस्सी उस बुढ़िया को साथ लेकर महाराज जी के पेश हुई, साथ ही जस्सी दूध की गड़वी ले आई। महाराज जी बहुत ही खुशी में बैठे थे। अच्छा समय देखकर जस्सी ने उस बुढ़िया की तरफ से विनती की, ''सच्चे

पातशाह! इस बढ़िया की लड़की के घर बच्चा नहीं होता, उसके ससुराल वालों ने छोड़ दिया है, उसका पति और शादी कराने को फिरता है। सच्चे पातशाह! लड़की के कोई बच्चा हो जाए तो उसका वसेबा हो जाए।'' पातशाह पूछने लगे इसके नानके कहाँ हैं। दादके कहाँ हैं? यह सारी मिसल जस्सी से पूछी गए इस के पति का नाम क्या है। लड़की का नाम क्या है। महाराज जी खुशी–खुशी बैठे पूछ रहे थे। बैठे–बैठे धन्नो माई बोली, ''सच्चे पातशाह! यदि मेरी लड़की के सन्तान हो जाए तो मैं सौ रुपए आपके दरबार चढ़ाऊँ और मेरी लड़की पतीस मर जाए जो मेरे लड़की को लाखों तसीहे देती है।'' जब पतीस के मरने की बात धन्नो ने कही तो महाराज ने पास पड़े खूँडे को उठा लिया और धन्नो के एक एक करके पाँच खूँडे मारे और बोले, ''सालिए! तेरी लड़की का काम तो कर दिया, तेरी लड़की की पतीस का मैं कातिल बनूँ? साथ ही जस्सी को भी गालियाँ निकाली, दरबार से बाहर कर दिया। जो पाँच खूँटे मारे थे उसी धन्नों की लड़की के पेट से तीन लड़के व दो लड़कियों ने जन्म लिया। परिवार में बैठे दिखाई न दे। धन्न राजा साहिब तेरी लीला का कोई अन्त नहीं। उस बुढ़िया के पाँच छिटियाँ मारकर उसकी माँग पूरी की। उसकी पुत्री का पुनः वसेबा ससुराल घर हो गया।

बोलो जी वाहेगुरू।

आगे साखी लक्ष्मी को पुत्र बख्शिश की चली

दौलत सिंह गाँव मजारे का जाति से लुहार शिमला में ठेकेदारी का काम करता था। इसके घर वाली लक्ष्मी की कोख से औलाद न हुई, कई साल बीत गए। पेट में कोई खराबी होने के कारण चार पाँच

महीन का गर्भ होकर गिर जाता था। लक्ष्मी बहुत बीमार रहती। इसी वजह से लक्ष्मी की सेहत बहुत कमजोर हो गई, सभी आशाएँ समाप्त हो गई, बहुत इलाज करके भी आराम न आया। सभी तरफ से निराश होकर फिर इलाही घर का आश्रय लिया। सारा धन भी व्यर्थ ही जाता नजर आने लगा। शिमले बैठे उस प्रीतम का ख्याल आया। ''अपने गाँव मजारे करतार का रूप, कई लोगों के बेड़े पार करता है, चलो उस दाते का दरबार मल्लीए, जहाँ से कोई खाली नहीं आता।'' दौलत सिंह व लक्ष्मी शिमला से मजारा आए। मन में एक विश्वास लेकर राजा साहिब के दरबार पहुंच गए। दिल बहुत तेज धड़क रहा था, इसलिए कि यहाँ से जवाब न मिल जाए। पता नहीं क्या हुक्म होना है? मन में बोलने की शक्ति नहीं थी। सिर चकरा रहा था। गले में पल्ला डालकर ड्योढ़ी की पौड़ियों में तन मन धन से मस्तक रगड़ कर नमस्कार की। धीरे–धीरे दरावजे पर जाकर खड़े हो गए। आगे दरवाजा बन्द था। चुपचाप हाथ जोड़ कर झोली फैलाकर खड़े हैं। कुछ खड़े होकर लक्ष्मी करतार सिंह की माता जस्सी के पास जा बैठी हाथ जोड़ कर विनती की, ''माता जी! आप हर समय सरकार के चरणों में रहते हो, पीरों के पीर के चरणों में मेरी परियाद पहुँचाओ यदि मुझ अभागी कर्महीन पर रहमत कर दें, मेरा भी संसार में कोई नाम निशान रह जाए।'' जस्सी ने कहा, ''बीबी जी चलो! दरवाजे के आगे चलो। महाराज जी सब जीवों की गति जानते हैं। किसी की सिफारिश की जरूरत नहीं।'' इतना सुनकर लक्ष्मी चौकड़ी लगाकर बैठ गई। आँखें बन्द करके महाराज का ध्यान करके बैठ गई। कुछ समय बैठी को हुआ। मेहरों के दाता ने अन्दर से ही आवाज दी, ''जस्सी! क्या माँगती है लुहारी।'' जस्सी, ''जी आप सब जानते हो।'' दरबार खोला दर्शन किए, झुलसी हुई किस्मत का बगीचा हरा हो गया। दर्शन किए तो निहाल हो गए। सारे कलेश दूर हो गए। बख्शिस हुई।

जस्सी को हुक्म हुआ, ''वह पड़ा हमारा चोगा किल्ली से लटका हुआ, लुहारी को कहो पहन ले।'' जस्सी ने आपका पवित्र चोगा लक्ष्मी के हाथों में रख दिया। लक्ष्मी ने चोगे को सत–शत नमन किया। जस्सी कहती, ''इसे एक बार गले पा लो।'' लक्ष्मी ने एक बार गले में डालकर फिर उतारकर अपने घर में रख लिया, लक्ष्मी का रोम रोम सुनहरी हो गया। सभी उलाहमें दूर हो गए, पुत्रवती हो गई। फिर कभी हमल गिरने की बात न हुई। ऐसा लाइक पुत्र जन्मा कि लाखों का मालिक बनकर शिमला में ठेकेदारी कर रहा है। यही अद्‌भुत शक्ति थी महाराज की जिससे वे नयनों के इशारे से ही हजारों की अलाहमतें दूर कर दिया करते थे।

बोलो जी वाहेगुरू।

आगे साखी कर्मी व रक्खी को पुत्रों की बख्शिश की चली

कर्मी व रक्खी दोनों चाची भतीजी थीं। काफी उमर बीत जाने पर भी बिना औलदा के थी। घर का भाग विधवा औरत के मस्तक की तरह अनबूझा सा रहता है। बिना बच्चों के माताएँ भले ही रूप सौन्दर्य से लबालब भरी हों लेकिन फिर भी श्रृंगार हीन ही लगती हैं। कई कुछ करने पर भी गोदी में लाल नहीं खेला। दिल से निराश होकर चुफेरे नज़र दौड़ाई कि किसी बड़े वैद्य को दुःख बताया जाए। रक्खी कर्मी को कहने लगी, ''धीए! और सभी वैद्य, हकीम धागे तवीत वालों का ख्याल छोड़कर एक पीरों के पीर धनंतर वैद्य का बूहा चल के मल्लीए। आप ही बूहे बैठों की लाज रखेगा।'' हर रोज हाजरी भरने का नियम बना लिया। काफी समय इसी तरह सेवा में जुटी रहीं। एक दिन ऐसा भागों वाला दिन आया, पूर्णमाशी की रात बीत चुकी थी। सुबह उठकर सतगुरू के चरणों में जा बैठीं। दोनों चाची

भतीजी गले में पल्ला डालकर नीवीं नजर करके ध्यानमग्न होकर ठण्डे श्वास भरन लगीं। महाराज जी उस समय ऐसे रंग में बैठे थे कि चेहरे का जगमगाता नूर ब्रह्मा शिव जी भी नहीं सहार सकते थे। तेतीस करोड़ देवता हाथ जोड़कर खड़े थे। गन्धर्व गायन कर रहे थे। महाराज अपनी तेजस्वी आँखों से जिसे भी निहारते सबके मनोरथ पूरे हो जाते। दोनों भिखारिन योगिनें बनकर बैठीं उस ऊँची व सच्ची सुच्ची नुहार वाले दग–दग करते नूरानी मुखड़े की ठंडी–ठंडी छाया का आनन्द ले रहीं थीं। कभी कभी चोर भिलाई देकर देख लेती। नजर तरसीवी है, अन्दर कोई लालसा है, आज को शुभ वचन दे ही दें तो अच्छा है। आज जैसा समय पहले कभी न मिला, कभी यकीन नहीं आता है, कभी दिल की धड़कन बढ़ जाती है हाथ जुड़े हुए हैं, मन मँगता (भिखारी) बना हुआ है। हजूर के पास तीन दिए ताकि में पड़े थे। कर्मी को दो दीवे उठाने का हुक्म दिया। रक्खी को एक बड़ा दीवा था वही देकर कहा चल तुझे एक ही काफी है। समय बीतने पर रक्खी के एक व कर्मी के दो पुत्र हुए।

बोलो जी वाहेगुरू।

साखी कर्मी व दौले की चली

कर्मी दौला मज़ारा गाँव का निवासी महाराज जी का अनन्य सेवक था। प्रत्येक कार्य करने से पहले सिरसा आश्रम की मर्यादा अनुसार अपने सत्गुरू के चरणों में अरदास करके आज्ञा मांगता था! फिर काम शुरू करता था। अगर कहीं पर जाना तो महाराज जी की इजाज़त लेकर जाना कर्मी का नियम था कि हर रोज महाराज जी के लिए सुच्चा दूध दही लेकर आना। फिर महाराज चाहे उसे

स्वयं ग्रहण, कुत्तों को डाल दें या फिर ऐसे ही डोल दें लेकिन अपने नियम की धारणा में कोई कमी नहीं आने दी।

- *सेवक कऊ सेवा बनि आई। हुकमु बूझि परम पद पाई।। अंक 292*
- *तन मन धन सब सउपि गुरू को हुकमि मनीऐ पाइअै। अंक 918*

जब सेवक सच्चे ह्दय से सतगुरू की सेवा करता है, तो सतगुरू हर एक ही हर जगह रक्षा करता है। एक दिन ऐसा हुक्म हुआ, कर्मी को सुनेहा भेजकर कहा, ''आज कर्मी का पहरा है।'' सर्दियों का मौसम था, डर लगता था। बादलं की गर्जना से धरती काँपती थी, वातावरण साँ–साँ करता वृक्षों की जड़ें हिला रहा था। धरती फट रही थी, जानवर मर रहे थे। महाराज जी करतार सिंह के घर बैठे थे। हुक्म के अनुसार कर्मी हाजर हुई। हुक्म हुआ, ''कर्मी! आज तुम्हारा पहरा है।'' कर्मी दरबार आगे हाथ जोड़कर बैठ गई। सारी रात कर्मी बैठी रही। प्रभात वेला हुई। चिड़ियों ने चूँ–चूँ का तराना छेड़ा था। सारी रात कर्मी अन्दर बैठे मानकर चौकड़ी मारकर बैठी रही। महाराज जी दिन निकलते ही पता नहीं कौन से सेवक का कारज सँवार कर वल–वल करते बाहर से चले आ रहे थे। आकर हुक्म हुआ, ''ओह कर्मी! तू बैठी है? आज कर्मी क्या देंय कर्मी वह उठा हमारी स्नान करने वाली गागर जल से भरी हुई है। आज तेरा स्नान गंगा पराग करा दें।'' पहले सारी रात बाहर बैठी रही, अब ठरे हुए पानी से नहाने को दिल न करे। महाराज जी कहा, ''फटाफट कर, हुक्म नहीं टालते।'' जब कर्मी ने स्नान किया तो पानी गर्म लगा।

बोलो जी वाहेगुरू।

दूसरी साखी कर्मी दौले के साथ हुई

डरावनी रात में एक दिन पैहरा देने के बाद कर्मी लेपन के लिए मिट्टी का टोकरा लेने गई। महाराज जी पीछे पश्चिम की तरफ तुंगल के कुएँ पर बैठे थे। संगतों की आवाजाई काफी लगी हुई थी। संगत मन माँगी मुरादें पा रही थी। महाराज जी की करतार के साथ लग्न लगी हुई थी। उनके मन में ख्याल आया। कर्मी दौला भगत हैं, घर वसना ही चाहिए। पहले कर्मी के चार लड़कियाँ ही थीं पर पुत्र कोई नहीं था। मन में पुत्रों की चाहत लगी रहती थी। जब कर्मी को पता लगा कि मेहरों के दाता ने मुरादों के बूहे खोले हैं तो एक दिन कर्मी प्रीतम के चरणों में गिर पड़ी, वैराग्य छिड़ गया, रो रोकर आँसुओं की नदी बहा दी। मन भिखारी बन गया, सिर ऊपर को उठाया दोबारा फिर नीवीं पाकर बैठ गई। मन चरणों की ओर मुड़ गया। हाथ जोड़ लिए, इलाही मुखड़े को देखा। दो चार लम्बे–लम्बे सांस लिए। महाराज एक मेहर भरी नजर देकर बोले, ''ले कर्मो! आज तुझे कर्मो वाली बना दिया है।'' दौला भी रोते–रोते आया व चरणों में गिर कर रोते–रोते मन में बोला। महाराज ने सारी दुनिया की झोलियाँ भर दीं, हमारी बारी पता नहीं कहाँ चले गए? हमारी बारी आपके घर कुछ नहीं। महाराज बोले, ''दौला चल! भाग! आज सब कुछ दे दिया है। सौण को बधाइयाँ मिल जाएँगी।'' बच्चा होने के कुछ दिन पहले ही महाराज लागियों को बधाई देने भेज देते। जिस दिन बच्चा हुआ, महाराज जी सुबह आ के कोठे चढ़ कर चौबारे में बैठ गए। जीणी दाई आई, महाराज बोले, ''जीणी! कर्मी को आज बधाई देकर जाना।'' दिन के बारह

बजे लड़का पैदा हुआ। महाराज जी के हुक्म से मेजर नाम रखा। चार लड़के ऐसे ही हुए। जब हजारों औतरे घर बसाए तो महाराज जी की जै जै कार होने लगी।

बोलो जी वाहेगुरु।

तीसरी साखी कर्मी के साथ हुई

एक दिन ऐसा आया दौले कर्मी के घर कोई नुक्सान होने वाला था। पता नहीं कोई ऐसा ग्रह था जिससे मौत भी हो जाती। सुबह ही महाराज डयोढ़ी में आकर खड़े हो कर बोले, ''कर्मी! नीचे कपड़ा बिछाओ, अफसोस कर लें।'' जब कर्मी ने खण्डों ब्रह्मांडों के मालिक से ये शब्द सुना तो उसका शरीर पानी–पानी हो गया। थर–थर काँपने लगी। सबको पता था पातशाह की रसना से वही निकलता है जो दरगाही हुक्म हो।

''जैसी मैं आवै खस्म की बाणी तैसड़ा करी ज्ञान वे लालो।''

जो जीवों का कर्म आगे आने वाला हो, सब आपकी नज़रों में बरतता है। जब कर्मी को कपड़ा नीचे बिछाने को कहा तो कर्मी हाथ जोड़कर विनती करती है, ''जी पातशाहो! बख्शो! महाराज जी! औगुण हारयाँ को औगुण मुक्त करो जी।'' फिर हुक्म हुआ, ''अच्छा चारपाई पर कपड़ा बिछा संकट टल गया है।'' जब दो तीन दिन घर बैठे को हुए तो एक कुत्ता जो पाँच सेर घी खाकर हजम कर जाता था, चारपाई पर ही पड़ा मर गया। जब कुत्ते की देह छूटी तो कर्मी को हुक्म दिया, ''कर्मी! कफन लाओ और कफन के साथ कुत्ते को दफना कर आओ।'' कर्मी व दौले को हुक्म हुआ, ''कुत्ता उठाकर बाहर खेत में दफना आओ।'' इतने में

बन्त कौर नामक सिखणी ने आकर प्रणाम किया तो महाराज जी ने दोनों हाथों में दो सफेद रंग साँप पकड़े हुए थे, जैसे रेशम के लच्छे पकड़े हों। बन्त कौर डर गई। महाराज जी बोले, ''बन्तो! डरते नहीं, ये साँप इसलिए पकड़े हैं मैं गुणाचौर वाली नामी का लड़का लेने आए हैं। बन्तो! हमसे आज्ञा लेने आए हैं। बताओ आज्ञा दें या नहीं?'' फिर दोबारा बोले, ''बन्तो! नामी को कह देना था, चलो जाने ही देते हैं।'' बन्तो कहने लगी, ''जी! मेहर करो। यमों को मोड़ दो, लड़का बच जाए तो अच्छी बात है।'' फिर हुक्म हुआ, ''खुदा की रज़ा तोड़ना अच्छी बात नहीं है कर्मी का आज संकट काटा गया।'' अब कर्मी दौला भी कुत्ते को दबाकर घर आ गए। महाराज जी के चरणों में गिर पड़े व विनती की, ''जी आप हर स्थान पर हाजर नाजर हो। हमारी गलतियों को न देखना, हमारी भूलों पर पर्दा पाना।'' इतने में पता चला कि गुणाचौर वाली नामी का लड़का मर गया। इस तरह के चोज़ करके सिख सेवकों के कारज कर दिया करते थे। हजारों ही अलाहमतों से बचा लेते थे।

आपनै जन का परदा ढाकै। अपने सेवक की सर पर राखै।
जहा जहा काज किरति सेवक की तह तह उठ धावै।
सेवक कउ निकटी होई दिखावै।
बोलो जी वाहेगुरू।

चौथी साखी कर्मी के साथ चली

कर्मी का महाराज जी पर बहुत भरोसा था। हर काम सतगुरू के हुकम में करती थी। एक दिन महाराज जी ने सुबह ही कर्मी के घर आकर एक रुपया दिया व हुक्म किया, ''कर्मी! ले कहीं रिश्तेदारी में जाना पड़ता है, खर्च कर लेना।'' कर्मी नहीं–नहीं करती रही। उन्होंने

जबरदस्ती रुपया पकड़ा ही दिया। कुछ देर बाद सन्देश आ गया कि कर्मी का मामा मर गया है। कर्मी को उसी समय जाना पड़ा। एक दिन कर्मी विचौली बन कर बहन की लड़की का रिश्ता गाँव मजारे किसी लड़के क कराने जाने लगी। महाराज जी से हुक्मनामा लेने के लिए गई तो आगे से सब जीवों की गति को जानने वाले महाराज जी कहने लगे, ''कर्मी वाँडे तो कहीं जाते ही नहीं।'' पर बुढ़ियों को विचौलणें बनने का शौक होता है, रुकी नहीं, चली ही गई। राह में किसी का गड्डा जा रहा था, उस पर बैठ गई। गड्डा जाते–जाते रास्ते में ही गिर कर लोट–पोट हो गया। कर्मी की बक्खी में खासी चोट लग गई। बहन के घर गई तो उन्होंने भी रिश्ते से जवाब दे दिया। अच्छी शर्मिन्दा होकर घर वापिस आई। पसलियों का बहुत इलाज करवाया पर कहीं से आराम न आया। हार कर एक दिन रोगियों के रोग काटनहार उस साहिब के आगे जाकर बैठ गई। सावन के बादलों की तरह आँसुओं की झड़ी लगा दी। हुक्म हुआ दो आदमी कहीं दूर के थे। खानखाना के भगवान सिंह के साथ कर्मी के घर भेजे व हुक्म किया, ''चल कर्मी! इन राहगीरों को प्रसादे छकाओ। अच्छी तरह अतिथियों की सेवा करनी।'' उन्हें प्रसादे छकाने के बाद एक राही और भेज दिया। जब तीसरा आदमी भेजा तो कर्मी घर बैठी रो पड़ी। पसलियों को आराम नहीं मिल रहा था। खैर तीसरे आदमी को भी रोटी खिलाई। दूसरे दिन एक लिफाफा पेड़ों का दो सेर पक्के का भेज दिया। भाने को यह भी कह दिया कि कर्मी को कहना कि खा ले। पेड़ों का लिफाफा महाराज जी का भेजा हुआ कर्मी के घर आया तो कर्मी कहने लगी मुझे एक पेड़ा दे दो बाकी रख लो। पता नहीं साथ ही कोई लेने के लिए भेजे दे। कर्मी ने जैसे ही पेड़ा मुँह में डाला तो अन्दर जाते ही दो तीन ऊपर छालें आ गईं। उसी समय जो बगलें छः महीने से दुःख रहीं थीं उसी क्षण राजी हो

गई। एक दिन कर्मी महाराज जी के दर्शनों के लिए घर से गई, आगे से कर्मी को महाराज ने बैठे रहने का हुक्म किया। काफी समय बैठे रहने के कारण लड़की रोने लगी। दौले ने लड़की को उठाकर बिठाया। पर माँ के बिना बच्चे दो मिन्ट भी रखने मुश्किल हैं। बैठी कर्मी को हुक्म हुआ कि ,''कर्मी! चल घर से पानी का गड़वा लेकर आ।'' जब कर्मी घर गई तो दौला कहने लगा, ''लड़की को साथ ही ले जाया कर, मुझे बड़ी मुश्किल होती है।'' कर्मी ने उसी समय पानी का गड़वा भरकर अरदास की, ''हे सच्चे पातशाह! या लड़की मर जाए या रोवे न, मेरे प्यार में विघ्न न पड़े।'' जब कर्मी पानी का गड़वा लकर हाजिर हुई तो घट घट के वासी प्रीतम ने कर्मी को पास बुलाकर दोनों हाथों को एक हाथ में पकड़कर खींच खींच कर चपेड़ें मारीं। कहा, ''लड़की का बुरा चाहती है। पकड़ कान, ऐसा बुरा किसी भी का नहीं चाहना, हाँ, आज से रोएगी नहीं। उस छोटी सी बच्ची को पता नहीं क्या सबर का जाम पिला दिया। देवी बनके शान्त रहने लगी। इतनी बरकतें थीं उस प्रीतम की निगाहों में। जो कुछ भी रसना से निकल जाता, सब सत्य हो जाता। एक दिन कर्मी का भाई गुरदास सिंह गाँव मंगूवाल में बहुत बीमार हो गया। मरने वाला होने के कारण सुनेहा भेज दिया। लागी गाँव मजारे से कर्मी को लेने आ गया। कर्मी भाई की सख्त बीमार सुन कर बहुत घबरा गई। महाराज जी के पास भागी, जाकर अर्ज की, ''जी मेरा भाई बहुत बीमार है, बन्दा लेने आया है। आप मेहर करो। आपके हुक्म मुताबिक ही उसका इलाज करूँगी।'' पहले तो महाराज जी बोले, ''कर्मी क्या हम कोई हकीम हैं? किसी अच्छे से हकीम से इलाज करा लें।'' कर्मी को काफी हौसला हुआ कि राजी हो जाएगा। सुख ही रहेगी। कर्मी फिर बोली, ''जी! जल्दी बताओ जी।' हुक्म हुआ– चल बनक्शा उबालकर दे देना। कर्मी छलांगे लगाती हुई मायके घर

मँगूवाल चली गई। आगे हकीम साहिब बैठे थे। गुरदास को कोई पता नहीं कि कहाँ पड़ा है और क्या हो रहा है? बिस्तर में बेहोश था। कर्मी ने सच्चे पिता महाराज जी के हुक्म अनुसार दो चम्मचे बनक्शा उबालकर मुँह में डाले। जैसे ही पानी अन्दर गया गुरदास सिंह खुंभ की तरह खिलकर बैठ गया। डाक्टर साहिब हैरान थे। बीमारी बनक्शों के उल्ट थी, बनकशों से तो हरकत होनी थी, पर कर्मी ने सारी कहानी महाराज जी के हुक्म की कह सुनाई तो सभी को यकीन हो गया। धन्य राजा साहिब जी तेरी कमाई। नज़रों से ही सब संगतों के भले हो जाते हैं। बड़े–बड़े रोगी एक, बार जमाल करने से ही राजी हो जाते हैं। जब कर्मी एक हफ्ते बाद मायके से ससुराल जाने लगी तो कर्मी की माई एक कपड़ा मलमल का व दो रुपए चाँदी के दिए। मजारे आते ही पहले महाराज जी के दर्शन करने गई। उस दिन महाराज जी भागू के चुबारे में बैठे थे। जब कर्मी ने जाकर नमस्कार की, तो माई का दिया हुआ कपड़ा महाराज जी ने लेकर जीणी चूहड़ी को दिला दिया। फिर हुक्म हुआ, कहा, ''कर्मी! हाला ले आओ।'' कर्मी कहती जी घर से लेकर दूँगी, मेरे पास तो है नहीं।'' महाराज जी कहने लगे, ''जेब देख लो, कर्मी ने एकदम से एक रुपया निकाल कर दिया व बोली–मेरे पास यही है। पातशाह कहने लगे, ''और भी होगा, देख तो।''कर्मी ने कई बहाने मारे पर घट–घट की खबर रखने वाले से भला कैसे छुपा सकती थी। दूसरा भी निकलवाकर ही हटे। दोनों रुपए लेकर नामी के हाथ दे दिए। हुक्म किया, ''जा करतारी क घर जाओ। यही हमारी सरदारी बनती है।'' भागू की बहन नामी गाँव मूसापुर व्याही गई थी। महाराज जी के पास से उठ कर दोनों रुपए लेकर जेब में डालकर कोठे से नीचे उतरकर घर होकर ससुराल घर चली गई। पीछे से महाराज जी कहने लगे, ''कर्मी! हमारा ब्याज बहुत सख्त है, नामी ससुराल दो रुपए

ले गई, ब्याज तो देना ही पड़ेगा।'' नामी घर चली गई। दूसरे दिन तबीत जहाँ रखे थे जब देखे तो तबीत न मिले। देख कर हैरान हो गई। बहुत ढूँढा पर कहीं न मिले। कोई पेश न गई, फिर महाराज के आगे नाक रगड़ती फिरे। महाराज जी बोले मेरा तो ब्याज लोगों से छः गुणा ज्यादा लग जाता है। फिर पछताने लगी पर फकीर की बग्घी को मोड़े कौन? कर्मी के घर एक दिन महाराज जी आ कर बैठे थे। एक गुरमुख संतरों की टोकरी लेकर आया। नमस्कार करके चला गया। पीछे से आपने एक–एक करके संतरे डियोढ़ी में से ही रास्ते की तरफ बैठे हुए बच्चों की ओर फैंकने शुरू कर दिए। कर्मी ने पहले ही सन्तरा महाराज जी से चोरी उठा लिया। जब सारे संतरे बाहर बच्चों के आगे फैंक दिए तो कर्मी को आवाज दी, कर्मी दौड़कर हाजिर हुई तो दो तीन चपेड़ें लगीं, पाँच–सात गालियाँ भी मिलीं, ''हमारा सन्तरा एक कम हो गया, आपके घर चोरी हुआ है।'' कर्मी अपने घर संतरा काट कर खा चुकी थी। महाराज जी कहते कि मेरा संतरा लाकर दे। कर्मी ने बड़े मिन्नत तरले किए, ''जी! और लाकर दूँ, हम संतरा खा बैठी हैं, और ला देती हूँ।'' महाराज जी बोले, ''वही लेना है, खाया क्यों? तुम्हें पता नहीं था कि दो आने रुपए मेरा ब्याज लगता है।'' कर्मी को यही बताना था कि चोरी करनी, निन्दा करना व झूठ बोलना पाप है। हिदायत हुई कान पकड़वाए, सात लकीरें नाक से निकलवाईं। कर्मी के साथ बहुत वचन हुए हैं। दरवाजे के आगे दौले व कर्मी का घर है। पर ज्यादा ग्रंथ बढ़ने के वैसे संकोच ही थे। महाराज इस घर में बहुत रहा करते थे। कर्मी का बहुत प्रेम था। सच्चे पातशाह के समा जाने के बाद कर्मी उदास रहा करे। वैराग्य में घर का काम भी न किया करे। एक दिन कर्मी बाहर खेतों की तरफ रोटी लेकर जा रही थी। एक दिन दर्शन दिए व हुक्म हुआ, ''रोना नहीं! हम हर दम तेरे पास हैं। जब याद करेंगी

तो हाजर जाएंगे।'' कर्मी जब भी किसी काम या दुःख तकलीफ में याद करती तो क्षण भर में ही काम कर जाते हैं।

बोलो बाई नाभ कंवल राजा साहिब जी की जय

साखी बड़ी माता दर्शनों को आई

एक दिन महाराज जी किरपे के चुबारे में बैठे हुए थे। चाँद की चाँदनी चमक रही थी चन्द्रमा की किरण पृथ्वी की ओर कश की तरह चमक रही थी। ठण्डी–ठण्डी हवा चली हुई थी। अमृत वेला होने वाला था। किसी तरफ चक्कियाँ चल रही थीं। मुटियारें गाय–भैंसों को दूह कर दूध की बाल्टियाँ भर कर लिए आ रही थीं। माई बन्त कौर गाय का अमृत जैसा दूध गड़वी भर कर पौ फटते ही महाराज जी के दरबार पर रखकर बैठ गई। मन में कोई माँग थी। पुत्र के बिना गोद सूनी थी। एक चित्त होकर बैठी रही। दरबार बन्द था। चरणों में ध्यान जुड़ा है। भिखारिन बन कर माता सुलक्खनी की तरह झोली फैलाकर आगे बैठी है। इतने में आकाश से कोई जगमगाती शक्ति उतरी, जिसके चेहरे का तेज सहारा नहीं जाता था। नीचे चाँदी का पीढ़ा जड़ा हुआ है। मंजी से उतरकर राजा साहिब के दरबार आगे सलाम किए। कुछ समय बैठकर वह शक्ति बन्तो को कहने लगी , ''आप बताओ माई! महाराज जी मुझे दर्शन देंगे, मुझे कोई वचन देंगे।'' बन्तो कहती, ''आप हो कौन? कहाँ से आए हो? मुझे तो पता नहीं क्या कहते हो?'' अबला बोली, ''मैं हूँ बड़ी माता, मैं आई हूँ इस इलाके की सैर करन के लिए, इजाजत माँगती हूँ राजा बली से, जो हुक्म होगा, करूँगी। कहते! जीवों का भला कर रहे हैं।'' बन्त कौर बोली, ''जी हाँ! जो भी दर्शन कर लेता है, बस जन्म जन्मांतरों के सब रोग मिट जाते हैं। जो माँगे ठाकुर अपने से सोई सोई देवै।'' इतने में अन्दर से कुण्डी खुली, अन्दर से जल्दी–जल्दी हवा आई,

नूरानी सुंदर मुखड़े की झलक पड़ी। उस दग–दग करते मुखड़े की झलक में पता नहीं क्या बरकतें थीं, जिस किसी ने दर्शन किए बेड़े पार हो गए। माता ने दर्शन करके इलाके में विचरने की इजाजत माँगी। कृपाल, दयाल, मेहरों के पुँज महाराज जी के चरणों में माथा टेक कर पता नहीं कब समेत मंजी कब हवा में मुड़ गई। फिर बन्तो को महाराज जी बोले, ''बन्तो! क्या लाई है?'' वह बोली, ''जी दूध है, आप छको व मेरा गरीब पापिन का भी बेड़ा पार करो। सब कुछ जानणहारे हो जी।'' हुक्म हुआ, ''पानी लेकर आओ।'' एकदम बन्तो पानी की गागर भर कर ले आई। स्नान किया, दूध पिया, दो–चार घूँट ही पिए थे। हुक्म हुआ, ''बन्तो! पुत्र होगा व उसका नाम भीमसेन रख लेना।'' नौवें महीने पुत्र का जन्म हुआ। महाराज जी के हुक्म से भीमसेन ही नाम रखा।

बोलो भाई वाहेगुरु

साखी और चली

दिन चढ़ गया, संगत की आवाजाई चल पड़ी। दूध, दही, मक्खन, पेड़े, फलों की टोकरियाँ देगों की पुरातें आने लगीं। कोई ढोल–ढोलकी, कोई छैणे, तबले, बाजे, कोई विशन पदों गाता हुआ उस इलाही दरबार की हाजरियाँ भरने के लिए धमालें मचाते हुए, गीत गाते हुए प्रेम में मग्न सभी नर–नारी टोलियाँ बना कर चले आ रहे थे। उस रब्बी दरगाह में से मुरादों की झोलियाँ भरकर घरों को जा रहे थे। इतने में एक तरफ से एक रोने की आवाज आई। महाराज जी बोले–कौन रो रहा है? किसी ने बताया–जी! पीते की औरत है। इसकी लड़की मर गई है। हुक्म हुआ–जाओ! उसको कहो रोए न, लड़कियाँ बुहत होंगी। छः लड़कियाँ हुई तो पीते का वेहड़ा लड़कियों से भर गया। एक दिन पीता

दर्शनों को आया तो महाराज जी बोले, ''तुझे खजाना बता देते हैं माया का निकाल–निकाल कर खर्च करते रहना।'' कही हाथ देकर तार दिया। गांव गुणाचोर की तरफ भेज दिया। एक गुप्त सिंह को साथ भेज दिया। कुछ दूरजाने के बाद पीछे मोड़ लिए और हुक्म किया तूने जल्दी ही खत्म कर देना हो तुम्हारे 5 रुपए मैंने रसोखाने लगा दिए है। यहां से ही ले जाया करना। महाराज जी के हाजिर होता महाराज जी आप चुका देते थे। अब महन्त पूर्ण दास जी से हर रोज पाँच रुपए लेकर खा पी छोड़ता है। काम काज कोई नहीं करना। इस तरह दुःखी जीवों की पैंशने लगा दिया करते थे।

बोलो भाई वाहेगुरू।

साखी निरंजन सिंह के साथ हुई

निरँजन सिंह गाँव मजारे का जट्ट खेती का काम किया करता था। उसका काम था कि हर रोज महाराज जी जहाँ कहीं ...ं हों हाजरी देनी। कई बार सारी–सारी रात पहरा देने की ड्यूटा भी लगाई जाती थी। पीछे हटकर चुपचाप चौकड़ा मारकर बैठा रहता। कभी महाराज जी के हुक्म से वापिस चला जाता। महाराज जी उसे फतेह सिंह कह कर बुलाया करते थे। ज्यादातर पिछले जन्मों के नाम लेकर ही बुलाया करते थे। हर एक बाल बच्चे जवान और बूढ़े का नाम और ही बुलाते थे। एक बार सन्त हरी सिंह करतारपुर वाले दर्शनों को आए थे। त्रिलोकी मालिक वल–वल करते उठकर ढक्की में आए। बँगा से बाजा लेकर आगे बजाते हुए बड़ी अच्छी शान से चले। महाराज जी करतार सिंह के घर बैठे थे। पहले ही संगत में बात चला दी। बोले, ''आज वचित्र सिंह आ रहा है, जिसने

नागिन मारी थी। एक दिन भरो मजारे से कोई 60 साल का बुजुर्ग दर्शनों को आया तो आगे सन्त अवधूत जी दर्शनों को खड़े थे। बूढ़े ने बहुत श्रद्धा प्रेम से नमस्कार की। बाबा जी ने सफेद वस्त्र पहने हुए थे। सफेद दाढ़ी सज रही थी। गले में पल्ला डालकर दोनों हाथ जोड़कर खड़ा है। एक–एक श्वास प्यार की याद में लग रहा था। हुक्म हुआ, ''अवधूत! इसकी सेवा कर। अच्छी तरह सेवा करनी है, मैं इसी की सेवा तो करवा रहा हूँ, जब हम छठे जामे में थे, घोड़ों की सेवा करता होता था।'' एसी हजारों ही अगली पिछली सोई हुई रमज़ें देते थे। सन्त अवधूतों का पिछला जन्म गाँव खानखाना बताते थे। जिस साल सन्तों का जन्म था, उसी साल ही मस्त गुरदास जी का भाई काबल सिंह चल बसा था। परमात्मा ही मानस जामे में आए हुए थे। सब दर्शन करके कल्याणकारी हो जाते थे। सेवा भी करते। एक दिन महाराज जी आमों वाले खूह पर बैठे थे। इस खूह पर पहले–पहले महाराज बहुत आया करते थे। यह दया राम का खूह था। निरंजन सिंह भी घर के काम समाप्त करके हर रोज की तरह महाराज जी के दर्शनों को चला गया। प्रणाम करके हाजरी में बैठ गया। चाँद पूर्णिमा की रात को यौवन की लहरें मारता हुआ पश्चिम की तरफ निर्मल आकाश पवन के नजारे लेता हुआ धीरे–धीरे जा रहा था। धीमी–धीमी पवन चल रही थी। त्रिलोकी नाथ बल–बल करते ढक्की में जा पहुँचे। ढक्की गाँव नागरा व मजारे के बीच जैसे थी। ढक्की में आकर जब खड़े हुए, बहुत सर्द हवा चली। नरंजन सिंह कहता पता नहीं उस गैबी हवा में कितनी सुन्दर खुशबू थी। निरंजन सिंह को इशारा किया, कुछ पीछे हट चल। निरंजन सिंह दस कदम पीछे हट गया। नाभ कंवल राजा साहिब के ऊपर

पुष्प वर्षा हुई। तीन किस्म के फूल थे। निरंजन सिंह को कुछ पता नहीं कि फूल कहाँ से बरस रहे थे। महाराज काफी वचन करते पता कुछ नहीं लग रहा था किसके साथ कर रहे हैं आपका वचन सुनता था। आगे कुछ पता नहीं लगता कि क्या बोलते हैं व कैसी सूरते हैं। कोई कौतुक करके आगे चल पड़े। एक समतल सी जगह बैठ गए। निरंजन सिंह के मन में आया कि पूछूँ पूजा कौन कर रहा था। फूल कौन बरसा रहा था? बातें किससे कर रहे थे पर पूछने की हिम्मत ही न होती। सब घट–घट के ज्ञाता बोले, ''फतेह सिंह! देवता भी कभी–कभी राजा के दर्शन करने चले ही आते हैं।'' ऐसे ही करतार के साथ लीन हुए ही सारी रात बिता दी। चन्द्रमा अलोप हो गया, तारे छुप गए। पूर्व की ओर लाली आकाश की तरफ फैल रही थी। सुमेर–पर्वत की चोटी को स्पर्श करता हुआ सूर्य भगवान बड़ी तेज़ी से आकाश की ओर बढ़ता जा रहा था। दुनिया कामों में लग गई थी। निरंजन सिंह को घर जाने का हुक्म किया। संगत की आवाजाई चालू हो गई। इस दिन महाराज ढक्की में बैठे रहे। संगत सारा दिन खुले दर्शन करके मन माँगी मुरादें पा कर आती थी।

बोलो भाई वाहेगुरू।

दूसरी साखी निरंजन सिंह के साथ हुई

गाँव मजारे के पूर्व की तरफ सारे गाँव का साँझा कुआं है, जिसके चारों तरफ जमींदारों के बाड़े हैं। कुएँ के साथ एक अच्छा चौक सा बना है। गर्मियों के दिन थे। रात को चारपाइयों पर काफी बन्दे बातें कर रहे थे। कोई कहे धरती घूमती है, कोई कहे सूरज चलता है, कोई कहे लाखों ही उस वाहेगुरू के खण्ड ब्रह्मांड रचे हुए हैं। लाखों ही चाँद सूरज

रचे हुए हैं। निरंजन सिंह भी पास ही अपनी मंजी में पड़ा सुन रहा था। अपने मन में सोच रहा था कि जब महाराज कुदरत की बातें रात को करेंगे तो पूछेंगे कि सूरज चलता है या धरती चलती है। दूसरी बात निरंजन सिंह का भाई उजागर सिंह एक दिन कहने लगा कि जिस तरह गुरू नानक देव जी आँखें बन्द करके हजारों कोस चले जाते थे, राजा साहिब भी वैसे ही चले जाया करते थे। कभी देखे भी हैं आपने कि हर रोज हाजरी भरते रहते हैं। उजागर सिंह के कहने से निरंजन सिंह के मन में आया कि यदि महाराज मुझे ऐसा कौतुक दिखाए तो कितना अच्छा हो। एक दिन हर रोज की तरह निरंजन सिंह रात का प्रसादा खाकर दर्शनों के लिए गया। महाराज जी पश्चिम की तरफ खेतों में बैठे थे। निरंजन सिंह ने माथा टेका, हुक्म हुआ ''फतेह सिंह! जा कहीं से खरबूजे लेकर आ।'' गाँव से बँगा की तरफ एक अच्छा खासा बड़ा सा छप्पड़ है, उससे आगे खरबूजे बीजे हुए थे। जब रामसर छप्पड़ आगे लाँघ कर गया तो क्या देखा, दिन का दोपहर सिखर देखकर हैरान हो गया। कुछ पता नहीं लगता, रात थी, आँख झपकाने के साथ ही दिन को दोपहर देखता। खरबूजा को पका हुआ न मिला, खाली हाथ ही महाराज जी की ओर चला जा रहा था। क्या देखा कि रात जब महाराज जी के पास आया तो महाराज जी मुस्कराए, हँसे व कहते, ''फत्तू ले आया खरबूजा।'' निरंजन सिंह कहता, ''जी! वहाँ न तो मुझे खरबूजों का बाड़ा ही मिला और न ही मुझे ज्ञात हुआ कि मैं कहाँ–कहाँ फिर रहा हूँ। कोई और ही धरती और ही देश देखा। दिन था मैं किस जँगल में चला गया? जब सच्चे पातशाह! मैंने आपके चरणों में विनती की कि मैं कहाँ चला गया? मैं बहुत घबरा गया एक तरफ को चल पड़ा तो रामसर सरोवर दिखा। पता नहीं लगा कि पल भर में ही पलक झपकते ही मैं गाँव मजारे

की जूह की तरफ चला आऊँ। दिन से रात हो गई।'' महाराज जी कहते, ''फत्तू! गोरे के खूह पर रात को क्या बातें करते थे? याद करके निरंजन सिंह को एकदम बात याद आई कि मैंने दिल में धारणा की थी कि मैं महाराज जी से पूछूँगा। हुक्म हुआ निरंजन सिंह पृथ्वी भी हुक्म में चलते हुए ही परिक्रमा करती है। चाँद–सूरज भी भय में है, ''जाओ! गुणाचौर से खरबूजा लेकर आओ।'' कहता मैं जब बाड़े में से आया तो आगे सदे खाँ सोया पड़ा था। बन्ने पर बैठकर जाकर आवाज दी तो आगे से सैदे खाँ जाग पड़ा। निरँजन सिंह ने महाराज का हुक्म कह सुनाया, तो आगे से सैदे खाँ कहने लगा, ले जा, जितने ले जाने हैं, मुझे क्या पूछना था?'' निरंजन सिंह कहता मैंने जब अभी बाड़े में पैर भी नहीं रखा था तो आगे गाँव गुणाचौर की तरफ गाँव के साथ–साथ एक सफेद वस्त्र धारण किए हुए कोई बन्दे की जात में इस तरह फिरता था जैसे कोई पौण चल रही हो। कई बार आगे से निकल जाए कभी आँखों के फड़कने में हजारों ही मील चले जाएं। निरंजन सिंह कहता, मैं डर गया। खैर दो चार खबरूजे लेकर मजारे की तरफ जिधर महाराज जी बैठे थे, चल पड़ा। वह और घबरा गया, जब देखा तो महाराज जी आगे से चले आ रहे थे। निरंजन सिंह कहता मेरे आगे आकर खड़े हो गए व कहते, ''हाँ फत्तू! डरते नहीं। हमारा जीव चाहे लाखों कोसों पर हो, हम पास में ही रहते हैं।'' खरबूजे आगे रखकर नमस्कार की, वौराग्य से आँसू निकल गए। मन में अपने आप ही शर्मिन्दा हो रहा था। बली की करामातें देखना चाहता था। सारी मन की मुरादें पूरी कर दिखाई। जैसे गुरू नानक जी एक दिन करतारपुर बैठे थे। बाबा बुड्ढा जी के साथ भाई लैहणा जी भी बैठे थे। सर्दियों की रात थी, हुक्म हुआ बाला देख तो रात कितनी गई है। बाला बाहर देखकर कहने लगा, ''जी रात आध

गई है।'' इसी तरह बावा बुड्ढा को बोला उसने भी आधी ही बताई, मरदाने ने भी आधी ही बताई। फिर अँगद को इशारा किया तो उसने सोचा कि यह कोई कौतुक है। उसने कहा, ''महाराज! जितनी आपकी रज़ा में रहती है, उतनी है।'' महाराज जी बोले, ''कपड़े धोकर ले आ।'' सर्दी बहुत पड़ रही थी, पानी कोरे से जमा हुआ था, सभी गर्दन हिलाते रहे। जब बाले को हुक्म किया तो बाला आगे होकर कहता, जी! पाला बहुत है। दिन चढ़ते ही धो लाएँगे। इसी तरह बैठे–बैठे सभी सिक्ख सेवकों को हुक्म लगा पर सभी ने दिल में ही धोने की सलाह दी। जब अँगद की ओर इशारा किया तो एकदम इशारा पाकर कपड़े लेकर तालाब पर चला गया। जब तालाब पर गया तो दिन का दुपहर थी, कपड़े धोकर सुकाए, जब घर आए तो रात ही थी। इसी तरह महाराजा नाब कमल राजा साहिब जी ने निरँजन सिंह को कौतक दिखाकर निहाल किया। माया की खेल करके दिखाई जैसे मुल्तानी राम को गुरू नानक देव जी ने दिखाई थी। सारी रात निरंजन सिंह को अद्भुत खेल दिखाकर निहाल किया। उस दिन महाराज नाइयाँ वाले टोबे पर बैठे थे। एक नौजवान गाँव गुणाचौर का राजपूतों का बहुत बीमार था। महाराज जी का पता लगा कि पास ही आए हैं। धीरे–धीरे गिरता–उठता कुरलाता हुआ दुःख भँजन हारे करतार के सामने चला गया। बहुत दर्द हो रही थी, रोने लग गया, ''जी! सच्चे पातशाह जी या मेरी जान निकल जाए, नहीं तो मुझे तंदरुस्त कर दो।'' उस रोगी को रहमत भरी नज़रों से देखकर बोले, ''कपड़ों के साथ छप्पड़ में कूद जा।'' एक डुबकी से ही उस राजपूत बच्चे की देह फूल जैसी हो गई। धन्य राजा साहिब तेरी कमाई एक बार की दृष्टि से ही सब रहमतें मिल जाती हैं। बोलो धन्य–धन्य राजा साहिब महाराज की जै।

साखी काले नाग के साथ हुई

सारा दिन महाराज ने उस नाइयों वाले छप्पड़ पर बैठकर ही संगतों को दर्शन देकर निहाल किया है। सूर्यास्त होते ही उठकर फिर ढक्की में चले गए। रात होने पर सितारे टिमटिमाने लगे। सभी नर–नारी सुख की नींद सो रहे थे। ठण्डी–ठण्डी हवा चल रही थी। पपीहा भी पी–पी कर रहा था। जीव जन्तु सभी खुड्डों को छोड़कर बाहर खेल रहे थे। मीठी–मीठी पवन के झोंके बह रहे थे। पपीहा बोल रहा था, जानवर खुशियों से बूबां मार रहे थे। 'जारड़े दा सानू सथर चंगा भठ खेड़ियां दा रहणा।' उनकी वृत्ति प्यारे प्रभु के साथ जुड़ी हुई है। बिशन सिंह गुणाचौर का जमांदार जो चौंकीदारी करता था। मन में प्रेम का बहाव आया है। घर से उठकर नाइयों वाले टोबे पर जाकर पता किया, पता चला कि महाराज ढक्की में चले गए हैं। विशन सिंह ढक्की में चला गया, आदाब किया। विशन सिंह को पीछे मोड़ दिया, आप छछरों में जा छिपे। विशन सिंह बाहर खड़ा था। गैबी बातें हो रही थी, सुन रहा है। एक छोटी सी ढक्की में छटी सी छपड़ी थी। वहाँ बैठा विशन सिंह सारी खेल देखे जा रहा है। थोड़ी देर बाद एक खड़प्पा साँप आया और पीछे मुड़ गया। महाराज बोले, ''आजा! शर्माओ मत। जो कुछ करने आए थे कर लो शर्त नहीं।'' काला नाग आगे–आगे फिर रहा था। महाराज जी उसके पीछे–पीछे उसे कही जा रहे थे, ''जब आते हैं तो पीछे नहीं हटते।'' महाराज ने साँप से आगे होकर दाएँ पैर से उसके सिर को ठोका व बोले, ''वार करके जाते हैं, पीछे हटना सूरमाओं का धर्म नहीं।'' नाग ने दाईं पिन्नी पर डंग मारा। आगे से महाराज जी कहने लगे, ''हाँ! हाँ ऐसा ही होना

चाहिए।'' जब नाग ने डंग मारा तो विशन सिंह बहुत डर गया, घबरा कर गाँव मजारे की तरफ भागा। एक दो मणके वालों को भी बताया, अनूप सिंह मणका लेकर भागा। फतेह सिंह दवाई लेकर भागा गया। गाँव रहिप्पे भी आकर पता किया ठाकुर सिंह अर्जुन नाई को साथ लेकर गया, जो भी आए महाराज जी आगे से कहते, ''भाग जाओ! भाग जाओ। नाग भी राजा के हैं, जहर भी राजा की बनाई हुई है। क्या हुआ यदि मेंढक साँप दाँत काट गया, कुछ नहीं होता। सभी चले जा।'' फतेह सिंह कहता, ''जी! यह बहुत अच्छी दवाई है, बिच्छू की जहर को भी मार सकती है।'' महाराज जी फतेह सिंह को बोले, ''फत्तू तू ही खा ले, इसमें जहर नहीं रही।'' सच्चे पातशाह के हुक्म से राजा–राजा कह कर पी ली पर उसका जहर मादा किधर चला गया। अमृत बना हुआ था, आप ही आराम आ गया, कोई दवाई बूटी नहीं की। जब डंक मारकर पीछे हटा तो वह मर गया। महाराज कहते, ''बिशन! इन्द्र आया था। कल्यण चाहिए।'' ऐसा कौतुक किया, राजा की बातें राजा ही जानें और कोई क्या जान सकता है। ब्रह्म ज्ञानी की गति ब्रह्म ज्ञानी ही जानता है।

बोलो भाई वाहेगुरू।

साखी गाँव मेहदपुर के शेर सिंह के साथ हुई

इन्द्र सिंह का भतीजा किसी केस में आ गया। मुकद्दमा अच्छी तरह बन गया। पढ़ा लिखा लड़का था जब पढ़ाई की हुई ऐसे ही जाने लगी तो कई तरफ कोशिशें की पर केस मजबूत ही बन गया। गवाह सही भुगत गए, पक्का यकीन हो गया कि अब दुम्मण सिंह को सजा हो ही जाएगी। मन में हलचल हुई कि इस समय भतीजे

को कोई सजा से बचा सकता है या नहीं। अन्दर से ही किसी ने आवाज दी, ''हाँ! हाँ! शूली चढ़ने वालों को भी बचा सकता है। जहाँ कोई नहीं होता वहाँ आप चला जाता है। प्रहलाद हो बचाया, सधने को बचाया, मर्दाने को कौडे की कैद से छुड़ाया। 52 राजे ग्वालियर के किले की कैद से छुड़ाए तभी बन्दी छोड़ कहते हैं, भीलनी को तारा।'' जब अर्न्तध्यान हुआ तो किसी ने कहा, ''भाई शेर सिंह! इस वक्त गाँव मजारे एक आदम के रूप में बैठा, करतार का ही रूप जिसके हुक्म में सारी ही कलमें चल रही हैं। उसके हुक्म में पवन, पानी, दरिया बह रहे हैं, चाँद–सूरज भी उस महाबली के हुक्म में चल रहे हैं। चल! उसके चरणों में चल कर विनती कर कहीं तेरा भतीजा सजा से बच जाए। सेर सिंह उसी समय गाँव मेहदपुर में बैठा मन में एक विनती कर रहा है, ''प्रभु जी, यदि मेरा भतीजा इस केस से बरी हो जाए तो मैं चाँदी की कड़ियाँ बनाकर गाँव मजारे बच्चे को लेजा कर चढ़ाऊँगा। लड़का साफ बरी हो गया। बरी हने पर चाँदी की कड़ियाँ बनवाकर ले आया, एक लड़का था साथ में उसकी बहन थी। तीनों जब मजारे पहुँचे तो महाराज जी दौले के घर के सामने दरवाजे में बैठे थे। जब सेर सिंह महाराज के सामने आया तो मन में आया कि ये कड़ियाँ महाराज के किस काम की? ऐसी वस्तुएं तो ऐसे ही फेंक देते हैं, न कोई सँभलता है, न रखना है, न आप ही पहनते हैं। इन्होंने कड़ियां क्या करनी हैं? पाँच रुपए माथा टेक देते हैं, मन्नत पूरी हो जाएगी, जब सेर सिंह के मन में यह विचार आई, महाराज कर्मी को कहने लगे, ''कर्मी! यदि कोई जुबान करके मुकर जाए तो उस आदमी को बाजू पकड़ कर बाहर कर दिया जाता है। जा उसे कह, जो कुछ माना वही देते हैं।'' कर्मी

ठिठक गई, आये को कहना मुश्किल होता है। महाराज जी फिर बोले, "मैदपुरिये से कहो–या तो सारी चीज देवे या घर से बाहर हो जाए। जल्दी कर।" जब गाँव मैदपुर का नाम लिया तो उसी समय चाँदी की कड़ियां आगे रखकर बार–बार सलामें करने लगा, धन्य है राजा साहिब! तेरी शक्ति! तू हर जगह हाजिर है।" फिर सारी कहानी कर्मी ने सरदार को बताई। फिर महाराज जी के दर्शनों को आते रहे।

बोलो भाई वाहेगुरू।

साखी फज्जे तेली व बतन सिंह के साथ हुई

फज्जा तेली गाँव रहिप्पा के तेली का लड़का था। एक दिन वह महाराज जी के दर्शनों को गया। महाराज किरपे के चुबारे में बैठे थे। जब फज्जा तेली सामने हुआ, तो भीड़ काफी थी, बड़ी श्रद्धा से चरणों में माथा टेका तो महाराज का बैठ जाने के लिए हुक्म हुआ। फज्जा एक तरफ होकर बैठ गया। बैठे फज्जे को देखकर मुस्कराए, हँस दिए, पूछा, "मौले के पुत्र हैं?" फज्जा, "जी हाँ!" फिर हुक्म हुआ, "अमृत ग्रहण कर लेते हैं, दाढ़ी केस भी रख लेते हैं, कछहरा भी धारण कर लेते हैं। अमृतसर की इंट पहले राजा ने ही रखी थी, डरते नहीं।" ऐसी नसीहतें देकर फज्जे को भेज दिया। यह बात 1932 की है। पता उस समय चला जब 1947 का घल्लूघारा हुआ। उस समय उस वचन का पता चला। फज्जा तेली अमृतधारी बन कर पूरा सिख सज गया। केस, दाढ़ी सजा लिए, कड़ा कृपान भी पहन लिए, नाम साधु सिंह रख लिया। इस समय पक्का सिख बना हुआ है। इतने में एक और गाँव रहिप्पा से वतन संह राम गढ़िया दर्शनों को गया। महाराज जी बोले, "लाभे दियाँ दा है?" बतन सिंह को पास बिठा कर हुक्म किया, "काडियाँ

सारखियाँ पर भी राज़ा की मोहर लगी है।'' ईटें लगानी सीख लेते हैं। दवाई बूटी कर लेते हैं। धागे तवीत दे छोड़ते हैं। वतना! मक्खी सारखी भी राजा के हुक्म में ही उड़ती है।'' मजारे बैठे ने मक्खी की रमज़ मारी। बैशाखी का दिन था, सारी सँगत रहिप्पा के गुरुद्वारे कड़ाह प्रसाद की देग लेकर ढोलकी छैणों के साथ शब्द–गायन करते हुए सभी माई बाई घरों को ताले लगाकर एक जलूस के रूप में बाजे गाजे बजाते हुए, सुखी हुई देगें लेकर महाराज जी के उस सच्चे दरबार में पहुँचे जो गाँव के पश्चिम की तरफ है। उस समय एक थड़े के रूप में महाराज जी का एक तख्त था, अरदास हुई, प्रसाद बाँटा जा रहा था। पहले वृक्ष काफी लगे हुए थे। शीशम व आमों के बूटे बाबा हरी सिंह ने बड़े शौक से लगाए हुए थे। पता नहीं क्या रज़ा हुई, डूमणे कई लगे हुए थे, मक्खियाँ उड़ पड़ीं, संगत को तोड़–तोड़ खाने लगीं। कोई गाँव की तरफ भागा, मक्खियों ने डंक मार–मार कर सिर मुँह सुजा दिये। पूर्ण देई, एक भागवन्ती नैण, तितर आदिधर्मी और कई भागे जाते तोड़ कर खाए। कोई लड़ते ही टोबे में जा छपा, कोई गाँव मसाणी जा बड़ा। एक बग्गा सिंह भाई जिसकी टाँगे सूखी हुई थीं, बैठा–बैठा ही चलता था बेचारा। किसी तरफ भाग भी नहीं सकता था भाई निराश्रित शक्तिहीन होकर महाराज नाभ कमल जी का आसरा लेकर मन में ध्यान लगाकर तख्त के आगे जहाँ अरदास की थी, हाथ जोड़कर आँखें मूँदकर बैठ गया। बाकी सभी संगतों की दौड़ें लगवा दीं। सभी को मक्खियों ने डंक मारे भाई बग्गा सिंह को कोई मक्खी न लड़ी। कौतुक गाँव रहिप्पा में हो रहा था। वतन सिंह को गाँव मजारे बैठे बता रहे थे। ''हाँ! हाँ। वतना। रहिप्पे जाकर बता देना मक्खी राजा के हुक्म से ही लड़ती है।'' बतन सिंह जब रहिप्पे आया तो सारे गाँव वालों के सिर मुँह सूजे हुए थे। वतन सिंह ने बताया भाई ये सब महाराज की खेल हुई है। मुझे हुक्म हुआ

था कि गाँव में जाकर बता देना कि मक्खी राजा के हुक्म से ही उड़ती है। सभी लोग हैरान हुए। वतन सिंह ने वो वचन जो उस को किए थे कि सारे काम वो ही कर रहा है सारी संगत को सुनाए।

बोलो भाई वाहेगुरू।

साखी उमरू से हुई

गाँव मजारे जाट उमरू रहने वाला जुआले का पुत्र कोई बाई तेई वर्ष की आयु का था। उमरू अपने रहने के लिए मकान बनाने लगा। अभी नींह पुटनी शुरू की थी, महाराज जी ने मौके पर आ कर हुक्म किया। ''उमरू। रहने दे। मकान क्या करना है? मकान ना बना।'' महाराज जी के कहने पर उमरू उसी वक्त हट गया। महाराज जी के आगे चले जाने पर फिर बनाना शुरू कर दिया। जब दीवार आदमी के गले तक पहुँच गई तो महाराज जी फिर दूसरी बार मकान की ओर गए। महाराज जी ने दीवार बनी हुई तुड़वा डाली, फिर महाराज जी यही कहने लगे, 'काका! तू मकान क्या करने हैं?'' परन्तु हुक्म मानना बड़ा मुश्किल है, महापुरुषों का जो हुक्म है, सो करतार का ही हुक्म है। गुरू नानक देव जी का हुक्म मान लेने से ही गुरू अंगद देव जी लहने से अंगद बने थे। तीसरी वार फिर उमरू को बहुत रोह से कहा। फिर महाराज कुछ नहीं बोले जब मकान छत पर गया तो उमरू को बुखार चढ़ गया। उमरू काम करने के लायक नहीं था, तड़फ रहा था। मकान की छत्त राजा ने तैयार करके मिट्टी पाने को कहा, उधर मिट्टी पाई गई। उधर उमरू के स्वास पूरे हो गए। उमरू ने मकान बना हुआ दखा न। उस वक्त पता लगा कि महाराज जी मकान क्यों बन्द करवाते थे।

बोलो भाई वाहेगुरू।।

साखी गाँव हेड़ियाँ के गज्जू से हुई

एक दिन महाराज जी गाँव मजारे से उठकर गाँव हेड़ियाँ की जूह में चले गए, जहाँ अब नहर निकली हुई है। इस जूह को लोग राम–बण कहते हैं। इन खेतों में शिव सिंह नंबरदार का नौकर गज्जू नाम का जात का आदिधर्मी हल चला रहा था। महाराज जी पास चले गया। गज्जू ने हल खड़ा कर लिया और नमस्कार की। महाराज जी गज्जू को कहने लगे, 'गज्जू हल छोड़ कर गाँव चला जा। गज्जू अपने मालिक से डरंते हुए ने हल न छोड़े। महाराज साहिब ने तीन वार हुक्म किया। गज्जू गुलामी करके महाराज जी के हुक्म मानने से मजबूर था। गुलामी कभी इन्सान का ऊँची साँस नहीं लेने देती, गुलामी सिर नीचा कर छोड़ती है। गुलामी कभी आदमी को आजाद नहीं होने नहीं देती। एक बार किसी ने युद्धिष्ठर से पूछा था, जीता हुआ भी मरे हुए जैसा स्वास कौन लेता है। उसने कहा गुलाम ही जीता हुआ मरे हुए जैसे स्वास लेता है। एक गुलाम दूसरी औरत, तीसरा फकीर, चौथा गरीब चार जीते हुए भी मरे हुए के समान होते हैं। गज्जू ने महाराज जी के चले जाने पर हल फिर जोड़ दिये। रहीले रहती थीं, एक स्याड़ और वाह सका आँखों से दिखना बंद हो गया, कोई पता न लगे चले किधर को जाना है? पशुओं के रस्से खोल दिये आप किसी वृक्ष के नीचे लेट गया। जब पशु गाँव गया तो गज्जू की भाल (ढूँढ) होने लगी, पता करने से पता लगा कि गज्जू तो अँधा होकर टाहली के नीचे पड़ा है। गज्जू के भाई सुन कर भागे आये, आकर सारा हाल पूछा। गज्जू ने महाराज के कहे अब हुक्म सुनाया। गज्जू कहने लगा, ''मुझे राजा साहिब जी कह रहे हल छोड़ कर चला जा, मुझ से हुक्म नहीं माना गया, मुझे उसे ही गनी अवतार के चरणों में ले चलो, मैं अपनी भूल बख्शा लूँगा। अगर मेरे कर्महीन के हाल पर मेहर कहीं

कर ही दें।'' गज्जू के भाइयों ने गज्जू को उठा कर मजारे रसोखाने गज्जू को लेटा दिया। जब महाराज जी कई दिनों के बाद दरिया की ओर का चक्कर लगा कर गाँव मजारे की ओर को आये तो गज्जू बहुत वैरागमई हो कर चरणों पर गिर पड़ा। हाथ बाँध कर बेनती की, ''सच्चे पातशाह! मेरा गरीब का रोज़ी का कोई इन्तजाम करो। मेरा आप के बिन कोई सहारा (आसरा) नहीं, मूर्ख आप जी का हुक्म न मान सका, मेरी भूल माफ करो जी। मैं आप जी की गति न पहचान सकता था।'' जब गज्जू ने आप जी पास अर्ज की तो मेहरों के दाते ने हुक्म किया, ''अच्छा भाई! तेरी बिनती सुनी गई है, अपनी रोज़ी कर अपने पेट का गुजारा कर लिया कर। अच्छा तेरी लाज प्रभु ने रख ली है।'' आँखों से कुछ गुजारा कर लिया कुछ बुध भी निर्मल हो गई बिरती मस्त सी कर दी, फिर महाबली राजा साहिब जी के दरबार में ही रहने लग पड़ा। सारी उम्र दरबार की ही हाजरी भरता रहा। लोगो के बाण बट–वट कर अपनी उपजीविका चलाई गया, फिर वापस घर नहीं गया, सारी जिंदगी राजा साहिब जी के चरणों में वसर करके अंत पर्मगति को प्राप्त हुआ।

बोलो भाई वाहेगुरू।

आगे साखी और चली

एक दिन महारज जी गाँव हेड़िआँ के खेतों में ही बैठे थे। सारा दिन संगत की काफी आवाजाई बनी रही। संगत खुले दर्शन करके मुँह से माँगी मुरादें पाती रही। एक सिक्ख हलवा प्रसाद ले कर आया। डिब्बा था, जिस में प्रसाद था महाराज जी ने उस गुरमुख को हुक्म किया, ''सिक्खा! चला चल। डिब्बा तेरे घर भेज देंगे। उस गुरमुख को घर की ओर भेज दिया। कुछ देर बाद एक कर्म सिंह नाम का आदमी गाँव हेडियाँ

से दर्शनों के लिए आया। नमस्कार किया गले में पल्लू पा कर बैठ गया। कुछ समय के बाद हुक्म हुआ, 'कर्मा डिब्बा उठा! वो घास काटते हैं, उनको प्रसाद देकर डिब्बा हीरा सिंह के घर दे आना।'' एक तरफ जिमींदार मक्की (मकई) खोदते थे, जब कर्म सिंह एक खेत महाराज जी से दूर चला गया। पीछे से हुक्म किया, ''खोदते हुए को भी दे जाना।'' कर्म सिंह जब दो खेत और दूर चला गया तो कर्म सिंह के मन में विचार आया कि महाराज जी को कौन सा याद रहता है कि हीरा सिंह के घर डिब्बा दिया है या नहीं। हलवा प्रसाद समेत डिब्बा घर ले चले। जब कर्म सिंह के मन में यह फुरना फुरा उसी ही समय एक बिजली की तार जैसे पीछे से आवाज आई, ''कर्म! वापस आओ।'' कर्म सिंह से लेकर डिब्बा रख लिया और चले जाने का हुक्म किया कि ''चोरों का तो यहाँ कोई काम ही नहीं है।'' कर्म सिंह बहुत शर्मसार हुआ।

बोलो भाई वाहेगुरू।।

साखी काला को विराट रूप दिखाने की चली

एक दिन की बात है। कोई आधी रात का समय था, रात घूं घूँ कर रही थी। अन्धेरे में आकाश पर तारे उस महाँबली सोहने प्रीतम के दर्शनों का रस मान रहे थे। बड़ी गूढ़ी नीझ से तक रहे थे। महाराज गाँव मजारे आ गए। आगे काला आदिधर्मी गाँव मजारे का गाय की सेवा करा करता था। अकेले अन्दर जा कर सो रहा था। कानों में आवाज पड़ी आवाज़ भी अपने प्रीतम सुंदर माही की है, बीच में और भी बहुत सारी आवाजें थीं। बीच में जानवर बोल रहे हैं, बीच में जंगली मासखोरे जानवर बोल रहे थे, बीच में पशु पक्षी मानसों की आवाजें आ रहीं थीं। बहुत भयानक आवाजें आ रहीं थी। बीच महाराज जी की आवाज थी,

उठ कर बाहर आ कर देखा बहुत शोर हो रहा था। शरीर बहुत ऊँचा आकाश हो गया। सिर पर दीया जगता था, अकेला डरता बाहर की ओर को भागता था पर जब महाराज जी का बोल सुना त फिर खड़ा हो जाये। खैर अकेला बाहर खड़ा होकर सारा कौतक (नज़ारा) देखने लगा। उसकी सारी देह रोम–रोम बन यह नज़ारा देखने लगी। इतने में चौरासी लाख जूनी की झलक देने के लिए सारी वस्तुएं लेकर महाराज जी उस कमरे में आ गये, जहाँ समाध बनी हुई है उस स्थान पर कमरे अन्दर एक पलंग रखा हुआ, उस पलंग को महाराज जी अकाल तखत कह कर संगतों से नमस्कार करवाते थे। उस कमरे में जाकर सभी व्यक्तियों ने बैठ कर कोई गुप्त मीटिंग की जिस में कोई गुप्त ही मसला विचारा। कोई नया निजाम बना, जब साहब दियाल को तारा था तो काला कहता था, ''जी सच्चे पातशाहो! कहीं मेरी मिसल भी निकालो, मैं इतनी देर का आप की गाय की सेवा करता रहा हूँ।'' कई वारी महाराज जी के चरणों में बेनती करा करता था। कई बारी महाराज जी कह देते थे काला तूँ कुछ बनने के योग्य नहीं। तेरी सेवा सरदाई में काटी जाती है। काला सरदाई बहुत पीता था. सेर घी खा जाता था। एक बार में ही सेर बदाम पीस कर पी जाता था। काला अच्छा ताकत वाला था। अगर कहीं पातशाह के पशुओं के पट्ठे खत्म हो जाते तो रात को गाय के लिए किसी की चरी या और पट्ठे काट कर ले आता एक भरी से सभी गाय को रजा देता था। या वो गाय का ख्याल रखता था या अपने शरीर का और उस को कोई लालच नहीं था। कई बार काले के कहने पर उस दिन महाराज जी काले की मिसल लेकर आया पर काला परीक्षा में से पास न हुआ डर गया कहता मेरा दिल काँप गया कि महाराज जी के साथ बला आ गई जो महाराज जी के साथ शोर मचा रही है। काले के मन में आई कि मुझे भी मार देगी, मरन से डरता भाग कर

रसोखाने की हद से बाहर हो गया। फिर पीछे पछताने लगा पर वक्त गुजर गया, वक्त गुजरा हुआ फिर न हाथ आया, कई सूरमे वक्त को ढूँढते थे। 'शाह, सिकंदर जैसे ढूंढने में पहाड़ें के बिन नसीबों के पी न सका एक घूट नीर का।' काला बिचारा भी मरने से डर गया। राजा साहिब उठ कर बाहर चले गए, लोग काले की रात वाली कहानी सुनकर बहुत हैरान हुए।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

साखी पाल सिंह मजारे वाले साथ हुई

पाल सिंह गाँव मजारा राजा साहिब का रहने वाला था। वो जाति का जाट था और लंगर की सेवा करता था। जब पाँच साल लंगर की सेवा करते हुए हो गये ते पाले के मन में हुई सेवा की मेहनत का फुर्ना फुरा। लोग रोज ही मन माँगी मुरादें पा रहे हैं कहीं मेरा साहिब दयाल की तरह बेड़ा पार कर दें तो क्या मुश्किल है? काले ऊपर मेहर की तो काला मौका न संभाल सका। अगर कभी मेरा भी ऐसा कर्मों वाला दिन आये तो मैं कभी मरने से नहीं डरूँगा। एक दिन ऐसा आया, पूर्नमाशी की रात चंद्रमा चमक रहा था, सावन के दिन थे, पृथ्वी बारिश के बाद नई प्रकार के रंग बिरंगे फूलों को जन्म दे रही थी। मीठी–मीठी हवा चल रही थी, आकाश बसंत ऋतु की तरह निर्मल थी और तारे चमक रहे थे। खण्डों ब्रहमण्डों के मालिक घट–घट के जानने वाले, सर्बकला भरपूर रौली वाले कुएँ के थड़े पर से उठ कर खेतों के बीच में जाकर रसोखाने लंगर में आ गये। पाल सिंह को आवाज दी पाल सिंह के जब उस सोहने प्रीतम को मनमोहने वाली आवाज कानों में पड़ी तों झटपट उठ कर खड़ा हो गया। नमस्कार की। काला भी गाय के पास से उठ कर महाराज जी की ओर भागा गया। दूर से ही डण्डोत बंदना की हाथ

जोड़ कर दोनों खड़े हैं। महाराज जी खूही अब रसोखाने गुरुद्वारे के आगे है, उसके पास घूम रहे हैं। और कई वचन किये जा रहे हैं, 'पाला सब खुदा ऐ खुदा, कहो खुदा–खुदा। इतने वचन करते पाँच कदम खूही के आगे चले जाते, कभी पीछे मुड़ जाते थे। इतने समय को पाला और काला क्या देखें, एक पीले रंग का साँप बहुत सुन्दर महाराजा जी के साथ घूमता फिरता, जिस ओर महाराज जी जायें उधर को ही चला जाए। काला तो चुपचाप देखता गया। पाला कहने लगा, ''महाराज जी। आप के साथ–साथ एक साँप घूम रहा है।'' जब पाले के मुख से इतनी बात निकली उसी वक्त महाराज ने कहा ''पाला उठा कर गले से लगा ले बहुत ऊँचे घराने का है। इसके छूने से ही सब रोग मिट जाते हैं, बेड़ा पार लग जाता है।'' पाले को जोर से भी कहा पर पाला कहने लगा, ''महाराज जी! मुझे डर लगता है मुझसे नहीं उठाया जाता।'' फिर हुक्म हुआ, ''पाला उठा ले।'' जब पाला न उठा सका, महाराज जी बोले, ''चल! मेरी हद से बाहर चला जा।'' बहुत गुस्से हो कर कहा, ''पीछे हट जा।'' बहुत गुस्से से पाले को बाहर रसोखाने से निकाल दिया। पाला मरने से डरता था, पास न हो सका, परीक्षा में से फेल हो गया, फिर रोय पर फिर क्या हो सकता था? समय को संभाल न सका। एक पल में साँप कहीं छुप गया। पहले मरना पड़ता है, अमर हो कर फिर जीवत होना पड़ता है, फिर पाला बहुत पछताया।

बोलो राजा साहिब जी की जय।

आगे साखी बंती नाम धारण की लड़की को राज़ी करने की चली

लंगर से होते हुए महाराज जी गाँव दरवाजे के सामने घर जा बैठे। डिऊढ़ी में बैठ गए। कर्मी ने झटपट मंजी डाही दिन चढ़ रहा था। पता लगता लगता सारी संगत को लग गया। सभ नर–नारी दर्शनों को आने

लगे। बंती उजागर सिंह की पत्नी ने भी सुना कि महाराज कई दिनों के दरिया की ओर से आये हैं। बंती की ननद बंती को कहने लगी, ''और सारी दुनियाँ के बड़े–बड़े रोगी राजा साहिब जी के घर से राजी हो कर जाते हैं आज मैं भी गुरबख्शो को महाराज जी के चरणों में रख देती हूँ या आप खुद ले लो या राजी कर दो। गुरबख्शो जन्म से ही बीमार रहती थी। डेढ़ वर्ष की लड़की हो गई हर समय बंती के साथ ही लगी रहती थी। परछाई की मारी हुई सूख कर तवीत हुई पड़ी थी। बंती लड़की को कंधों से लगाकर पातशाह की ओर चल पड़ी। साथ ही उजागर सिंह भी गले में पल्लू पा कर चल पड़ा। महाराज जी पास जाकर वो सूखी हई लड़की महाराज जी के चरणों में रख दी। महाराज जी पहले तो बोले, मैं कोई हकीम हूँ, ले जाओ।'' उजागर सिंह नामधारी कहता, ''जी हकीम भी राजा के हुक्म से ही बनते हैं, आप तो टूटी हुई गाँठ सकते हो, पीरों के पीर, वैदों के वैद धनंतरों को बनाने वाले हो जी।'' आगे से महाराज बोले, ''बचानी चाहते हो तो उजागर सिंह और बंती बोले'' जी हाँ। बच जाये तो अच्छी बात है।'' तो हुक्म हुआ, यह तो कोरियों खूहों की मालिक है यह तो मोती गहनों की मालिक है। अच्छा इसको पराई कर दो और नाम बदल दो।'' उजागर सिंह कहता, ''अभी सारी डेढ़ वर्ष की है इसको मैं किस से माँग दूँ? आप जी हुक्म करो, किस से माँग दूँ जी।' हुक्म हुआ पश्चिम की कुआँ देख लेना अच्छा सा घर देखकर पराई कर देना।'' कहता जी नाम भी आप ही रख दो।'' पहले गुरबख्शो था महाराज जी ने समुंदी रख दिया। बस उसी वक्त की आत्मा शांत हो गई। सभी रोग काटे गये। काया और की और ही हो गई। समुंदी राज़ी होकर दिन–व–दिन चढ़ते सूर्य की तरह जवान हो गई। जब तंदरुस्त हो गई तो उजागर सिंह की लड़की का रिश्ता

गाँव मतफलुआं भगत सिंह के सपुत्र गुरदेव सिंह से हो गया। समुंदी के ससुराल वाले सभी इंग्लैंड है। इंग्लैंड में कोठिओं के मालिक हैं। धन तेरी लीला एक बार की ताकने से ही सूखे बाग हरे हो जाते हैं। तेरी लीला लिखने से बाहरी है।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

दूसरी साखी बन्ती से हुई

बंती गाँव मजारे के रहने वाली थी। पहले पुत्र हो कर कालवस (स्वर्गवास) हो गया था। गुरमेज सिंह के मरने के बाद पाँच लड़कियाँ ही पैदा हुईं। 25 वर्ष बीत गये, वापस फिर पुत्र का मुँह देखना नसीब न हुआ। मन में हर समय पुत्र की कमी का हऊका रहता था। पर गाँव में खुदा की हस्ती उपर भी अभिमान था। दिल में विश्वास रखा हुआ था, राजा के बिन और किसी दर की मँगती भी नहीं बनूँगी। मेरे घर को भाग जरूर लगेंगे, घर में पड़ी हुई उस महाबली के पास बेनती करती रहती थी। एक दिन बिनती सुनी गई। एक दिन बंती के कानों में आवाज पड़ी, जिस में बहुत बर्कतें थीं। मीठी आवाज रोम–रोम में झर्नाहट दे गई। एक झलक तरह झोली पुत्र की दात भी दे गई। कान में आवाज पड़ने पर ही बंती मंजी से नीचे उतर कर, गले में पललू डाल कर, चरणों में ध्यान धर कर खड़ी हुई। हुक्म हुआ, ''सिक्खनी जागती है'' बंती ''जी हूँ जागती हूँ। हुक्म किया इधर आओ। बंती ने झपट ही आ कर नमस्कार की, हुक्म हुआ बंती मेरे छाले पर खुरक कर। उन दिनों में महाराज जी की पिन्नी पर साँप ने डंक मारा हुआ थ। बंती कहती मैं धीरे–धीरे पिन्नी पर मुट्ठी–चापी करने लग पड़ी महाराज घर के दरवाजे आगे बहुत समय खड़े रहे। गाँव के पूर्व की

ओर सारे गाँव का सांझा कुआँ था, गाँव के पश्चिम की ओर उजागर सिंह का कुआँ था, जब बंती महाराज जी के छाले पर धीरे–धीरे मालिश कर रही थी। महाराज जी मुख से तो कुछ बोलते नहीं परन्तु मन ही मन में बंती के कानों में कोई गैबी आवाज आ रही थी। ''हूँ! हूँ! तेरी सेवा करने वाला तेरे घर पैदा होगा।'' ऐसी आकाशबाणी हो रही थी। कोई आधा घंटा सेवा करवा कर महाराज जी बोले, हाँ ! हाँ! सिक्खनी तेरा पहला ही पुत्र घर भेज दें।'' बंती बोली, ''जी! इससे अच्छा और क्या हो सकता है?'' महाराज जी बोले, ''अच्छा, एक पाठ गुरमेज के नाम पर करवा देना उसकी आत्मा ऐसे ही घूम रही है। परन्तु बंती पाठी नाराज़ न होये, पाठी घर से खुशी खुशई जाये, अच्छी सेवा करना।'' बंती ने सारी कहानी उजागर सिंह को महाराज़ जी वाली कह सुनाई। भाई साहिब अच्छे पाठी को ढूँढ कर ले आया। साधारण पाठ करवाया। गुरमेज की आत्मा ने बंती के उदर में आ कर निवास किया। नौ महीने के बाद बच्चे का जन्म हुआ, जिस दिन लड़का हुआ। उस रात कोई चार बजे का समय था, बंती के घर आ कर हुक्म किया। बंती कुछ बचा करना पड़ेगा तो बच्चा बच जायेगा। बंती कहने लगी मेरे सवास उड़ गए, अगर मिला फिर भी खतरा ही है बंती ने उस वक्त हाथ बाँध कर बेनती की, ''आपके बिन हमारा उपाय करने वाला कौन है। मेहर करो जी! मेरी गरीबनी पर तरस करो जी! ''एक साधारण पाठ एक वर्ष में माघ के महीने इसके नाम का करवा देना। बारह वर्ष बारह ही करवाने तो बच्चा बचेगा।'' बंती ने बेनती की जी नाम भी आप ही रख देना। महाराज ने गुरदेव नाम रख दिया। इस वक्त लड़का नौजवान है। शादीशुदा हो कर माता–पिता को सुख दे रहा है।

बोलो भाई वाहेगुरु।।

साखी भगवान सिंह गाँव मजारे वाले से हुई

दरवाज़े वाले घर से उठ कर महाराज जी किरपे के चुबारे में जा बैठे। महाराज जी तीन दिन चुबारे के अन्दर ही बैठे रहे। संगत खिड़की में से दर्शन करे जा रही थी। मुख से माँगी मुरादें मिल रही थी। भगवान सिंह गाँव मजारे का देश बार ज़िला मिंटगुमरी चक्क 562 में रहते थे। खेती का काम करते थे। भगवान सिंह 1926 में बार से अमृतसर आया और गाड़ी में बैठ कर बंगा उतरा। भगवान सिंह के पास दो रुपये बाकी बचे थे। मन में सोचने लगा, पैसे पास कम रह गये हैं। पास पैसे होते तो गुनाचौर से अफीम ही ले चलते, गुणाचौर ठेका होता था। गाँव मजारे आ कर पता करने पर पता चला कि महाराज जी किरपे के चुबारे में बैठे हैं। पहले सीधे ही महाराज जी किरपे के चुबारे में बैठे हैं। पहले सीधे ही महाराज जी के दरबार में पहुँचा। जब सामने गया तो गले में पल्लू डाल कर बहुत श्रद्धा प्रेम से चरणों पर गिर पड़ा। काफी देर के बाद उस कामिल पीर के दर्शन नसीब हुए। आँखों से प्रेम के आँसू बह पड़े। भगवान सिंह का मन वैराग से धोता गया। सीना साफ हो गया। भगवान सिंह की खड़े खड़े ही लिव लग गई। अनोखा सा सरूर आ गया भाई भगवान सिंह को आनन्द आ रहा था। आँखें जबरदस्ती मिलती जा रहीं थीं, कुछ देर बाद बैठ जाने का हुक्म किया। महाराज के पलंग के सिरहाने तीस रुपए चाँदी के पड़े थे, भगवान सिंह की ओर इशारा किया, "भाना! ले ले! उठा ले! हूँ! हूँ! अफीम लेनी होती है।" भगवान सिंह कहता, "जी! मुझे आपने पहले ही बहुत कुछ दिया है। मैं तो आपका दिया हुआ ही खा रहा हूँ।" बहुत बार महाराज जी ने भगवान को कहा पर भगवान सिंह न न ही करे जाये। आखिर जब भगवान सिंह न ही

माना तो महाराज जी बोले, ''भाना! सात लकीरें नाक से निकाल।'' भगवान ने झटपट पेट भर लेट कर सात लकीरें निकालीं उठने का हुक्म किया, कुर्ता झाड़ा, फिर कान टाँगों के नीचे से पकड़ाये फिर बोले ''भाना! देखना कभी पूजा का पानी भी न पीना।'' बहुत हिदायतें कीं एक पिछली महाराज जी ने गुरू गोबिंद सिंह के मौके की साखी सुनाई। महाराज जी कहते, ''भाना! जब हम दसवें जामें में थे तो एक दिन हमारी सवारी जा रही थी।'' भाना कहता उस वक्त जो साथ में सिक्ख थे, उनके नाम भी याद नहीं रहे। काफी देर हो गई। ''भाना! पाँचे सिक्ख थे रास्ते में कोहड़ी पड़ा था, हमारी सवारी देख के दुःख से पीड़त हुआ था मन में अरदास की सच्चे पातशाहो। अगर मेरा कोहड़ हट गया तो मैं तेरे लंगर में सवा मन घी लेकर आऊँगा। भाना गुरू मेहरबान होता है। कोहड़ी का कोहड़ हट गया। सातवें महीने लंगर में घी लेकर आया। जब कुप्पा लंगर में ला कर रखा तो सतिगुर का हुक्म हुआ जाओ इस घी को पहाड़ की ठेरी में दबा कर आओ, खाने के लायक नहीं है। लांगरी हुक्म मान कर चल पड़े जा कर दबाया न और घरों की ओर भेज दिया। जब घर ला कर खाया तो सभी को कोहड़ चल पड़ा। जब सभी दुःखी हो गये तो फिर सभी गुरू के चरणों में आ लगे। बेनंती करने लगे, भूल बखशाई तो बच गये तार भी दिया जाओ तुमने गलती मानी है, आप की कुल में कभी भी कोहड़ नहीं होगा। महाराज जी ने शिक्षा दी, ''भाना! प्रसाद लेने खाने का लालच नहीं करना।'' फिर कहते, ''तेरे घर मसीत बना दें।'' भाना ''जी! मैं कौन घर वाला हूँ? जो कुछ मर्जी बना दो, घर बार सब आप जी के हैं।'' फिर कहते, ''जाओ भाना! उस्तरा लेकर आ हमें सुन्नत करवानी है, मुस्लमान हो जायें। वचन भगवान सिंह से करे जा रहे थे। नीचे सीड़ियों के बीच एक फकीर फैज़ खड़ा था। जब

महाराज भगवान सिंह से इस तरह के बचन कर रहे थे कि भाना तेरे घर मसीत बना दें, हम सुन्नी बन जायें तो नीचे खड़ा फैज़ खां बोला, ''जी! सच्चे पातशाहो। क्यों ऐसे चोज कर रहे हो? मुसलमान तो सौ सौ कोस से भी दूर कर दिये हैं।'' जब फैज़ नीचे खड़ा बोला तो महाराज जी कहते, ''फैज़! चल भाने को दो झोटे गुणाचौर से पकड़ा कर रसोखाने के आगे खूहों पर कब्जा करवा दे।'' कहते, ''चल भाना! तुझे पाँचों खूह दिए, चल कब्जा कर। रईड़ क्या लगते हैं?'' भगवान सिंह को क्या पता लग सकता था। महाराज जी का भेजा हुआ चल पड़ा जिधर का हुक्म लगाया था उधर खेतों में होकर घर चला गया। जब सन् संताली का घल्लूघारा हुआ तो पता लगा जब गुणाचौर से दो सान पकड़ कर महाराज जी की दरिया वाली जमीन जोतनी पड़ी, घर से ही सारी ज़मीन की अलाटमैंट हुई फिर पता लगा कि जो कुछ हुआ सब नाभ कंवल राजा साहिब जी के हुक्म में होता है। पाकिस्तान बनने पर जब अदला बदली शुरू होने से पहले ही गाँव आने का हुक्म किया था, फिर जब कई वारदातें शुरू हुई थी तो बाल बच्चे औरतें सब राजा साहिब के हुक्म से गाँव की ओर भेज दीं। भगवान सिंह 562 चक्क में ही रहा, सारा माल गुदाम संभाल कर बैठा था। धीरे–धीरे गदर मच ही गया तो सात घर थे 562 चक्क में सिक्खों के और थे मुस्लमानों के। सब तरफ जब घेरा पड़ गया तो कोई पता न लगे कि किस तरह दुआबे जाया जायेगा। एक दिन भगवान सिंह बाहर खेतों में चला गया. नहर के किनारे खड़ा होकर राजा साहिब के चरणों में अरदास की, धाहें निकल पड़ीं, रोते ही आवाजें लगाई, ''मेरे साथ ऐसा ही हाल होगा।'' जब रोते रोते नहर के पुल पर आ गया तो महाराज जी ने साक्षात हो कर दर्शन दिये सफेद चादरे की बुक्कल लगाई हुई थी। सिर पर हाथ रखा और हुक्म किया,

''भाना! गाड़ी मोटरें सब राजा साहिब की हैं, चढ़ कर आ जाना। हम तुम्हारे हर समय साथ हैं फिकर न करना।'' उस से तीसरे दिन मिलटरी का ट्रक आया, सारा घर का सामान लाद कर भगवान सिंह के घर गाँव मजारे सबसे पहले जैसे किसी रिश्तेदार का काम हो, ऐसे काम फौजी आदमी सुख शांति से भगवान सिंह को फूलों की तरह घर छोड़ गये। सारा परिवार राजी खुशी घर पहुँच गया।

दूसरी साखी भगवान सिंह के परिवार की चली

भगवान सिंह और शेर सिंह दो भाई थे। दोनों भाई गाँव पूनियाँ में शादी–शुदा हुए थे। दोनों पुनियाँ से सखी बहनें थीं। शेर सिंह के घरवाली का नाम हर कौर, भगवान सिंह की सिक्खनी का नाम गाबो था। हर कौर के तीन बच्चे थे। गाबो के बच्चे जन्म के बाद मर जाते थे। एक बार बार देश से गाँव मजारे शादी पर आये, एक दिन सारा परिवार महाराज जी के दर्शनों के लिए आए। महाराज जी करतार सिंह के घर बैठे थे। सब ने बारी–बारी बहुत श्रद्धा से चरणों में नमस्कार की। नमस्कार के बाद सब को सामने बिठा लिया। गाबो के सात आठ वर्ष के पुत्र की बाजू पकड़ कर हर कौर को पकड़ा दी। हर कौर के पुत्र की बाजू पकड़ कर गावो को पकड़ा दी। गाबो को हुकम किया गाबो तुझे यह लड़का दिया इसको अपना बेटा मान कर समझना यही ही तेरा पुत्र है। हर कौर को गाबो के लड़के की बाजू पकड़ा कर कहा, ''हरो! तू चन्नण की बाजू पकड़ इक्ट्ठी रिश्तेदारी अच्छी होती है।'' हर कौर के लड़के का नाम गुरबख्श सिंह था। गाबो के लड़के का नाम चन्नण सिंह। एक दूसरे के लड़कों की बाजू पकड़ा कर भेज दिया। उस वक्त किसी को कोई पता नहीं था कि क्या खेल रचा रहे हैं? शादी के बाद सारा परिवार

राज़ी खुशी 562 चक्क में चले गए वार देश में। कुछ दिनों के बाद गाबो के लड़के चन्नण की बाई बगल में कछराली हो गई, कुछ दिन बीमार रहने के बाद स्वर्गवास हो गया। सारे परिवार को पहले ही पता था कि गाबो के बच्चे बचते नहीं, चन्नण भी नहीं बचेगा। गाबो का आसरा हर कौर का बच्चा देकर बना दिया। खुदा की रज़ा को न मोड़ा। हर कौर के और भी बच्चा था। एक बार गुरबख्स सिंह बहुत बीमार हो गया। छः महीने बीमार रहा, कलेरां वाले भूत गिर जैसे अच्छे जागूर भी जोर लगा हट गए। डाक्टर हकीम सभी जवाब दे गये। सारा परिवार बहुत घबरा गया। इस परिवार का नाभ कंवल राजा साहिब जी पर बहुत भरोसा था। चक्क 562 में ही बैठे हुए ने सतिगुरू का ध्यन धर कर अरदास की, ''सच्चे पातशाहो! कुबजों का कुब दूर किया, कोहड़ियों का कोहड़ दूर किया, असाध रोग, महापापी अजामल जैसे तार दिये आप की बखशिश किया हुआ एक ही पुत्र तेरे दर से मिला था, सुखों का बूटा वो भी सूख चला मेरी फरियाद कहीं निकट हो कर सुन, जैसे मेहनी वाले राजे की, रावी की फरियाद सुनी थी, जैसे सधने की रखी।'' जब गाबो की दर्दनाक आँसुओं भरी आवाज पावन से बिजली के तार की तरह मजारे बैठे अर्शी प्रीतम के कानों में पड़ी अन्दर से कुण्डी लगाई, संगत को हुक्म किया आज हमें कोई बुलाये न। समुंदा गाँव नागरा का भाना खानखाना वाला दोनों पहरे पर खड़े करके यह हुक्म किया, ''कोई हमें बुलाय न।'' आँख दबाने पर खोलने के साथ ही बार देश चक्क 562 मंजी पर पड़े हुए अधमरे मरीज़ गुरबख्श सिंह को जा दर्शन दिये। गुरबख्श सिंह मंजी पर पड़ा, हिल नहीं था सकता, बेहोशी में पड़ा था। महाराज जी के दर्शनों की झलक ऐसी पड़ी कि शरीर को एक हलूणा सा आया, सिर पर हाथ रखा हुआ नजरी पड़ा। गुरबख्श सिंह डर कर

झटपट उठा, कानों में आवाज़ पड़ी, ''हाँ! हाँ! काका तकड़ा हो।'' बस एक बार ही इतनी बात कहने के साथ गुरबख्शो की देहि हलकी हो जाने की जैसे ही गई। रोग से मुक्त हो गया। शरीर तन्दरुस्त हो गया। गुरबख्श ऊँची ऊँची कहने लगा, राजा साहिब जी आये हैं। बाकी और किसी को दर्शन नहीं हुए। बस गुरबख्शे को दर्शनों की झलक दिखाई दी। यह साखी भगवान सिंह और गुरबखश सिंह ने अपनी जुबानी सुनाई। भगवान सिंह का बहुत प्रेम था महाराज से। लम्बे लम्बे साँस लेकर आँसुओं की झड़ी लगा देता था, जब महाराज जी के वचन सुनाता था।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी ईश्वर सिंह पुजारी हकीमपुर गुरुद्वारा नानकसर वाले से हुई

महाराज नाभ कँवल राजा साहिब जी गाँव मजारे अपने घर बैठे थे। सर्दी का मौसम था। सारा दिन संगत आप जी के घर से पदार्थों की झोलियां भर कर जाती रही। सूर्य छिप जाने के बाद करतार सिंह को हुक्म किया सब को बाहर निकाल कर कुण्डी लगा दे। आप जी के हुक्म अनुसार बैठी संगत को उठ कर चले जाने का हुक्म किया। सभी आदमी बाहर चले गए, तीन आदमी थे, जो उठे न, एक तरफ दीवार से लग कर बैठ गये। जब एक पहर रात बीत गई, महाराज दरवाजा खोल कर बाहर आये, बाहर बैठे आदमियों ने उठकर नमस्कार की। इनमें से एक का कोई मुक्कद्दमा किसी से चल रहा था। ईशर सिंह पुजारी का केस अकालियों के साथ गुरुद्वारे एक्ट के अनुसार चल रहा था। तीसरे का काम और औरत का केस था। महाराज ने इन तीनों ही आदमियों को कहा, ''आओ। भई बताओ तुम्हारा क्या काम है?'' साथ

ही लगते हाथ कहने लगे, ''हम औरत का केस नहीं सुनते।'' जो आदमी औरत के केस वाला था, उस को भेज दिया दूसरे को कहने लगे, ''तुम्हारे हक में हमने मुकद्दमा कर दिया है।'' ईशर सिंह को कहा, ''ईशर दास! तुम्हारा क्या काम है?'' ईशर सिंह ने बिनती की, ''गुरुद्वारा नानक सर गाँव हकीमपुर की जूह में है। वहाँ दो पातशाह आये हैं, गुरू नानक जी और सातवें गुरू हरि राय साहिब जी। इस गुरुद्वारे का पुजारी मैं हूँ। मेरे ऊपर मुकद्दमा किया हुआ है अकालियों ने। अगर मेरे पास से गुरुद्वारे की जमीन जाती रही, मेरा परिवार भूखा मर जायेगा। मेरा कोई टिकाना नहीं, सच्चे पातशाह। कोई मेहर करो। यह केस मेरे हक में हो जाये तू तुम तो वो ही जोत हो, तेरे हुक्म में ही सब कलमें चलती हैं, आप तो जनक राजा का अवतार हो।'' ईशर सिंह सच्ची सरकार आगे पीट कर रो पड़ा। ''तेरा दिया ही खा रहे हैं।'' जब ईशर सिंह ने बहुत आप जी से बेनती की आगे सतिगुरूओं की ओर से हुक्म हुआ, ''ईशर सिंह आप अदब सेवा नहीं रखते, सेवा नहीं रखते, आप लायक नहीं गुरुद्वारे में रहने के।'' सन् 1927–28 में शिरोमणी कमेटी अमृतसर ने पुजारियों में सब गुरुद्वारे छीनने शुरू कर दिये थे। ईशर सिंह कहता, ''जी! सच्चे पातशाहो आप ही वह जोत हो हम आपके हुक्म से ही गुरुद्वारों की संभाल की थी। आगे से भाओ प्रेम से सेवा किया करेंगे।'' आगे से महाराज जी फिर बोले, ''अच्छा ईशर सिंह! मुकद्दमा तुम्हारे हक में कर दिया है। जितना समय सेवा करेगा, हक बना रहेगा, '' कहते, ''बोलियां सुनाओ'' ईशर सिंह कुछ डरे घरों में बेलियाँ पाते से महाराज कहते, ''काका! डर न! हूँ ऊँची–ऊँची पाओ। जिस तरह मेले पर जोड़ियां बनाकर पाते हो।'' ईशर सिंह लगा ऊँची–ऊँची बोलियाँ पाने कि ,पूरन की। धार्मिक सी बोलियां पाने लगा। महाराज कहते ''बाजू निकालकर ज़ोर से पाओ आगे गाँवों के मेरी लंबी गली आओ मित्रो।' ' ऐसी–ऐसी

आप बताकर बोलियाँ बुलवाते थे। नानकसर वैशाखी पर काफी जोड़ मेला होता जिसमें लड़के जोड़ियां बना–बना कर बोलियाँ बोला करते थे। इस तरह बोलियाँ बोल कर खुश रहे, मुकद्दमा हक में होने का वचन देकर भेज दिया। मुकद्दमा ईशर सिंह के हक में हो गया, लाहौर हाईकोर्ट में केस लड़ा परन्तु ईशर सिंह जीतता गया। ईशर सिंह के हक में दरगाही कलमें वह चुकी थी, फिर कौन बदल सकता था।

साखी महन्त पूरन दास जी की

महन्त पूरन दास जी का गाँव चक्क बिलगा लगा था। आप जाट जाति से समबन्ध रखते थे और खेतीबाड़ी का काम करते थे। आप जी के पिता का नाम श्री मंगल दास जी और माता का नाम बीबी काहनों था। आप जी के दो बड़े भाई देव और जीण थे। भाइयों ने जो दर्जे में सबसे छोटे थे परंतु बुद्धि तेज और शरीरक तरफ से मजबूत होने के कारण परिवार में आप जी की परिवार में बहुत महत्ता थी। आप बचपन से ही साधु स्वभाव के निम्र, दयावान, हर किसी का भला चाहने तथा करने वाले थे। सोच ज्यादा धार्मिक तथा ज्यादा काम करने वाला होने के कारण आप दुनियादारी से निरलेप थे।

महन्त जी ने श्री ब्रहम दरिया (जो ढाब के किनारे निवास करने के ढाब वाले गुरू के नाम से जाने जाते थे, को गुरू धारण किया। आप अपने गुर के दर्शनों को रोज़ जाया करते थे। आप जी का इस तरह हर रोज काम छोड़कर गुरू के दर्शनों को चले जाना आप के भाइयों को अच्छा न लगता एक दिन दोनों भाईयों ने मिलक फैसला किया कि वह आप जी को काम में लगा लेंगे और ढाब पर नहीं जाने देंगे। उन्होंने महन्तों को चड़स पर लगा लिया सारा दिन लगे रहे। जब अंधेरा हो गया उन्होंने सोचा कि अब तो जाने का समय बीत

चुका है। अब महन्त ढाब नहीं जा सकेंगे। वह घर को आ गए। रात हो गई जब वह महन्तों की रोटी लेकर कुएँ पर गये तो देखा महन्त वहाँ से जा भी चुके थे। एक दिन भी आप अपने गुरू के दर्शन के बिन रह न सकते।

एक दिन ब्रहम दरिया चढ़ाई कर गये। उनके बेवक्त चले जाने से महन्त बहुत उदास हो गये। उनका किसी कार्य में मन न लगता। उनका दिल उदास हो गया। आप जी की माता उनकी उस उदासी को समझती थी कि एक दिन वह कहने लगी, ''पूरना!! कहते हैं लाभे के मजारे थे। मजारे को पहले लाभे का मजारा कहते थे। क्योकि इस गाँव को वसाने वाला लाभा था। जो कि सरदार मंगल सिंह (मन्गू) स. नत्था सिंह (नत्थू) करतार सिंह, स. चैन सिंह के बुजुर्ग थे, जिनके घर को पातशाह ने अपना घर होने का मान दिया। एक ईशर कोटि साधू रहते हैं जिनको दुनियाँ राजा साहिब राजा साहिब कहकर बुलाती है। मेरी मानें तो तू भी दर्शन कर ले जाकर कि क्या पता तुझे वहाँ से ही ठण्ड पड़ जाए। माँ ने कई बार महन्तों का राजा साहिब के दर्शनों के लिए प्रेरणा दी। महंत संत बिशंबर दास गाँव कट्टां वाले (जो आप भी महान सन्त थे)पास से भी महाराज जी की बहुत उस्तत सुन चुके थे।

एक दिन महंत बिना किसी को बताये पूछते–पूछते पातशाह के घर आ गए। घर का आँगन संगत से भरा पड़ा था। परन्तु जिसके दर्शन की रीझ पूरन को यहाँ तक खींच कर ले आई थी वो तो किधरे भी नज़र नहीं थी आती। महंत भी संगत में बैठने लगे वह अभी किसी से पातशाह के बारे में पूछना ही चाहते थे कि खिड़की खुल गई ऐसे लगा जैसे परमात्मा आँखों के सामने आ खड़ा हुआ हो। पातशाह ने कर्मी को आवाज दी ''करमी!! साधू को घी शक्कर से रोटी

खिलाओ।'' महंतों ने संगत में नज़र मारी उनको उन सभी में से कोई साधु नज़र न आया वो मन ही मन सोचने लगे। महापुरुष (राजा साहिब जी) किस को कहते होंगे? घट–घट की जानने वाले ने पलों में ही नितारा कर दिया कहने लगे, ''काका! आ जाओ इधर आ जाओ– क्या नाम है तेरा?'' महन्तं ने बहुत अधीनगी से कहा, ''जी! पूरन! महाराज कहने लगे, ''उस पंघूड़ी पर बैठ कर प्रशादा छक लो।'' सारी संगत को मुखातिब हो कर कहने लगे, 'हुँ! हूँ! दर्शन तो हो गए अब अपने काम काज करो जा कर' संगत के जाने के बाद महन्तों ने प्रशादा छक लिया। बाद में पातशाह और छोटी–छोटी बातें करते रहे। फिर महन्त इजाजत लेकर घर चले गए।

गाँव जा कर महन्तों का दिल न लगा। उनका मन मुड़ मुड़ दर्शनों को लोचता था। थोड़े–थोड़े दिनों बाद महन्त फिर आ जाया करे। हर बार तड़प बढ़ती जा रही थी। प्यास बुझने की बजाए ज्यादा बढ़ रही थी और उधर उनके हाथ का काम पता ही न लगता कब खत्म हो जाता–पता नहीं कहाँ से दूगना बल उनमें आ रहा था। और कहाँ से उनकी फसल दुगनी चौगुनी बढ़ फूल रही थी। बहुत ज्यादा पैदावार हुई और महन्तों ने 500 रुपये उन दिनों में कमा लिया। इतना पैसा देख कर सब हैरान रह गए। इतना पैसा देखना भी उनके लिए एक सपना था जितना वो कमा चुके थे। महन्त इस करामात का कारण जानते थे पातशाह। मुझे परीक्षा में न डालो जी, हमें गुजारे जितनी ही माया चाहिए है जाट की जेब में इतने पैसे हों तो वह सिर पाड़ते फिरते हैं तथा सारा पैसा थाने कचहरी के लेखे लगता है। पातशाह मुझे तो आपके दर्शनों की तथा आपकी जरूरत है।'' इस तरह काफी अरसा महन्त पातशाह के दर्शनों को आते और वापस चले जाते। हर

बार तलब पहले से तेज होती। इस तरह कई बार आने से पूरन दास पर प्रेम का रंग चढ़ गया।

गर्मियों की एक तेज दोपहर थी। गर्मी पड़ रही थी। महन्त पातशाह के दर्शन करने के लिए जाने की नीझ में जल्दी–जल्दी काम कर रहे थे। चड़स चलाना बहुत जान मारने वाला काम हुआ करता था परन्तु महन्त अपने प्रेम धुन में मगन मुख से सतिगुरू बोल प्यारे राम बोल प्यारे। उचारते चड़स खींच रहे थे। इतने को पातशाह कुएं पर आ पहुँचे और महन्तों को चड़स खींचने से रोक दिया और अपने साथ ही मजारे ले आये। रसोखाने ले जा कर गुलजारा सिंह से पाँच झेल कुएँ में से पानी के भरवाये तथा अपने हाथों से पूरन के सिर में डाले और हुक्म दिया चलो रसोईया लंगर की सेवा करा करो। संगत को गुरू रूप जान कर सेवा करना। गुरू को हाजर नाजर समझ कर सेवा करना। वस्तु संगत में बाँट कर छकना पल्लू में कुछ न बाँधना। क्रोध न करना, सील संयम रखना। काम क्रोध, लोभ–मोह हंकार पाँच विषयों को दमन करना जत–सत रखना, नौ दरवाज़े रोक कर दसवें अन्दर पैर रखना, हम हर वक्त ही तेरे अंग संग रहेंगे।

एक दिन पातशाह ने केसरी (गाँव गुणाचौर) को बुलाया और हुक्म लगाया, 'केसरी! जाओ मेरा रसोईया कच्चा पक्का देख कर आओ।' केसरी हुक्म मानते हुए चली गई उसने हर तरीका अपनाया कि महन्त अपने ब्रहम चर्ज से हट जाये परन्तु वो कामयाब न हुई जब घर आई तो पातशाह बोले, ''हाँ! कितना सा पक्का निकला मेरा रसोईया?''

केसरी, 'जी सरकार! बहुत पक्का रोड़ जैसा, ' जब के महन्त पूरन दास जी राजा साहिब की शरन में आये थे उनको राजा साहिब की प्रीत के बिना हर वस्तु झूठी लगती थी। यहाँ तक कि श्रीमद भगवत गीता जिसका पाठ वो अब तक बहुत प्रेम से करते थे उनका मन

उसमें भी न लगता। एक दिन उन्होंने सोचा कि वो राजा साहिब जी से अपने इस शंके की नव्रिती करवायेंगे। इससे पहले वो पातशाह को कुछ पूछते पातशाह ने उनको घर बुलाया। महन्तं के साथ राजा साहिब जी ने अपने दो और सेवक भी बुलाये जो अपने घर बार का मोह छोड़कर राजा जी से केवल नाम की दात माँगते रहे हैं। तीनों को राजा साहिब जी ने सारी संगत को गीता उपदेश देने के लिए भेजा। गीता उपदेश तो सिर्फ एक बहाना ही था राजा साहिब जी महन्त पूरन दास जी के दिल में से धार्मिक ग्रंथों के प्रति पड़ा हुआ वहम निकाल देना चाहते थे और यह भी बता देना चाहते थे कि धार्मिक ग्रंथ चाहे कोई भी हो उस का उद्देश्य सच्चे परमात्मा तक पहुँचना ही है। दूसरे महन्त अब तक हुई (राजा साहिब द्वारा) परीक्षा में से पास हो गए थे कि एक किस्म की यह भी उनकी एक परीक्षा ही थी। क्योंकि दुनियां के अलग अलग रंग देख कर, दुनियाँ में विचर कर दुनियाँ दारी से रहत होना बहुत मुश्किल है।

अब जब वापसी पर तीनों सतगुरू के हजूर पेश हुए तो पातशाह (राजा साहिब जी) अपने घर बैठे थे। घर में बहुत सारी संगत थी। राजा साहिब जी ने सारी संगत को बाहर भेज दिया। और साथ ही महन्तों के साथियों को भी। बाहर पहरे पर आदमी खड़ा कर दिया और उसको सख्त हुक्म कर दिया गया कि कोई भी राजा साहिब जी को परेशान न करे। बीबी करमी से अन्दर से कुण्डी लगवा दी। अब घर में राजा साहिब जी के बिना महन्त और बीबी करमी ही रह गये थे। बीबी करमी चौंके में बैठे थे। महन्त आँगन में खिड़की के आगे खड़े थे पातशाह बड़े कमरे में खड़े थे. अब वो समय आ गया था जिसमें महन्तों की हुई परीक्षाओं का निकलना था। राजा साहिब जी महन्त पूरन दास जी को मुखातिब हो कर बोले, ''कैसे पूरना?''

महन्त : 'सच्चे पातशाह! दया है आपकी।
राजा साहिब जी : गया फिर गाँव पुर गाँव?
महन्त : जी सरकार!!
राजा साहिब जी : देखीं तू सारी दुनियाँ घूम कर?
महन्त पूरन दास : हाँ जी महाराज।
राजा साहिब जी : देखा कोई मेरे जैसा?

अपने गुरू के मुख से ऐसे वचन सुन कर अपने रोम–रोम में बसा हुए प्रेम सागर जो अब तक अपने अन्दर रोक कर बैठे थे, वह पड़ा महन्त जोर से रोते हुए बोले, ''न सतिगुरू! आपके जैसे तो कोई भी नहीं मिला।''

पातशाह ने चौपट दरवाजा खोल दिया, बाजू खोल कर बोले, ''अगर तुझे नहीं मिला कोई मेरे जैसा, तो मिला मुझे भी नहीं कोई तेरे जैसा। पूरन दास जी को महाराजा ने गले से लगा लिया। उस़ लम्बी जोर से पाई हुई गलवंकड़ी में पता नहीं क्या जादू था महन्त के पूरे के पूरे रंग में रंगे गये। सारी उम्र जो तड़प जो तलाश महन्तों को वैरागी बनाई फिरती थी उसकी मंजिल आज मिल गई।

जां गुन को गुनी खोजत हैं नित सो गुन सतिगुरू सेव सो पाओ।।
नदरी ही नदर निहाल करे खिन भीतर भेद औ भरम चुकाओ।।
जां पद कारन कसट हैं पावत सो गुर ने पदु सहज लखाओ।।
दास भगवान नम गुरू को जिन आत्म तीर्थ है परसायो।।

सतिगुरू ने पलक झपकारे में ही महन्तों को पूरन ब्रहम ज्ञानी बना दिया–

सूर्ज चन्द जह एक जगा तहां कामल पीर पवा दई झाकी।।

महन्त पूरन दास जो अब तक सिर्फ रसोईए के तौर पर सिर्फ सेवा ही कर रहे थे। मरतबे पर पहुँच गए। पूरन ब्रहम ज्ञान हो गया। जोत एकमिक हो गई।

कहने लगे, ''पूरना! हाथ तेरा खीसा मेरा, खजाना कभी खत्म नहीं।'' इन शब्दों में राजा साहिब जी सिर्फ दुनियावी माया की बात नहीं थे कर रहे, परन्तु सब तरह की अध्यात्मक और रूहानी बख्शिशें महन्तों को बख्श गए थे। महाराज जी ने बीबी करमी (सरदार करतार सिंह की बहन) को हुक्म किया कि ''करमी चल! लाला से चाबी लेकर पूरन को देना। इसको बहुत सतिकार स रसोखाने छोड़कर आना।'' बीबी करमी महन्तों को लेकर रसोखाने आये ,झिंगड़ां की ओर के रास्ते में थोड़ा दूर तक पैदल चलकर महन्तों को सारी बख्शिशें लेकर देने का जस खट कर घर वापस गए।

रसोखाना साहिब की सेवा पूरन दास जी ने सब तखतो ताज, गद्दी के मालिक होने के बाद भी सेवादारों की तरह की। दिल–जान से की। उनके मुख से निकले वचन सत्य होते। अनगिनत लोग उन्होंने तारे, जिनकी जिकर करना हो तो एक बड़ा ग्रंथ बन सकता है। रसोखाना साहिब में महाराज जी की समाध, दर्शनी डिउड़ी अखण्ड पाठ हाल, घंटा घर, बारांदरी, उनकी देख–रेख में बनी इमारते हैं। जो कि भवनकला, चित्रकला का सर्व–श्रेष्ठ नमूना हैं।

साखी गाँव मजारे के लोगों से हुई

करतार सिंह के घर से उठ कर महाराज जी गाँव के पूर्व की ओर गाँव के पास ही एक छप्पड़ सा था, गुरुद्वारे की और उस छप्पड़ में मंजी लगा कर बैठ गए। सर्दी का मौसम था। सर्दी का बड़ा ज़ोर था, पूरा चल रहा था। फसलों और पेड़ों का बुरा हाल था। हवा धरती चीरती

जाती थी, बादल का बड़ा हंगामा हो रहा था। बिजली चमक रही थी। जानवर मर रहे थे। लोग सर्दी के मारे अन्दर चले गए। ऐसे वग रहे कोरे में तीन चार दिन तक उस छप्पड़ में ही बैठे रहे। वर्षा हो रही थी। जब तीन दिन बाहर ही वग रहे तूफान में बैठे रहे, न उठे तो काफी संगत डरने लगी। महाराज जी का क्या हाल होगा? पड़ रही बारिश में भी नहीं उठते, कुछ आदमियों ने सलाह की कि, चलो मंजा ही उठा कर अन्दर कर दें।'' चार लड़के लगा कर मंजा उठा कर जल्दी जल्दी चल पड़े। महाराज जी ने दो बार कहा कि रहने दो, क्यों उठाये जा रहे रहे हो? मंजी करतार सिंह मिस्त्री की हवेली के आगे थी, जब अन्दर मंजा लांघने लगे तो दरवाजा छोटा निकला। पास में ही एक और हवेली थी, उस की ओर चल पड़े, उस हवेली में खुला सा कमरा था। जब कमरे के आगे गए तो हुक्म हुआ, ''चलो, वापस उसी हवेली चलो।'' जब वापस उसी दरवाजे के आगे गए वो ही दरवाजा जो पहले एक फुट मन्जे से छोटा था, फिर दो फुट खुला हो गया. मंजा सीधा ही अन्दर चले गया। सारे लोग धन्न–धन्न कहने लगे, ऐसे ही कौतक हजारों संगत को दिखा देते थे।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी दयालु को गुरू नानक रूप में दर्शन देने की चली

करतार सिंह रामगढ़िए की हवेली से उठकर महाराज जी किरपे के चुबारे में जा बैठे। संगत दर्शन करके मुख से माँगी मुरादें पा कर जा रही थी। दयालू तथा प्यारा सिंह उन दिनों में लंगर की सेवा करा करते थे। प्यारा सिंह और दयालू, दोनों ही महाराज जी के दर्शनों को

रसोखाना (रसोई) से गाँव में आए। द्वार खुले थे, दयालू और प्यारा सिंह जब अंदर गए तो क्या देखते दयालू को महाराज जी ने गुरू नानक देव जी के रूप में दर्शन दिए, हाथ में छोटी माला पकड़ी हुई थी। कानों में जैसे मुंदरें पाई हुई थी। बुंदे (कानों में पहनने) डाले हुए थे, जैसे चंदन घिस कर लाया हो। उस समय चेहरे का रंग इतना शोभा दे रहा था, जैसे मानो कई सूर्यों का मुख पर नूर झलक रहा था। दयालू कहता मेरा रोम–रोम उस वक्त जुमाल करके विशाल हो गया, बहुत ही आनंद आया। ऐसा शांत अवतार का दर्शन किया। दयालू की आँखें मिलती जा रही थीं, ऐसा सरूर आय आँखें देख–देख कर संतुष्ट नहीं हो रही थीं। रोम–रोम में लाखों–लाखों चशमा हो जाए मैं अपने मुर्शिद (गुरू) को देखता रहूँ। कुछ समय बाद वापस चले जाने का हुकम किया। हुकम पा कर रसोखाने में चले गए। ऐसा मन को नशा आया, पलक भी नहीं भूलती, ऐसा नशे का रंग था। तीसरे दिन दयालू ने प्यारा सिंह से पूछा, ''भाई! हम जब महाराज जी के दर्शन को गए थे, आप ने पातशाह को किस रूप में देखा था?'' प्यारा सिंह कहता मैंने तो उसी ही रूप में दर्शन किए थे। दयालू कहता मैंने गुरू नानक देव जी का रूप देखा, फिर कृष्ण भगवान के रूप में देखा जैसे गुरू नानक जी लंका में हनुमान जी को राम लक्षमण सीता क रूप दिखा कर दर्शन दिए थे। ऐसे ही महाराज नाभ कंवल राजा साहिब जी ने दयालू जी को नाम का रंग चढ़ा निहाल किया। मजीठी रंग में रंग दिया। बोलो भाई राजा साहिब जी की जय।

साखी एक भक्त के साथ हुई

किरपे के चुबारे से उठकर महाराज गाँव करनाणा के खेतों में चले गए। टहलते–टहलते करनाणे के राह की ओर चल पड़े। पास बंता सिंह हवलदार गाँव रसूलपुर का हाजिर थे। इतने समय को पता नहीं एक

राही कहाँ का था? एक पलंग उठाई जा रहा था। महाराज जी के पास से गुजरते हुए जा रहा था, रास्ते में ही राजा जी ओर नमस्कार करता हुआ गया। महाराज जी का हुकम हुआ कि ''अच्छी कर दे तो पलंग रसोखाना में रख दे अच्छा रहेगा।'' वह पलंग रख न सका क्योंकि वह किसी कार्य के लिए लेकर जा रहा था। कई बार घर की जरूरतों ईश्वर के हुकम को पीछे कर देती हैं, असलीयत से दूर ले जाती हैं। इसी के रूप ने इन्सान को पिंजरे में डाल कर एक शेर से जीव बना दिया है। हमें तो हैवान बना दिया। ज्ञान का दीपक बुझा कर अज्ञानता की आंधी ला दी है। 'तुम सुन यार हमारे एक विनती' उस जाते हुए राही का मन ईश्वर के हुकमनामे को समझ न सका। जब राही आगे गया तो फिर दोबारा हुकम किया, बंत!पलंग के दाएं तरफ एक कीड़ा है जिस घर यह पलंग जायेगा उस का नाश हो जायेगा। जब ऐसा कठोर हुकम हुआ उस पलंग वाले राही ने सुना तो मन में भय आ गया कुछ आगे जा कर एक आदमी से कही ली ओर पलंग के पावे को पाड़ दिया। यह राही गुणाचोर गाँव क ओर जा रहा था। पातशाह करनाणा गाँव की ओर जा रहे थे। जब पलंग वाला राही ने पावा कही से पाड़ा तो सचमुच ही चार ईंच लंबा सुंड निकला। एक दम पास जाकर महाराज बोले हमारी परख करना चाहता है। जब कुछ क्रोध से महाराज जी बोले तो राही बहुत डरा और उनके चरणों पर गिर पड़ा और मिन्नतें करने लगा, ''महाराज जी। मैं भूल गया हूँ मुझ पापी को बख्शो जी, मैं मूर्ख आपकी शक्ति को समझ न सका। मैं अनजान आपके भेद न समझ सका। बहुत निवेदन किया तो महाराज ने पलंग ले जाने का हुकम दे दिया। ऐसे ही राजा बली की नजर पत्थर, जल, थल, आकाश सभी स्थान पर काम कर रही है। तभी ही आपको त्रिलोकी नाथ कहा जाता है?

बोलो भाई वाहिगुरू।

आगे साखी बाबू के उदार की चली

एक बाबू गाँव भरो मजारे का महाराज नाभ कंवल राजा साहिब के लंगर की सेवा करने लगे। उस ने पाँच साल लंगर में बहुत ही प्रेम से लंगर की सेवा की। उस समय लंगर मजारे अभी शुरू ही किया था। नया–नया काम चालू होने के कारण यदि कभी लंगर में कमी भी आ जाती तो इसने संगत को जरूर छकाउणा, आप कई बारी भूखे ही रह लेता। महाराज जी के लि सरदाई हर रोज बना के यहां भी होते ले जानी। निस्वार्थ सेवा करने से ही प्रभु की प्राप्ति हो सकती है।

'सेवा करत होए नहकामी, तिस को होत प्राप्त स्वामी।।

निस्वार्थ सेवा करने वाला यह सेवादार सच्चे दिल से सेवा करता। उसकी सेवा से खुश हो कर महाराज जी ने लंगर में ही दर्शन जा दिए। जा के आवाज दी, ''आओ बाबू! तुझे आज सेवा की मेहनत दे दें।''

चार पदार्थ जे को मागै।। साध जना की सेवा लागै।।

बाबू चरणों में गिर पड़ा। आगे सतिगुरू बोले, ''बाबू! चल घर चला जा। तेरी सेवा सही पाई। चलो! तुम्हारे सब काम हम ने कर दिए हैं। यह हुकमनामा सुन के बाबू बहुत उदास हुआ। मुरझाए फूल की तरह बाबू की दशा हो गई, बाबू कहता जी मैं आप के दर्शनों बिना बच नहीं सकता।

एक कड़ी न मिलते तो कलियुग होता।।
अब कब मिले प्रिय तुधु भगवंता।।

मेहरबान जी मुझ से कोई गलती हो गई तो मेरी भूल माफ जी।

सच्चे पिता जी मेरा आप के बिना और कोई सहारा नहीं। मुझे चरणों में ही रखो जी।'' फिर सतिगुरू का हुकम हुआ, ''बाबू! घर चल, कहना मानना है।'' बाबू रसोखाने से बाहर चला गया। रास्ते में ऐसी प्यार की दिल में खींच पड़ी, दिल फटा बेहोश हो के गिर पड़ा। किसे ने आ कर बताया कि बाबू रास्ते में पड़ा तड़प रहा है, वैराग में आँसुओं की झड़ी लगी है। यह सुन के महाराज जी एक सिरपाऊ लेकर यहाँ बाबू गिरा पड़ा था वहां चले गए। बाबू को आप महाराज जी ने बाहों में ले लिया अपने पास से पगड़ी प्रदान की, सिर पर हाथ रखा। कुवाड़ (दरवाजे) खोल दिए, ''जाओ! काका अब की कसर है पास तो धुर का ही बना दिया है। आज तक हम ने किसी को सिरोपाऊ नहीं दिया, तुझे ही दिया है।'' बाबू घर चला गया। एक हफते के अन्दर–अन्दर बाबू का शरीर छूट गया। शरीर त्याग के परमगति को प्राप्त हो गया। धन्य है राजा साहिब तेरे दर्शन करके तेरे घर की सेवा कर के बड़े–बड़े पापियों को तारा। बाबू की आत्मा उस स्वैप्रकाश में जा अभेद हुई।

जिऊ जल महि जलु आई खटाना।।
तिउ जोति संगि जोति समाना।।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी रतन सिंह गाँव मसानी वाले के साथ हुई

रत्न सिंह मसानी का बहुत गरीब आदमी था। गरीबी ने जब बहुत तंग किया तो भक्त सुदामे की तरह नाभ कंवल राजा साहिब जी के चरणों में जा बैठा, उस इलाही दरबार की ओट लेकर रोज हाज़री भरने लगा। एक दिन महाराज मेहरां के घर बैठे थे। रतन सिंह सामने हुआ तो आगे आदेश दिया, ''भाई! चल भाग चल। किसे टापू पर चले

जाना है। रेलां सभी रांजा के नाम पर ही बनी हुई है। जहाज भी राजा के नाम पर ही चलते हैं। बस.दरगाही आदेश था, पक्की मोहर लग गई। रतन सिंह अफ्रीका चला गया, जाते ही अपने भाई की माया हाथ आ गई। रतन सिंह के कुछ दिन जाने के बाद उसका भाई मर गया। मरने के बाद सारा धन रतन सिंह के काबू आ गया। ठेकेदारी का काम शुरू किया। ठेकेदारी के काम में बहुत माया बची, कई दुकानें बना कर किराए पर दे दीं। एक दो इसकी बसें भी थीं। चारों तरफ से माया आने लगी। अफ्रीका में रहता हुआ भाई रतन सिंह नाभ कंवल राजा साहिब को बहुत याद रखता। एक दिन महाराज जी की तरफ से आकाशवाणी हुई, ''तेरी सेवा की डियूटी लगी हुई है।'' बस इतने आदेश (कहलाने) साथ रतन सिंह अफरीका से भारत आ गया। आ कर सोहने प्रीतम के दर्शन किये। सवा मण रोज की रसद लंगर में देनी। गुणाचोर वाले मोहन की दुकान तुला दी। दयालू रोज वहिंगी में लाता था। एक कुआँ संगत के पानी पीने के लिए 25 फुट चौड़ाई सन 1934 में बनाया। लंगर की चार दीवारी की सेवा भी की। हर रविवार को प्रसाद के बड़े–बड़े बर्तन बनाए जाते थे। जब कुआँ में 18 हाथ पानी हुआ तो डबोलियाँ और रतन सिंह ने हजूर के चरणों में बेनती की, 18 हाथ कुएँ में पानी हो गया है, कुएं का उतारा करने से बस कर दे, यदि आप का आदेश तो सतिगुरू बोले, ''भाई! इस हमारे कुएं का पानी लाले आल (झिंगड़ां) का पानी एक ही होगा। झिंगड़ां और मजारा एक ही बहुत भारा शहर होगा। झिंगड़ां तक बड़े–बड़े बाजार होंगे। भानेवाल अमृतसर का नाम होगा। (कोई समय पा के यह आदेश नामे आप जी के प्रकट होंगे) झिंगड़ां तक एक ही तल मेले का हुआ करेगा। सवा मण नमक हमारे

लंगर में पड़ा होगा, आटा तपतियां में गूँथ हुआ करेगा।'' इतना बड़ा लंगर चलने का आदेश किया हुआ है। डबोलिया गाँव मसानी वाला छजू, उमरू ओजेलियाँ वाला फिर कमर बांध के कुएँ का उतारा करने लग पड़े। 23 हाथ पानी उस समय कुएं में किया। बाहर से संगत बलदों के जोड़े ला कर सेवा करती थी। साथ ला कर कुएं फेरना शुरू किया। तीन दिन कुआँ चलता रहा, दूर–दूर इनामी बलदां की जोड़ी आई। एक जोड़ी गोसलां के सावले रंग के बलद थे। एक जोड़ी बंगा से जिस के बीच एक पीला बलद बहुत भारा और बलवान, चारे लड़ियाँ करके अकेला ही चड़स लेकर बहुत छलांगें मारता था। एक जोड़ी गांव रहिपे से बचन सिंह की यह तीन जोड़ी बलदां की झण्डी थे। चाड़सी माधो सिंह, वतन सिंह, कूका गांव रहिपे से ठाकुर सिंह यह सब से झण्डी लेकर गए थे, चड़स पकड़ने में सेवा करने में संगत गाँव रहिपे को भी महाराज जी ने एक नम्बर का खिताब दिया था। कोई दस साल रतन सिंह सेवा करता रहा। रतन सिंह की भरजाई कुछ झगड़ा घर में करने लगी, भाई सारी माया ऐसे बर्बाद कर रहा था। अपनी भरजाई के ज्यादा कहने के कारण कुछ मन में मान भी हो गया। मैं सबसे ज्यादा सेवा की है। जब सेवा करता था, चढ़ते सूरज की तरह धन बढ़ता गया। जब मन में अहंकार आया सतिगुरू के आदेश के साथ लक्ष्मी का घर में निवास था। मान आने के साथ ही लक्ष्मी घर से बिस्तरा चुक के रवाना हुई। गाड़ी चल रही थी, सब पता नहीं कहां चले गए। दुकानें किराए पर चल रही थी। सब नीलाम हो गया। भाई रतन सिंह की किस्मत का दिया गुल हो गया। पहले की तरह रतन सिंह की अवस्था हो गई।

खिन महि नीचु कीट क्यों राज।।

रतन सिंह की सेवा कराने के लिए माया की बखशिश की थी। चाबियाँ तो सारी आप के आदेश के साथ खजाने को लगती हैं। ऐसे किसे सेवक को मान देना होता है जैसे महारथी अर्जुन ने महारभारत के युद्ध में महाराज कृष्ण भगवान जी ने विराट रूप दिखा के युद्ध करवाया था। सारा कुछ भगवान का ही बनाया हुआ दिखाया। यह सारी माया भगवान के हाथ में दिखाई। जन्म, मरन , मान, प्रशंसा यह सब भगवान के हाथ में ही है। भाई रत्न सिंह को जब मान हुआ फिर वहीं रतन सिंह बेचारा गरीबी की हालत के साथ कुबा हुआ फिरने लगा।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी गुरुद्वारा झिंगड़ां के मुकद्दमे की प्रथाई चली

जगत सिंह (सरदार मोती सिंह का बड़ा पुत्र) महाराज जी से काफी खिलाफ रहने लगा। एक दिन इसने अपने नौकरों को भेजा, ''जाओ! बाग में से फलाही की लकड़ियां तोड़ कर ले आओ।'' इसके नौकर गुरुद्वारा दुःख निवारन की सीमा के अन्दर लकड़ियां तोड़ने लगे। उस समय गुरुद्वारे में महाराज जी के गुरुभाई सुन्दर सिंह और साई रहा करते थे, जब लकड़ियाँ तोड़ने की आवाज आई, साई ने देखा जगत सिंह के नौकर लकड़ियाँ तोड़ रहे हैं। साई भाई सुन्दर सिंह को कहने लगा ''भाई जी हमारे जीवित रहते तो महाराज जी के बाग में से को लकड़ी, सारखी नहीं तोड़ सकता।'' टकुए लेकर दोनों सेवादार बिजली की तरह कड़क के जगत सिंह के नौकरों पर जा पड़े। नौकर लकड़ियां काटते बीच में ही छोड़ कर दौड़ गए। उसके बाद जगत सिंह ने इलाके के कुछ आदमियों को मनाकर 82 आदमियों के हस्ताक्षर करा के जालंधर मुकद्दमा जा किया कि यह हमारी जगह है इस पर हमारा अधिकार होना चाहिए। यह मलकीयत हमारी है। सुन्दर सिंह इस मुकद्दमे के मुखतियारे–आम

थे। सरदार गुरबख्श सिंह महाराज जी की पार्टी की तरफ थे। जगत सिंह इसका अपना चाचा विरोधी पार्टी का मोहरी था। एक साल केस चलता रहा, आखिर अदालत ने मौका देखने की तिथि पक्की कर दी। जज मन्ना लाल मौका देखने के लिए आया। घोड़ी पर आ रहा था। रास्ते में सुरमुख सिंह गाँव रहिपे से गुरुद्वारे को आ रहा था। जज मुन्ना लाल ने बाबे से पूछा, ''बाबा जी! कहां जा रहे हो?'' बाबा जी ने कहा गुरुद्वारे जा रहा है। जज को विश्वास हो गया कि सचमुच ही गुरुद्वार है जिसको इलाके के लोग भी मानते हैं। मौके पर जा कर दोनों पार्टी के बातचीत लिख के ले गया। गुरबख्श सिंह का ही इस सम्पत्ति में आधा भाग था, उसने ही महाराज जी के पख में बात की। जालंधर वाली अदालत ने मुकद्दमे का फैसला राजा साहिब के पक्ष में कर दिया। फिर जगत सिंह ने गुरुद्वारा अमृतसर प्रबंधक कमेटी के मुख्य ग्रंथी भाई ऊधम सिंह की सलाह के साथ अकाली एक्ट के अधीन लाहौर हाईकोर्ट में मुकद्दमा जा किया कि यह गुरुद्वारा साधुओं से लेकर अकालियों के अधीन किया जाए। उस समय अकाली कमेटी बना कर साधुओं के पास से ऐतिहासिक गुरुद्वारे ले जाते थे। यह सन 1929 की बात है। केस हाईकोर्ट में दो साल चलता रहा। खर्च सारा महाराज की तरफ से गुरबख्श सिंह की माई नन्दी की तरफ से किया जाता था। इसी 'मुकद्दमे की सेवा में सन् 1931 में जिस की सेवा में माई नन्दी एक दिन लाहौरी आती हुई नकोदर की तरफ से होकर आई। नन्दी के शरीर पर अच्छे कपड़े, गहने भी पहने हुए थे। कुछ नकद पैसे भी थे। तलवण के बदमाश नन्दी को गाँव गन्ने के पास घेर लिया और खड़ो गए। बेट के इलाके की तरफ चलने लगे। नन्दी ने महाराज जी के चरणों में ध्यान करके अरदास (प्रार्थना) की आँखों से आसूं गिरे। यहां संकट में बिजली की तार की तरह दर्शन की झलक पड़ी। कानों में आवाज आई, ''नन्दी! हम तुम्हारे

साथ हैं।'' बस वह तीनों बदमाशों का पता नहीं क्या हुआ? खड़े ही पत्थरों के बुत बन गए। कोई हिम्मत न रही। शरीर में र्कत न रहा पीले फटक हो गए। टाँगें काँपने लगीं, जो शरीर का भार न उठा पा रही थीं। जब ऐसी दशा हुई नंदी को माता जी कह प्रणाम करने लगे। माफी माँग कर अपने गाँव तलवण चले गए। टांगे वाले को भी छोड़ गए। नंदी को गाँव छोड़ गया। नंदी राजा–राजा करती घर आई मुकद्दमा महाराज जी जीत गए हैं जगत सिंह को संगरहिणी की बीमारी लग गई थी। 6 साल बीमार रहे। दवा दारू बहुत की पर कोई आराम न आया। एक दिन बंगा से अपने गाँव को जाता था, जगत सिंह की लड़की साथ थी। जब गाँव मजारे के पास पहुँचे तब कहने लगे, ''चलो पुत्री। आज साध के दर्शन जाते–जाते कर जाएं, पता नहीं कोई दिन जिंदगी का है? पता नहीं कब मर जाना है?'' जब महाराज जी के सामने गए। महाराज कहने लगे, ''जगतू! क्या हुआ तुझे, तुम तो बहुत कमजोर हो गए हो?'' जगत सिंह का विराग फूट पड़ा। जगत सिंह के पास 35 रुपए थे वे सभ बच्चों की पंक्ति बना कर दिलवा दिए। एक उजल सूखे बेरों का खिड़की से बाहर फेंक दिया। लड़की ने उठा कर जगत सिंह को खाने के लिए दिए। बस उसी वक्त आराम आ गया। फिर जगत सिंह लंगर के लिए आटे की बोरियां देता रहा जितनी देर जीवित रहा। बाकी उसके भाई भी सेवा में हिस्सा लेते थे।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी गाँव रहिपा वाले रागी निर्मल सिंह के साथ हुई

एक बार की बात है गाँव रहिपे से दलीप सिंह के पुत्र उधम सिंह का मजारे विवाह करने आए। दूसरे दिन सारी बारात महाराज जी के दर्शन करने आए। महाराज मिस्त्री करतार सिंह के घर बैठे थे। बारी–

बारी से महाराज के चरणों में नमस्कार कर पीछे आ गए। उस बारात के साथ दास भी दर्शन करने गया था। उस दिन दास के साथ सतिगुरां ने बहुत वचन किए, चरणों में बिठा कर सेवा बख्शी, मुट्ठी चापी करवाई। बैठे–बैठे पीते की घर वाली ने दो–तीन गुड़ की डली आगे रख कर नमस्कार किया। छोटी–छोटी गुड़ की डेलियां बना कर कुत्तों को डाल दी। एक कुत्ते ने खाते–खाते मुँह से गुड़ निकाल दिया। गुड़ उसे पहले भी खिलाया था। फिर कुत्ते के थूक वाला सारा गुड़ दास के हाथ पर रखा और हुक्म किया छक ले। मुझे कुछ नफरत हुई। महाराज किसी और से बात कर रहे थे, मैंने अपने पीछे डेलियां रख दीं। जानी जान सतगुरू कहने लगे, ''काकिया। खा ले, सारा ही खा ले।'' पर मैं पूरा हुकम न मान सका। उस दिन मेहरां के घर बैठे दास की प्यार दे के कई हुक्मनामे बखशे. आनंद कारज होने के बाद रागी जत्था सलाह करने लगे। चलो आज मौके के साथ आए हैं। राजा साहिब की हजूरी में कीर्तन कर आएं। निर्मल सिंह के साथ मैनाबाद का गुरबचन सिंह कीर्तन करता था। गुरबचन सिंह ने कहा, ''भाई सिक्खो! मैं तो कीर्तन करने नहीं जाऊंगा। राजा साहिब चारपाई पर बैठे होंगे, हम नीचे पर्श पर कीर्तन करेंगे, इसमें वाणी की तौहीन है। बाकी जत्था भी कहने लगा, भाई तुम्हारे कारण हम भी नहीं जाएंगे। इतनी बात सुनकर गुरबचन सिंह का दिल डर गया, कहने लगा चलो भाई। जैसे आपकी मर्जी है, मैं भी चले जाता हूँ मेरे करके न हटो।'' कीर्तन करने चल पड़े। नीलो जुलाहा जिसको कुछ कम दिखता था, वो कहने लगा, 'भाई निर्मल सिंह मुझे भी साथ ले चलो। मैं आपके साथ बैठकर राजा जी के दर्शन तो कर लूँगा।'' आगे महाराज तरखाणों के घरों से उठ कर करतारी झीरी के घर चले गए। यह रागी जत्था आप के सामने पेश

हुआ मिलखा सिंह रहिपे वाले को कहा, 'मिलखी रागियों को दोबारा बुला कर लाओ।'' पहले महाराज चुबारे में बैठे थे। करतारी को हुक्म किया, ''करतारी! फर्श पर चटाई बिछाओ'' चटाई बिछाकर सभी बैठ गए। रागी जत्थे को कीर्तन करने का हुक्म किया. मैनाबादिए को कहने लगे, ''काका! अब तो वाणी की तौहीन नहीं। भाई सिक्ख जब नीचे पाठ खोला होता है छत पर लोग होते हैं दरबार गलियों में लिये घूमते, जेबों में गुटके डाल कर गंदे स्थानों पर घूमते हैं।'' जब जलूस निकालते ही तो लोग छतों पर होते हैं अंदर बाहर गलियों में दरबार लिये फिरते है। जब ये प्रश्न पातशाह किए तो मैनाबादिया पानी–पानी हो गया। गुरबचन सिंह की सुरत गुम हो गई। बार–बार विनती करने लगा, ''जी! मैं अनजान क्या जानता हूँ आप की गति आप ही वाणी रचनहार हो, आप गुरू नानक जी की वाणी का जहाज तैयार करने हारे'' महाराज के हुकम से कीर्तन शुरू हुआ। साथ महाराज जी कीर्तन सुन रहे थे मस्ती में चुटकी बजा रहे थे। साथ ही टहलतें फिर रहे जब शब्द की अखीरली तुक बोली तो घर से बाहर चले गए। निर्मल सिंह ने विनती की एक शब्द और सुनाने का दिल करता है। चलते–2 हुक्म हो गए, ''हाजरी लग गई, चलो!भाग जाओ।'' करतार सिंह के घर चले गए। सारा दिन वहां ही रहे। सूर्यास्त के बाद करम सिंह रागी जत्थे के साथ आया को कुछ अंधेरा होने पर करतार सिंह को हुकम किया बैठे लोगों को बाहर निकाल कर डियोड़ी की कुंडी ला। करम सिंह एक तरफ बैठा रहा। दो घंटे बाद द्वार खोल के बाहर निकले। करम सिंह चरणों में गिर पड़ा। करम सिंह के दिमाग में कोई नुकस था। सिर को चक्कर आते रहते थे। मन विनती करता

'विणु बोलिया सभु किचु जाणदा किसु आगै कीचै अरदासि।

महाराज ने कर्म सिंह के अन्दर के फुरने को जान के सिर पर पगड़ी ला कर बाल पीछे को कराए साथ ही आदेश किया, ''सिक्खां! कभी बाहर उजाड़ में जा कर केस खिलार के फिर लईदा है।' बीमारी उसी ही समय दूर कर दी। जब मेहर भरी नजरों के साथ कर्म सिंह की तरफ देखा था। कर्म सिंह को बाहर भेज कर कुंडी करतार सिंह से लगवा दी।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी एक थानेदार साथ हुई

एक थानेदार जिला लुधियाना रायपुर गुजरावाल के गाँवों का था। घर औलाद न होने के कारण महाराज के चरणों में विनती की। 500 रुये की सुख सुख, अरदास गुरू घर सुनी गई। घर पुत्र पैदा हुआ। पुत्र के जन्म की खुशी में सुखी हुई सुख का 500 रुपये चाँदी का गाँव मजारे महांबली पीरां का पीर कुतबा के मालिक के चरणों में आ पहुँचा। महाराज जी गाँव मजारे फग्गू के चुबारे बैठे थे। उस थानेदार ने 500 रुपए सतिगुरू के चरणों में ढेरी कर दिए। सलाम करके पीछे बैठ गए। महाराज इतने बरकती थे, मुट्ठियां भर–भर के फेंक दिए सारा ही धन बच्चों पर लुटा दिया। उस गुरू सिक्ख को घर जाने का आदेश दिया। यदि कोई वस्त्र ले कर आए, वह भी गरीबों की ही चुका देते थे। एक बार की बात है महाराज जी करतार सिंह के घर सात दिन अन्दर रहे। दरवाजा कुला, खिड़की के भीतर संगत भेटा अन्दर फेंकी गई। सातवें दिन रात को दरवाजा खोल कर सारा पदार्थ चढ़ावे का करतार सिंह के पास ब्राह्मणों के घर भेज दिया। करतार सिंह ने बताया बाकी बर्तन जिनमें लड्डू, पेड़े, पतासे, फल

रुपए, पैसे थे। यह पदार्थ हर रोज संगतों की तरफ से चड़ता था। एक दिन एक सेवादार एक घी क़ी चाटी भरी हुई लेकर आया। एक मजारे का लड़का दर्शनों को आया, उस को घी की भरी हुई चाटी ब्राह्माणों के घर देने का आदेश दिया। वह लड़का घी देख कर ब्राह्मणों के घर न गया। एक कुबियां की कोठड़ी बालन वाली थी। उसमें रख के आ कर महाराज जी को कहने लगा, ''हजूर ! मैं ब्राह्मणों के घर घी दे आया हूँ। अन्तरयामी ने कहा, ''करतार! देख तो कुबियां की बालन वाली कोठड़ी में कुछ है तो नहीं?'' जब इतना कहा तो लड़का हाथ जोड़ कर बेनती करने लगा, ''महाराज! मैं भूल गया। आप के पास से कोई चीज नहीं छुपी हुई। करतार सिंह को कहने लगे, 'करतार सिंह! घी की चाटी ब्राह्मणों के घर देकर आओ।'' वह चाटी चुक के ब्राह्मणों के घर दे आया। ऐसी बहुत लिखने योग्य कहानियाँ हैं, ग्रंथ ज्यादा बढ़ने के डर कारण संकोच के साथ लिख रहे हैं।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी हजारा सिंह रसूलपुरिए की चली

हजारा सिंह रसूलपुर जात जाट, यह सन् 1927 में फौज में भर्ती हआ। पाँच साल भर्ती हुए को हुए एक दिन नाभ कंवल राजा साहिब ने फौज में ही जा दर्शन दिए। आदेश किया ,''हजारा! तेरा नाम हम ने फौज में से काट दिया है, तुम हमारे पास आ जा।'' इतना बोलकर, पता नहीं एक पल में कहां से बिजली की चमक की तरह झलक देकर आलोप हो गए। कोई अनोखा ही रंग दे गए। यह अदभुत झलक थी, मन में नशा रहने लगा। अब और किसी की नौकरी करने का दिल नहीं करता। बेमुहताजगी ने अन्दर डेरे लाए। प्रेम का तीर लगा, अब बड़े साहिब की

नौकरी ही करांगा। झूठे साहिब का आदेश नहीं मानांगा। कुछ दिन हुए इसी तरह ही पड़ा रहा। डियूटी पर न गया। पेशी हुई कहीं से भी नाम न निकला। हमेशा के लिए छुट्टियां मिल गीं। घर आ कर कोई काम काज नहीं किया, देश भक्त बनने लगा। उन दिनों में अकाली लहर चली थी। भाई हजारा सिंह भी इधर अच्छा भाग लेना लगा। एक गरुप तीन चार आदमियों का बना कर भैणी साहिब गए। नामधारियों का डेरा जा कर देखा, अपने दिलों देखने गए की माहौल है इन लोगों का? भैणी साहिब से ब्यासा गए। फिर इसे ही ध्यान से गाँव मजारे राजा साहिब के आए। कर्म सिंह, निधान सिंह, हजारा सिंह यह तीन आदमी बंगियां गाड़ी से उतर के सीधे मजारे आए। आगे महाराज जी किरपे के चुबारे में बैठे थे, संगत कीर्तन कर रही थी। काफी भीड़ संगत की बनी हुई थी। संगत को चीर के आगे आ कर नमस्कार की। हजारा सिंह को महाराज ने कहा, ''हजारा! तुम तो मेरा हीरा सिख है, नत्थू, फतू कहां से आया है। नथू फत्तू इस के बड़े थे। जब आते का नाम लेकर इनके बड़ों के नाम लिए। तो हजारा सिंह हैरान हुआ। सारी पान उतर गई। जो साधुओं के खिलाफ दूसरी पार्टी ने पैदा की हुई थी। अहंकार का बुत ढेरी हो गया। महाराज कहने लगे, ''फौज में से तुम्हें कौन लाया है? कभी ब्यासा वालों को पर्खने जाता है, कभी भैणी साहिब वालों की पर्ख करता फिरता है? आगे तुम्हें बांधने वाला कोई नहीं मिला, अब नहीं जा सकेगा।' हजारा सिंह काफी बीमार हो गया। हजारा सिंह को आँखों से देख पाना बन्द हो गया। रामसर सरोवर में जा बैठा, साथ वाले आदमियों ने पकड़ कर बाहर निकाला। अस्पताल गए, काफी टक्करें मारीं, मोगे तक इलाज कराया कहीं से भी आँखें ठीक न हुई, फिर मजारे ठोकरां खाता हुआ वापिस आया। गाँव आ के महाराज जी का पता किया। पता करने से पता चला आप जी गाँव गुणाचौर के

खेतों में ही बैठे हैं। पूछता–पूछता जिस स्थान का पीर बैठा था, आप जी मिरचों की बाड़ में बैठे थे। हजारा सिंह बहुत बेनती करने लगा कि "सतिगुरू! मैं आप की गति को नहीं था जानता, मुझे बख्शो।" सतिगुरू मेहरबान जी ने दो मिरचां तोड़ के भगवान सिंह के हाथ पर रखीं। "काका! जाओ किसी के घर जा के घी में दोनों मिरचां रगड़ कर दो–दो सलाई आँखों में पा लेनी।" हजार सिंह ने जसी के घर जा के मिरचां रगड़ के घी में मिला के दो–दो सलाई आँखों में पाईं। बस उसी समय चशमे काम करने लगे। पहला की तरह फिर नजर आने लगा। यह भाई हजारा सिंह अब साधु रूप में महाराज जी के आदेश अनुसार गाँव करनाणे मियाँ साहिब के स्थान पर रहता है। इसी तरह गांव झिंगड़ां से सरवण सिंह की आँख में पत्थर लगा। आँख को नुकसान पहुंचा। दिल्ली जा कर इलाज कराया, आँख ठीक न हुई। एक दिन गाँव मजारे महां कौर के साथ राजा साहिब के दर्शनों को आया। सतिगुरू के चरणों में बेनती की, महां कौर ने कहा, "जी! मेरे बच्चे की आँख ठीक नहीं होती, दूसरी आँख खराब हो जाने का भी खतरा है।" जिस घर बैठे थे उसी घर से एक बूढ़ी के पास सुरमे की सलाई लेकर आँखों में पाई। एक सलाई पाने के साथ ही आँख ठीक हो गई।

बोलो बाई वाहिगुरू।

आगे साखी और चली

महाराज जी थोड़ा–थोड़ा ही दान करवा के बहुत सारे संकटों से जीवों को बचाते रहते थे। एक बार एक माई अपने पति को साथ ले कर आई। जो काफी समय से बीमार रहता था। महाराज जी के चरणों में आ कर विनती की। इतने समय पर झिंगड़ां वाला ऊधम सिंह दर्शन करने

को आया! उस रोगी पति की पत्नी को महाराज ने कहा, ''ले! इस सिक्ख को घर ले जाओ और दूध पिलाओ, तेरा पति ठीक हो जाएगा। वायु पकड़ ले जाओ।'' वह औरत ऊधम सिंह की वायु पकड़ने से शर्म महसूस करने लगी। महाराज कहते, ''शर्म महसूस नहीं करनी, प्रेम के साथ इसकी वायु पकड़ कर घर ले जा कर दूध पिलाओ।'' ऊधम सिंह को घर ले जा कर दूध पिलाया। उसी ही दिन से वह बीमार आदमी ठीक हो गया। इसी तरह एक दिन दोले की करमी दर्शनों को आई। सरकार की तरफ से आदेश हुआ करमी बीस दिन लाला के नाम का दूध किसे को पिलाओ। करमी कहती जी जिस के आदेश दो उसको पिला दिया करांगी। जिस घर आप रहते थे उस के आंगन में एक स्थान लहते तरफ था वह स्थान आम संगतों के पास से प्रसाद चढ़ाते रहते, नीचे भी फेंक देते। अगर सारा दिन वहां दूध पाई जान दूध की धार बाहर नहीं थी बहती। करमी की उसी स्थान, दूध पाने का आदेश दिया। बीस दिन का दूध करमी पा रही थी, एक बूढ़ी कहती, ''हाये! हाये ! माई नीचे दूध क्यों गिरा रही है?'' महाराज कोठड़ी में बैठे बोले, ''करमीए। यह बूढ़ी की कहती है इसको बाहर निकालो सारा बना हुआ काम खराब कर दिया। सात दिन और पाओ ।'' करमी के कुछ माल पशुओं पर संकट थी। बीस दिन दूध पा के वह बीमारी दूर की।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी दीवान सिंह गोबिन्दपूरिए को पुरियां के दर्शन कराने की चली

एक दिन महाराज गाँव मजारे दास के घर बैठे थे। सुन्दर प्रीतम का रोम–रोम नूर की झलक मारता था। उस समय आप जी के चेहरे पर इतना रंग ता कि ताब झली नहीं थी जाती। करोड़ों सूरजों (सूर्यों)

का चेहरे पर प्रकाश था। चौदवीं के चन्द की तरह अमृत भरी किरणां शीतलता बख्श रही थी। दीवान सिंह गाँव गोबिन्दपुर से भाई जवाहर सिंह के खानदान में से दर्शनों को आया। बहुत प्रेम से नमस्कार की। सतिगुरू के चरणों में बैठ गया। महाराज जी आप जी के मुरशिद की कुल में समझ के मेहरों की नजर के साथ देख के बोले, "दीवान सिंह। कभी दरगाह देखी है।" दीवान सिंह कहता, "जी! हमारी नज़र दरगाह तक कहां जाती है?" यदि आप की मेहर हुई तो दूर भी नहीं है, मेहर करो। गरीब की बेड़ी पार करो जी।" दीवान सिंह आप जी के पीड़े के साथ बैठा था। सिर पर हाथ रखा आँखें मिल गई। दीवान सिंह को तीनों लोग नजरी आने लगे, सब पुरियां के दर्शन हुए। उस गैबी महिलां की नजरी भी पड़ी गैबी महल के मालिक की सरूप की झलक ऐसी देखी

'कैसी दिया मैं नसानी नांही बीच दो जहानीं,
ऐसी सूरत लासानी देख हुए बनजारे हां।'

उस हुसन के जखीरे के दर्शन हुए, जिस की किरणें सारे संसार को जी जान बख्शती हैं, जिसका सारे खण्डों, ब्रहिमण्डों, द्वीप, रोम में प्रकाश है। उस करोड़ों बिजली जैसे चमकीले प्रकाश से जब बाहर आए दीवन सिंह को एक झटका जैसे आया, आँख खुली तो क्या देखा भक्त राजा साहिब के चरणों में बैठा है। काया और ही हो गई। सारे देख नजारे आँखों के आगे घूम रहे थे। जबरदस्ती आँखें मिलती जाती, सारे दुनियां के रिश्ते मैले–मैले लगने लगे, प्रेम का जाम पिया। रिश्ते सब भूल गए। गुरू सिक्ख का प्यार सब रिश्तों से गहरा प्यार है। इसका नशा दिन–ब–दिन बढ़ता ही रहता है। कबीर संगति साध की दिन दिन दूना हेत

इस प्रेम में नदियां नाले चीरे जा सकते हैं, इसी ही रंग में सूलियों पर झूटे लिए जा सकते हैं. इसे ही रंग में उल्टे चमड़ी उतारी जा सकती है। इसे ही रंग में चरखड़ियां पर बंद–बंद कटवाए जा सकते हैं. इसे ही रंग से उबलती देगों में चौकड़े लाए जा सकते हैं। इसी ही प्रेम में झना दरिया में तैरीयां लाई जा सकती हैं। इसे रंग में सस्सी जैसी मरूस्थलों में जल के मर जाती है। हीर जैसी नाजक सूरतां छमकां मार सकती है। ऐसा रंग भाई दीवान सिंह को सतिगुरूओं ने दिया और घर की तरफ भेज दिया। दीवान सिंह को भेज के महाराज जी ने चिन्ती से बाहर का ताला ला के साथ ही आदेश दिया, ''हमारी इजाजत (आदेश) के बिना ताला खोलना नहीं।'' चिन्ती ने ताला ला दिया, संगत दरवाजे के आगे सलाम करके वापिस जाती रही। इतने समय को दो सिक्ख खानखाना से दर्शन को आए। ताला लगा हुआ देख के चिन्ती को कहा ताला खोल के हमें दर्शन करवाए। चिन्ती कहती जी आदेश के बिना ताला नहीं खोला जाएगा। दोनों खानखाना वाले आदमी माई के साथ लड़ने लगे कहते तुम मजारे के लोग मजाज करते हैं। चिन्ती ने ताला खोल दिया। जब अन्दर देखने लगे तो अन्दर कुछ भी नहीं। यह नजारा देख के लोग बहुत हैरान हुए, भय भी बहुत किया। चिन्ती डरती ने उसी समय ताला लगा दिया, ऐसे नजारे बहुत बारी आप जी के देखे गए।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी गणेशे को पुत्र की बख्शिस की चली

गाँव जलाह मजारे भक्तों की जोड़ी रहती थी। उनके घर में दौलत तो बहुत थी पर एक औलाद की घाट थी। घर का भाग मुरझाये हुए फूल की तरह उदास था। कई उपाय किये, पर खैर कहीं से न पड़ी।

इस जोड़ी ने चेलियों और डॉक्टर का दरवाजा छोड़कर इस राजा बलि का दरवाजा जा पकड़ा। रो–रो प्रार्थना की, एक दिन गणेशे ने सवा पाँच रुपए का प्रसाद मन में धार लिया। राजा के घर किसी चीज की घाट नहीं थी। मेहर हो गई, ६० साल की उम्र में जा कर कुख हरी हुई। नौ महीने के बाद घर बालक का जन्म हुआ। सुलक्षणी की तरह झोली पुत्रों की दात के साथ भर दी। चार पुत्र हुए, पहले बच्चे की खुशी का और सुख का प्रसाद पाँच रुपए का करा के दोनों जी मजारे ले कर आए। यह पहला ही करतारे की हवेली आ के जो इनके रिश्तेदार थे, पहला ही खुशी करने लगे और शराब पी। जुवाली प्रसाद ले कर जाने को कहने लगी। पर सारे शराब पीते रहे। जुवाली अकेली ही पातशाह के सामने पेश हुई तो पातशाह जुवाली को बोले, ''उसको साथ लेकर आना था। जो शराब पी कर करतारे की हवेली पड़ा है। देनी सुख और पीनी शराब।'' महाराज जी काफी गुस्से हुए। जुवाली बहुत डर गई। गले में चुन्नी पा कर चरणों पर गिर पड़ी, रोने लगी, थर–थर कांपने लगी। डर इसलिए रही है कि राजा जी वचन करते थे। वह उसी समय पूरा हो जाता था। इसी ही डर के साथ बड़े–बड़े हाकम लोग और अच्छे रिद्दियां सिद्धियां वाले आलम लोग सामने आ कर भय खा जाते थे। किसी की हिम्मत नहीं थी पड़ती कि कोई बदल कर जाए। आप ने लिखा भी है।

साध सति सूरमां क्यों हुए भगवान दास देख दसतूर लोग होवन न दंग जे,

जब माई ज्यादा डरी तो प्यार के साथ कहा, ''चल! कुत्तियां को पा के भाग चल। तेरा कसूर नहीं है।'' गणेशा फिर सच्चे मन के साथ देग बांटने राजा के दरबार गया।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

साखी गुलजार सिंह गाँव मजारे के साथ हुई

गुलजार सिंह मजारे का निवासी शिमले में काम करता था। राजगिरी का काम करता होता था। एक मजदूर के साथ लड़ाई हुई। मजदूर के माथे पर हथोड़ी मारी, जिस के साथ माथे पर जख्म हो गया। काफी झगड़ा बढ़ गया, कुछ गुलजार सिंह की सेहत खराब हो गई। शरीर में दर्द होने लगी, काफी बीमार रहने लगा। जिस समय लड़ाई हुई थी उस समय पाँच रुपए का प्रसाद मन में धार लिया था। पाँच रुपए धूप दिए। मुकद्दमे से मुक्त हो गया। बीमार होने पर गुलजार सिंह के बड़े भाई करतार सिंह ने पांच रुपए हकीम को दिए। गुलजार सिंह और ज्यादा बीमार हो गया। काम छोड़कर गाँव मजारे आ गया। गाँव आ कर पाँच रुपए का प्रसाद का याद भुला दिया। एक दिन गुलजार सिंह बहुत बीमार हो गया। करतार सिंह ने काफी प्रयास किया। अच्छे–अच्छे हकीम बुलाए पर आराम की जगह और तकलीफ होने लगी। आखिर जो कसर थी वह मुंह चढ़ कर बोली राजा बलि का पाँच रुपए का प्रसाद कहा था, अभी तक देग नहीं दी। उस समय झटपट पाँच रुपए की देग बना कर अरदास की, गुलजारे को थोड़ी सी होश आई। देग लेकर गुलजारा सिंह हाजर हुआ। माहराज जी ने सुख मनजूर न की। पीछे ही भेज दिया। गुलजार सिंह ने घर आ कर उसे ही तरह बर्तन रख दिया। जब परोसने का आदेश होगा तब ही परोसेंगे। करतार सिंह (गुलजार सिंह के ताऊ) ने देग परोस दी। जब देग बिना आदेश के परोसी गई तो करतार सिंह और उसकी पत्नी ज़ोर–जोर से आवाजें मारने लगी। गुलजार सिंह को आराम आ गया जब कोई चेला ले कर आए तो ज्यादा तकलीफ होती, फिर राजा बलि की शरन ली। भूल की माफी मांगी गले में चुन्नी पा कर फिर देग

बनाई। पातशाह नत्था सिंह के घर बैठे थे, गुलजार सिंह ने प्रसाद का बर्तन आगे रख गले में चुन्नी पा कर थर–थर कांपते हुए बेनती की, ''जी! मुझे गुनहगार को बख्शो मैं मूर्ख की जानता हां, आप की गति को।'' आदेश हुआ, ''कूकरां को पा दे प्रसाद तेरा मनजूरु किया गया है।'' गुलजार को उसी ही समय दरगाही आदेश हुआ। रोजाना रसोखाना कुएं पर स्नान करने का आदेश किया। कोई बाहरली कसर थी, शरीर सुकता जाता था। एक दिन रसोखाने स्नान करके दर्शन करने गया। महाराज जी करतार सिंह के घर बैठे थे। जिस घर को महाराज जी अपना घर कहते थे। सुबह का समय था, सर्दी बहुत जोर पर पड़ रही थी। गुलजारे को आदेश हुआ, काका! चल मंगू की छप्पड़ी में, स्नान करने का आदेश दिया। मंगू के कुएं और उसके गेहूँ के खेतों में छोटी सी छप्पड़ी थी। गुलजार ने केश स्नान भी किया जब गुलजार सिंह वस्त्र पा रहा था, तभी आप जी बल–बल करते नंगे पाँव सीधे ही खेतों से होते हुए तरे में ही छप्पड़ पर आ खड़े हुए। गुलजारे ने झटपट नमस्कार की। चरण चिक्कड़ के साथ भरे हुए थे। गुलजार सिंह का मन करता था कि आदेश करे तो चरण धो दूँ। उसी समय आदेश हुआ, ''अच्छा काका! हमारे पाँव धो।'' महाराज छप्पड़ी के किनारे बैठ गए। गुलजार सिंह बहुत धीरे–धीरे प्रेम के साथ सेवा करता रहा। आदेश हुआ, ''बस कर, काका बहुत प्रेम नहीं करना। चल! तेरे घर कोई मेहमान आ रहा है। ससुराल की तरफ से कोई संदेश होना है। जब आया लोग बधाई देने लगे। सरियाले से लागी पतासे लेकर आया। गुलजार सिंह के घर लड़के ने जन्म लिया, सारे काम ठीक हो गए। एक प्रेम के घूंट बदले बड़े–बड़े रोगियों के रोग खत्म कर दिए थे।

बोलो भाई सतिगुरू।।

साखी मंगू के परिवार की चली

मंगू गाँव मजारे का रहने वाला था। मंगू ने लाला जी की सेवा की। एक बार गाँव झिगड़ीं मंगू ने लाला जी के चरणों में विनती की, लाला जी, हमारे घर चरण पाओ।'' लाला जी की तरफ आदेश हुआ, ''मंगू। तुम्हारे घर बहुत बड़ा बली भेजेंगे, थोड़ा ही समय है, तुम्हारी 21 कुलों का उदार करेगा, वह महाबली पीरों का पीर होगा।'' जब महाराज जी सन् 1878 में संत गंगा दास जी साथ गाँव झिंगड़ी गए तो मंगू का पुत्र नत्था सिंह भी सेवा करने लगा। जब महाराज जी गाँव सूजों से 1913 में वापस झिंगड़ी गए तो मजारे 1916 को आए। वहाँ रसोखाना बनाकर बाबे माने की लांगरी बना दिया। सबसे ज्यादा सेवा में भाग नत्था सिंह को दिया जाता है। नत्था सिंह के घर को नाभ कंवल राजा साहिब अपना घर बुलाया करते थे। बहुत करामाती काम सुंदर प्रीतम के मंगू के पुत्र–पौत्री ने महाबली राजा साहिब के देखे। एक बार की बात है महाराज बाहर खेतों में चले गए। बाहर बैठे जब बहुत समय बीत गया तो नत्था सिंह लस्सी ले के हाजिर हुए तो नत्था सिंह को आदेश किया नत्थू तुम्हें ये खेत दे दिए। इस्तेमाल होने पर यही खेत नत्था सिंह को मिल गए। एक दिन आदेश किया नत्थू चेलियां वाला स्थान भी खरीद लेना था। कुछ साल बाद वह जगह सचमुच में खरीद ली। नत्था सिंह की पुत्रवधु करतार की पत्नी बीबी संती बीमार हो गई। करतार सिंह की मां जस्सी ने महाराज जी के चरणों में विनती की, ''सच्चे पातशाहो! आप हरता–करता हो, संती को कष्टों से आराम दो जी।'' सतिगुरु बोले ''जस्सी उसकी उमर पूरी हो चुकी है। इसकी उमर खत्म हो चुकी है। सांसों की रास खत्म हो गई है'' जस्सी ने

फिर बिनती की, सभी कुछ आप के हुकम में है। आप दरगाह के मालिक हो, हुकम आपका ही चलता है।'' पातशाह कहने लगे, ''जस्सी! हम खुदा की रज़ा को तोड़ते नहीं बहुत कहती हो तो इसके बदले में किसी और को उठा देते हैं।'' फिर कहने लगे करतारे को तोर दे पुत्रों का बहुत मोह होता है। जस्सी हाथ बाँधकर बेनती करने लगी, मेरा इकलौता पुत्र है, इसका बाल न बिंगा हो। उसका बिछोड़ा मुझसे सहा नहीं जाएगा, आप इसी को राज़ी कर दो।'' महाराज कहते जस्सी करतारे का दूसरा विवाह कर देंगे। जस्सी, ''जी। दूसरी आएगी पुत्रों को मारेगी'' संती के दो पुत्र थे एक का नाम दुमण सिंह और दूसरे का नाम चैन सिंह था। महाराज जी बोले, ''जस्सी पता भी नहीं होगा मेरे पुत्र है या सौकण के हैं।'' दूसरा विवाह होने पर ऐसा ही हुआ। नसीब कौर को कोई पता नहीं कि मेरे पुत्र है या सौंकण के हैं. इतना प्यार था। एक बार सीबो बीमार हो गई उसके बड़े पुत्र दुमण सिंह को चिट्ठी पाई। दुमण विलायत में चिट्ठी मिलते ही अपनी माँ के पास आ गया संती राजी न हुई शरीर खपता खप गया। एक दिन संती की सांस चलते–चलते बंद हो गई, शरीर ठंडा पड़ गया, संती की आत्मा उडारी मार गई। घर से रोने–चिल्लाने की आवाजें आई। लोग इक्ट्ठे हुए संती को आखिरी स्नान करवा कर सीढ़ी पर डाला। संती नौजवान थी, चेले को लाया गया उसको कीलने के लिए। चेला सरसों मंगवा कर जादू पढ़ने लगा। इतने में महाराज चुबारे से राजू नंबरदार के चुबारे पर आकर बोले, ''कौन है चेला इसको बाहर निकालो। हमारे झूठे बर्तन मांजती रही यह कीलणयोग्य नहीं रही। इसकी आत्मा का कल्याण हो गया है।'' जिस–जिस ने भी इस सोहणे प्रीत्म का दर्शन किया, सब पारगामी हुए। जब संती के दूसरा बच्चा चैन जन्मा जीणी

दाई को किसी ने पूछा माई क्या पैदा हुआ है? ''जीणी ने कहा लड़की है। महाराज अंदर बैठे बोले, ''जीणी। क्यों झूठ बोलती है? मैं तो मियां साहिब से लड़का बख्शा के लाया था।'' मियां साहिब मुस्लमान फकीर थे जिसकी गाँव करनाणा में खानगाह है। चैन जन्म से सुनत है पिछले जन्म चैन मुस्लमान था। एक दिन जस्सी की पुत्री बीबी करमी महाराज जी के दर्शन करने गई। महाराज गाँव के चढ़ते की तरफ एक बाड़े में बैठे थे। करमी ने नमस्कार किया। आगे हुकम हुआ, करमी जल्दी चल एक सफैद रंग का लट्ठे का चादरा दिया साथ ही हुक्म किया, ''करमी। दौड़ चल। जस्सी कहीं चढ़ाई न कर जाए हां। हां। समय तो आ गया है। हमारा चादरा जस्सी के ऊपर डाल देना'' महाराज जी का हुक्म पा कर करमी घर की ओर पागलों की तरह दौड़ी। पूरा यकीन था महाराज की दी हुई रमज़ सच ही होती है करमी जब घर पहुँची तो देखा जस्सी चुल्ले के आगे से उठ कर आँगन में बैठ गई। करमी को कहा ''पुत्री! मेरा शरीर ठंडा हुआ जा रहा है'' बस इतना बोल ही बोला। राजा–राजा करती एक तरफ को लुड़क गई। करमी ने झट से उसे जफ्फी में लेकर पट्ट पर रख लिया। माई जस्सी की आत्मा उडारी मार गई थी। आखिर बैकूंठ धाम चली गई। अंतिम स्नान करा के काठ की घोड़ी पर चढ़ा सतिगुरू की तरफ से मिला चादरा करमी ने ऊपर डाल दिया। जस्सी ने बहुत सेवा की, रात को सोते समय शरीर के कपड़े कभी नहीं उतारे। पता नहीं कब सच्चे सतिगुरू आवाज मार के किसी काम के लिए हुक्म देंगे कहीं हुक्म मानने में देर न हो जाए। सरदाई का सामान, कच्चा दूध, दूध का दहीं जमा के हर समय तैयार रहती थी।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी प्यारा सिंह गुणाचौरिए साथ हुई

एक दिन की बात है महाराज जी मजारे से गाँव गुणाचौर के पूर्व की तरफ वाले खेतों के पास खड़े थे। सावन के दिन थे भूमि पर यौवन का रंग खिला हुआ था, मोर नाच रहे थे, कोकिला की कू–कू बागों में गीत़ गा रही थी। फसलों पे नूर बरस रहा था, बादल गरज रहे थे, ठण्डी–ठण्डी पवन चल रही थी। बाग मस्ती से झूम रहे थे, बिजली चमक रही थी, मीठी फुहार पै रही थी, पपीहे बोल रहे थे, इन्द्र पृथ्वी का मिलाप हो रहा था। इस तरह के रंग भरे सुवाहऩे समय नाभ कंवल राजा साहिब जी एक पेड़ के नीचे खड़े करतार से सुर जुड़ी हुई थी, चौदा तबकों पर निगाह घूम रही थी भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों गुणों पर नजर मारी, बल–बल करते कुएँ पर जा खड़े हुए। प्यारा सिंह के कानों में बल–बल की आवाज पई। अंदरों उठको देखे पीरों का पीर कुएँ पर खड़ा है। प्यारा सिंह ने नमस्कार किया। प्यारा सिंह की तरफ इशारा किया, काका। लाओ कही, आज तुम्हारे खेतों की हद बाँध दूँ। काका 500 घुमां जमीन तुम्हारे नाम ला दे। दूसरी जुवानें कहने लगे तुम से वाह नहीं होनी चल 40 घुमां ही बहुत होगी तुम्हारे लिए। इस्तेमाल होने पर सारा रकबा उसी स्थान पर बना जिस स्थान पर दूसरी लकीर मारी थी। प्यारा सिंह ने गाय को दूध निकाल कर दूध पिलाया। पांच दिन महाराज उस कुएं पर रहे। पांच दिन के बाद गाँव मजारे आ गए। एक रात प्यारा सिंह के पिता दुलेल सिंह ने सतिगुरां के आगे दूध की गड़वी धरके पीने की विनती की। कुछ दूध आप पियां बचता प्रसाद प्यारा सिंह को दिया। प्यारा सिंह ने दो घूँट पिएं तो प्यारा सिंह को मस्ती चढ़ गई। प्यारा सिंह

ने दो घूँट पिएं तो प्यारा सिंह को मस्ती चढ़ गई। प्यारा सिंह पहाड़ की तरफ चल पड़ा। प्यारा सिंह पहाड़ी पर चढ़ा आगे एक वृक्षों के झुँड में शेर खड़ा देखा। प्यारा सिंह शेर से डरा, एक वृक्ष पर चढ़ने के लिए दौड़ा। फिर मन में प्रेम का झटका आया। खड़े हो कर शेर की तरफ देखने लगा। शेर की तरफ से एक अनोखा रंग ही मिला। शेर प्यारा सिंह के पीछे नहीं पड़ा। देखते–देखते ही पता नहीं बिजली की चमक की तरह आँखों से उझल हो गया। प्यारा सिंह कुछ आगे बढ़ा। तो एक तपस्वी जो धूनी ला कर बैठा था। उसने प्यारा सिंह की आवाज मारी, ''भक्ता! पीछे वापस जा, तेरा तो मुर्शिद बुत कमाल है।'' प्यारा सिंह पीछे वापस आया। पीछे से प्यारा सिंह के पिता और मामा प्यारा सिंह का पता करने के लिए महाराज जी के पास आए। महाराज जी के चरणों में प्रार्थना की जी प्यारा सिंह घर नहीं गया। दुलेल सिंह को कहा, ''दुलेल, प्यारे को बंगी देख आना था।'' उधर प्यारा सिंह बंगे से मजारे की तरफ आ रहा था। रास्ते में ही एक दूसरे को मिल गए। महाराज साबोआणे बाविआं के बाग में बैठे थे, वापस आते हुए फिर महाराज जी के पास आ गए। प्यारा सिंह को पास बिठा लिया। वरियाम सिंह और दुलेल सिंह को पीछे भेज दिया। इतनी देर को एक दूध का बर्तन एक भक्त लेकर आया। कुछ आप पीया बाद में प्यारा सिंह को पिलाया। दूध पिला कर आदेश किया, ''चल प्यारा मंजकी की तरफ जाट बन के दिन काट लेने हैं।'' आखिर प्यारा सिंह को ऐसा रंग दिया कि वह शादी करने से ही इन्कारी हो गया। बहुत ज्यादा घर वालों के कहने पर माना। जिस दिन विवाह कराने जाना था, उस दिन फिर ऐसा मन में प्रेम ने उछाल दिया। महाराज के दरवाजे के आगे आ कर बैठ गया। विवाह कराने से इन्कारी हो गया। फिर सारा परिवार रिश्तेदार दौड़ कर आए, हाथ

जोड़े, महाराज जी के चरणों में बिनती की। जैसे विष्णू जी नारद को कहते थे एक राजा की लड़की से तेरी शादी होगी। वह तिप भुगत पूरी करके फिर सन्यास धारन करना। जैसे भरथरी को एक मृग को कहा था, ''हे भरथरी! जूनीपत राजे की लड़की कमलापति उसके साथ तेरा संयोग है, वह पूरा कर। नहीं तो साधु नहीं रहेगा नरकों को जाएगा।'' ऐसे ही प्यारा सिंह को महाराज जी ने उपदेश किया, ''काका! पराभय कर्म जो भी बन चुका है, पिछले जन्मों को भुगतना ही पड़ता है, इसको खत्म कर लेना अच्छा होता है, नहीं तो फिर भुगतना पड़ेगा।'' प्यारा सिंह ''जी! आप चलोगे तो विवाह करांगा।'' महाराज ''काका! चल हम भी तुम्हारे साथ ही आनन्द कार्य के समय दर्शन देंगे।'' महाराज जी के कहने पर प्यारा सिंह विवाह करने चला गया। गाँव कंग जगीर में विवाह कराने चले गए। प्यरा सिंह का विवाह वीर सिंह की पुत्री अमर कौर के साथ हुआ। महाराज जी अमर कौर को राम कौर कह कर बुलाते थे। पाँच लड़के एक लड़की पैदा होने के बाद फिर घर छोड़ कर मंजकी के गाँव बिलगा बड़ा रुड़कां इस तरफ रहने लगा। बाकी जिन्दगी साधू बन कर पूरी की।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी संत करतार दास की चली

संत करतार दास जी का जन्म गाँव सिंहपुर जिला होशियारपुर राजनी पास हुआ। इसके माता–पिता ने गाँव माहिल गहिला संत इन्दर दास के डेरे पहला बच्चा चढ़ाने की बात की। यदि हमारे घर औलाद हो जाए। संतों की मेहर के साथ एक साल के बाद पुत्र का जन्म हुआ। करतार दास जी बहुत सुन्दर था। रंग गोरा, नयन नशीले तस्वीर ही काटी हुई

थी। दो साल की उमर होने पर करतार दास के फिनसियाँ निकल आई। कहीं से आराम न आया। आखिर माता–पिता ने तंग आ कर माहिल गहिला सन्त इन्द्र दास के डेरे छोड़ गए। यहां की चीज थी जब उस स्थान पर आई तो शरीर कंगन की तरह साफ हो गई। करतार दास जी सात साल के हुए तो चक कराली महंत परागराज जी के पास पढ़ने भेज दिया। 24 साल की आयु तक शिक्षा प्राप्त की। कांशी में आ कर संस्कृत पढ़ी। शिक्षा पढ़ कर कुछ साल बाद महिली डेरे में आ गए। गाँव झिंगड़ां इनका संत हरिपाल के पास आना जाना होता था। एक दिन हरिपाल को मिलने के लिए आए। रास्ते में महाराज गुणाचोर के खेतों में बैठे थे। करतार दास ने भी नमस्कार की। करतार दास को बैठ जाने का आदेश हुआ। करतार दास ने ग्रंथ चुके हुए थे। महाराज जी ने सारे ग्रंथ ले लिए। करतार दास को आदेश किया ''साधु आत्मिक ज्ञान के बिना अन्धेरा ही अन्धेरा है। हरि का सिमरन कर, किताबां का भार उठाने का कोई लाभ है,

- *दिल और दिमाग की दरुस्ती के साथ यार बगल में सूरत पहचान दिलदार की।*
- *बुधवार करे बुद्ध प्रकाश, हृदय कंवल में हरि का वासु।।*
- *साधु यदि ब्रह्म को विचार न की जाए तो शिक्षा भी बेकार है,*
- *खोज नहीं देखता है जब लग आप ताई भरम न जाए भमें सत अकलीम तू,*

तीर्थों की की हुई और वेदों को पढ़ना और इसकी भलाई नहीं होती। भलाई तो ब्रहम की कमाई करने से होती है।'' करतार दास को शिक्षा पढ़कर शिक्षा का मान था। भलाई तो ब्रहम की कमाई के साथ ही होती है। करतार दास का दिल नर्म हो गया, निआसरा बन गया। सतिगुरों का दर्शन नस–नस में झरनाहट दे गया। प्रेम का धूनां अन्दर धुखने लगा। आगे झिंगड़ां चला तो गया, रात मुश्किल से कटी। दिल को तोड़ लगी कब सुन्दर प्रीतम के फिर जा कर दर्शन करो।

''दाग आम और सीर का जाए नाहीं, तिवें इश्क का दाग न जांवदा ई'। करतार दास सच्चा प्रेमी बन गया। चांद चकोर वाली प्रीति हो गई। एक कुटिया गाँव मजारे के पश्चिम की तरफ कबरों में बना कर बैठ गया। हर रोज सतिगुरां के दर्शन करके वापस इसे ही कुटिया में आ कर भक्त करनी। माहिलां से इसका पहला गुरु इन्द्र दास लेने के लिए आया। उस को कठोर जवाब दिया। जैसे महींवाल ने अपने साथियों को गुजरात में सोहनी को देखकर जवाब दे दिया था। हमने यहां पहुंचना था पहुंच गए हैं। ऐसे ही करतार दास ने अपने पहले गुरू इन्द्र दास को जवाब दिया, हमने यहां पहुंचना था पहुंच गए हैं। हमारे पास किसे ने नहीं आना। दूसरे गुरू अंगद देव ने करतारपुर पहुंच कर गुरू नानक देव जी के दर्शन करके अपने साथियों को जवाब दिया था'' भाई! चले जाओ, हमें परमात्मा का घर मिल गया है। अब हम किसी और दरवाजे के आगे आ कर अलख नहीं जगाएंगे।'' इन्द्र दास वापिस चला गया। एक दिन करतार दास सतिगुरों के दर्शन हर रोज की तरह करने गया। महाराज दरवाजे के सामने करमी के घर बैठे थे। करतार के साथ जीत जुड़ी हुई थी। उस समय सतिगुरों के जिसने दर्शन किए, सबके बेड़े पार हुए। करतार दास ने नमस्कार की,सतिगुरों की मेहर भरी नजर के साथ प्यारे शिष्य की तरफ देखा, पता नहीं इन नजरों में क्या था? क्या नशा था एक ही नजर के बार के साथ करतार दास नशे में पागल हो गया, होश़ खो बैठा। कोई पता नहीं रहा इतना नशा? दरवाजे के आगे गिर गया। नाली में कपड़ों के साथ जा पड़ा।

'बस बुलाओ नहीं हम को कोई नोस नसा किया है हमने।'

करतार दास नशई हो कर गारे के साथ गन्दा हो कर पड़ा कोई

होश नहीं। इन्द्र मजारे वाला दर्शन करने आया। महाराज जी ने इन्द्र को कहा, "इन्द्र! उठा के साधु को कबरों में छोड़ आओ। इन्द्र ने करतार दास को पीछे पीठ पर पर उठाया और कुटिया छोड़ आया। करतार दास की आत्मा फूलों जैसी हलकी हलकी साफ–साफ बसन्त ऋतु के आकाश जैसी निर्मल हृदय शुद्ध हो गया। अब न कोई प्यास न कोई भूख रही। मन सबर का पुंज बन गया। अन्दरों ताला ला लिया, न कुछ खाए न पीए। शरीर नीचा हो गया। जंगां बिल्कुल मर गई। जीवत ही मर कर अमर हो गया। ऐसी घोर तपस्ता की बारह साल इस कुटिया अन्दर बैठ के तप किया। महाराज जी के ज्योति–जोत समाने के बाद पता नहीं किस तरफ चले गए, वापिस नहीं आए न किसे देखे।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी संत अवधूत जी के मिलाप की चली

संत संतोख सिंह इनका जन्म गाँव रसूलपुर, तहसील जगराओं जिला लुधियाना में हुआ। इनकी माता का नाम इन्द कौर और पिता का नाम राम सिंह था। इनका स्वभाव बचपन से ही संत सेवी था। हर जस सुनना, आए साधु संतों की सेवा करनी। इनके गाँव में साधु रहते थे। संतों की संगत करते–करते ऐसा मन का रंग चढ़ा कि सारे दुनियां के रिश्ते छोड़ कर 30 साल की उमर में जगराओं संत दीन–दियाल जी बड़े शिष्य संत नाहर सिंह को गुरू धारन किया। गेरू रंग के वस्त्र पहन लिए, साधु बन गए। उसे ही डेरे में आप जी ने पंजाबी पढ़ी। पंद्रह (15) साल यह तीनों साधु मेहर सिंह, एक और इकट्ठे रहे। काफी तीर्थों पर स्नान किए, पर्वतों की सैर करते रहे, यमना, गंगा, गोदावरी,

परागराज, उज्जैन, त्रिवैणी, सारे तीर्थों की यात्रा की। एक बार हरिद्वार के कुंड पर इकट्ठे होकर साधु गए। एक साफ स्थान वृक्षों की छाया में सन्त मण्डली बैठी, वचन चले। एक महात्मा ने सवाल किया, जैसे राम चन्द्र, कृष्ण, गुरू नानक जी अवतार महापुरुष हुई है, उस समय भी कोई महाबली उस हस्ती का मालिक दुनिया में हो गया एक सन्त ने कहा जिला जालंधर में वही त्रिकालदर्शी साधु रूप में मात लोग में आए हुए हैं जिस ने भी दर्शन करने हैं, बेशक जा के कर लो। वह ही जोत है, उस पहुँचे हुए फकीर की रसना से संत संतोख सिंह ने वचन सुना, सुनते सार ही दिल में खींच पड़ी बिना देखे ही अन्दर खींच पड़ने लगी। समय तो मिलाप का आया होता है। जैसे धूना धुखता हुए मुँह से हवा मारने से आग जल पड़ती है। ऐसे ही प्यार का साधन अन्दर होता है। परन्तु बिना जाने के बिना देखा नहीं जाता। संत संतोख सिंह जी उसी समय रेल गाड़ी में बैठ कर जालंधर चले गए। जालंधर पूछने पर पता लगा कि पीछे फिलौर जा कर उतरना। फिलौर आ कर उतरे गाँव गड़े पूछने पर पता लगा कि वह महापुरुष राजा साहिब गाँव मजारे जिला नवांशहर में है। संत रात गाँव खैहरी चले गए। भोजन खा कर रात को चलने लगे अन्दर इतनी तेज खींच पै रही थी कि दो बुर्जुग संतों को कहने लगे रात का समय है, संत जी सुबह चार बजे हमारे साथ चल पड़ना। हमने गाँव पाली अफसोस करने जाना है। सुबह चार बजे उठ कर संत भिक्षु बन के मुर्शिद के टीले का रास्ता पकड़ा। 'मता हुआ सू कान पड़वाने का। यह बात 1932 की है। उस समय संत घुंघरू दास गाँव रहिपे में डेरा बना रहे थे। पहला संत घंघरु दास पास चले गए। डेरा अच्छा बना हुआ देख कर सोचा पता नहीं यह संत होंगे। पता करके फिर आगे गाँव मजारे पहुंचे। मन में बहुत इच्छा थी कि कहीं कामिल पीर मिले। ऐसे घूमने का चक्र मिंट जान क्योंकि पूरे मुर्शिद

के बिना प्रभु के मिलाप का रास्ता नहीं मिलता। सुन के महिल की प्राप्ति नहीं होती। मंजिल नहीं तय होती, मोक्ष का दरवाजा नहीं मिलता। भलाई पूरे गुरू से ही प्राप्त होती है। संत संतोख सिंह के मन में बहुत प्यास लगी हुई थी कि कामिल गुरू मिले तो हलत पलत दोनों सुधर जाए। जैसे अमृत कुंड की तरफ देवता लोग दौड़े जान, ऐसे संत संतोख सिंह जी नाभ कंवल राजा साहिब के दर्शनों को जाते। गाँव मजारे जा कर पता किया पता करने पर पता लगा दयाल कृपाल दीन बंधू चोरासी के संगल तोड़नहारे करतार का रूप दरवाजे से पश्चिम की तरफ इन्द्र के घर बैठे आई संगत को मनोवांछत फल दे रहे थे। इतनी देर को एक साधु जिसके हाथ में चिप्पी पकड़ी हुई, गल में माला पहनी हुई, गल भगवें रंग की अलफी, छोटे शीरर का, उस अरशी प्रीतम के सामने जब गया। दर्शन पा कर ऐसा खींचा गया जैसे चमक पत्थर धातू की तरफ लोहा खींचा जाए, चरणों पर गिर पड़ा। आँसुओं से चरण धो दिए। आगे से सतिगुरू मेहरबान बोले, ''हां! हां। साधु बहुत प्यासा है।'' पास मुन्दर सिंह रसोइया हाथ जोड़ कर खड़ा था। सुन्दर को कहा, ''साधु बहुत दूर से आया है. प्यास बहुत लगी है, लस्सी पिलाओ।'' सुन्दर सिंह एक छन्ना लस्सी का भर कर ले आया। पाँच छन्ने महाराज लस्सी के पिला कर हटे। लस्सी पिला कर संतोख के साथ भर दिया। क्रोध वाली धूनी खत्म कर दी। आदेश दिया, ''साधु तुम्हारे पास रमज ठीक है, मेहनत की जरूरत है, मेहनत किया कर।'' सन्तों ने कहा, ''जी मेहनत कराऊ तो होगी। जैसा आदेश होगा वैसा ही करांगा जी।'' मन में विश्वास आ गया। सचमुच ही सब कुछ जानते हैं। दूर की ही रमज मारी मन में बहुत आस मिलने की थी वह भी निशानी दी। पिछली जो शब्द की अराधना कर रहा था वह भी बता दी। इस करके मन को पूरा विश्वास हो गया। सन्तों को बाहर भेज दिया। नागरियां वाली

ढकी में संत केहर सिंह पास रात रहे, दूसरे दिन फिर दर्शनों को आए। सामने आने के साथ चिप्पी भी रखा ली। गल से अलफी उतरवा दी। पातशाह कहने लगे, ''साधु तेरा शरीर तो बहुत सुन्दर है।'' यह भी रमज अन्दर की सफाई को देख के मारी, संतों के कपड़े उतार कर बाहर भेज दिया। रात को कुछ सर्दी लगती रही। कतक के दिन थे। दूसरे दिन दर्शनों को आए अपनी ऊपर की रजाई ला कर संतों को दे दी। ''चल दौड़ चल। ऊजाड़ी रहा कर। गाँव में जाना नहीं।'' एक बार संतों को पहाड़ की तरफ भेज दिया। संत आनन्दपुर साहिब राम रत्न मस्त बहुत बर्कत वाले त्रिकालदर्शी साधु के पास संत जी चले गए। कुछ दिन उनके पास रहे। उन मस्तों ने संतों को फिर राजा साहिब की तरफ भेज दिया। साथ इस तरह कहा, ''तुम्हें ऐसे ही हमारे पास भेज देते हैं।'' वह आप बहुत बली है यदि कुछ तुमने लेना है तो उन का साथ नहीं छोड़ना। तुम्हें कच्चा पक्का देखने के लिए हमारे पास भेज देते हैं। संत मस्तों के पास से चल पड़े एक पहाड़ी के नीचे गिर पड़े। काफी चोटें लगी। पैर के अंगूठे पर साँप ने काट लिया। चोटें लगी और धीरे–धीरे खाई में से बाहर निकले। सतलुज दरिया तैर पर पार हो गए। दरिया पार हो कर वह किनारे आ कर बरेती पर लेट गए। थोड़ी जैसी नींद आने लगी। सतिगुरों ने सपनों में दर्शन दिए, साथ पास से दो रुपये दे कर कहा, ''साधु! किराया ला कर आ जाना।'' सुपना था। नींद खुली तो झटका आ कर जाग आई। इतनी देर को एक ट्रक वाले किनारे पर आए। संतों को कहा, ''संत जी! बंगी जाना है तो ट्रक में बैठो।'' ट्रक में बैठ के गढ़शंकर आए, गढ़शंकर से आगे बंगी ट्रक आना था। उसमें बिठा दिया। रातो–रात दिन निकलते बंगियां से उतर कर रामसर तालाब में स्नान करके महाराज जी के दर्शन करने के लिए घर आए। महाराज आगे वाली कोठरी बैठे थे। अभी

संत दहलीज पर नमस्कार करके डियोडी में गए दरवाजे के अन्दर से आवाज आई, ''साधु! रात वाले दो रुपए पहला लेकर आओ।'' संतों ने करतार सिंह से दो रुपए लेकर खिड़की से अन्दर फेंक दिए। फिर अन्दरों कोई आवाज नहीं आई। संत कुछ देर हाजरी भर कर वापिस चले गए। गुणाचोर की तरफ एक मट्ट में रास्ता था, उस में जा पड़े। गाँव गुणाचोर से तपस्वी हर रोज दर्शन करन आप जी के आता होता था। सर्दी का मौसम था तपस्वी सरसों का साग बनाता–बनाता उठ कर दर्शनों को आया। दर्शन करके जब वापिस घर को जा रहा था कुछ अन्धेरा था, संत लेटे हुए को देख डर गया। फिर वापिस महाराज जी के पास करतार सिंह के घर आ गया। महाराज जी ने तपस्वी को पूछा, ''तपस्वी डरता हुआ वापिस आया। तपस्वी कहने लगा, ''जी! ऐसे वापिस आया।'' महाराज जानते थे कि तपस्वी डरता वापिस आया है। सतिगुरू कहते, ''तपस्वी डरना नहीं वह तो मेरा अवधूत पड़ा था। रुको दो मिन्ट मैं यहां ही बुला लेता हूँ। कुछ मिन्टों के बाद सन्त आए अन्दर से बैठे ही संतों को खींच पा कर बुला लिया। संत आए। संतों ने कहा, ''चल! साधु तपस्वी को घर छोड़ कर आओ। तपस्वी डरता है।'' दूसरे दिन संत फिर दर्शन करने आए। संतों ने आदेश दिया, ''साधु! मेरे घर से लेकर दरवाजे तक सारी गली को अच्छी तरह से झाड़ू दे।'' संतों ने झाड़ू किया दोनों तरफ पहरे ला दिए, गली में आदमी जाने से सब बंद कर दिए। सूर्य छिपने से सारी गली पानी से धो दी। जब लोग बिल्कुल टिक गए, शहीदों की फौजें, देवतियों की फौजें दर्शनों को आने लगीं. सफेद वस्त्र जैसे नामधारियों के वस्त्र पहने हुए हैं। हाथों में बर्तन भी नामधारियों वाले पकड़े हुए। आप आँगन में चारपाई रख कर बैठे सारी रात यह लोग दर्शनों को आते और जाते रहे। बाबे सरमुख सिंह की नाती उस समय पास बैठी थी, जब यह सुर लोग दर्शन की

आते थे। महाराज जी कहने लगे, ''दीपा कौरे! तुम जानती है इन लोगों को, यह कौन है?'' दीपो–''जी मुझे क्या पता इतनी संगत कहां से आ रही है और कौन से देश के वासी हैं?'' महाराज जी कहते, ''करतार कौरे! यह शहीदों की फौजें हैं। इनके पीछे देवते दर्शनों को आ रहे हैं।'' यह संत अवधूतों के पास से महाराज जी ने बहुत कठिन तपस्या कराई। एक बार की बात है तीन महीने गुज्जरों की छत पर सावन भादों के दिनों में धूप में बिठा कर तपस्या कराई। और भी बहुत सारे वचन हैं, संतों ने हजारों ही चमत्कार दिखाये 99 जन्म संतों को पिछले जन्म कमाई करते को नाम जपते को हुए आप जी ने बताया। पिछला जन्म उनका गाँव खानखानी बताया। मस्त गुरुदास के भाई था। जब इनका जन्म हुआ था उस समय गुरदास का भाई स्वर्ग सिधार गया था। यह निशानी पूरी मिली। महाराज के ज्योति–जोत समाने के बाद ज्यादा रहिपे ही रहने लगे। रहिपे गुरबख्श सिंह के पास ठाकर सिंह के घर रहते थे। रहिपे गुरुद्वारा तख्त साहिब हर संगरांद को अखण्ड पाठ कराने का क्रम चलाया। ज्ञान सिंह और गुरबख्श सिंह के साथ मिल कर यह क्रम सन 1941 में शुरू की। काफी संगतों का भला किया। काफी सिक्ख सेवक बनाए। सन 1961 में गुरुद्वारे तख्त साहिब की इमारत शुरू की। गुरुद्वारे की इमारत के लिए माया इक्ट्ठे करने के लिए वलायत चले गए। एक महीना कुछ दिन वलायत में रहे। 1962 में 9 जनवरी की 26 पोह को इंग्लैंड में ज्योति–जोत समा गए। इनकी पवित्र शरीर को सिक्ख सेवक वलायत से भारत ले कर आए। 26 जनवरी को गुरुद्वारा तख्त साहिब के आगे नाभ कंवल राजा साहिब के चरणों में संस्कार किया। संस्कार के समय लाखों की गिनती में संगत इकट्ठी हुई। कई कनस्त्र घी बहुत सारा मेवा आप जी की अंगीठे पाया गया। पहला नाम संतोख सिंह था ज्यादा नंगा रह कर कमाई करने

से अवधूत ही नाम पक्का हो गया। कोई 65 साल की उम्र में ज्योति–जोत समा गए। इस तरह संगतों का उदार करके 'ज्यों जल महि जलु आए खटाना।। त्यों जोती संगि जोति समाना।।

आगे साखी गुरुदास मस्त की चली

गुरदास भक्त का गाँव खानखाना जिला नवांशहर था। उनके पिता का नाम अछर सिंह था। एक दिन सैर करते–करते महाराज इनके कुएं पर चले गए। गुरदास के बड़े भाई काबल सिंह को कहने लगे, ''जेलां भी राजे के नाम पर बनी हुई हैं। जेल देख आनी थी, कभी देखनी पड़ती है।'' कई बारी ऐसे ही लोगों के पास कुआं छुड़वा देते थे या कभी बारिश आ जाती तो कोई खोटा ग्रह आया हुआ होता था। उससे बचाने की खातिर कुआं छोड़ देते थे। एक दिन मेरे मामे के गाँव गोसाल कुआं चला रहे थे। (नन्द और गुजर सिंह) आप जी ने जा कर कुआं छोड़ दिया, अभी अन्धेरा था, सुबह जल्दी उठ कर कुआं जा जोड़ा था। महाराज जी पैली में ही बैठे रहे। दिन निकलते ही उठ कर चले गए. महाराज के जाने के बाद जब कुआं जोड़ा, थोड़े चड़स निकालने के बाद बहुत भारी नाग कुंडल पर बल मारी बैठा, चड़स के साथ आ गया। चड़स पकड़ने के लिए कोई स्थान नहीं था। भौनी से चड़स कुएं में ही गिरा दी। तो जहरीले सांप से बचे। महाराज जी ने जहरीला सांप कुएं में पड़ा समझ कर कुआं नहीं चलाने दिया। ऐसी ही बातें आप जी की नजर में थीं. एक बार फिर कभी जा कर कुआं छोड़ा। महाराज के चले जाने से पीछे से फिर जोड़ दिया। कुछ देर बाद ऐसे पशु उलटे पुतले हुए, पशुओं की अरलियां टूट गईं। साथ पंजाली लपेट कर नन्द कुएं में गिर गया। चोटें लगी बुरा हाल हुआ फिर पता लगा कि महाराज

इस ग्रह से बचाने की खातिर कुआं छोड़ गए थे। ऐसी कहानियां बहुत हैं यदि लिखने लग जाएं तो खत्म नहीं होती है। सिक्ख सेवकों को बचाने की खातिर आप जी रात को भी पहरा देते थे। काबल सिंह को जब जेल का इशारा किया था दो सालों के बाद किसी के साथ फौजदारी हुई जिसमें गुरदास को और काबल को दो–दो सालो की सजा हुई। गुरदास को जेल में महाराज जी ने दर्शन दिए साथ ही आदेश किया, ''काका! तू क्यों जेल अन्दर बैठा है, तुम्हारे लिए जेल नहीं है?'' गुरदास सिंह अपील में बरी हो गया। कुछ देर के बाद वलायत जाने के लिए पास बनाया। जाने से पहला महाराज जी के दर्शनों को आया। महाराज अपने घर बैठे थे। सूर्य डूबने के साथ सारे यात्रियों को बाहर भेज दिया। करतार सिंह को कहा डियूडी की कुंडी लाओ। गुरदास सिंह न उठा। सुन्दर सिंह गाँव मूसापुरिया पहरे पर खड़ा था। गुरदास को धक्का मार के घरों बाहर निकले लगा। गुरदास मुर्शिद की सीमा में आ चुका था। प्रेम के बाण लग चुके थे। गुरदास चले न। सुन्दर सिंह धक्का मार के गली में ले गया। पीछे करतार सिंह को आवाज दे कर कहा, ''करतारा! सुन्दर को कहना दास हमारा आदमी है यदि आता है तो आने दो।'' बस पता नहीं क्या जादू किया। गुरदास दास बन कर बैठ गया। दरवाजे आगे चौकड़ी ला कर ऐसा बैठा घर जाने की कोई सुद्ध–बुद्ध न रही। ऐसा प्रेम की डोरी के साथ बंधा। प्रेम का जाम पिलाया, मस्त हालत में हो कर यहां से अन्दर से कमरे का पानी निकलता था। गली में दीवार के साथ सहारा लेकर बैठ गया। गर्मी और सर्दी में बारिशों में उसी ही गली में यहां कोई आदमी दस मिन्ट सावन, भादों के दिनों में ठहर नहीं सकता। यह बारह साल बैठे रहे। इतनी घोर तपस्या की अन्तरयामता हो गई। एक दिन एक लड़के ने कुत्ते के बच्चे को रस्सा

मारा। मस्त गुरदास जी ने कहा, ''क्यों मारते? यह तेरा बाप है। इसको घर ले जाकर रोटी पा'' उस लड़के को गुस्सा लगा। गुरदास के दो तीन रस्से मारे। करतार सिंह देखता था परन्तु उस लड़के को करतार सिंह ने कुछ न कहा। महाराज किरपे के चुबारे बैठे थे। करतार सिंह जब माथा टेकना गया। आगे से महाराज कहने लगे, ''करतारा! यदि किसी ने कुत्ता रखा हो उसको कोई डंडा नहीं मारने देता, तुम्हारे सामने मेरे मस्त को लड़का मारता था। उसको मना क्यों नहीं किया। उससे बदला लेना था। चल! हम आप ही ले लेंगे।' कुछ दिनों बाद रायपुर डब्बा चोरी हो गई। एक बकसा उसे ही लड़के के खेत में पड़ा हुआ मिला. चोर तो न पकड़ हुए, उसे लड़के को पुलिस पकड़ कर ले गई। सात दिन ऐसी मार पड़ती रही। पकड़ कर कुचुंबर निकाल दिया। सरकार ने ऐसा बदला लिया सारी उमर उठने के योग्य न रहा। ऐसी मार पड़ी। एक दिन गुरदास हमेशा की तरह वहीन के आगे लेटा हुआ था। वहीन के रास्ते अन्दरों काला नाग फराटे मारता निकला। यह परीक्षा थी। सांप आता ही छाती पर आ गया। जब सांप ने छाती ते सिरी रखी। गुरदास ने बुकल में लेकर सांप को गले से ला लिया। और उच्ची–उच्ची नारे मारन लग पड़ा, ''ओ बापू! मैं तो तुम्हारा रोज इन्तजार करता था।'' बस इतना कहते ही सांप पता नहीं कहां अपोल हो गया। कोई चीज हाथ में न रही। उस स्पर्श से मस्त के दरवाजे खुल गए, रोशन हो गया, फिर नारा मारा तख्त नशीन का मालिक राजा बलि।'' यह सारे गाँव में नारा गुरदास का सुना करे। इतनी बुलंद आवाज के साथ बोलता। जवान भी, बहुत लम्बा, लाल रंग था। महाराज के जोती–जोत समाने के बाद सात साल रसोखाने भट्ठी के आगे बैठा रहा। भट्ठी आगे बैठे की पैरों के आगे का भाग का मास सड़ कर छाले के साथ

भरा रहता था रात दिने कभी भी सोता नहीं था, पूरी रमजां अन्तरयामता भरी दे देता था। सन 1947 की झड़ीयों में अपने गाँव खानखानी अपने कुएं पर जा बैठा। एक दिन अपने बड़े भाई काबल सिंह को कहा, ''ले भाई! आपका आप संभाल हम मौसी को मिल आए।'' इनकी मौसी कोई नहीं थी मौत रूपी मौसी को मिलना कह कर चल पड़े। उठके बंगियां की तरफ को निकल पड़े। सिर पर बाल नहीं थे। पता नहीं मुसलमानों के किस काफले में जा मिला। निडर बहुत थे। गालियां निकालने की भी आदत थी। बहुत बे–प्रवाह स्वभाव के थे। आशिक मरने से नहीं डरते। मौत रूपी मौसी को आप ही जा मिलते हैं। कुछ पता नहीं लगा कि किस तरफ चले गए या किसे मुसलमानों के काफले में मारे गए या सिक्खों के हाथों मारे गए। इसी बहाने के साथ जोती–जोत समा गए। यह कोई पता नहीं न ही किसे देखे, पता नहीं किस पहाड़ी पर जा बैठे।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी दिलबाग सिंह मजारे वाली की चली

दिलबाग सिंह गाँव मजारे इस का विवाह गाँव चानसू में करतारी के साथ हुआ। विवाह होने के बाद करतारी बीमार हो गई। बहुत इलाज करने पर भी ठीक न हुई। यह अपने मां–बाप के घर ही बीमार हुई वाली थी। जब मरन पहिरे हुई करतारी की माता ने दिलबाग की माता को संदेशा दिया, कोई दान कराओ ताकि इसकी जान बच जाएगी। यह किसी ज्योतिषी ने बताया था इसके ससुराल वालों से गऊ दान कराओ। दिलबाग सिंह संदेश मिलते ही ससुराल को तैयार हुआ। चलते समय मन में आया महाराज जी के चरणों में बेनती करो जो आदेश मिलेगा करांगा। अभी दिलबाग रास्ते में ही था अन्दर से महाराज आवाज दे

कर कहने लगे, ''काका! हमारे पास आ कर की लेना है? जो काम करने चलो जल्दी कर दिया करते हैं।'' दिलबाग सिंह वहां से ही नमस्कार करके ससुराल घर गाँव चानसू चले गया। गाय लेकर करतारी के नाम पर दान कर दिया। करतारी दिन प्रति दिन ठीक होने लगी। ठीक हो कर ससुराल आई, चार साल फिर बीमार हो गई। इस तरह बीमार हुई कि अन्दर पानी की बूँद न जा रही थी। दिलबाग सिंह की सास करतारे की माता दिलबाग सिंह को कहने लगी, ''पुत्र राजा साहिब के दरवाजे पर जा कर बैठ जा। और दुनिया के संकट खत्म हो रहे हैं तुम्हारा बेड़ा भी किनारे ला देन तो क्या मुश्किल है?'' दिलबाग सिंह ने कहा, ''माई मैं जाता तो कई बार हूँ परन्तु महाराज पीछे भेज देते हैं। मेरी प्रार्थना करने का होंसला नहीं पड़ता दिल कांप जाता है। दिलबाग सिंह एक दिन दिन निकलते ही इस ख्याल को मुख्य रखकर महाराज के पेश हुआ। आगे महाराज करतार सिंह की हवेली बैठे थे। एक फिरोजपुर का सेवादार दूध का बर्तन ले कर आया। दूध का बर्तन आप जी के आगे रख दिया। दिलबाग सिंह डरता पीछे आने लगा। जन–जन की जानने वाले दुःखी जीवों का भला करने वाले दुःखी दिलबाग सिंह को बुला कर पूछा, ''काका किस तरह आया था? दिलबाग सिंह के नेत्रों से आँसू निकल पड़े, गला रुक गया। शरीर थर–थर कांपता, जबान थिड़क गई बोल न सका। सतिगुरु सब कुछ जानते थे। उस दूध के भरे हुए बर्तन की तरफ देखा। ''काका दूध का बर्तन उठा बहू को पिला दे।'' दिलबाग सिंह कहता ''अन्दर तो एक बूँद भी नहीं जाती, दूध किस तरह पियेंगी।'' महाराज कहते, ''काका! कुदाड़ी दौड़ चल, पी लेगी।'' आराम तो इतनी बात कहने के साथ ही कर दिया। दिलबाग सिंह बख्शी हुए अमृत के दूध का बर्तन घर ले आया। मरन किनारे पड़ी

हुई करतारी के मुंह में बख्शा हुआ दूध चम्मच के साथ पाया। बस जब चमच नसों में गया करतारी को होश आ गई। उठकर बैठ गई, धीरे–धीरे सारा दूध आधे दिन में पी लिया। दूसरे दिन उठ के करतारी चलने–फिरने लग पड़ी। एक बार पाँच सल बाद फिर करतारी बीमार हो गई। करतारी पहले ही बीमार होते सार ही पहले पातशाह के चरणों में चली गई। महाराज जी ने तीन चार दिनों की भरी हुआ दूध का बर्तन वहां बैठी ही करतारी को छका दिया। बस उसी समय शरीर अरोग हो गया। फिर कभी कोई बीमारी न लगी। एक दिन उनके घर महाराज जी जा बैठे। करतारी को पानी की गागर लाने के लिए घिरडियाँ वाले कुएं से पानी लाने का आदेश दिया। यहां सारे गाँव में झीर पानी भर कर देते थे। करतारी पानी लेने चली गई। पीछे करतारी की तीन साल की लड़की आँगन में खेलते–खेलते सीढ़ी जा चड़ी। लड़की सीढ़ी के आधे भाग तक चढ़ी हुई थी। इतने को करतारी पाने ले कर आ गई। सीढ़ियों पर चढ़ी जाती लड़की को देखकर करतारी शोर पाने लगी, "है! है! मेरी लड़की सीढ़ियों से गिर कर मर जाएगी। " महाराज बोले, "भोलिए। हम तो तेरी लड़की की उमर पूरी कर रहे थे, तेरी इच्छा यदि सिरे नहीं लगने देनी तो हमारे की बस है?" करतारी अनजाने समझ न सकी, उस रमज को बीच उठा कर लड़की को करतारी नीचे ले आई। लड़की १६ साल की हुई गाँव खानखानी विवाह कर द्दिया। जब बीस साल की उमर लड़की की हुई वह मर गई। उस दिन पातशाह की रमज़ का पता लगा। यहि महाराज के कहने पर सीढ़ी लड़की को चढ़ जाने देती पूरी उमर भोग कर मरती। फिर करतारी को पूरा यकीन हुआ। पई राजा साहिब तो करतारी का ही रूप दुनिया को पार करने आए हुए हैं। जब पहला–पहला करतारी मजारे आई दर्शन करने महाराज के गई। गाँव चानसू

इनके घर के पास एक ब्राह्मण का घर था। एक कुंप ब्राह्मण हर साल उसी ही स्थान पर बांधते थे। महाराज कहते बधू कुप वाला घर भी राजा ने आबाद किया था। एक दिन करतारी को कोई बच्चा पैदा होना था। करालां वाली चिन्ती और बंतो को कहा, ''जाओ! करतारी को बधाई दे आओ आज सो भी उसके पास जाना।'' उसे ही रात करतारी के पेट से पुत्र का जन्म हुआ।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी सुरमुख सिंह के परिवार की चली

सरुमुख सिंह गाँव रहिपे का रहने वाला था। महाराज जब गाँव झिंगड़ी 1878 में आए थे। उसे ही समय सेवा करने लग पड़े थे। एक नियम बना लिया हर रोज दर्शन करने, कहीं भी महाराज हो, घर का काम सब छोड़ दिया। निशकाम नंगे पाँव जाना पास दो गुड़ की ढलियां, थोड़े चाय के पत्ते बांध के ले जाने। सुबह घर से प्रसादा छक के घर से चल पड़ना, बिना दूध से दोपहर की चाय बना कर पी लेनी। मजारे हो तो जस्सी के घर, सुज्जों हो तो नरंजन सिंह के घर, शाम को वापिस गाँव रहिपे आ जाना। वह काफी समय इस धारना पर चलते रहे। बाबा जी जब महाराज जी के दर्शन करने को चलते थे अपने कदमों से दो कदम नज़र आगे रख कर चलते जाना! किसी की तरफ देखना नहीं, एक ध्यान हो कर जाना. जिन दिनों में महाराज सुज्जों रहते थे बताते हैं सूर्य निकलते ही पन्द्रह मील सफर तय करके महाराज सतिगुरु के चरणों में आ जाते थे। ऐसे ही सारी जिन्दगी बसर करके जोती–जोत 1926 में समाए। सुरमुख सिंह के दो पुत्र और एक लड़की थी। वतन सिंह रहिपे के पूर्व की तरफ एक चेलआने की जगह है उसमें से एक फलाही काट कर ले आया। जगह पर उस समय कोई चीज़ नहीं था

छू सकता। बाबे सुरमुख सिंह के छोटे पुत्र ठाकुर सिंह के चार पुत्र और एक लड़की ने जन्म लिया। बच्चे जन्म के बाद ही मर जाते थे। घर का नुकसान होने लगा। बाबा जी हर रोज़ की तरह दर्शनों को जाते रहे। जब पांचवां बच्चा मरा घर में बहुत शोक था। घर के सभी सदस्य बहुत उदास हो गए। कोई रोटी न खाता, रोते रहा करते। यह घर की दशा देखकर अपने भक्त की लाज रखने की खातिर रहमत भरी नजरों के साथ सुरमुख के घर की तरफ देखा, जो घर में नुकसान हो रहा था, सब खत्म कर दिया। उस दिन बाबा जी को आदेश हुआ, "सुरमुख! चल घर चल कर कह रोना नहीं। जो कुछ हम कर रहे हैं तुम नहीं जानते। आगे करतार भला ही करेगा।" एक ढोल जल का दिया। घर में उस को छिड़क देना। इसमें और जल पा कर परिवार के सदस्यों को स्नान करा देना। बस उसी दिन से फिर कभी घर का कोई नुकसान नहीं हुआ। उसके बाद दास का जन्म हुआ। सतिगुरों की बख्शिश होने के कारण नाम गुरबख्श ही रखा। बाबे सुरमुख सिंह की सेवा के कारण घर में तीन लड़कों का जन्म हुआ। बाबे के पुत्र–पोतियां, नाती–नातियों के हर समय सारे कार्य आप हाथ दे कर करते हैं। जब बाबा के नाती–नातियों, पुत्र–पोते दर्शन करने जाते थे, महाराज जी बहुत प्रेम करते थे। इस तरह कहते थे सुरमुख मेरा कचनार का बूटा यह उस की टाहनियां हैं। सुरमुख सिंह की लड़की हरनाम कौर का गाँव जबोवाल में विवाह हआ था। हरनाम कौर का जब अन्तिम समय आया। नागरियां वाले समुन्द सिंह को आदेश देकर जबोवाल भेजा, "जाओ समुन्दा नामों को दस रुपए दे कर आ, साथ हमारी तरफ से प्यार देना, साथ कह देना दरगाही कलमां राजा के आदेश के साथ ही बहती है। लम्बे रास्ते में सतिगुरू साथ ही होते हैं। चिन्ता नहीं करना, दरगाह में साथ ही होंगे। बाकी प्राण सतिगुरु के ध्यान में ही गुजारने।" एक हफ्ते के बाद हरनाम कौर की

मौत हो गई। अन्तिम समय सतिगुरु ने हाजर हो कर दर्शन दिए, उदार किया। एक बार की बात है बाबे की नातिन दीपो दर्शन करने गई। उन दिनों में बाबे का बड़ा पुत्र वतन सिंह स्वर्ग सिधार गया था। दीपो ने प्रार्थना की, ''सच्चे सतिगुरु! मामा जी की मौत हो गई है। मामा जी की आत्मा को चरणों में निवास देना।''

महाराज ''दीपा कौरे। जो मौती एक बार हार में से गिर ही पड़ा उसका फिर क्या उठना।'' वतन सिंह का प्रेम कम ही था। नास्तिक पुरुषों की बेड़ी पार नहीं लगती, गुरुओं को जहाज रूप समझो तो भवजल पार होता है. महाराज राम चन्द्र जी संसार में सारे कार्य करके जब सच्च खण्ड जाने लगे। सरजू नदी के किनारे पर खड़े हो कर आवाज दी, आओ जिस ने भवसागर पार होना, हमारे साथ सच्च खण्ड जाना है। बेगमपुर शहर के दरवाजे खुले हैं। उस समय भागों वाले ही महराज जी के साथ चले।'' दीपो को पास बिठा कर महाराज जी ने कहा, ''दीप कौरे! सुरमुख के दर्शन करने हैं बेगमपुर शहर में रहता है। वहां कोई रोग–सोग नहीं। यह शहर सदा (हमेशा) सलामत रहता है। कभी गिरता नहीं। इसकी दीवारें, इसकी छतें किसी अम्बरी शैय के साथ बनी हुई हैं। वहां कोई चाँद सूरज की रोशनी नहीं करोड़ों सूरजों और बिजलियों का प्रकाश रहता है। करोड़ों चन्द्रमा की शीतलता रहती है। उस शहर का जो राजा है, हुसन की खान है।

सूरत का सोहना मोहना खोहना दिल दोस्तों के बोसतों के बाब देख घटे घबराओ है।।

लाख मुहम्मदों, लाख ब्रह्मो, विष्णु, महेश उस राजे के दरवाजे आगे झुकता है। लाखों ही विष्णु, शिव, ब्रह्म जैसे उस की उसतत गाते रहते हैं। उस करोड़ों बिजलियां के प्रकाश को धुंधला देने वाली

झलक के रस मान रहे हैं, नजारे ले रहे हैं।'' ऐसी शोभा उस महल की राजा की दीपो को महाराज जी ने सुनाई। यह वचन सुनकर दीपो का मन नाम के रंगन में रंग गया। कोई अनोखा ही सरूर चढ़ रहा था, बिजली कड़क रही थी, बूंदे बरस रहीं थी। रात काफी डरावनी बनी हुई थी। ठण्ड के मारे लोग अन्दर चले गए थे। जानवर भी में छिपे हुए थे। महाराज उस जादू मई महिल के मालिक की प्रशंसा करते–करते एक तरफ को लेट गए। एक घण्टे बाद दीपो को आदेश किया, ''करतार कौर। हमारे स्नान के लिए जल ले कर आओ।''

पहला आदेश गाँव के चढ़ते तरफ सारे गाँव का सांझा कुआं घिरड़ियां वाला उसमें गागर उठाई डियोडी से बाहर हुई। रात बहुत अन्धेरी थी। हाथ निकाला नहीं था दिखाई दे रहा। सतिगुरों के नाम का आसरा लेकर चलते तूफान में चल पड़ी। उस के सिर पर एक पतला दुपट्टा था। वह भी बारिश से भीग गया। हवेली से नत्था सिंह के पास डोल लेकर फरीद वाला शब्द पढ़ती हुई खेतों में से होती हुई ढक्की के पास चली गई। एक स्थान खड़ी हो कर बिजली की चमक के साथ एक तरफ वृक्षों का झुण्ड नजरीं पड़ा। उधर बढ़ कर देखा तो कुआं था, गागर पानी की भरी हुई सिर पर रख कर चल पड़ी। एक हाथ गागर को पाया, दूसरे हाथ के साथ डोल उठाया हुआ

झखडू झागी मींहु वरसै भी गुरु देखन जाई।।
समुन्द्र सागरु होवै बहु खारा गुरुसिक्ख लंघि गुरु पहि जाई।।

ऐसे चलते तूफान को चीरती हुई अपने कामिल पीर के स्नान के लिए जल ले कर अबला जवान चीकड़ को चीरती हुई,

फरीदा गलिए चिकड़ु दूरि घरु नालि प्यारे नेहू।।

गागर लेकर सतिगुरों के दरवाजे के आगे आ कर आवाज दी। आगे सतिगुरों ने अन्दर से कुण्डा ला के कोई आवाज भी न दिया। दीपो बाहर आँगन में सिर पर गागर ले कर दरवाजे के आगे खड़ी हो कर कई आवाजें लगाई। महाराज चुप–चाप रहे, कोई आवाज न दी। सर्दी की रातों, पहाड़ों की तरह लम्बी पोह माघ की सर्दी, काफी देर के बाद रात खत्म हुई, जब एक पहर रात रही, तीन गुजर गई, अन्दर से महाराज बोले, ''दीप कौरे। यहीं पर इस स्नान इसी जल के साथ कर लै।'' दीपो ''पहले आप करो बाद में मैं करांगी'' महाराज ''दीप कौरे आदेश मन झटपट कर। पीर का आदेश पा कर दीपो ने स्नान किया, फिर बहोश हो कर पै गई। एक घण्टे के बाद फिर कुण्डा खोल के अन्दर बुलाया, बोले–दीप कौरे तुम्हें आज क्या दें। दीपो ने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की, ''जी! और किसी चीज की जरूरत नहीं, एक आप की जरूरत है, चरणों में रखना।'' फिर आदेश हुआ, ''और कुछ मांग।'' दीपो–जी और कुछ नहीं, आप हमारे बन जाओ, हमें अपना बला लो।'' फिर भी कहा। दीपो ने यह ही बार–बार मांग की। महाराज ''करतार कौरे! तुम्हें मांग मांगने की जांच किस ने बताई है?'' कई बार दीपो को करतार कौर भी कह कर बुलाया करते थे। दीपो कहती, ''आप ही बताने वाले हो, हम क्या जानते हैं। मांग किस तरह मांगनी है?'' महाराज बहुत खुश हुए। इतने मेहरबान हुए आदेश किया, ''आज दीप कौरे! बख्शे का और तुम्हारा वो काम कर दिया है जिन को ऋषि–मुनि बहुत कष्ट सह कर हासिल करते हैं। आज जन्म–मरन के संकट आप के काट दिए हैं।'' महाराज के तकिये एक लिफाफा पड़ा था। जिसमें दाखा, बादाम,इलाचियां, छुहारे भी थे। वह लिफाफा दीपो के झोली में पा कर मुक्ता–भुगता का वर दे कर रहिपे

की तरफ भेज दिया। वह जो दाखा दी है, उनमें से आधी दाखा मेरे लड़के गुरबखशे को दे देना। यह चीज तुम दोनों की है। वह बख़्शे हुए सतिगुरों की दाखां–छुहारे गाँव रहिपे आ कर दीपो ने दास को खाने के लिए दिए। दीपो का इतना भरोसा था कि इसको महाराज हर रोज दर्शन देते थे। यदि कभी दर्शन न हो तो अन्न पानी, खाना–पीना छोड़ देना। जब महाराज जी दर्शन देन तो ही प्रसादा ही खाना। जब महाराज जी जोती–ज़ोत समा गए। सच्चखण्ड जा कर दीपो को दर्शन देते रहे। एक बार एक हफ्ता न आए, दीपो ने अन्न जल खाने से बंद कर दिया। सात दिन रोटी न खाई। एक दिन रात को चुबारे का दरवाजा बंद करके अंदर बैठी थी, दरवाजा खड़का, मन में सोचा इस समय रात के समय सतिगुरां के बिना कौन आ सकता है। उठके दरवाजा खोलने लगी। कई दिन अन्न छोड़े को हुए थे, चक्कर खा कर गिर पड़ी। फिर उठने की कोशिश की। इतने समय को दरवाजे लगे ही पातशाह अन्दर आ गए। आप सिर बुकल में लेकर दीपो को उठाया, साथ ही कहने लगे दीप कौरे इतनी जिद्द नहीं कर। हमें कई तरफ काम करना पड़ता है। दीपो ''आगे के लिए पूरा वचन दो, हर रोज़ दर्शन देने का, तो ही अन्न खाऊँगी।' महाराज कहते, ''दीप कौरे! हम तुम्हारे पास ही हैं जब भी याद करो, हम दर्शन देंगे।'' फिर एक रुमाल में से दो पेड़े खोले उसके साथ एक तिनका दीपो को खांने के लिए दिया। वह एक ही तिनका खाने के साथ सारी भूख प्यास ज़ाती रही। शरीर हलका हो गया। वह सब शक्तिमान, हमेशा हाजिर! हजूर, सब कला भरपूर सारे संसार को जी जान देने वाले दीपो को कहने लगे, ''दीप कौरे! यह चीज आधी तेरी, आधी बख्शे की है।'' यह दोनों पेड़े आप जी के रुमाल में बांध लिये, कहते समय सिर दिये जाएंगे। दीपो बिहबल जैसी होकर रोती हुई सावन के बादलों की तरह आँसू बहाती हुई

बिरहा बिरहा आखिए बिराह तू सुलतान।।
फरीदा जितू तनि बिरहू ना उपजै सो तन जानु मसानु।।

महाराज कहते, ''दीप कौरे! हमें जाने दो हम अब चलते हैं, हमें बहुत तरफ काम करने पड़ते हैं।'' इतने देर को एक काले रंग का आदमी जिसके लाल–लाल नेत्र, शरीर बहुत डराने वाला, हाथ जोड़ कर महाराज के आगे खड़ा हुआ। प्रार्थना की इस नगर में से एक आदमी की जान लेकर जानी है। आप आदेश दो। महाराज कहते, ''ले जाओ! रास्ते में कष्ट न देना।'' दीपो के घर के पास एक कसबी जुलाहे का घर था। दीपो ने बताया उस लड़के के मरने से पहले दो आदमी ऊठ पर बैठ कर आए। जुलाहियों के घर के आगे किकर के वृक्ष थे, ऊठ वृक्ष के साथ बाँध कर पता नहीं उस लड़को को क्या किया जैसे तेली रुई को पिन्ज सुटता है, तीन दिन लड़के को इस तरह दुःखी करते रहे थे। अब महाराज के आदेश के साथ उसकी जान निकाल कर ले गए। फरीद साहिब जी ने लिखा है जब इन्सान की मौत होती है बहुत कष्ट पहुँचा कर हड्डियों को खड़का कर जान निकाली जाती है।

जिंदु निमानी कडीए हडा कू कड़काए।।

मुहम्मद साहिब ने भी लिखा है, ''बेरी के कांटे वाले छापे को मुंह रास्ते निकाल कर गुदा रास्ते निकाला जाए। इतना दुःख मौत होने समय होता है।'' और भी शास्त्रों में लिखा है हजार बिच्छू के डंक मारने जितना दुख जान निकलने समय होता है। उस लड़के की जान निकाल कर यम ले गए। आगे करतार जाने उसके साथ क्या हुआ। ऐसे बहुत सारे चमत्कार जब महाराज जी की देह में

हाज़िर थे, दीपो को दिखाए। एक बार शहीदों की फौजों के दर्शन कराए। एक बार लक्ष्मी बहुत गहने पाए हुए सुन्दर भी बहुत छन–छन करती महाराज जी के दर्शनों को आई। प्रार्थना करने लगी, ''सच्चे पातशाह, मुझे चरणों में निवास दो, मेरा भला करो।'' महाराज जी कहने लगे, ''चल दौड़। चल दर्शन हो गए।'' फिर महाराज के लघूशंका करने वाला कटोरा उठा कर कहती यही मुझे बख्श दो। महाराज ने गुस्से के साथ कहा, ''चल बाहर।'' पीछे से दीपो को कहा, ''दीप कौरे! यह लक्ष्मी थी।'' एक दिन कानों में कलमां पाई हुई त्रीमान रूप में देवी सरस्वती दर्शनों को आई, दर्शन करके चली गई। दीपो ने प्रार्थना की, ''सच्चे पातशाह। यह कौन थी? '' महाराज जी कहते, ''दीप कौरे! यह सरस्वती पाठशाला में रहती है।'' एक दिन इसी तरह महाराज जी कहने लगे, ''सच्च खण्ड वसे निरंकार उस राजों के राजे के दर्शनों की झांकी दिखाई। ऐसी ही हजारों ही आत्मा के दर्शन दीपो को करा देते थे।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी ठाकर सिंह की चली

सन् 1927 में रहिपे इस्तेमाल शुरू हुआ। इस्तेमाल में जिमीदारों के भाने तो सूर्य अस्त तरफ से उदय होने लग पड़ता है। खेतों का नया जन्म होता है। मेरे पिता ठाकर सिंह के दिल में बहुत डर था कि कहीं जमीन कमजोर स्थान न पड़ जाए। परन्तु छोटी–मोटी बातों, कामकार का आसरा सब राजा बलि के आसरे पर ही समझा जाता था। घर से इस ध्यान से चल पड़ा कि बड़ी सरकार के आगे प्रार्थना कर आऊंगा, जिस की शक्ति के साथ खण्ड, ब्रह्मण्ड, पृथ्वी, समुन्द्र, पहाड़ां, चन्दा, सूर्य, पौन–पानी बंधे–खड़े हैं। उस सच्ची दरगाह में गया, मन में ही प्रार्थनों

को बांध कर जा पेश हुआ। सब शक्तियों के मालिक इन्द्र के घर बैठे थे। संगत दर्शन करके वापिस जा रही थी, काफी भीड़ बनी हुई थी। सबके मन वांछत कार्य कर रहे थे। एक आदिधर्मियों की संगत की टोली आई। उन्होंने भी प्रेम के साथ चरणों में नमस्कार की। महाराज काफी भीड़ होने के कारण सब को भेज रहे थे। जिस समय उस बीवियों के काफले ने आगे बढ़ कर माथा टेका तो महाराज जी कहते "हां! हां! ठाकरा सौ तो एक बढ़ जाए तो उसको भी साथ ही गिनना पड़ता है। इसका अर्थ तू कहीं ना पई तू आदिधर्मियों को साथ क्यों लगने दिया। यह भी और जीवों के साथ ही है। जैसे गुरु गोबिन्द सिंह ने भी कहा है "मानस की जात सबै ऐके पहचानवो।" महाराज नाभ कंवल राजा साहिब जी सब जीवों का उदार करने के लिए ही इस संसार में आए थे। "जिन प्रेम कीओ, तिन ही प्रभ पायो" ठाकर सिंह को कुछ देर पहरे पर खड़ा रखा। कुछ देर बाद घर जाने के लिए आदेश हुआ। ठाकर सिंह के पास कमण्डल था, दूध लेकर गया था, दूध तो लंगर में भेज दिया, आदेश किया, इन्द्र के घर जो घड़े भरे हुए थे, उनमें से जल का कमण्डल भरने के लिए कहा, कामण्डल भर के आदेश किया कहते, "चल बल्लोवाले तरफ नया कुआं ला लई। कलमां राजा के आदेश के साथ बहती है। चिन्ता नहीं करनी।" इतना वचन कहने के साथ सारी चिन्ता जाती रही। इस्तेमाल में बहुत अच्छे स्थान पर सारी कमजोर जमीन इक्ट्ठी कर दी। बल्लोवाल की तरफ ऐसा रकबा बंधा, तहिसीलदार ने हरा रंग कर दिया। कभी ऐसा रकबा हम ने किसी का नहीं देखा। सन् 1933 में साहिब माडल फार्म रजिस्ट्रड हुआ। इस्तेमाल के बाद पहला कुआ दूसरी सांझी हाकम सिंह को छोड़कर राहों पश्चिम की तरफ लाना पड़ा। उस दिन जी कमण्डल जल की बखशिश की थी, उसका पता लगा। कई–कई साल पहला जो जीवों के कर्म में लिखा होता था

उसकी रमज़ पहलां ही मार देते थे। ठाकर सिंह के बड़े भाई बचन सिंह जब स्वर्गवास हो गए, घर की जिम्मेवारी ठाकर सिंह के सिर आ गई, उनके घर का खेतों का काम कर रखना, कुछ मन उदर गया। मन में सोच सोचता महाराज जी के दर्शनों को जब गया तो मन में वैराग आ गया। चरणों पर नमस्कार की, आँसू निकल पड़े। महाराज जी कहने लगे, ''ठाकरा उदास नहीं होना, काम तो तेरे सारे हम कर रहे हैं, तुम्हें क्या चिन्ता है।'' छः फुट खजाना तुम्हें माया का दिया हुआ है, सारा आप का ही है। तेरे बच्चों ने तो रुपया के साथ खेलना है। सारा भट्ठा साई का खरीद के अच्छा मकान पा लेना है। बड़ी–बड़ी भैंसें रखनी हैं। जो इकट्ठी–इकट्ठी चार–चार सेर मक्खन निकालें।'' दास भी साथ था। महाराज कहते, ''काके का नाम क्या रखा है?'' जी बख्शी रखा है।'' महाराज कहते, ''बड़े–बड़े नाम रखने थे, ऐसे ही छोटा जैसा नाम रखा हुआ है। जितना बड़ा आदमी हो उतना बड़ा ही नाम रख लेना है।'' फिर मुझे शब्द पढ़ने का आदेश किया। गर्मी के दिन थे। दास ने छोटे साहिबजादे के कवित पढ़े। मिलखा सिंह का पुत्र लशकर सिंह भी साथ ही बोलता था। फिर पक्की धारना पढ़ी, ''चलो सिंहो चलो दर्शन करने गुरु गोबिन्द सिंह आए ने।'' महाराज जी बोले कहते, ''बख्शो! तुम और राजा के बिना और कुछ कहना ही नहीं है, कान पकड़ तुम राजा–राजा कह, यह आदेश तुम्हारे लिए है।'' गर्मी के दिन थे, कुछ गला खुशक हो गया है। पेट में नुकस था। बड़े–बड़े हकीमों के मालिक की तरफ से आदेश हुआ ''बखशिया घी पी लेना है सारी बीमारी ठीक हो जाएगी।'' उस ही पल जो शरीर चुस्त रहता था ठीक हो गया। अभी तक कोई शरीर को नुकस होता तो घी खाने से ठीक हो जाता है। ठाकर सिंह के नाखून काले हो गए। मास नाखूनों से अलग हो गया। नमस्कार करने लगे तो पूछा, ''ठाकरा! नाखूनों की क्या बात है?'' ठाकर सिंह, ''जी! पता नहीं मास

छोड़ गए हैं, काले हो गए हैं, काफी कष्ट है।'' घी लाने का आदेश किया। सब ठीक हो गए घी लाने से। सारी बरकतां मेहरां के दाते की नजर में थे। जिस तरफ थोड़ी रहमत भरी नजरों से देख लेते थे, बेड़े किनारे लग जाते थे। एक बार ठाकर सिंह कोई चलने वाले बलद या ऊठ खरीदने के ध्यान से पैसे वासनी में पा कर कमर के साथ बांध कर पहाड़ की तरफ को चल पड़ा। रास्ता मजारे में से जाता था। मन में सोचने लगा यदि पास से दर्शन के बिना चला गया तो अच्छी बात नहीं और जाया भी नहीं जाता। यदि दर्शन करने गए और सारे पैसे ले गए तो भाई ने गुस्से होना पशु भी चाहिए। पैसे पास और नहीं हैं। सोचता–सोचता दर्शनों के लिए चला गया। महाराज जी गाँव सूर्य उदय की तरफ नागरियां की सीमा में एक कुएं की मुंडेर में बैठे थे। जब ठाकर सिंह अभी दूर था, घट–घट की जानने वाले बोले, कहते ''ज्यादा बछड़े, भैस ही लेकर पाल लेते, ज्यादा पैसे नहीं लगाते, भैंस, बछड़े बहुत काम देते होते हैं।'' इतना आदेश देकर भेज दिया। दो खेत दूर गए तो मुंडेर में से उठ कर आवाज दी और कहा, ''ठाकरा! नहीं तो कोई छोटे कद की छत का ऊठ ही ले लेना। अच्छा काम देते होते हैं।'' ठाकर सिंह कहता, ''जी! सत्य वचन, जैसा आप का आदेश हो।'' सच्ची ही मुक्तसर की मण्डी से ताया बतन सिंह ऊठ लाया, छोटे कद की छत का, कई साल बहुत काम दिया। ऐसे दयालु कृपालु सच्चे सतिगुर सेवकों के काम करते थे। एक दिन ठाकर सिंह को कहने लगे, ''जब भी हमारे दर्शनों को आना सौ रुपया अच्छा लेकर आया कर, नहीं तो आया न कर।'' ठाकर सिंह, ''जी आपके दर्शनों के बिना तो बच नहीं सकता। जब सौ रुपए के ठेके के लायक बना दोगे तो ठेका भी लेकर आया करूँगा। 'जियु मछली बिन पानी क्यों जीवन पावै'' आप के दर्शनों के बिना बच नहीं सकता।'' महाराज जी कहते, ''अच्छा! तुम्हें सौ रुपए ठेके का मालिक

बना दिया, चाहो रसोखाने आ कर दे जाया कर। चाहे तसीले जा कर उतार देना।'' अलमारी में से कई कागज ठाकर सिंह की तरफ ला कर साफ करते, साथ ही हाथ पर लिखी जाते। साथ ही वर और दातां बख्शी जाना। ऐसी कई मिसलां भर के चल कहते, ''ढीला नहीं रहते। तुम्हारे बीच में से इतनी ढील निकाली है. अभी भी ढीला चलता रहता।'' ऐसे आदेश देकर भेज दिया। एक बार फिर की बात है। ठाकर सिंह जबोवाल को जाता–जाता महाराज जी के दर्शनों के लिए गाँव मजारे गया। महाराज जी नागरियां की ढक्की में बैठे थे। आगे गया तो दो आदमी महाराज जी के पास खड़े इस तरह कह रहे हैं हमें कोई चमत्कार दिखाओ। महारज काफी पत्तियां के साथ उनको कह रहे हैं, ''सीखते जाओ! चमत्कार दिखाना कहर का नाम है। चल कर सरदाई पिलाओ। साधुओं के पास से मेहर चाहिए।'' ठाकर सिंह को आदमियों पर बहुत गुस्सा आया, मंधेर बांध कर लाठी को थुक्क ला कर कहा, ''इधर निकलो! चमत्कार मैं तुम्हें दिखाता हूँ।'' महाराज ने ठाकर सिंह को कहा, ''ठाकर! चल आगे यहां जाना, यह हमें कुछ नहीं कह सकते।'' ठाकर सिंह जबोवाल जा कर शाम को वापिस आया। एक छोटे जाने वाले लड़के ने पहले ही बताया, वह दोनों आदमी अभी महाराज जी के पीछे लगे हुए हैं. महाराज शांति के समुद्र उनको कहते हैं, ''काका! जाओ पर वह जाते नहीं।'' सूर्य छिपने वाला है। शायद महाराज जी के साथ कोई गलत वचन करन, आप उनको भेज दो। ठाकर सिंह ने जा कर महाराज जी के चरणों पर नमस्कार की। ठाकर के जाने के बाद महाराज जी उठ कर नागरियां की तरफ चल पड़े। साथ ही कहा, ''आओ भाई! आप को चमत्कार दिखा ही दें।'' ठाकर सिंह ने भी कमर बांध कर लाठी को थुक्क ला लिया और वह भी चुस्त हो गया। जब इतना वचन कहा, वो दोनों आदमी जो सुबह के पीछे पड़े हुए खड़े थे, जमीन पर जोर से

गिर पड़े। पिशाब कपड़ों में ही निकल गया। शरीर पीला हो गया, थर–थर कांपने लगा, तिनका उठाने की हिम्मत न रही। महाराज कहते, ''चलो भाई, उठो तुम्हें कुछ दिखाएं पर उनमें मरे हुए सांप की तरह सिरी चुकने की भी हिम्मत न रही, शरीर पत्थर की मूर्ति बन गए। जब यह चमत्कार देखा तो प्रार्थना करने लगे, ''सच्चे पातशाह! हमें माफ करो। हम नहीं जानते आप की गति को।'' चलो उठकर चले जाओ।'' इतना आदेश दे कर गाँव नागरी एक हवेली में जा बैठे। गाँव के लोग सुन कर दर्शन करने आए। चरणों में हाजिर हो कर सेवा में प्रार्थना की कहते, ''मेरे मेहमानों को प्रसादा छकाओ। पंचायत बांध कर पास घेरा पा के इज्जत से प्रसादा छकाओ। यह अकेला ही लाखों की तरह है।'' एक दिन फिर की बात है ठाकर सिंह को गाँव नागरी भेजा, ''जाओ! आवाज देकर आओ राजे का ठेका दे जाए। गाँव जा कर कहा राजे का ठेका दे जाया करो'' ठाकर सिंह कहता, ''जो लोग नहीं मानते।'' महाराज जी कहते, ''ठाकरा! चौकीदार को तो पहरा देना का काम ही है, जागना न जागना किसी की मर्जी, खड्डियां भी राजा के नाम पर ही बनी हुई है। हां! हां! कुन्नां सारखियां, सुहागे के कन्ने और मोहरें भी राजा की ही लगी हुई है। कीलियां सारखियां, कोहल्लू सारखे, कारखाने भी राजा के नाम पर ही बने हुए हैं. कछहिरे में नाला पाना भी राजे ने ही बताया था। अमृत भी खण्डे का राजा ने ही तैयार किया था। अमृतसर की नींव भी और हरिद्वार की सीढ़ियां भी राजा के नाम पर ही बनी हुई हैं। चुल्लियों को भी टैक्स (कर) खड्डियां को भी टैक्स, साइकिल को भी टैक्स, कोहलूओं को भी टैक्स! ठाकरा! हम ला दिया है।'' उस समय कोई नाम निशान नहीं था होता। चुल्ले टैक्सों का। पहला परमात्मा की दरगाह में कानून बनता है, पीछे से महापुरुषों के द्वारा मातलोक में प्रगट किये जाते हैं। महापुरुषों का जो भी बोल होता है, दरगाही बोल होता है. ऐसी कहानियां

हजारों ही ठाकर सिंह के साथ हुई। एक बार की बात है ठाकर सिंह की बहू बीमार हो गई। जब मरने वाली हुई तो ठाकर सिंह महाराज जी के चरणों में प्रार्थना करने लगा, साथ दास का जन्म पत्रा गुणाचोर से गांव दीना नाथ से दिखा कंर गया। आगे महाराज जी बोले, ''ठाकर! कागज के अक्षर तों पढ़ लिख तो पर कोई ले, मोहर तो ऊपर राजा की लगनी है साथ जो ठाकर सिंह के मन में विचार था कि मरीज को ठीक कर देना तो क्या मुश्किल है सब कुछ कर सकते हैं। महाराज माथे पर सफैद पट्टी बांध कर खिड़की खोल के आदेश किया, ''चल ठाकरा! मैं खुदा की रज़ा नहीं तोड़ता।'' एक बार चारपाई ठीक कराने का आदेश किया। इस सिनो के पास बुनने के लिए ठाकर सिंह ले गया, जब ले जाकर नये गाँव रखा तो भविष्यवाणी हुई कहते, ''उठाओ हमारी चारपाई, कहां शमशान भूमि में आ कर रखा।'' कुछ देर बाद सिनो मर गई।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी दास के साथ हुई

बचपन से ही घर में सारे परिवार का नाभ कंवल राजा साहिब के चरणों में ध्यान लगा हुआ था। पिता और बाबा, परदादा, बाबा बिशन सिंह भी संत सेवी और बहुत बड़ा दानी था। बाबा सुरमुख सिंह, पूरन भगत नाभ कंवल राजा साहिब के सेवक थे। फिर पिता ठाकर सिंह भी नाभ कंवल राजा साहिब के पक्के प्रेमी होने के कारण दास के मन को भी भक्ति रंग ही सब से पहला अच्छी संगत होने के कारण उसे ही घर का प्रेम लग पड़ा। जब मन किसी प्रेम में रंगा जाए तो हर समय उसी ही तरफ का झुकाव बन जाता है। सभी वस्तुएं से, सब रसों से

एक नाभ कंवल राजा साहिब जी के दर्शनों का रस मीठा लगने लगा। मन में और कोई इच्छा न रही। जब भी कभी काम में समय मिलता गाँव मजारे बैठे असमानी प्रीतम के दर्शन को ऐसे दौड़ पड़ना जैसे शमां पर परवाना आ गिरता है। मान सरोवर की तरफ हंस भागे जाते हों, प्यासे मृग बहते दरिया की तरफ, खीर समुन्द्र की तरफ, देवते अमृत छकने जाते, भँवरे फूलों की तरफ जाते, जैसे प्रेम की डोर दिन–ब–दिन दृढ़ होती गई। मन घर के कामों से नफरत करने लगा। दिल अन्दर वैराग की लहर चली, मन में दृढ़ संकल्प बना लिया। इस संसार को छोड़ कर सन्यास धारण कर ले। इस विचार को मन में लेकर सतिगुरां के दर्शन किये। महाराज करतार सिंह के घर बैठे थे, अन्दर से कुण्डी लगाई हुई थी। मैं राजू लंबर की सीढ़ी चढ़ कर छत ऊपर से आँगन में (जिस स्थान झरना लगाया हुआ है) ऊपर से फूलों का हार फेंक कर नमस्कार की। जब फूल कलियां और गुलाब का बना हुआ गुलदस्ता सुन्दर प्रीतम के चरणों में भेंट किया। तो आप जी मुस्कराते हुए बोले, ''काका! चल घर ही वापिस चल। चल कर खेत देख। कहीं जंगलों में जा कर आप को सन्यास धारने की जरूरत नहीं।'' मेरे मन में इच्छा थी अपने हाथों से वनवासियों वाले वस्त्र पहना के भेज दे। कहीं जंगलों में जा कर तपस्या करे। यही संकल्प को समझ कर अर्न्तयामता के साथ आदेश किया। अर्थात घर ही रहने का आदेश किया। ''दौड़। घर में ही राजा! राजा! सिमर कर, तुम तो हमारा सच्चा मोती है। सफैद पगड़ी रखनी है। सफैद वस्त्र रखने हैं, काका बेदाग चादर है। '' यह इशारा (संकेत) सच्चे कर्म का था। गन्दे कर्म करने से मन गन्दा हो जाता है। ऐसे धर्ता कर्ता सब विचारों के मालिक थे। एक दिन की बात है हम गाँव खटकरां से उठ कर सतिगुरां के दर्शन करने के लिए मजारे गए।

महाराज जी अपने घर कमरे में बैठे थे, दरवाजा बंद था। जब दरवाजे के आगे नमस्कार की। महाराज ने अन्दर से कुण्डा खोला, उनके पास दूध की भरी हुई एक कटोरी पड़ी थी। महाराज, ''बखशिया! कटोरी उठा कर ले आओ।'' मैं हाथों पर कटोरी उठा कर आगे बैठा। बहुत प्यार से कहा, ''दूध पी लै।'' हम ने प्रार्थना की जी! पहले आप पी लो।'' फिर आदेश हुआ कहते, ''झट आदेश मानते हैं। सारा पी ले।'' फिर हमने सारी भरी हुई अमृत रूपी दूध की कटोरी पी ली। दूध पिला कर आदेश किया, ''काका! गाना सुना।'' हम ने रैहकला पढ़ा

''तेरे अन्दर राम मुरारा है, नहीं तुझ से नूर न्यारा है।
नहीं परखे परखनहारा है, तू अनहद बाजे बीने को।।
मल सीसे सुरत समाई है बीच भरम भुलेखे छाई है,
इन निर्मल जोत दबाई है, तू साफ करो आइने को।।''

यह रैहकला जब हजूर के सामने गा कर सुनाया। महाराज कहते, काका! ध्यान से बैठ जा साथ उसका अर्थ समझाया। अभ्यास करने का ढंग बताया, इसके ह्दय में निरंकार की जोत जग रही है। कुकर्मों की मैल लगने के कारण वह निर्मल जोत दबी हुई है। शब्द के अभ्यास के साथ इसका आईना साफ हो जाता है। तो अन्दरों ही खुदा के दर्शन हो जाते हैं। उस दिन दास को उपदेश दे कर निहाल किया। नाम जपने का ढंग बता कर कमरे के पश्चिम की तरफ पीछे हो कर ध्यान ला कर बैठ जाने का आदेश किया। समझाये हुए हिसाब के साथ हम चौंकड़ी मार कर बैठ गए, काफी देर बैठे रहे। बैठे–बैठे का ध्यान अन्दर से निकल कर बाहर खटकरी चला गया। सीता रूपी ध्यान जब फरार

हुआ, एक मिंट में उस ही समय आदेश हुआ, ''चल बाहर चल।'' हम ने बहुत प्रार्थना की, ''सच्चे पातशाहो! चरणों में ओर को बैठ लेने दो।'' कहते, ''जितना समय चरणों में बैठ सके बैठ लेने दिया, मन तो तुम्हारा खटकड़ी चला गया।'' हम बहुत मिन्नतें की पर भेज ही दिया। ऐसे ही सूक्ष्म फुरनों के मालिक थे, तभी तो शास्त्रकारों ने लिखा है सभी इन्द्रीय दमन करें बिना यार का द्वार नहीं मिलता गलियों के मोड़ पर ही भूल जाते हैं। सभी कामनाएं खत्म हो जाए तो प्यारे प्रीतम का घर मिलता है। ऐसा प्रीतम, सुजान हरता–करता, घट–घट की जानने वाला चौदह कूटां का मालिक सेवक को जैसे लुहार सोने को सन्नी के साथ पकड़ कर ऊपर से हथौड़े की चोट लगा कर सीधा कर देता है। ऐसे ही कामिल पीर सिक्ख सेवकों को प्रेम की डोर से पकड़े रहता है। ऊपर से दोष दूर करने के लिए सीधा चोट भी देता है. एक बार की बात है, सर्दियों के दिन थे ज्ञान सिंह (हरी सिंह का पुत्र) हमारे साथ थे. सतिगुरू के दर्शन के लिए गए। दिन के चार बजे थे। महाराज जी गांव के बीच गुरदास के घर में थे। सतिगुरू के दर्शन किए, पीछे मोड़ दिया। बाहर निकले बरामदे में एक तरफ बैठ गए। संगत बहुत दर्शन को आ रही थी। इतने में एक नौजवान लड़कियों का समूह दर्शन करने आया। अंदर जा कर सतिगुरु के दर्शन किए। सच्चे पातशाह मेहरों के घर में बैठे थे। उन लड़कियों के समूह को पुचकार से पीछे जाने के लिए कहा। उस लड़कियों के समूह ने शब्द पढ़ने की इजाजत मांगी। पहाड़ी सुर में उन प्रेम दीवानियों ने दो गीत गाए। महाराज जी ने मीठी वाणी में हुक्म दिया, ''बच्चियो। जाओ घर में ही हमें याद कर लिया करो।'' उस बसंत ऋतु की खिली फूलवाड़ी को देख के हमारा मन कुछ डोल गया श्रद्धा का तंद मिंट का मिंट ढीला हुआ कमज़ोर मन डोल गया। उसे ही पल अंदर से सभी

शक्तियों के मालिक बोले, काका। इधर आओ, हम सभी अंदर पेश हुए। पैर पाया कहते, ''चल बाहर! यहां मेला नहीं है, चल माहों के घर चला जा, तुम्हारी उनके साथ सांझ है। एक के साथ ही सांझ बहुत है। तुम्हारे साथ सांझ ही नहीं रखी।'' जब इतना बोल सतिगुरों के मुख से निकला। बस हमारा शरीर पानी–पानी हो गया, सिर चक्र खाने लग पड़ा, पैर जमीन से ऊपर को उठते जाए। शरीर कांपने लगा। दास ने कहा, ''आप को छोड़ कर मैं और किसी के घर नहीं जाऊंगा। चाहे जान से ही मार दो।'' हम बहुत कहने पर भी चले नहीं, डांट के अन्दर से बाहर कर दिया। हमारा मन भी बहुत निराश हो गया। कोई ध्यान नहीं पागलों की तरह दशा हो गई। आँखों के आगे अन्धेरा आ गया। इतने देर को फिर अन्दर आने का आदेश किया. कहते, ''आ जाओ! बच्चो को समझाना ही पड़ता है। पास बुला कर कहने लगे, ''काका! तुम्हें तो मैंने अपना अंग बनाया हुआ है। चाहे खुदा कह लो, चाहे बड़ा भाई समझ लिया कर। जब तक सतिगुरों के अहिरन की तरह भरोसा न हो। उस समय तक प्रसाद नहीं बन सकता। पंघूड़े जैसे भी राजा ने ही बनाए थे। दो रोटियां जो संसार खाता है। यह राजा ने ही दी हुई हैं।'' सामने खड़ा करके यह शिक्षा दी, कहते, ''हरिए को भी अन्दर आवाज मार ले।'' ज्ञान सिंह अन्दर आया। चारपाई देकर एक दीवार के साथ बैठ जाने का आदेश किया। चिन्ती को कहा, ''ले कर आओ! मेरे मेहमानों को प्रसादा छकाओ।'' चिन्ती गर्म–गर्म एक प्रसादा मक्की का साग पा कर थाली में रख कर ले आई। महाराज कहते एक स्थान पर ही खा लो। एक प्रसादे में से तीन निवाले हमने जब खाए कहने लगे, ''बख्शा! तेरे तो मैं आगे ही सब कार्य किये हुए हैं, सब कुछ दिया हुआ है। इसे को ही खा लेने दे।'' बाकी सारा प्रसादा ज्ञान सिंह ने खा लिया। बर्तन धोने के

लिए ज्ञान सिंह को कहा कहते, ''तेरा अधिकार है, पहला धो कर पीछे से सुखाने साफ करने हैं। यह साधुओं की मर्यादा है।'' हमारे बैठे–बैठे राजो नैन आई। उस को महाराज कहते, ''राजो! कुछ समय के बाद ऐसा समय आएगा, मुस्लमान–हिन्दु अलग–अलग किये जाएंगे। मुस्लमानों के लिए पाकिस्तान बना दिया है, तुम्हारे लिए नहीं, उस समय में आप घबराना नहीं ,बलवान हो कर रहना। सारी घटना खुदा के आदेश के साथ ही होगा। हमें रसोखाने की तरफ भेज दिया। कहते, ''रसोखाने जा आओ।'' हम रसोखाने से वापिस आए। आगे अन्दर से कुण्डा लगा हुआ था। दरवाजे के आगे नमस्कार करके आवाज दी। अन्दर से बोले ''रहिपिए।'' ज्ञान सिंह कहता, ''जी हां।'' महाराज कहते , ''किस का लड़का है?'' जी हरी सिंह का।'' उससे पीछे से दास को पूछा मुझ से भी ज्ञान सिंह की रीस से ठाकर का पुत्र कह हो गया। आप का ही पुत्र कहना था। यह बात मन में कमी वाली, बहुत कुण्डे की तरह चुभने लगी। गई रूह कलाबूतों कमान थी तीन छुटा यह वापिस फेर न आते थे। गाँव रहिपे जाने पर भी मन में तोड़ लगी रही। कुछ दिनों के बाद सपने में दर्शन दिए। फिर उसी तरह से पूछा, ''काका! किस का पुत्र है'' फिर दास ने कहा, ''जी! पुत्र मैं राजा साहिब का हूँ।'' तो मन में चैन आई।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

दूसरी साखी दास के साथ हुई

एक बार की बात है, उस दिन कुएँ का उद्घाटन था। सारा दिन कुआं चलता रहा। दलिये के प्रसाद बहुत बना कर बांटे गए। खास–खास गाँवों में से जोड़े लाकर कुआं चलाया। गाँवों की संगत जाने के समय दर्शन करके जाते थे। गाँव रहिपे की भी संगत दर्शन करने गई।

सारा गाँव इक्ट्ठा हो कर आया हुआ था। और सब की तरह दर्शन करके संगत वापिस चल पड़ी। आप करतार सिंह के घर बैठे थे। रहिपे की संगत छुट्टी लेकर वापिस रसोखाने आई। समुन्द सिंह नागरियां वाले को हमारे पीछे भेजा, कहा, ''जाओ हरिए के लड़के को और बख्शे को वापिस ले आओ।'' दास का नाम बख्शा लेकर बुलाते थे। हमें रसोखाने की सीमा से पीछे ही समुन्दा वापिस ले गया। जब घर जा कर खिड़की के आगे लाख–लाख नमस्कार की। आवाज दी, अन्दर से मेहरां के सागर बख्छंद पिता बहुत मीठी आवाज से बोले, ''काका खुश है?'' हम ने कंहा जी! आपकी खुशी से ही खुशियां हैं। साथ ही आदेश किया, ''काका! हमारे स्नान करनें वाली गागर खुले कुएं में से भर कर हमारे ऊपर वाले कमरे में रख कर स्नान करो। आप को आज सारे तीर्थों का स्नान यहां ही करा दें।'' गागर पानी की भर कर हम दोनों ले कर आए। ऊपर कमरे में रखी। ज्ञान सिंह कहता ''यार! टण्ड़ लगती है कि स्नान करना है?'' चिन्ती, बन्तो दोनों कराला के चक वाली हमें कहने लगी, ''आप गलती न करो, पता नहीं क्या किस्मत बना रहे हैं, स्नान जरूर कर लो।'' मैं तो दो–तीन मुट्ठी भर के कपड़ों के साथ शरीर पर मल ली, एक मुट्ठी सिर में पा ली। ज्ञान सिंह कहता मुझे तो ठण्ड लगती है। मैं तो स्नान नहीं करूँगा। जो काम पातशाह ने करना है वह तो कर ही देना है। ऐसी बखशिशां कम बुद्धि वालों को भी बख्श देते थे। पर हम स्नान न कर सके, यह सोच के कि हमारे साथ वाले साथी हमें छोड़ कर चले गए हैं। चुप–चाप बाहर से नमस्कार करके (रसोखाने हमने ऊट बांधा हुआ था) ऊंट पर चढ़ कर बाकी साथियों को गाँव जाने से पहले–पहले ही जा मिले। यह बात समझ न सके कि यह वह ही घड़ा अमृत का जो देवतियों और राक्षसों ने खीर समुन्द्र मंथन करके निकाला थ। बिन भागों

किछु पाए नाहिं ये बहतेरा धावै। एक बार की बात है ज्ञान सिंह और दास दर्शनों को आए। महाराज करतार सिंह के घर की डियोडी में बैठे। दर्शन किए एक दो दास पास से शब्द पढ़े। उसके बाद घर चले जाने का आदेश देकर भेज दिया। जब कुछ दूर गए भगवान सिंह खानखाना वाले को भेज कर रास्ते में ही दास को बुलाया। जब वापिस आ कर चरणों में नमस्कार की कुछ देर आगे बिठा कर कई हुक्मनामे लिखे। कुछ पता नहीं क्या लिखा काफी देर इस तरह जांघ और कभी हाथ पर गिनते रहे। लिखने के बाद आदेश हुआ, ''काका! चल अब जाओ! हाजरी लग गई है।''

बोलो भाई वाहिगुरू।।

तीसरी साखी और दास के साथ हुई

एक बार की बात है कार्तिक मास के दिन थे। लोग गेहूँ की बिजाईयां कर रहे थे। दीवाली का दिन था, घर पर लड्डू बनाए, पहला हमेशा ही नाभ कंवल राजा साहिब जी के नाम के सुच्चे लड्डू, जलेबी निकाल कर हजूर के चरणों में चढ़ा कर फिर घर में खाते थे। यह दीवाली की मिठाई एक लिफाफे में पा कर एक कपड़े के किनारे बाँध कर दास सतिगुरों के सामने गाँव मजारे गया। चरणों में रख कर नमस्कार की। कामिल पीर मुस्कुराते हुए कहने लगे, ''काका, क्या लेकर आया है?'' दास ''जी हम क्या लेकर आने के योग्य हैं, आप का दिया हुआ खाते हैं, पहनते हैं।'' कहते, ''जी मेरे नाम की चीज हो, यहां न लेकर आया कर, गाँव रहिपे हमारा तख्त है, वहां माथा टेक कर जानवरों को पा दिया कर। मेरे नाम की समझ कर।'' दास–जी! आप यहां ही मेरे से यह नहीं होना।'' कहते, ''अच्छा! शब्द पढ़।'' हमने शब्द पढ़ा। हमारे गुरू

ने जहाज बनाया आओ जिने पार जानां' दास को कुछ जुकाम और बुखार हुआ था। आवाज ठीक नहीं थी निकलती। सतिगुरु की तरफ आदेश हुआ, ''चल! काका! रहिपे चल कर कुएं पर स्नान केशों (बालों) समेत कर लेना। तुम्हारे लिए हमने तीर्थ रचा है। हर रोज पहला उठकर स्नान कर, पक्का नियम बना ले। समुन्दा, भाना, मेरे और रहिपियां का बहुत देर से मित्रचारा चला आ रहा है, यह हमारे पुरातनवी दोस्त है।'' फिर आदेश किया, ''चल काका! अब यहां न आया कर, यदि राजा देखने का बहुत शौंक है तो आ कर रसोखाने देख लिया कर।'' हमने कहा, ''दर्शनों के बिना नहीं रहा जाता, दर्शनों की प्यास हर समय मन में लगी रहती है। एक घड़ी न मिलते तो कलयुग होता' सच्चे पातशाहो! ऐसी दिशा हो जाती है।'' फिर कहते, ''चल काका! भाग चल। यदि राजा साहिब के दर्शन की मन में बहुत प्यास लगी है। तो रसोखाने ही आ कर देख लिया कर।'' उस दिन गाँव रहिपे जा कर जिसे कुएं को आप जी ने लाया हुआ था उसमें से जल लेकर स्नान किया बुखार स्नान करने के साथ ही ठीक हो गया। रोज स्नान करने की आदत भी पक्की हो गई। गुरुद्वारा तख्त साहिब पर सेवा की पक्की डियूटी ला दी। बख्शी हुई सेवा कर रहे हैं। इसी तरह एक बार दर्शन करने के लिए गए। आगे से सतिगुरु ने शब्द पढ़ने का आदेश किया। जब भी दूसरी बार जाना और नया शब्द याद करके आना। गुरबाणी में से आप जी के रचे हुए भगवान बिलास सतिगुर महिमा में से शब्द याद करके आना। दीपो पास से भी शब्द पढ़ाया करते थे। जब भी दर्शन के लिए जाना शब्द पढ़ाने खड़े हो कर पढ़ते थे। यदि कभी संगत को दर्शन कई–कई दिन न होते, जब भी हम ने जाना सारी संगत के बोल उठना, ''अब सब को दर्शन हो जाएंगे, रहिपिए आ गए हैं। रहिपे वाली संगत का बहुत मान करते थे। प्रार्थनाओं के शब्द पढ़ने सारी संगत को खिड़की खोल कर दर्शन

देकर निहाल करना। शब्द यह पढ़ने, 'किनारे ऊपर मैं खड़ी हूँ, गुरू आएं तो पार कराए मेरा दीन दयाला जी सुन लो प्रार्थना।'' एक दिन एक कवित्त आप जी के सामने पढ़ा तो सतिगुरू मेहरबान अन्दर बैठे ही बोले, ''हां! हां! काका! सतिगुरु के सिर पर नजारे ही ले रहा है। तेरी दो रोटियों के जिम्मेवार हम ही हां, काका! तेरे सिर पर हमारा सदा ही हाथ रहेगा। तेरी जिन्दगी सुख वाली जिन्दगी होगी। स्वर्ग वाली जिन्दगी काका गुजारेगा। आखिर तुम्हारा हमारे चरणों में निवास होगा। हमारे साथ भेद–अभेद हो जाओगे, छोटा–बड़ा न समझना। दौड़ लगाया कर फिर देखना लायक जवान हो जाएगा। यह दौड़ का संकेत नाम की कमाई करने का किया। उस दिन फिर शब्द पढ़ने का आदेश किया। दास ने एक बैंत आप के सामने गाया। उस बैंत की आखिर वाली पंगती इस तरह थी, ''कहे नानक फकीर चल देख वहां बिना परमात्मा से किसी की जात नाहिं।'' महाराज कहते, ''काका! ऐसे कह चल नानक अवतार चल देख वहां बिना परमात्मा से किसी का दात नाहिं। फकीर तो एक मांग के खाने वाले का नाम होता है। नानक अवतार था।'' दूसरा कवित पढ़ा–लाई मिठाई किकरां पर झाड़ पाई चरण छोहत खारा पानी मीठा होइ जाता।'' यह कवित सुन के महाराज कहते, ''बख्शा! नानक ने किकरों से बर्फी ला कर संगत को छकने को दी थी, राजा जनक की और नानक की एक चानी थी पर तुम्हारे लिए तो हदायत है राजा साहिब, राजा साहिब जपना।'' एक बार शब्द पढ़ते पढ़ते धारना पढ़ी, 'मैं खड़ी इन्तजार करो अपने राजा को।' महाराज कहते अकेला राजा नहीं, राजा साहिब कहते हैं। राजा साहिब एक नहीं है सबका मालिक है। सारे संसार का मालिक सब को रोटी देने वाला है, समझा कर, क्योंकि राजा साहिब खुदा का नाम है।''

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी और चली

एक दिन दास और ज्ञान सिंह दर्शन के लिए आए। दूध की बाल्टी पास ले गए। दूध लंगर में पा कर बाद में दर्शनों को गए। महाराज जी किरपे के चुबारे में बैठे थे। दरवाजे आगे जा कर आवाज दी सलाम की, अन्दर से आदेश हुआ, ''काका ! शब्द पढ़।'' दास ने शब्द पढ़ा,

''खुशी मान ले सिला ले सफैद कपड़े दुनिया को छोड़ जाना''

कपडु रूपु सुहावना छोड़ि दुनिया अन्दरि जावणा।।
मंदा चंगा आपणा आपे ही कीता पावणा।।

यह शब्द सुन के महाराज जी ने संगत को दर्शन दिए, साथ ही बहुत खुश हो कर बोले–हां! हां! काका! ठीक है दुनिया सच्च ही छोड़ जानी है। फिर एक और बैंत पढ़ी–

गाड़ी खड़ी मुसाफिरा जाने वाले चढ़ गए साथी तेरे साथ के जी।

महाराज कहते, ''नहीं! नहीं! काका! ऐसे कह–

गाड़ी आई मुसाफिर जाने वाले चढ़ गए साथी तेरे साथ के जी।

फिर ईश्रदार की रची हुई काफी पढ़ने लगा। उसमें एक पंक्ति आई 'आशिक को मैं देखन चली घर आशिक का दूर है' महाराज कहते, ''काका! यह रहने दे और पढ़ खुदा आशिक नहीं आदमी आशिक होता है। आशिक माशूक को देखने जाता, माशूक आशिक को नहीं देखने जाती।'' चल कहते, ''रहने दे घर दौड़ चल।'' नमस्कार करके हम दोनों पीछे वापिस आए, कुछ दूर गए, रास्ते की तरफ की खिड़की खोल कर आदेश किया,

''काका! आगे के लिए रहिपे से आया करेगा तो अपने पीने के लिए लस्सी की बाल्टी गाँव से ही भर के ले आया कर। (बाल्टी कुण्डे में कपड़ा पा कर पीठ पर लटकाई हुई थी।) लंगर में आ कर नहीं पीनी, कान पकड़ लो, पक्की हदायत समझनी। यह आदेश आगे आने वाले समय के लिए हमेशा के लिए किया पूजा की वस्तु नहीं खानी।'' एक बार की बात है गर्मी के दिन थे। दास झिंगड़ी एक विवाह पर गया हुआ था। विवाह में से समय निकाल कर दर्शन करने आया। आगे सतिगुरू किरपे के चुबारे के आगे छत के ऊपर चारपाई पर बैठे थे। उस दिन आप के चेहरे की चमक देखी नहीं थी जाती। इतना चेहरे पर नूर पै रहा था चेहरा लाल हो गया था। उस समय सुन्दर प्रीतम के चेहरे की जोत चन्द सूर्य के प्रकाश को भी मात पा रही थी। उस समय नयनों की धार जिस तरफ पड़ रही थी, खुश कर जाती थी। दुनिया के रिश्ते तोड़ जाती थी। कंगालों से शाह बनाती थी, अहंकार का रोग काट जाती थी। खुशियों के जाम पिलाती थी। प्यार की डोर बनाती थी, भवसागर से पार करती जाती थी। जन्मों की रुकावटों को खत्म करती थी, चुरासी के चक्कर खत्म करती थी। दिव्य जोत जगाती थी। चन्द्रमा का शीतलता प्रीतम का मुख ठण्डी–ठण्डी अमृत जैसी किरणें संसार को शीतलता बख्श रही थी। ऐसे समय में जिस ने भी दर्शन किए, सब का पार उतारा हो गया। दास को आदेश किया, ''चल काका! मेरे घर चल कर प्रसादा खा ले, सरदाई पी।'' छत पर से घर को भेज दिया। जब दूसरी छत पर दास गया। पीछे से आवाज मारी, ''काका! तुम तो आमों से पश्चिम की तरफ उच्चे टिब्बे पर चार थम बना कर ऊपर चादर लोहे की पा कर एकांत में बैठा रहा कर, गाँव गौगे में तो जा न कर। तुम्हारा तो हमने दुनिया से रिश्ता तोड़ दिया है, सतिगुरां के साथ ही पक्का रिश्ता बना दिया है।'' दास ने प्रार्थना की गुरू सिक्ख के रिश्ते आप की कृपा साथ ही पक्के होते हैं। फिर शब्द पढ़ने

का आदेश किया, ''एक तू मुख न मोड़ीं जग चाहे सारा मोड़ ले'' कहते हां! हां! काका ऐसे पढ़

''चरन सरन गुरू एक पैंडा जाए चल सतिगुरु कोटि पैंडा आगे होई लेत है।। यदि सिक्ख गुरु की तरफ एक कदम चले सतिगुरु सिक्ख को करोड़ों कदमों के नजदीक हो कर मिलते हैं।'' कहते, ''काका हमारा एक सिक्ख जो एक हटकोरा ले तों हम सात हटकोरे लेते हैं।'' पहाड़ों में कुटिया पा कर बैठ जाने का आदेश देकर भेज दिया। एक बार फिर की बात है ज्ञान सिंह हमारे साथ था, पक्की सलाह बनाई कि साधू बन जाए और महाराज जी की तरफ आते को बुझा तेली रहिपे वाला मिला। उससे पूछा, ''महाराज ने आज तुम्हारे साथ क्या वचन किया?'' बूझा कहता मुझ से यह वचन किया, ''लब्बू दे! गाड़ी सभी राजा के नाम पर बनी हुई है डरना नहीं, यदि कई बार जाना हो, राजा–राजा गाते गाड़ी चढ़ जाना है, टिकट तो लेनी नहीं।'' बूझे तेली के रिश्तेदार बार देश में जिला मिन्टगुमरी में रहते थे। कई बारी बूझे ने गाड़ी जाना। राजा साहिब का सहारा लेकर बिना टिकट से चढ़ जाना, कभी किसी ने पूछा नहीं था। यह था सच्चे पीर की बखशिश हम बूझे तेली की उस दिन कह दिया, ''हमारे घर संदेशा दे देना, हमें घर के इन्तजार न करते रहें, हम वापिस घर नहीं आएंगे। महाराज जी के दर्शन करके पहाड़ां में जा कर भक्ति करनी है।'' महाराज करमी पक्कियां वाले के घर बैठे थे। जब हम पेश हुए गुणाचोर वाला नैब काफियां गा रहा था। बहुत ऊँची सुर के साथ गा रहा था। महाराज जी बैठे सुन रहे थे। काफियां सुन के हमें दोनों को आदेश किया, एक रुपया अभी दे दो। ज्ञान सिंह के पास एक रुपया था। उसके चरणों में माथा टेक दिया। दास पास कोई पैसा नहीं था। हमने प्रार्थना की, ''जी! गाँव से ला कर दे दूँगा, पास तो मेरे नहीं। कहते, ''चाहे कहीं से ला कर दें। आज जरूर लाओ। ऐसे ही खाली भक्ति

लिए फिरते हैं '' हमने कहा जी, ''किसी से माँगना तो नहीं है, फिर किसी दिन घर से ला कर देवांगा।'' कहते, ''चलो! कुबिब्यां के चुबारे में बैठ चलो।'' कोई चार बजे का समय था। हम चुबारे में जा कर बैठ गए। रात हो गई न कोई हमारे पास आया न किसी ने रोटी पुछी, न कोई ऊपर लेने के लिए कपड़ा था, न नीचे बिछाने के लिए कपड़ा, नीचे चुबारे में बैठे। जो हमें रोज साध बनने का चढ़ी थी आधी रात को ही सारा उतर गई। आधी रात को उठ के महाराज के पास आए, महाराज आप दलान में जमीन पर सोए थे लैंप भी बुझाया हुआ था। करतारी लंबड़ राजू की बड़े कमरे की दीवार के साथ खड़ी है कोई माँगे मांगती, एक टांग के भार खड़ी थी, जब करतारी ने हमें आया देखा, करतारी ने महाराज जी को बताया जी रहिपे वाले लड़के ज्ञान और बख्शो चुबारे पर खड़े हैं, इनकी इजाजत दे देनी थी, गांव जाने की। महाराज जमीन पर लेटे कहते कुदाडे वट लेते गांव में चले जाओ।'' हमारी इच्छा इतने से पूर्ण हो चुकी थी। साध बनने का स्वाद देख लिया था जमीन पर सोना, सूखे टुकड़े खाने, संतोष का पुंज बनना, अहंकार, शोक से न्यारे होना। साध बनने की पहली सीढ़ी को हाथ डालने से ही पता लग गया था। ये कष्ट साध बनने में पेश आएगी।

'होवण फकीर खोल अटक जंजीर सिर मन्न तकदीर पीण जहर पियालड़ी।।

करतारी कहती, ''जी सच्चे पातशाह। आप जमीन पर क्यों लेटे हो, साथ ही लैंप भी नहीं जलाया।'' महाराज कहते, ''करतारी दीपक भाग्य से जलते हैं। जमीन पर सोना साधु का धर्म है।'' पास खड़े दास और ज्ञान सिंह को यह वचन सुन कर संतोष हुआ। बस वहीं से नमस्कार कर साधु बनने का ख्याल छोड़ कर घर वापिस आ गए। फिर कभी साधु बनने का नाम नहीं लिया।

पांचवी साखी दास के साथ हुई

एक बार की बात है मैं और मेरा छोटा भाई संसार सिंह दोनों दर्शन के लिए गए। महाराज जी दरवाजे के सामने दौले के घर में बरामदे में बैठे थे। हम दोनों ने ही उनके चरणों में नमस्कार किया। धोती पहने हुए थे पगड़ी भी जलेबीदार बाँधी हुई थी ऐसे ही सिर पर घुमाई हुई थी। महाराज कहते, काकिओ। तीखी पगड़ी बाँध कर रखा करो। पजामे पहनने चाहिए चुस्त और होशियार बनकर रहना चाहिए। सरदारों की तरह रहना चाहिए। उस समय महाराज की दुनिया में से ज्योति–जोत समाने का शोर पड़ा हुआ था। मेरे मन में यह बात घूम रही थी कि सच्चे पातशाह ज्योति जोत समा जायेंगे। इस प्यार में आ कर जल्दी–जल्दी दर्शन करने के लिए दिल करता था। उस दिन महाराज ने यह बात कही। ''काकिओ हमारे बाद हमारी यादगारों के दर्शन भी कर लिया करना।'' उस दिन दर्शन करके रहिपे गांव में चले गए। कुछ महीनों के बाद फिर दास को दर्शन करने का अवसर मिला। महाराज अपने घर के बरामदे में जमीन और दीवार का सहारा लेकर बैठे थे, खिड़की खुली थी, दरवाजा बंद था। खिड़की के सामने जा कर सतिगुरु के चरणों का ध्यान लगा कर नमस्कार किया। आगे पीरों के पीर बोले, ''काकिआ कैसे आए हो'' दास–आप जी के दर्शन करने आया हूँ, सतिगुरू कहते हैं कि हां! हां! ठीक दर्शन को ही आया हूँ। ऐसे ही होना चाहिए।'' महाराज उस समय बूढ़े रूप में होकर दर्शन दिए। सहज रूप उठकर खिड़की के पास आ कर खड़े हो गए। खुले दर्शन देकर मन की प्यास, बुझाई, तड़पते दिल को ठण्डा किया। कुछ मिन्टों के बाद हुक्म किया, काके! अब सतिगुरू के दर्शन ध्यान में ही

कर लिया करना। यह बात कहते अन्दर से खिड़की बंद कर ली। यह वचन सुन के कालजा फूट–फूट कर बाहर को आने लगा, अवस्था बहुत नाजुक हो गई। यह जोती जोत समाने की रमज मारी। दो महीने पहले की बात है, यह वचन सुन कर बहुत निराशा हुई। फिर खिड़की खोल कर आगे आ खड़े हुए शब्द पढ़ने का आदेश किया, ''काका! यह शब्द पढ़ ''दानां मस्ताना सच्चा सतिगुरु सेवकां का काम करता।'' यह कवित पढ़ा उसकी आखिर की पंक्ति में 'निवो' 'नवो' कहना है। निवो–निवो हजार बारी 'नव' 'नवो' एक बार कहने का फल हजार बारी के समान होता है।'' एक बार फिर की बात है, कुछ दिनों के बाद जब दास का पहला विवाह हुआ, नई विवाहत के साथ घर के माथा टिकाने गाँव मजारे आए। जब सामने आ कर नमस्कार की। गाँठ खोल दी, कहते, ''लड़का तो मेरा है, इसके रिश्ते दुनिया वाले सब तोड़ दिए हैं। इससे हमने बहुत काम कराने हैं।'' बाकी सब लोगों को वापिस भेज दिया। दास को आदेश दिया अकेला ही शब्द पढ़ कोई और साथ न बोले, ''सतिगुर महिमा' में से प्रार्थना के शब्द पढ़े। पीछे बैठी बंगियां से आई हुई संगत धीरे–धीरे से बोलने लगी, उसी समय महाराज अन्दर से झट बोले, ''खबरदार! कोई न बोले '' दास शब्द पढ़ता रहा। फिर धीरे–धीरे औरतें धारना बोलने लग पड़ीं. फिर अन्दर से बिजली की तरह गुस्से (कड़क) के बोले, ''खबरदार! यदि किसे ने साथ बोला, हमने किसी के पास से मर्दों वाले काम कराने हुए, इसका नाम महान संसार में करना हुआ, किसे का क्या काम है, साथ देने का?'' उस दिन महाराज जी ने पता नहीं क्या कुछ लिखा? बहुत देर अन्दर बैठे जैसे कोई मिसल लिखनी है। इस तरह लिखते रहे। शब्द पढ़ते–पढ़ते एक पंक्ति आई

'तुध बिन जग में छाइयां पाप अन्धेरियां
आइया दुखों की कागा आइयां जालम पसारिया।'

कहते, ''ओ–हो! यह पंक्ति तो बीच में बोलनी नहीं थी, सारा शब्द फिर पढ़ यह पंक्ति नहीं बोलनी। फिर शब्द पढ़ा द्रोपती का

'मेरी कृष्ण बिना पत जांदी सभा बैठी वैरियों की।

यह धारना जब बोली कहते नहीं, ''राजा ने इज्जत रखी थी। कृष्ण तो बच्चा हुआ, ऐसे कहो, 'राजा साहिब बिना इज्जत जाती सभा बैठी दुश्मनों की।' इसका अर्थ था कृष्ण नाम के आदमी बहुत हैं। राजा साहिब एक ही है जिसकी शक्ति सारे संसार में काम करती है। जो भक्तों की इज्जत रखती है, उस जोत को गुरू गोबिन्द सिंह ने भी पुकारा है

- 'तुम हो सब राजन के राजा।। आपे आप गरीब निवाजा।
- ऐसे राजा तेरे भवन धनी।'

इसी जोत का नाम राजा साहिब जी है। ऐसे ही राजा साहिब जी की शक्ति जुग–जुग संतों भक्तों की इज्जत रखती आई है।

हरि जुगु–जुगु भगत उपाया पैज रखता आया राम राजे।।

वह कपड़ा छोड़ने वाली रमज सतिगुरां ने मारी थी। एक और दास की विवाहत कुछ सालों बाद स्वर्गवास हो गई। उसका रिश्ता टूटा हुआ समझ के कपड़ा खुला दिया था। दूसरे इस ग्रहस्थ आश्रम के जाल में से निकालने की खातिर इस तरफ सारे धागे तोड़ दिए। आगे के लिए इस तरफ को जाने नहीं दिया। सेवा की डियूटी दी।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे छठी साखी चली

एक दिन दीपो और दास दर्शनों के लिए आए। महाराज अपने घर कमरे में बैठे थे, हमें शब्द पढ़ने का आदेश किया। 'मुख उजले हो जाते दर्शन करके'

दर्शनु देखि जीवा गुरु तेरा।। पूर्ण करमु होए प्रभ मेरा।।

एक कवित दास के पास से पढ़ाया,

तू ही सज्जनु सियाना मैं नदान हां इयाना नहीं
मानता या भाणा तो टिकाना कैसे पावां मैं।।

यह शब्द पढ़ने के बाद अन्दर बुला के पास बिठाया। कुछ देर हाजरी में बिठा कर पता नहीं क्या कुछ लिखते रहे? बैठे–बैठे मुझे बाहर चले जाने का आदेश किया। पीछे से दीपो को तीन चोले, दो रुमालियां, एक कछहिरा, एक तौलिया, एक घड़ी, एक तरफ बखशिश किए दो रुपए चाँदी के भी दिए। कहते, ''लाओ! आप को माया दे दे, यह संभाल कर रखनी। इसमें गुथली कौडियां पा कर रखो। जब भी दिल उदास हो हमारे इन कपड़ों का दर्शन कर लेना। उदास नहीं होना, जब भी याद करोगे हाजर हो कर दर्शन दूँगा। चाहे पहाड़ां में बैठ कर याद करो, चाहे घर में बैठ कर याद करो। जिस पद पर जोगीसर बहुत तपस्या करके पहुँचते हैं, आप का घर बैठे का ही कार्य बना दिया है। आप को कहीं जंगलों में जा कर तप करने की जरूरत नहीं. बख्शे को भी मेरी तरफ से हदायत कर देनी, भीड़ में जाने नहीं देना, यदि कभी जाए भी तो रोक दिया कर।'' दीपो कहने लगी; ''आप ही कह देना।'' नहीं तेरा कहा भी मान ही लेता हूँ। हमारी तरफ से

हिदायत कर देना, चुस्त हो कर रहा कर, बहुत भरे–भरे मेले संभालने पड़ने हैं। अब तुम भी रहिपे ही रहा कर, पाँचों पदों की बैठक (कमरे) में एक हमारे लिए चादर बिछा कर एक पानी का बर्तन हर रोज साफ करके लड़के को कहना रख जाया करे। हमारे इन वस्त्रों को चारपाई पर रखकर इन वस्त्रों को धूप दे कर हमें याद कर लिया करो। हम भी रहिपे रहा करांगे। साथ ही हमारे लिए रहिपे से साग तोड़ कर मक्की की रोटी बना के लौट कर आना। वह बहुत बार दूध मंगवा कर छकते थे। मजारे बैठे ही सब कुछ बता देते थे। जो–जो रहिपे काम कार होते थे। बेरियां वाले खेत में साग है, गंदला बहुत है। इस्तेमाल हुए तो खेतों की मुंडेरां इधर–उधर होने कारण बेरियां उखाड़ दी। गाँव से ले कर टिब्बियों तक किनारे–किनारे तक कतार लगी हुई थी। वह भी दीपो को कहा, ''बचने ने सारी बेरियां उखाड़ दी, अच्छा नहीं किया। तुम आप बेरा की जोली भर कर बेरियां ला देना। वृक्ष लाना चाहिए, उखाड़ना नहीं चाहिए। फलों वाले वृंक्ष लाने का बहुत ही पुण्य है, हजारों ही जीव भूख मिटाते हैं. ठाकर सिंह को भी बहुत गुस्से हुए, बेरियां उखाड़न तो। एक बार आमों का बाग उखाड़न की सलाह घर में करने लगे। ठाकर सिंह दर्शनों को आया तो आगे महाराज बोले, ''ठाकरा! वृक्ष तो उखाड़ते नहीं बल्कि इसके नीचे बैठ कर प्रशंसा करते हैं। वृक्ष जानवरों के माता–पिता हैं। यह आम तो मैं बहुत उपाय के साथ बैकुण्ड धाम से संसार बनाने के बाद मात लोक में लेकर आया था। और शास्त्रों में भी लिखा है आम और केला, मोर पीछे से किसी महापुरुष ने बैकुण्ड धाम से मात लोग में लेकर आए हैं. तभी ही इन चीजों को बहुत पवित्र माना जाता है केले और आम के पत्ते भी शगनों और जग में रखे जाते हैं, तभी से ही इन चीजों की पूजा

की जाती है। यह सारी वस्तुएं महाराज जी की बख्शी हुई पहला कुछ देर जबोवाल रही। उसके बाद फिर रहिपे ले कर आए। अब इन वस्त्रों की पूजा की जाती है। दर्शन कराए जाते हैं। यह सच्च खण्ड को जाते–जाते अपना रूप समझ कर सेवा की झोली पकड़ा गए, ताजा–ताजा विछोड़ा कई बार वस्त्रों के दर्शन करके ठण्डा करते थे। बिछी हुई चारपाई देख कर मन में हर समय आशिक बना रहता है। जैसे आप ही महाराज जी पास बैठे हैं। पहला यह सब चीजां जबोवाल थी। घर में नौ निधां ग्यारां सिद्ध हुई और लक्ष्मी का पहरा हुआ। दीपो के दो भाई इंग्लैंड में चले गए, पीछे से उनका परिवार भी इंग्लैंड में ही चला गया। माया का घर में बाढ़ चल पड़ी, मालो–माल हो गए ऐसे सतिगुरु वर देने वाले देते थे। जब भी दर्शनों को जाना कोई न कोई वर बख्श के हुक्मनामे लिखने, वर देने। एक बार हमारे गाँव रहिपे से बहुत संगत इकट्ठी हो कर आई। इस ध्यान के साथ आज सारी रात सतिगुरां की हजूरी में शब्द पढ़ने हैं। महाराज अपने घर बैठे थे। शब्द पार्टी शब्द पढ़ने लगी, दास भी साथ ही था। दास को आदेश किया, ''काका! खड़ा हो कर शब्द सुना।'' उस दिन मैं यह शब्द पढ़ा, ''दीया बत्ती न बले घर तेरे पुत्रों की फौज वाले' महाराज कहते ''नहीं! नहीं! काका!! बहुतों की फौज वाले दीया बत्ती न बले घर तेरे'' इस तरह कह रावण की बहुत फौजें थी। लाख तो कुछ भी नहीं।'' आधी रात तक सारी संगत ने शब्द पढ़े फिर घर जाने की छुट्टी दे दी। रहिपे से शब्द पढ़ने वाले सेवादार एक दो बारी महीने में हजूर की चौंकी भरा करते थे। एक दिन हजूर के सामने एक कवित गाया–

सुन्दर रूप सूरज समान सुन्दर।
देख मुखड़ा की जोत चन्द सूरज शरमाते।

सूरज के मुकाबले भूप कहना ऊँचा है। भूप एक बार कहना सूरज हजार बार कहना तो एक भूप बनता है। उसे ही दिन कविता जोड़ने का आदेश किया कहते आप ही कथा लिख लेनी चाहिए, इस कवित से साथ और कविता जोड़ कर पढ़ लिया कर। सतिगुरां की मेहर के साथ ही तवारीख लिखी गई है।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

साखी राहों के एक रसयाद के लड़के जोगिन्दर फली के साथ हुई

एक बार की बात है, फागुन चेत्र के दिन थे। बसन्त ऋतु के रूप का खेड़ा कहर का खिड़ा हुआ था। खिजा से बहार आई। अनेक प्रकार के फूल खिड़े हुए थे। पृथ्वी की गोद को भाग लगे हुए थे। हर तरफ हरियावल ही हरियावल नजरी पै रही थी। मीठी–मीठी पवन पहाड़ की रुमक रही थी, आकाश में सितारे झलके मारते थे। सब नर–नारियां के दिल खुशी में झूम रहे थे। ऐसे रमणीक और सुवाहने सुनहरी समय की शोभा देखते–देखते, सुन्दर प्रीतम जी कुदरत के साथ बातें करते–करते गाँव जुलाह माजरे से उठकर सतलुज दरिया के मण्ड में चले गए। दरिया के किनारे पर जा कर पानी की लहरों के नजारे देखते बरेती में आसन ला दिए। होले का दिन था, चन्द भी पूरी जवानी पर आया हुआ था। एक नूर का ही टुकड़ा लगता था। कई दिन सच्चे पातशाह दरिया के किनारे बैठे रहे। एक दिन दरिया के किनारे–किनारे राहों की तरफ जा निकले, सूरज छिप गया, चन्द्रमा टह–टह करता सुनहरी किरणें आसमान से फर्श पर बिखेर रहा था। चन्द की चाँदनी प्रेमी के प्यार को अमर करती है। सुई आत्मा को दोस्त का रास्ता दिखाती है,

तुम सुनो दोस्त हमारे एक प्रार्थनाओं फसलों की अमृत दान करती ऐसी रात सुन्दर प्रीतम जी के करतार के साथ लीन हो कर गुजारी। चाँद अलोप होने वाला था। आकाश में लाली का छत्र बनता जा रहा था। सारी रात टह–टह करते तारे भी अलोप हो गए। चिड़ियों चीं–चीं के शब्द गा रही थीं। मण्ड के जानवर सारी रात पेट पालना करते खड्ड में छिपने को जा रहे थे। बैठे दिव्जजोत महांबली जी के दर्शन करते नाचते थे। मोर पास घूम रहे थे, दिन के चढ़ने के साथ ही हिरणों की डार निकली। यह जंगली जानवर आप जी के दर्शन कर रहे थे। बड़ी रीझ के साथ आप के दर्शनों का रस मान रहे थे। इतनी देर को एक राहों का शिकारी जोगिन्द्र फली शिकार खेलता–खेलता उस तरफ जा निकला। कितनों से पूछने पर पता चला कि यह शिकारी जाफरपुर का था। इस शिकारी के पास बन्दूक थी। साथ कुत्ते भी थे, हिरणों की डार को देख कर उनके ऊंपर गोली चलाने लगा। महाराज जी ने हाथ खड़ा करके कहा, ''काका! ऐसे निहत्थे जानवरों पर बार नहीं करना चाहिए, किसी निर्दोष को नहीं मारना चाहिए, जानवरों को दुःख नहीं देना चाहिए।

आजिज़ नितानें नहीं मारिए धगाने इऊं आखदे सियाने ना इयाने बन रहिए।।
खुदा जब हुस्न देता है नजाकत आ ही जाती है।

यह शिकारी माया के नशे में अन्धा–बहरा हुआ, किसी की कब सुनता। ऐसा निशाना मारा कि एक मृग के गोली जा लगी। मृग तड़पता हुआ शोर मचाता हुआ धरती के ऊपर गिर पड़ा। अपने साथियों के साथ सदा के लिए बिछड़ गया। वह निर्दोष तड़पते मृग को देख कर महाराज जी रसना से ऐसा तीर निकला। उस शिकारी को जा लगा। महाराज कहते, ''काका! तेरी बन्दूक ही जब्त हो जाएगी, आगे जानवरों को दुःख

न दे सकेंगा।'' पता नहीं तिरछी नजरों से साथ उसकी तरफ देखा पता नहीं मेहर भरी नजरों के साथ उसकी तरफ देखा नाम के रंग में रंग दिया जैसे गुरू गोबिन्द सिंह जी ने एक नयनों के बार के साथ सैद खां जरनैल को मुरीद बना लिया था। इसी तरह सेखे की एक नयनों के बार के साथ नाभ कंवल राजा साहिब ने मुरीद बना लिया। बस इस तरह लगा फिर राजा राजा का नाम जपने, मस्त जैसी हालत में हो गया, कोई पागल समझे, कोई मस्त दीवाना कहे। कुछ दिनों बाद बन्दूक भी जब्त हो गई। ऐसे महापुरुषों की निगाह (नजर) में शक्ति और बर्कत होती है। एक रियासत संगरूर की बात है कि सैशन जज नहर की पटरी–पटरी कार में बैठकर चला जा रहा था। नहर के किनारे पटरी के ऊपर एक मस्त रूप में कोई त्रिकाल दर्सी महापुरुष निरंकार के साथ मिल कर पड़ा था। रास्ते में पड़े हुए मस्त को देखकर ड्राइवर ने हौरन दिया, मस्त कब किस की परवाह करते हैं. वो प्रभु के चरणों में जुड़ा पड़ा रहा। कार से नीचे उतर कर ड्राइवर ने मस्त को कहा, ''मस्त जी! रास्ते में से उठ कर दूर हो जाओ।'' मस्तों ने फिर भी आँख न खोली। सैशन जज ने कार में से निकल कर हकूमत के नशे में अन्धा हो कर मस्तों के पाँव मारा। मस्तों ने नजर भर के जज की तरफ देखा. पता नहीं किस रंग में रंग दिया। सैशन जज के दरवाजे खोल दिए। जिस तरह आप मस्त अलफ नगन रहते थे। जज को कोई ध्यान न रहा, बस पदवी किस तरफ उड़ गए। शहर के बाजार में लोगों के फैंके झूठे पत्तल उठा कर खा लिया करे, बहुत भारी साधू बन गया। ऐसी नजर महापुरुषों की जिस तरफ जिस रूप के साथ देख ले, चाहे पापी हो, चाहे धर्मी हो काम कर जाती है। इसी तरह वो शिकारी भी राजा साहिब की नजरों का वार खा कर मस्त हो गया, भक्ति करने लगा।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी उजागर सिंह के साथ हुई

कई दिनों के बाद महाराज दरिया क़ी तरफ से गाँव मजारे की तरफ उजागर सिंह के घर के पास आ कर बैठे। जागर की नौ–दस दिन हुए बहुत ताप (बुखार) चढ़ा हुआ था। जब आप जी के आने का पता लगा, जागर सिंह दीवार को पकड़ कर धीरे–धीरे सतिगुरां के चरणों में जा गिरा। वैराग में आ कर रोने लगा, ''सच्चे पिता जी! मैं तो बुखार के साथ मर चला हूँ, मुझे ठीक कर दो।'' महाराज कहते ''सिक्खा मैं हकीम हां?'' जागर सिंह, ''जी! हकीम डॉक्टर भी आप के बनाए हुए हैं।'' महाराज जी ने आदेश दिया, ''चल! दौड़ चल! दो चार सण के फूल तोड़ कर खा लेना।'' जागर सिंह ने कहा उठ कर दौड़ चल, बुखार तो उसी समय ही तोड़ दिया, जब उठ कर दौड़ने का आदेश दिया। शरीर कंगन की तरह हलका हो गया। जागर सिंह के आदेश के अनुसार दो–चार फूल भी तोड़ के खाए, फिर कभी जिन्दगी में बुखार नहीं हुआ। महाराज यहां बैठे थे साथ ही रास्ता चलता था। अमर सिंह मिस्तरी मजारे का उसका भतीजे हुकम सिंह को नमोनियां हो गया। अमर सिंह जालंधरों बरांडी शराब ले कर आया। जब गाँव में जाने लगा महाराज रास्ते में बैठे थे। अमर सिंह ने नमस्कार की। महाराज जी ने पूछा, ''अमरू! इस समय अन्धेरे में किस तरफ से आया?'' अमर सिंह, ''जी हुकम सिंह को नमोनिया हो गया है, दवाई लेकर जालंधर से आया हूँ।' महाराज कहते, ''बनकशे का पानी उबाल कर दो चम्मच दे देना।'' घर जा कर अमर सिंह ने अपने घर वाली को महाराज जी का हुकम (आदेश) सुनाया, ''जल्दी करो दो चम्मच गर्म पानी के बनकशे में उबाल कर दे देना।'' जब दो चम्मच उबाल कर हुकम सिंह के मुँह में पाए पता नहीं दर्द किस तरफ दौड़ गई, शरीर कँगन की तरह निरोग हो गया। एक बार अमर

सिंह के घर को किसे ने शरारत के कारण पत्र लिख कर पा दिया कि हरबंस सिंह जो लाहौर काम करता होता था, पैड़ तो गिर कर मर गया है। पत्र पढ़ कर परिवार रोने लग पड़ा। महाराज रोने की आवाज सुन कर किसी से पूछा, ''अमरू के घर रोने की आवाज क्यों आ रही है?'' कहते जी, ''हरबंस मर गया है, पत्र आया है।'' महाराज कहते, ''उनको को कहो रो ना, हरबंस ठीक–ठाक काम कर रहा है।'' यह संदेशा महाराज जी का अमर सिंह के घर दिया। महाराज जी के बोलों पर बहुत भरोसा करते थे, रोने से बंद हो गए। बंगी जा कर दी गयी तार का जवाब तार से ठीक–ठाक का ही आया। सब लोग धन्य–धन्य कह उठे, राजा बली तेरी लीला! चौदा तबकां में तेरी नजर काम करती है।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी किशने मजारे वाले के साथ हुई

एक दिन महाराज जी गाँव से पश्चिम की तरफ जा निकले। किशने ने एक दिन महाराज को देखकर नमस्कार की। महाराज खुशी से घर में थे। किशना जब सामने गया। महाराज कहते, ''बुकन! दरगाह देखनी है?'' किशना कहता, ''इससे और क्या अच्छा है? अच्छा कहते आँखें मीट ली, वापिसी जुबाने कहने लगे, ''चल फिर सही, चल! कुएं पर चलें।'' कुएं पर जा कर एक कमरे में बैठ गए। किशने को आदेश किया, ''हमारा आसन ला दिया कर, एक गलास दूध का हमारे लिए रख दिया कर, हम आप ही छक लिया करेंगे। तुम भी यहां ही रहा कर। यहां बैठ कर भजन बंदगी करा कर।'' यह उपदेश करके बुकन को, महाराज जी आगे चले गए। जितनी देर किशना सुचम के साथ महाराज जी की हुई बिछाई की सेवा करता रहा, प्रेम के साथ दूध रखता रहा, महाराज जी

छकते हुए बहुत दर्शन भी दिए। कई बार मियां साहिब भी महाराज जी के आ कर दर्शन देते रहे। एक दिन सपने में दर्शन दिए। पहला महाराज़ अपने घर चारपाई पर बैठे मियां साहिब साथ थे। महाराज और गुप्त आत्माओं के साथ बातें करते उठ कर रसोखाने चले गए। रसोखाने जा कर एक मिसल लिखने लगे। कहते पंजाब में राज ही सिक्खों का ही होगा। सिक्खों की कुर्बानी बहुत है। यह हुक्मनामे सुनने के लिए बहुत दुनिया बाहर बैठी थी। कुछ लोग इस हुक्मनामें को सुनकर खुश हुए, आधे से ज्यदा नाराज हुए। इतनी देर को मुसापुरिया बसन्त सिंह किशने का पिता तुंगल, बाबा मूला दर्शन करने के लिए आए। तुंगल से चौधर ले कर बाबे मूले को दे दिए। कहते तुम्हारे से नहीं संभाली जानी। इस समय मूले का पोता बखशीश सिंह इलाके में माना हुआ आदमी है। बसन्त सिंह मूसापुरिया को कहा बसन्त यह मेरे मन्दिर की सेवा तुम्हारे जिम्मे है। यह आदेश करके आप उठ के रसोखाने की सीमा से बाहर चले गए। बड़े–बड़े बाजार, वहां भी लोग राजा बली की ही बातें करते थे। आगे चले, जाते–जाते कहने लगे, "आओ! तुम्हें तुम्हारे बडे बर्जुग दिखाएं।" आगे जा कर देखा, हमारे बड़े बर्जुग जैसे शहरों में लाले बैठे होते हैं, दिखाए। कुछ आगे जा कर कहते, "चल हम अब चलते हैं, तुम पीछे वापिस चल।" जब किशना पीछे वापिस देखे पीछे बहुत रेत का इलाका दिखाई दिया। अक्कों के बूटे नजर आने लगे। इतनी देर को एक बड़े सारे कद की औरत, बड़े–बड़े बाल, बड़े–बड़े नेत्रों वाली आगे खड़ी हुई खून (रक्त) पीनी डायन, किशना देख कर बहुत डर गया। इतनी देर को फिर पातशाह किशने के प़ास खड़े, महाराज जी से वह भयानक रूप वाली औरत आदेश मांगने लगी, "सच्चे पातशाह! मुझे इजाजत दे मैं भूखी हूँ।" महाराज कहते, "चल! अभी कुछ समय है।"

किशना कहता मैं महाराज जी के चरणों में प्रार्थना की, ''जी! यह कौन थी?'' महाराज कहते, ''बुक्कन यह कालका थी, युद्धों में रक्त के खप्पर भर–भर के पीती है। यह जंग की इजाजत मांगती है। इतनी बात कहने के साथ किशने को डर लगा, आँख खुल गई। यह माया का खेल गुरू अर्जन देव जी ने संकेत मण्डी वाले राजे हरी सैन को दिखाई थी। गुरू गोबिन्द सिंह ने भाई समीर को दिखाई थी, नाभ कंवल राजा साहिब ने किशने को दिखाई।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

साखी जुलाहमाजरे के सरवण की चली

यह सरवण जुलाहमाजरे का था। इस पर कोई नाजायज़ केस बन गया। जिस दिन हुकम की सुनवाई थी। उस दिन सरवण का पिता सुबह अमृत के समय उठ कर स्नान करने एक पाँव पर खड़ा हो कर नाभ कंवल राजा साहिब जी के चरणों में ध्यान करके गाँव मजारे आया। पीर के दरवाजे आगे आ कर अरदास की, ''सच्चे पातशाह जीओ! मेरा लड़का बेगुनाह है। मेरे पुत्र को बचाओ।'' यह मन में ही प्रार्थना की। अन्दर सब की जानने वाले बोले, ''जुलाहमाजरिया! चल दौड़ चल! तेरा पुत्र बरी है।'' बस महां सिंह को पूरा भरोसा हो गया। खुशी के मारे आँसू निकल पड़े। सुन्दर प्रीतम से खुशी भरा हुक्मनामा लेकर चल पड़ा। जालन्धर कचहरी में पेश हुआ। अन्दर जाते ही मैजिस्ट्रेट ने कहा सरवण बरी। सरवण नाचता बाहर आया, खुशी की कोई सीमा न रही। धन्य–धन्य राज साहिब सच झूठ को पहचानने वाले गरीबों के बंधन तोड़ने वाले तुम्हारी लीला बेअंत है। मक्खन शाह लुबाने

की तरह शोर पाता हुआ गाँव आया। गाँव आ कर दूसरे दिन लड्डूयों की बड़ी परात बना कर हजूर के चरणों में ले कर आया। सतिगुरों ने पहला लड्डू कुत्तों को पाया, फिर संगत को बांटने का आदेश दिया। सरवण को घर जाने का आदेश दिया।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

साखी करम सिंह रसूलपुरए की चली

करम सिंह गाँव रसूलपुर का जात का जाट खेती का काम करने वाला इसके घर कोई औलाद नहीं थी होती। चाली साल की आयु होने पर भी घर पुत्र न हुआ। सारे पदार्थ घर में बहुत थे, एक पुत्र के बिना दिल मुरझाया रहता था। लोगों से सुनता था, गाँव मजारे खुदा का नूर प्रकट हो कर दुनिया के काम कर रहा है। उस कामिल मुर्शिद के दरबार में से चारे पदार्थ मिलते हैं। दाने जम पड़ते हैं, स्खे हुए कुएं फिर सुरजीत हो जाते हैं। करम सिंह लगा सेवा करने। एक दिन मूसापुरिया सुन्दर सिंह और भी काफी आदमी महाराज के दर्शनों के लिए गए। रास्ते में करम सिंह को साथ ले लिया। महाराज जी गाँव की पश्चिम की तरफ बैठे थे। करम सिंह अपने खेतों में कुआ ला रहा था। कुएं की नाली लगा कर उतारा करने के लिए छत पाई हुई थी। करम सिंह ने जब सलाम किया, महाराज जी कहते, ''करम कुएं भी सारे राजे के नाम पर ही बने हैं, कीलिया भी राज के नाम पर बनी हुई हैं। और उन पर राजा साहिब की मोहर लगी हुई है। चिन्ता नहीं करना, कुएं में पानी बहुत आएगा।'' मन में भरोसा पक्का हो गया। राजा साहिब गाँव मजारे सब कुछ अन्दर से बैठे सब देख रहे हैं। करम सिंह का कुआं बहुत जल्दी तैयार हो गया। करम सिंह कुआं लगाने के बाद फिर दर्शन करने आया।

महाराज जी ने करम सिंह को कहा, ''करमा! जब भी कोई काम करना हो हमें याद करके आया कर।'' वह काम पूरा हो जाता है। करम सिंह वापिस रसोखाने आया। महंत पूरन दास जी ने करम सिंह को कहा, ''कल को चार पाँच जोड़ी बलदां की लेकर आओ।'' कुआं उन दिनों में रसोखाने वाला लग रहा था। लंडी कही कुएं का उतारा होता था। करम संह को महाराज ने पहला ही रमज मारी थी। करम सिंह के पशु रस्से खींचने वाले नहीं थे। दूसरी बलवान बैलों की जोड़ी ती। करम सिंह सोचने लगा यदि अपने बलद न लेकर गया तो लोग कहेंगे अपने नहीं ले कर जाता, हमारे बलद रस्सा खींचना जानते नहीं। महाराज जी को याद करके जिस को भी कहा किसी ने जवाब न दिया। दस पन्दरां जोड़ी बलदां की ले जा कर सारा काम किया करम सिंह सारा दिन सेवा करके शाम को महाराज जी के दर्शनों को गया। जब चरणों पर नमस्कार की, पास खेलते पाँच बालक नजर आए। दरगाही फरमान हुआ ''चल काका! बालक ले ही जा।'' बस बेड़े पार कर दिये। तीन लड़कियां दो लड़के महाराज जी के वचन के साथ करम सिंह के घर पैदा हुए। करम सिंह का आँगन बच्चों के साथ भर गया।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

साखी भुला सिंह गाँव करनाणे वाले की चली

भुला सिंह गाँव करनाणे का रहने वाला बहुत नर्म दिल भक्त था। इसके घर भी कोई औलाद नहीं थी। करम सिंह की तरह यह भी साधु संतों की लगा सेवा करने, 60 साल की आयु हो गई। पुत्र की खैर कहीं से न पड़ी, बहुत साधु संगत माने, कई स्थानों पर टक्करें मारीं, पुत्र की प्राप्ति के लिए बहुत कुछ करना पड़ता है। माता गंगा जी के पुत्र प्राप्ति

के लिए बाबा बूढा जी को आप आटा पीस कर अपने हाथों से लंगर तैयार करके सिर पर उठा कर नंगे पाँव भीड़ में जा कर भोजन छकाया था। बाबा जी से पुत्र का वर लिया था। महाराज दशरथ जी ने पुत्र प्राप्ति के लिए अनेकों ही जग किए। मारकण्डे रिखी की पत्नी अन्नसूया ने लक्ष्मी, पार्वती, ब्रह्मा की पत्नी के आगे प्रार्थना करके पुत्रों का वर मांगा था। पुत्र के लिए कुएं में जाल पाना पड़ता है। एक दिन करम सिंह ने कहा, "भाई भूला सिंह! तुम भी राजा साहिब की झोली पकड़ो। अनेकां ही बेऔलाद घर में रौनक की है, निश्चय करके सेवा करो, जरूर ही तुम्हारे घर पुत्र होगा।" यह बात करम सिंह की सुनकर भुला सिंह ने अपनी पत्नी को साथ लेकर हर रोज महाराज जी के लंगर में सेवा करने का निश्चय बना लिया। संगत के झूठे बर्तन साफ करने की सेवा करनी, लंगर में पानी ले आना, प्रसादा घर से खा कर जाना, घर ही वापिस आ कर खाना। एक दिन भुला सिंह और उसकी घर वाली यह भिक्षु जोड़ी गले में झोली पाई, पुत्रों की दात लेने के लिए अपने गाँव के रास्ते आती। सतिगुरु सब कुछ जानने वाले थे, वो किस्मत वाली जोड़ी बड़ी आस्था से रास्ते–रास्ते चलती जा रही थी। करनाणे और मजारे की सीमा पर महाराज जी आगे जा खड़े हुए। भुला सिंह और उसकी घर वाली भोली माई इस सुन्दर प्रीतम के चरणों पर गिर पड़े। वैराग चल पड़ा। बस उसी ही पल भिक्षु जोड़ी की तरफ देखा। एक बार ही देखते पुत्र के बिना जोड़ी को भाग ला दिए। दो संतरे आप जी के दोनों हाथों में पकड़े हुए थे। उस किस्मत वाली जोड़ी की झोली में पा कर आदेश किया, "तुम्हारी किस्मत में पुत्र तो नहीं था, हमारी संगत के बर्तन बहुत प्रेम से साफ किए, बहुत सेवा की, उस का फल हमें देना ही पड़ा।" भुला सिंह का घर आबाद हो गया।

बोलो भाई वाहिगुरु।।

आगे साखी और चली

एक दिन की बात है, सक्रान्ति का दिन था, संगत का बहुत इकट्ठ था, मेला लगा हुआ था। चेत्र की सक्रान्ति खटकरी, झण्डा जी भी संगत जा रही थी। दूर से संगत दर्शनों को आ रही थी। दूध की बाल्टियां, प्रसाद के बर्तन, किसी तरफ लड्डू पेड़े, फलों की टोकरियाँ संगत चढ़ा रही थी। कई लोगों को लंगर में दूध पाने का आदेश करते जाते। किसी को जानवरों को पाने का आदेश करते, किसी से जमीन पर ही गिराई जाते– बेअंत ही गुप्त आत्मा बैठी थी। एक ईश्र सिंह, गाँव रहिपे से दूध लेकर आया। ईश्वर सिंह को कहा, ''ईश्र! दूध कुत्तियां के आगे पा दे नहीं तो साफ जमीन पर फेंक दे।'' एक पासे फेंकने का आदेश किया। ईश्र सिंह कहता, ''जी! मुझ से जमीन पर नहीं फेंक होता, नहीं तों आप छको, नहीं तो मैं लंगर में पा देता हूँ।'' ईश्र सिंह लंगर की तरफ दूध लेकर चल पड़ा। दस कदम जब आगे चला, ईश्र सिंह के हाथ से पकड़ी हुई बाल्टी जमीन पर गिर गई, सारा दूध जमीन पर बिखर गया, ईश्र सिंह बहुत शर्मिंदा हुआ। ईश्र सिंह डर गया, मुझ से राजा साहिब का कहना नहीं माना। महाराज कहते, ''ईश्र! चल दौड़ चल! कोई आत्मा हम से दूध पीने के लिए मांगती थी, सुबह के बैठे थे। इनको पिलाना ही पड़ता है, यह भी ईश्र! आ कर मिन्नत करते रहते हैं।'' इतनी देर को दो संधवा के आदमी करनैल सिंह, दीदार सिंह आ गए। करनैल सिंह ने सवा दो रुपए की महाराज के मिनत मांगी हुई थी। रास्ते में चलते जाते करनैल सिंह को दीदार सिंह कहता, ''सवा दो रुपये के पकौड़े लेकर आप ही खा लेते हैं। राजा साहिब पैसे बच्चों के आगे ही फेंक देते हैं।'' जब करनैल सिंह सामने सवा दो रुपए चरणों में रख कर माथा टेका, आगे सतिगुरु बोले, ''काका! उठा ले जा, हम ने क्या करने हैं? साथ

वाले को पकौड़े ही खिला देने थे।'' दीदार सिंह शर्मिंदा हो गया। करनैल सिंह कहता, ''जी! मैं तो आप के चरणों में ही माथा टेकना है, आप जिस को देना है, दे दो।'' महाराज कहते, ''काका! जब हमारे नाम की कोई चीज लेकर चलता है, हमें सब पता ही होता है, यदि कोई घर बैठ कर ही याद करता है तो भी हमें पता ही है।'' इतनी देर को करनैल सिंह दीदार सिंह को पीछे भेज दिया। चार आदमी मूसापुर से प्रसाद लेकर आए प्रसाद आगे रख कर माथा टेका। मिलखा सिंह को महाराज कहने लगे, ''मिलखी साथ वालों को भी कमादी के पास बैठा कर छका देना।'' मिलखा सिंह दस रुपए की देग बना कर ले कर आया था. यह ज़ब पीछे दूर ही था, एक नाइयों का लड़का साथ था। वह कहने लगा, ''राजा साहिब ने कुत्तों को ही प्रसाद पा देना है, यहां कमादी के पास बैठ कर आप ही छक लेते हैं।'' महाराज, अन्तरयामी सब संकल्पों को समझने वाले थे, आगे से वह ही बात सुना दी, जो पीछे प्रसाद खाने की थी। कहते, ''मिलखी! चल पीछे चल, कमादी के मुंडेर पर बैठ कर साथ वालो को प्रसाद छका दे।'' मिलखा सिंह हाथ बांध कर प्रार्थना करने लगा, महाराज ने यहां ही संगत में प्रसाद देने का आदेश दिया। संगत में प्रसाद देकर पातशाह के पास से खुशियाँ लीं।

बोलो भाई वाहिगुरु।।

साखी एक फोटोग्राफर और जैले खां राजपूत के साथ हुई

एक दिन महाराज जी गाँव मजारे के पूर्व की तरफ, रसोखाने के साथ सुन्दर के खेतों में बैठे थे। संगत खुले दर्शन कर रही थी, एक गाँव रटैंडे से फोटोग्राफर तस्वीर लेने के ध्यान के साथ हजूर के पेश हुए। सामने बैठ कर उस जोती सरूप की सुन्दर प्रीतम, हुसन की खान

की फोटो खींचने लगा। महाराज जी ने फोटोग्राफर को फोटो लेने से रोक (मना) कर दिया। उस को चले जाने का आदेश किया। फोटोग्राफर सुन्दर प्रीतम का पुजारी बन चुका था, सामने उठ कर कमादी के खेत में छिप कर दूर से फोटो लेने लगा, जब फोटो खींची, फोटो न आई, सामने आ कर फोटो लेने लगा। मन में सोचा, अगर गाली भी दे फोटो जरूर लेनी है। सामने खड़े हो कर फोटो खींची, फिर भी न आई, आखिर नमस्कार करके चल पड़ा। मुन्दर सिंह, किशना, जैले खां राजपूत गाँव गुणाचोर वाला महाराज जी के पास बैठे थे। किशने को महाराज जी ने कहा, ''बुकन! फोटोग्राफर को वापिस ले आओ।'' किशना फोटोग्राफर को रास्ते में से वापिस ले कर आया, अभी नजदीक ही था. फोटोग्राफर जब वापिस आया तब राजा साहिब ने फोटोग्राफर को कहा, ''काका! देख हमारी छाया है?' देखने से महाराज जी की छाया नहीं थी। फोटोग्राफर कहता ''जी! आप की छाया नहीं है।'' महाराज कहते, ''काका! जिसकी छाया न हो, उसकी फोटो कहां से आनी है? साथ ही बुत परस्ती तो हमने खत्म कर दी है। मक्के में मुहम्मद ने उसलिए 72 फोटो पत्थरों के बने साफ कर दिए थे, काका! विष्णु की उपासना करनी चाहिए, सरगुण की उपासना तो माया की उपासना ही समझी जाती है। फोटो दे तो दे, ऐसे दुयानी–दुयानी के बिकते होते हैं. डेरों पर पड़े होते हैं. हम इसलिए फोटो नहीं देते।'' और भी बहुत फोटोग्राफर ने भरम के साथ फोटो लेने की कोशिश की, सच्चे पातशाह (सतिगुरां) ने फोटो नहीं दी। यह चमत्कार देख कर जैले खां राजपूत वैराग में आ कर बार–बार महाराज जी को सलाम करने लगे। महाराज कहते, ''जैले खां! हमारे साथ बहुत लेहाज न करा कर, तुम्हारे लिए तो लाहौर में कोठी बना दी है।'' जैले खां कहता है, ''सच्चे पातशाह! मैं आप को छोड़कर नहीं जाऊंगा। मेरा तो आप ही सहारा हो, सब तेरा ही तूफैल है, आप

तो हमारे खुदा, मानस जन्म में हमारा भला करने के लिए आए हो।'' महाराज कहते, ''नहीं जैले अब तो जाना ही पड़ेगा। हमने तो लकीर लगा दी है, तुम्हारे लिए पाकिस्तान बना दिया है।'' यह हुक्मनामा 1936 में जैले खां को किया था। जैले खां आप जी का बहुत प्रेमी सेवक था। सन 1947 का गदर होने समय जब सब मुसलमान उठ कर कैम्पों में जाने लगे, मुसलमानों के गाँवों को जलाने लगे। तो जैले खां ने गेहूँ कुप्प में रखा हुआ था। महंत पूरन दास को कहा, वह निकाल कर लंगर में पा देना। तीन दिन परिवार को लेकर जैले खां महाराज जी के दरबार समाधों के आगे बैठा रहा, उठके जाये न। ज़ोर–ज़ोर रोए। इस सच्चे मुर्शिद का दरवाजा छोड़कर मैं नहीं कहीं जाना, पीर के चरणों में ही जान दे देनी है, जब सारे साथियों के जोर देकर कहने पर चला, चलने लगे ने महाराज की समाध के आगे सलाम करने लगा और ज़ोर के साथ माथा महल में मारा, बाकी आदमियों ने हाथो से पकड़ लिया। पकड़ कर ले गए। आगे खुदा जाने जैले खाँ के साथ क्या हुआ। और भी बहुत सारे मुसलमान आप जी पर खुदा की तरह विश्वास रखते थे, आप जी सब हिन्दु, सिक्ख, मुसलमानों के सांझे पीर थे। सब को निवाजदे थे. सबकी आशाओं को पूरा करते थे।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी शादी खां के परिवार की प्रथाएं चली

एक दिन महाराज जी ने किशने को आदेश किया, ''बुकन! शादी खां के घर कभी–कभी जा आया करो।'' किशने का राजपूतों के घर पहला ही आना जाना था. किशना एक दिन कंवल के पास बैठा था। बेगम कंवल किशने को कहती, ''किशने! शादी खां के तीन बच्चे हैं, एक शादी की बहन। जिनकी हालत बहुत खराब हो चुकी है गरीबी के कारण। शादी खां को

गए हुए को काफी देर हो गई, बर्मा से वापिस नहीं आया। इस करके उसके बच्चों का कोई रोजगार नहीं, कोई गुजर नहीं। उनकी कुछ मदद कर।'' किशना उनके घर गया, जा कर शादी खां की बहन को कहा, ''बीबी! मेरे लायक कोई सेवा हो बता दिया करो।'' शादी खां की बहन जन्म से ही अन्धी थी। इस करके विवाह नहीं किया था। शादी की बहन ने उसकी वायु पकड़ कर छुया, कन्धे छू कर देखे, बगलां भी देखीं। देख कर कहने लगी, ''अच्छा किशने! तू मेरा धर्म का भाई हुआ। इन बच्चों की पालना जितनी भी तुम कर सकते हो कर।'' उसके दोनों लड़के किशने की मदद के साथ पढ़ गए, लड़की भी जवान हो गई। नशीरा विवाह करने के योग्य हो गई, गढ़शंकर के एक जज के लड़के के साथ मंगनी कर दी। शादी के लिए बाहर से पैसे भी आने लगे। गहने रखी जमीन भी बहाल हो गई। सन् 1946 में शादी खां बर्मा से आ गया, शादी की औरत बर्मा में ही मर गई, तीन लड़कियां बर्मा में हुई थी। उनको साथ लेकर आ गया। किशना पहले की तरह शादी के घर आता जाता रहा. सन् 1947 में गदर में भी न हटा। कई बार रात को जाना, पहरे लगा होता था। एक दिन सतार खाँ, गुलजार खां, सरदार खां कहने लगे, ''तुम्हें जान नहीं चाहिए?'' किशना कहता, ''भाई! जान की कोई परवाह नहीं, मैं तो महाराज जी का बोल कहा हुआ पालना है।' खैर खत्म बात 1947 के गदर में यह सारा परिवार लड़के और लड़कियाँ औड़ कैम्प में चले गए। किशना वहां भी अपने भाई को साथ लेकर मिलने जाता रहा। आखिर वह अन्धी शादी खां की बहन किशने को कहने लगी, ''अब तुम हमारे पास न आया कर पता नहीं किस के दिल में बेईमानी आ जाए?'' किशने ने औड़ में आ कर राजा साहिब की समाध आगे रो–रो कर प्रार्थना की, ''सच्चे पातशाह! यह शादी के परिवार को कोई कष्ट न हो, इनका बाल भी बाँका

न हो, इनका कष्ट मुझे बेशक हो जाए।'' जब औड़ पर हमला हुआ, जिस तरफ किसी के पैर निकले, जान बचाने की खातिर भाग गया। यह शादी खां की पाँचो लड़कियां, शादी खां की बहन एक गाँव भदाने की तरफ दरिया के किनारे जा निकली। एक भधानियां के कुएं पर जा कर घबराई हुई बैठ गई। एक करम सिंह नाम का आदमी, इसके साथ और भी काफी आदमी थे, बैठी लड़कियों को देखकर पास आए। जा कर देखा तो पाँच लड़कियाँ और एक बूढ़ी आँखों से नहीं दिखाई देता था। लड़कियां इतनी सुन्दर थी, ऊर्वशी परी के रूप को मात पाती थी। इनके फूलों जैसे चेहरे मुरझाए हुए थे। उन्होंने कहा, ''पहले हमें पानी दो, हमारा मुँह खुशक हो कर सास नाक में आई हुई है।'' इन सभी लड़कियों को गाँव भधाने ले गए। करम सिंह ने अपने पशुओं के कमरे में बिठा कर बंद कर दिया, रात को इनको पूछा, ''बताओ आप को क्या चाहिए? यदि कहो तो अच्छे घरो में आप को बिठा दें इन राजपूत लड़कियों ने कहा, ''भाई साहिब जी! हम किसी का घर नहीं यह आप के कुएँ में छालां मार–मार कर खेल जाएंगी जान की बाजी। हमें जीने की कोई जरूरत नहीं, धर्म से पतित होकर हमें नहीं जीना।'' यह बातें हो रही थीं, पण्डित बसन्त सिंह पास से जा रहे थे। कानों में आवाज आई। वापिस पशु के कमरे में गए। वहां मुसलमानो की लड़कियां पकड़ कर लाई हुई थी। यह बसन्त सिंह नामधारी पंथ में एक माने हुए विद्वान समझे जाते थे, यह जवान भी बहुत सूरवीर निडर थे। पण्डित जी का कोमल ह्दय लड़कियों के झुण्ड को चिड़ियों की तरह फसी हुई देख कर रह न सका, सभी को पीछे करके आप आगे हो कर इन लड़कियों से पूछा, ''बताओ क्या चाहिए? कहां जाना है जो कहो वहीं किया जाएगा। अब किसी से डरने की जरूरत नहीं हमारे जीवित रहते हुए आप पर कोई उंगली नहीं ला सकता।'' इन सभी ने

ही कहा यदि हमारे पर रहम करते हो, हमें गाँव मजारे किशने के पास छोड़ आओ। पण्डित बसन्त सिंह किशने को पहले ही जानता था। रात अपने पास रखा, लंगर पानी छकाया, दूसरे दिन गाड़ी जोड़ कर पण्डित जी आप गाँव मजारे छोड़ गए। यह लड़कियां दस महीने किशने के पास रही। कई बार मिलटरी इनको पकड़ने के लिए आई। खेतों मे छिप जाती। किशने ने इनको पकड़ने न दिया। जब शादी खां का लड़का मिलटरी के साथ आया तो बुरके पा कर भेज दिया। सबको बुरके सिला कर दिए २० रुपये का कपड़ा इनको जो लगा, उसके पैसे किशने ने दिए। इनके साथ ही किशने को पकड़ कर मिलटरी वाले ले गए। जालंधर जा कर लड़कियों की जांच की गई। मिस की तरफ से रिपोर्ट बिलकुल ठीक मिली। इस बहादुरी का ईनाम ९०० रुपया किशने को हाई कमान देने लगा। किशना कहता, ''साहिब बहादुर! मेरा तो परिवार ही यही है, मेरे तो बच्चे भी यही हैं, मैं इनका कोई मुल्य लेना है। मैं तो अपने सतिगुरु का कहा बोल पूरा किया है।'' इतना सुन कर साहिब ने एक पत्र लिख कर दे दिया।

बोलो भाई वाहिगुरु।।

साखी किशने के साथ हुई

एक दिन किशना दोपहर की रोटी खा कर महाराज जी के दर्शनों के लिए हर रोज की तरह गया। महाराज करतारी झीरी के घर बैठे थे। गर्मी के दिन थे। गर्मी भी कहर की पै रही थी। कोई दो बजे का समय था। महाराज ऊपर के कमरे मैं बैठे थे। किशना कमरे में गया। सतिगुरों के चरणों में नमस्कार की। हजूर बोले, ''बुकनां! देख गाँव की छतों के मुंडेर भरे हुए हैं। देवते लाखों की मात्रा में बैठे चरनामत पीने को मांगते हैं, बहुत प्यासे हैं।'' किशना कहता, ''जी! इतने कुएं चलते हैं किसे कुएं

से पानी पी लें। इतनों को कैसे पानी पिलाएंगे?'' महाराज कहते, ''किशने कहना मान, जल्दी करो, वो पड़ा घड़ा उठा।'' किशना घड़ा उठाने लगा कहते, ''पहला कपड़े ला दो।'' सारे कपड़े ला कर नंगा कर दिया। नंगा करके स्नान करवा कर फिर कहा कि घड़ा भी काफी बड़ा और ही आकार था। किशना शर्म के बाहर न निकले कहता, ''सच्चे पातशाह! बाहर जाने से शर्म आती है, लोग गाली देंगे।'' महाराज कहते, ''जब तुम्हें हमारा आदेश है फिर क्या डर है?'' किशना घड़ा ले कर बाहर निकला। आगे से करतारी के साथ और माताएं मिलीं। उन्होंने किशने को कहा, ''बेशर्म कमर पर कुछ बाँध ले। गाँव में नंगा घूमना अच्छा लगता है।'' ऊपर से महाराज जी बोले, ''करतारी! मेरा आदेश है।'' खैर सरकार के आदेश को कौन टाल सकता था?'' जो आदेश हो, करना ही पड़ता था। किशना गाँव के पश्चिम की तरफ से एक कुएं से घड़ा पानी का भर कर ले आया। यह कुआं गुणाचोर को जो छोटी सड़क जाती है उस ऊपर था। वहां से पानी का घड़ा ला कर सतिगुरां के सामने रखा। पानी के भरे हुए घड़े को दाएं चरण के अंगूठे की छू के साथ पवित्र करके अमृत बना कर चरनामत मान कर देवता लोगों को पीने का आदेश किया। ऊपर के कमरे में से घड़ा पानी डोल दिया। किशने को आदेश हुआ बुकन और ले आओ। किशना हाथ बांध कर प्रार्थना करने लगा, ''सच्चे पातशाह! कमर पर बांधने को कोई वस्त्र दो। रास्ते में लड़कियां मिलती हैं तो शर्म आती है। किशने की उमर उस समय 20 साल की थी। शरीर रिष्ट–पुष्ट था. किशने की प्रार्थना मान कर पातशाह ने अपनी कमाली खोलकर दे दी। सूरज डूबने तक किशना पानी लाता रहा। सौ घड़ा पूरा मंगवाया। किसने को महाराज जी बुकन कह कर पुकारते थे, सौ घड़ा पूरा होने पर किशने को छुट्टी दी। पहले कपड़े किशने को महाराज जी ने करतार सिंह के घर पहुंचा दिए

थे। तीन दिन किशना नंगा कमाली के साथ ही रहा। तीसरे दिन जब दर्शन करने गया। महाराज कहते, ''किशना! तुम्हारे वस्त्र मेरे घर पड़े हैं।'' फिर आदेश दिया, ''चल! रहते रोडिए दौड़ चल।'' किशना रोड़िए चला गया तो क्या देखा महाराज जी आगे पहला ही रोड़िए पहुँचे हुए थे। एक जोड़ा भक्तों–दोनों मियां–बीबी सतिगुरां के हजूर में हाथ जोड़ कर खड़े पातशाह के लिए वस्त्र बना कर लाए थे। यह वस्त्र पहनो, मन की इच्छा पूरी हो। इतनी देर को किशना भी पास चला गया। वह सफैद रंग के वस्त्र लेकर आए थे। उन गुरमुखों को आदेश किया, ''इस लड़के को दे दो, आप की तरफ से हमें मिल गए हैं।'' उन्होंने किशने के हाथ पर रख कर नमस्कार की। सरकार से खुशियां प्राप्त की। किशने के तन पर वह शुद्ध पशमीने का चोगा पा दिया। वहां से आगे महाराज जी गोसलां की तरफ जा निकले। कुछ आगे जा कर खेतों में जा कर खड़े हो गए। इतनी देर को गाँव से मूला दर्शन करने को आया। आ कर सतिगुरां के चरणों में नमस्कार की। महाराज कहते, ''मूला! इमाम महिंदी भी हम हीं होंगे। निरकलंक हो कर हम आएंगे। जब दुयानी कनाल का मामला होगा। उस समय समझ लेना, हम फिर दुनियां में आए होंगे। हमारे यहां आने की निशानी मूला पक्की समझी। मूला! सुई जैसी चीज़ भी राजे के नाम पर ही बनी हुई है। अहिरन भी राजा के नाम पर ही बनी हुई है। यह संकेत मूले को किया, जितने भी जीव खण्ड ब्राह्मण्ड आकाश पाताल, रोशनी सब खुदा की रज़ा में और कार में बसते (रहते) हैं। ''सगल सामग्र तुम्हरे सूत्र धारी'' जिस तरह माला के मोती सूत्र के धागे के साथ बंधे हुए होते हैं, उसी तरह करतार की शक्ति के साथ सब कुछ बंधा हुआ है। यह उपदेश मूले को करके आगे को चल पड़े।

बोलो भाई वाहिगुरू।

आगे साखी और मूले के साथ हुई

एक बार की बात है महाराज उन दिनों में कई दिन सतलुज के मण्ड में ही बैठे रहे। जेठ के दिन थे, गर्मी कहर की पै रही थी। जानवरों के सास खुशक हो रहे थे। नदियां, नालियों का पानी सूख गया था। तेज धूप के साथ कांन सड़ते थे। धरती तांबे की तरह गर्मी पैदा कर रही थी। पैर भी सड़ रहे थे। आप जी इतनी तपती रेत में बैठे। मूला प्रसादा ले कर गया, आगे सतिगुरां को धूप में बैठे देख कर प्रार्थना की, ''सच्चे पातशाह! इस आग की तरह तप रही रेत में आप इस तरह क्यों बैठे रहते हो। आप के पैर नहीं सड़ते। हमसे तो यहां दस मिनट भी नहीं चला जाएगा। महाराज कहते, ''मूला! तुम्हें अभी विश्वास ही नहीं आया, तुम समझ नहीं सका।'' मूला, ''जी मैं आप को खुदा ही समझता हूँ। धीरे–धीरे मूले के साथ वचन बिलास करते जलाह माजरे के खेतों में जा बैठे, मूला भी साथ ही था। शाम होने पर मूले को आदेश दिया कि मूला गाँव से रजाई लेकर आओ। मूला किसे सेवक के घरों रजाई लेकर गया। महाराज जी रजाई में लपेट हो कर लेट गए। महाराज कहते, ''मूला! तुम भी रजाई ऊपर ले लेनी थी।'' मूला कहता, ''सच्चे पातशाह! मुझे तो कपड़े उतार देने पर टिका नहीं, इतनी गर्मी पड़ रहे है। मैंने तो तन के कपड़े भी उतार कर रखे हैं।'' मूला इस चमत्कार को देखकर और भी हैरान हुआ। यह असाध लीला मूले को दिखाई। मूले का भरम और भी दूर कर दिया। गर्मी और सर्दी तो इनके आदेश से ही चलती है। महाराज गाँव घटारों के खेतों में आ कर बैठे, मूले को घर जाने का आदेश किया। दूसरे दिन मूला प्रसादा ले कर आया। महाराज कहते, ''मूला!

चल यहां से वापिस चल प्रसादा कुत्तों को पा दे। बर्तन फिर आ जाएंगे, रसोखाने जा आओ, कुछ थोड़ा घना लंगर में सीधा पा आओ'' मूले के शरीर में घुटनों में दर्द होता रहता था। घुटने, पैरों पर सूजन रहती थी। मूलो को रसोखाने जा आने का आदेश हुआ। वह मजारे गया था। दूसरे पहर बर्तन लेने आप तो गया न, महाराज कहनगे हमारा आदेश नहीं माना। किसी और को भेज दिया। उस बर्तन लेने वाले गुरमुख को महाराज ने पूछा, ''मूला रसोखाने गया या नहीं।'' उस गुरमुख ने कहा, ''जी घर ही बैठा है, गया नहीं।'' महाराज कहते, ''जाता तो अच्छा ही था, भला हो जाता।'' यह आदेश पातशाह जी का घर आ कर मूले को बर्तन ले कर आने वाले आदमी ने सुनाया। मूला उसी ही समय थोड़ा सा अन्न पानी एक थैले में बांध कर ले चला। रसोखाने की सीमा में जाने के साथ ही एक पल में जो मूले के शरीर में दर्द हो रही थी, पता नहीं, किस तरफ उड़ गई। शरीर हलका कंगन की तरह निरोग हो गया। फिर कभी दर्द नहीं हुआ।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साथी तुंगल के साथ हुई

घटारों से उठ कर महाराज गाँव मूसापुर में से होते हुए मजारे आ गए। मजारे सिक्ख सेवकों का भला करते हुए, अनेकां ही जीवों का पार उतारा किया। एक बार की बात है नागरियों की ढक्की की तरफ टहलते–टहलते जोड़े कुएं के पास आ कर खड़े हुए। गाँव की पूर्व की तरफ तुंगल चलाता था, उन दिनों में चड़स होते थे। सूर्य छिपने वाला था, तुंगल कुआं छोड़कर गाँव की तरफ चला। महाराज जी ने तुंगल को आवाज मारी, ''तुंगल! हमारी रजाई पानी में रख कर भिगो दो।''तुंगल

कहता है, ''सच्चे पातशाह! पानी के साथ भीगी हुई रजाई खराब हो जाती है।'' आप ही रजाई पानी में फेंक दी, तुंगल को आदेश किया, ''इसको अच्छी तरह से भिगो कर हमारे ऊपर दे दो। भीगी हुई रजाई तुंगल से पानी में से उठा नहीं, खींच कर बैठ गया। मघर मास के दिन थे। काफी ठण्ड पड़ती थी। लोग रजाई लेकर अन्दर सोते थे। अन्दर भी रजाई में ठुर–ठुर करते थे। आप दुनियां के भले लिए, संसार के सुख के लिए दुःखी जीवों के भले के लिए सारी रात कुएं पर ठण्डी रजाई लेकर बैठे रहे, करतार के साथ लीन हो कर तेलवत धार सरूप से जुड़ कर बैठे रहे। पता नहीं यह तपस्वी के आदेशं में गर्मी सर्दी चलती है। जब तुंगल और किशना सुबह कुआं जोड़ने गए तो महाराज उसे ही स्थान कुएं पर बैठे कोई परवाह नहीं थी ठण्ड की, न ठण्ड लग ही रही थी। आनन्द के साथ बैठे भय में वायु, भय में पानी, भय में दरिया लगता था ऐसा चमत्कार देख के लोग हौरान होते थे, ऐसे दस्तूर को देंखकर लोग हैरान हो रहे थे।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी करनैल सिंह खानखाना वाले के साथ हुई

करनैल सिंह गाँव खानखाना के रहने वाला जात का जाट था। एक दिन करनैल सिंह के मन में नाभ कंवल राजा साहिब जी के दर्शन की लहर उठी, रोम–रोम प्रेम में झूम उठा। तीन पहर रात गुजरी, एक पहर रात रहती मन ने उछाला खाया प्रेम की डोर खींची गई। उठ कर अपनी घर वाली नरंजन कौर को कहा, ''स्नान करके साफ वस्त्र पहन के प्रसाद बनाओ। प्रसाद का डिब्बा लेकर आज सभी ने राजा साहिब के छकने के लिए लेकर जाना है। सूर्य निकलने से पहले–पहले जाना, फिर संगत

की भीड़ हो जाती है, खुले दर्शन नहीं होते।'' शुद्ध पानी लेकर स्नान करके साफ वस्त्र पहन कर प्रसाद तैयार किया। डिब्बे में पाने लगे। घर में से एक चार साल का बच्चा प्रसाद देख कर रोने लगा। प्रसाद खाने को मांगने लगा, बच्चा बहुत रोने लगा। करनैल सिंह रोते बच्चे को छोड़कर डिब्बे में प्रसाद पा कर मजारे को चल पड़ा। बड़ी रीझ के साथ चरणों में ध्यान कर मजारे पहुंचा। आगे सब बातों के समर्थ, सब भूत, भविष्य की जानने वाले अपने घर बैठे। करनैल सिंह ने प्रसाद का डिब्बा आगे रख कर नमस्कार की। महाराज कहते, ''काके! क्या लेकर आया है?'' करनैल सिंह कहता, ''जी! आपके लिए प्रसाद बना कर लाया हूँ। आप छको मेरे मन की प्यास दूर करो। मन में बहुत शौंक है आप प्रसाद जरूर ही छको।'' महाराज कहते ''जब हम मांगते थे उस समय दिया नहीं। रो–रो कर भी बहुत मांगा उस समय नहीं दिया। घर चल कर वही बच्चा जो रो–रो कर प्रसाद मांगता था, उसे को ही छका। करनैल सिंह, ''जी मेरा मन तो ही खुश होगा यदि आप कुछ छकोगे।'' महाराज कहते, ''काका! हद्य तो खुश होगा, यदि उस रोते बालक को छकाएगा, चल! उसी को ही छका। उस का छका हुआ हमें मिल जाएगा।'' करनैल सिंह ने बहुत प्रार्थना की, पर पातशाह माने ही नहीं। घर आ कर बालक को प्रसाद छकाया, क्योंकि महाराज समझते हैं बच्चे के हृदय में खुदा का निवास होता है। किसी की आत्मा को खुश करना ही खुदा को खुश करना होता है, क्योंकि यह रिश्ता उस के नूर से बना हुआ है। ''अवलि अलह नूरु उपाया कुदरत के सब बंदे।। उस तरह एक बारी महाराज गुरू गोबिन्द सिंह जी के लिए पिशौर से एक सिक्ख फलों की टोकरी ले कर आया। जब सतलुज दरिया के किनारे गया, एक रोगी किनारे पर बैठा था। उस कोहड़ी ने प्रार्थना की, ''ओ जाने वाले मुसाफिर मैं भूखा हूँ, मुझे खाने को कुछ दे जो कुछ भी तेरे पास है।'' उस सिक्ख ने उसकी दर्द भरी प्रार्थना पर कोई ध्यान न

दिाय। आगे आनन्दपुर साहिब जा कर सतिगुरां के चरणों में टोकरी खोली, सारे फलों में कीड़े चल रहे थे। सतिगुरु जानी जान बोले, ''सिक्खा! जा यह ले जा सड़े हुए फल, हम ने क्या करने हैं? जब हमने खाने को मांगे थे उस समय तुम ने दिए नहीं।'' इस तरह महापुरुष दुःखी ह्दयों में रहते हैं। सब को अच्छे फलों से निवाजते हैं। एक बार गाँव रहिपे से चरन सिंह अपनी घर वाली को कहने लगा, ''पाँच रुपए का प्रसाद की देग मैंने मन्नत मांगी हुई है, वह बना कर ले जानी है, आज रविवार है देग बनाओ, मैं ले जाता हूँ।'' गुरबचन कौर कहती, ''अगले रविवार बना के ले जाना, आज मेरा शरीर ढीला है।'' चरन सिंह ने गुरबचन कौर के तीन चार टांगें मारीं, उसे टांगें मार कर प्रसाद बनाया। घर में कलेश करके प्रसाद लेकर गया। जब उस इलाही नूर दर्दमंदां के आगे चरणों में बालटी रखी। चरण सिंह के दो दीन लाठी मारी। बहुत गाली भी निकाली। महाराज जी कहते, ''लालू दे! फिर नहीं था रविवार आना? घर में कलेश करके आया है। सुख उस समय ही प्रवान की जाती है, जब ठण्डे दिल से चढ़ाई जाए। किसी का ह्दय दुःखी करके, दिल दुःखी करके कोई भी काम नहीं करना। किसे महात्मा का कथन है, 'जो तो प्रभु मिलन की सिक तो हिया ना गिरना'' खलक खालिक की जान के खालिक दुआवे नाहिं खलक दुःखे जब नन्द जी खालिक कीपे ताहिं। ऐसा ह्दय आप जी का कोमल था। किसी दुःखी की फरियाद सुनके सहिन नहीं करते।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

साखी मंनणहाने जाने की चली

सन् 1939 की बात है, एक दिन महाराज जी गाँव भरोमजारे के खेतों में से उठ कर बंगियां के पूर्व की तरफ की होते हुए बाबे जवाहर सिंह की समाध पर चले गए। तीन चार दिन वहीं रहे। गाँव

गोबिन्दपुर की संगत दर्शन करने के लिए आती रही। प्रसादे का डिब्बा बसन्त सिंह मूसापुरिया आप जी के लिए लाता रहा। तीसरे दिन उठ कर मंनणहाने जन्म नगरी की संगत को जा दर्शन दिए। राम दित्ता बुजुर्ग गऊयां चारता था। उसको जा मिले, राम दित्ता दर्सन करके खुशी के साथ गद–गद हो गया। प्यार के आँसू निकल पड़े, गल में कपड़ा पा कर प्रार्थना की, ''नगर में चरण पाओ, दुःखी जीवों का उदार करो जी, तपते ह्दयों को ठण्डा करो जी। नाम का उपदेश देकर गलत चक्करों में से बाहर निकालो। पवित्र चरण पा कर हमारे घर बार पवित्र करो, जिस तरह राम चन्दर जी ने अहलया गौतम की पत्नी की पत्थर बनी हुई की चरणों की छू के साथ उदार किया, वैसे ही हमारे भी बेड़े पार करो जी। आज दिन भागों वाला निकला है। आज हमारी नगरी के भाग जाग पड़े हैं। राम चन्दर जी ने अयोध्या पुरी में चरण पाए।'' सावन के दिन थे बारिश रंग ला रही है। बागों में कोयल बोल रही थी। आमों को बूर पड़ा हुआ था, मोर पपीहा बोल रहे थे।

मीठी–मीठी पवन बगुले आकाश भौण सौण की सिफत कोई कही नहीं जांवदी।।

महाराज राम दित्ते के वाड़े में बैठ गए जो गाँव से पूर्व की तरफ था। सारे गाँव में महाराज जी के आने की खबर बिजली के झटकों की तरह चल गई। गाँव वासी संगत, बाल, बूढ़े, बुजुर्ग, माताएं दर्शनों को भागे आए। सारे गाँव में सुख और शांति छाई हुई थी। सुन्दर प्रीतम जी के दर्शन करके रस ले रहे थे। जैसे रास मण्डल और गोकल की गोपियां कृष्ण जी के दर्शनों का आनन्द मानते थे। सब लोगों के मन की इच्छा पूरी की। तीन दिन राम दित्ते के वाड़े में बैठे रहे। तीसरे दिन अपने घर

आए। चरण पा कर ग्रह पवित्र किया। आप की भाभी चिन्ती को उपदेश दे कर निहाल किया। अमर चन्द, चिन्ती को कहा, ''कोई चिन्ता नहीं करनी, इस घर में बड़े–बड़े व्यक्तियों का पहरा रहना है। जब भी कोई काम करना हो अरदास (प्रार्थना) ही कर लेनी चाहिए। हम हर समय आप के अंग–संग ही हैं। जब भी कभी कोई भीड़ पड़े, उस समय याद कर लेना चाहिए।'' घर से उठ कर गाँव की पूर्व की तरफ ऊंची जगह पर रेत का थड़ा था, उस ऊपर जा कर बैठ गए। एक महीना पूरा उस स्थान पर बैठे रहे। उस स्थान के साथ गाँव के बीच का स्थान नीचा था। इसमें पानी काफी खड़ा रहता था। उस पानी के बीच में से हो कर लोग दर्शन करने आते रहे। मूसापुरिया बसन्त सिंह भी लंगर में से प्रसादा लेकर जाता रहा. गाँव निवासी भी लंगर सेवा करते रहे। कई बार बेऔलाद जाते आबाद किए। कई नाम के रंग में रंगे गए। नऊधे का पुत्र भोला, भोले का सिबो, सिबो के दो पुत्र थे। भोले के मंगल दास जी, मंगल दास के नाभ कंवल राजा साहिब जी। सिबो का पुत्र रला, रले का पुत्र उमरू का गाँव लालपुर में विवाह हुआ था। उमरू की उमर ४० साल की हो गई, अभी कोई पुत्र नहीं था हुआ। एक दिन चिन्ती ने गल में कपड़ा पा कर प्रार्थना की। सौ रुपए के प्रसाद की मन्नत मांगी। यह अरदास करती दूध का बर्तन लेकर दर्शनों को गई। दो साथ और भी माताएं थीं. पातशाह ने दूध छका, दूध छक कर ऐसी नजर के साथ देखा, माई चिन्ती की जोली पूत्रों, बेटियों से भर दी।'' चलो घर चल करतार भला करेगा, सब दाते खुदा के घरों आप को मिल गई है। करतार भला करता है।'' इस समय चिन्ती पाँच बच्चों की माँ है, जिस में से दो लड़कियां और तीन लड़के हैं।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

साखी मन्नणहाने उजागर सिंह की माई के साथ हुई

एक दिन महाराज जन्म नगरी, गाँव मन्नणहाने बैठे थे। उजागर सिंह के औलाद नहीं थी। तीन विवाह करवाए, पुत्र की प्राप्ति न हुई। महाराज दयालु, कृपालू, रास्ते में खड़े थे। कर्म सिंह की माई दूध की बाल्टी लेकर घर जा रही थी। सतिगुर मेहरबान जी के मन में मेहर आई, उजागर सिंह का नामो–निशान भी दुनिया में पैदा कर दें। पुत्रों की दात देकर वीरान हुआ घर बसा दें। इतने समय में कर्म सिंह की माई पास आ गई। महाराज जी ने आदेश दिया, ''आओ माता जी, आज कुछ आप़ को भी दे दें आज दूध पिलाओ।?' माई बोली, ''जी मैं घर से दूध वापिस लेकर आती हूँ।'' उस अभागी माई से इन्कार हो गया। दूध मांगा था, दूध न दे सकी। एक दूध के कप के बदले पुत्रियों तथा पुत्रों की प्राप्ति होनी थी, न ले सकी। बिन भागां किछु, पाईयै नाहीं' माई ने घर आकर पुत्र बंधुओ को बुलाया, राजा साहिब दूध मांगते थे, मैंने कहा मैं घर से गर्म करके लाऊंगी। सारा परिवार पछताने लगा कि हमारी माई अवसर को पहचान न सकी। पुत्र बंधुओं के कहने पर वापिस दूध लेकर गई। महाराज जी आगे से बोले, ''जाओ माई! वह समय बीत चुका है, अब खाली ही रहोगी। बस इसी तरह हुआ, यह घर पुत्रों के बिना चला गंया. जिस तरह शाह सिकंदर अमृत्त पर बैठकर आब–ए–हयात न पी सका, इस तरह ही उजागर सिंह की माई महाराज जी के दरबार से दात प्राप्त न कर सकी, जैसे किसी निर्धन पुरुष ने सुना कि शिव जी की उपासना करने से धन की प्राप्ति होती है। इसी बात को मन में रखकर सारा परिवार जंगल में जाकर भक्ति करने लगा। एक दिन शिव जी पार्वती इसी जंगल में आए। बैठे भक्ति करने वालों

से पूछा, ''किस स्वार्थ के लिए भक्ति करते हो, हमें याद किया?'' उन्होंने कहा हमें धन दो। शिवजी बोले, अच्छा वर मांगो। पहले औरत ने वर मांगा, ''मेरा रूप बहुत सुन्दर हो जावे, मैं हमेशा युवास्था में रहूँ।'' शिव जी के तथास्तू कहने पर वह सुन्दरी बन गई. शिकार खेलता–खेलता एक राज कुमार आया, स्त्री ब्राह्मणी बन कर उस राजकुमार के साथ चली गई. बाद में उस ब्राह्मण को कहा, ''वर मांगो।'' उसने वर मांगा कि मेरी स्त्री सुअरी बन जावे। शिवजी ने कहा तथास्तू वह सुन्दरी सुअरी बन गई। राजकुमार ने उसे नीचे गिरा दिया। वह घुरर–'घुरर करती अपने पति के साथ भाग कर वापिस आ गई। उनके लड़के को वर मांगने के लिए कहा। उसने वर मांगा कि मेरे माता–पिता का रूप पहले जैसा हो जाए। इसी तरह एक दिन एक चुहिया चील के पंजे से निकल कर एक ऋषि के आश्रम पर गिरी। ऋषि ने उस चुहिया को दैवी शक्ति से चुहिया से सुन्दर कन्या बना लिया। कन्या जब विवाह के योग्य हुई तो ऋषि ने पूछा, ''बताओ पुत्री! तुम्हारा विवाह हिमाचल पर्वत से कर दूँ। पवन देव से कर दूँ? वरूण देव से कर दूँ? बोली ''जी नहीं'' ''किस के साथ करोंगी?'' बोली, ''चूहे से विवाह करना है।' ''कुल कलंक तजिओ नाहीं जाति सुभा न जाइ'' इस तरह ही भाग्य के बगैर मिली हुई वस्तु भी इन्सान के पास से चली जाती है।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी उमर चन्द मन्नणहाने के साथ हुई

एक बार की बात है सन् 1931 में दुनिया में पलेग की बीमारी फैल गई। गांव वासियों का नुकसान होने लगा। कोट फतूही, दाते चेले, बहिलपुर एक दिन में कई–कई आदमी मरे। लोग बहुत भयभीत हुए।

अमरू के मन में भी बहुत भय हुआ। छोटे–छोटे बच्चे महाराज की कृपा से कहीं मिले हैं, मृत्यु से बहुत भय लगता था। उमर चन्द महाराज जी के ताऊ का लड़का था। नंबरदारी भी उमर चन्द ही करता था। उमर चन्द गुड़ बनाने का काम करता था। उमरू पत्त निकाल कर गुड़ ला रहा था, आ कर किसी ने बात की, दाते, चेले आज सात आदमी मर गए हैं बीमारी बढ़ती जा रही है। यह भयानक बात सुन कर उमर चन्द गुड़ लगाना छोड़ कर गले में गमछा डाल कर एक मन चित्त होकर महाराज जी के चरणों का ध्यान धर करने लगा। ''सच्चे पातशाहो, जो कुछ भी होता है, सब कुछ आप जी केआदेश के अनुसार ही होता है। 125 रुपए क प्रसाद आप जी के दरबार में बांटूँगा हमारे गाँव में बीमारी न आए।'' 'विरथी कदे न होवई जन की अरदास' सच्चे दिल से अरदास की, दरगाह में सुनी गई। अरदास करते हुए कानों में आवाज आई, ''करतार भली करेगा।'' आई संगत की गुरू रूप समझ कर सेवा किया करो। उमर चन्द की पत्नी चिन्ती को महराज जी के, घर में दर्शन हुए। धीरज़ बंधाते हुए यह आदेश किया, चिन्ता मत करना, डरो नहीं हम हर समय आप के पास ही हैं। इस घर पर बड़े–बड़े व्यक्तियों का पहरा लगा हुआ है जिनके शरीर सात–सात हाथ लम्बे हैं। हमारी यादगार उमरु की हवेली से बीस–पच्चीस कदम के फासले पर एक जगह थी, उस जगह पर बनाने का आदेश दिया, यहाँ अब महाराज जी का गुरुद्वारा तरनतारन साहिब बना हुआ है। प्रत्येक महीने साधारण पाठ का भोग डाला जाता है। यह कौतक महाराज जी ने ज्योति–जोत समाने के बाद दिखाया था। अपनी यादगार बनाने का चिन्ती को आदेश दिया था।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे सखी प्रीतम दास दे प्रथाए चली

महाराज जी गांव मन्नणहाने से फिर मजारे आ गए। नजदीक के गांवों की संगत को पता चला। महाराज एक महीने के बाद आए थे। सच्चे प्रेमी दर्शनों के लिए आने लगे। गांव झिंगड़ां से गुरबख्श सिंह दर्शनों के लिए आए। गुरबख्श सिंह को आदेश किया, महाराज कहते, ''बख्शां दिन त्योहार वाले दिन लाला की समाधि स्नान कर लिया कर, जो मेरे नाम की चीज हो वो भी झिंगड़ी ही बांट दिया कर अब यहाँ तो आया ही न कर।'' गाँव झिंगड़ां से बचनी और माहों भी दर्शनों के लिए आई। माहों को महाराज जी ने हुकम किया, ''माहों! मेरे लिए रस में खीर बना कर ले आओ, रस रलू से निकलवा लेनी।'' बचनी और माहों गांव जा कर रस में खीर चावल बना कर ले आईं। जब आगे चरणों में डर कर नमस्कार की तो आदेश किया, 'चल! झिंगड़ीं चल के लाला के माथा टेक कर बांट दो, बाकी लुहारा के घर देनी है।'' मांहो कहती, ''जी! लुहार पूजा की चीज नहीं लेते।'' महाराज कहते, ''चल नी! कहने लगते हैं। लुहारों ने पूजा का सब कुछ संभालना है।'' प्रीतम दास, बतन सिंह का बड़ा पुत्र माई बसंत कौर की पवित्र कोख से इनका जन्म हुआ। ये बचपन से ही संत सेवी थे। लाला हमीर चन्द, भाई जवाहर सिंह जी को समाधों पर इन्द्र सिंह ने सुबह शाम झाड़ू करना, इनकी समाधों पर दिया जगाना इनका पक्का नियम था। नाभ कंवल राजा साहिब के दर्शन करने के लिए प्रत्येक रविवार को जाना। एक दिन महाराज जी के दर्शन करने गया आगे से सतिगुरू अपने घर बैठे थे प्रसादे का डिब्बा प्रीतम दास जी ने आगे घर कर नमस्कार की। आगे से सतिगुरू मेहरबान की तरफ से हुक्म हुआ, ''काका! चल हमारे पास न आया कर, लाला के दरबार में बेरी के नीचे तुम्हारे धन का खजाना दबा हुआ है।'' यह

गूढ़ रहस्य था इसको प्रीतम दास समझ न सका कि नाम रूपी धन का खजाना लाला जी के चरणों में पड़ा है। महाराज नाभ कंवल राजा साहिब जी ने चौदह दिन कपाट न खोले, न अन्न छका। चौदह दिन के बाद कपाट खोले, चक्क करालां की बंतो पेश हुई। कोई रब्बी दरबार करके उठे थे, बड़े–बड़े व्यक्ति इस मीटिंग में शामिल थे। महाराज जी की तरफ से आदेश हुआ, ''भगीरथी! एक कापी बना लेनी थी कई हमारे बचन नोट करने वाले होते हैं, नोट ही कर लिया कर। हमारा बड़ा इतिहास बनेगा। उस में नोट कर देना। भगीरथी! हमने यहाँ नया अमृतसर रच दिया है।'' उस दिन दलान के पीछे वाली सीढ़ी के नीचे वाली खिड़की को आप ताला लगा कर कहते यह ताला खोलना नहीं?'' भगीरथी कहती जी यह ताला कौन खोलेगा आदेश हुआ हम ही खोलेंगे। तीन वार भगीरथी हमें खुदा के पास जाना पड़ा लाला की सिफारिश चल गई, चीज लुहारों के घर जाएगी। चल आज कोठी का ताला खोल दो, पानी का छींटा दे कर धूप दे आना। यहां पर रोगी ठीक हुआ करेंगे। इस कोठी का नाम आज से दुख निवारण रख दिया। चाबी प्रीतू को दे देनी।'' कई बार इस तरह कह देते हमारी आयु 22 साल है। प्रीतम दास प्रगट हुए 1942 में तब प्रीतम दास की आयु 22 वर्ष की थी। एक समय गुरबख्श सिंह ने गुरुद्वारे की चाबी आगे दर कर विनती की, ''महाराज जी! मुझ से समय पर दीया बाती नहीं किया जाता, किसी और सेवादार की डियूटी दीये बाती पर लगा दो जी।'' पहले नरायण सिंह मूसापुरिया गुरुद्वारे रहता था। उसके स्वर्गवास होने के पश्चात् गुरबख्श सिंह ने अरदास की थी। महाराज गुरबख्श सिंह को कहने लगे, ''बख्शा खामोश रहना।'' जब महाराज ज्योति–जोत समाए प्रीतम दास जी पीछे से बीमार हो गए, बहुत बीमार हुए। प्रीतम दास जी की चारपाई उठा कर लाला जी की समाध के आगे रख दी। दीपावली का

दिन था। बीमारी बढ़ने से निराश होकर घर वाले चले गए। रात के 6 बजे एक साधू आया, न जाने किस देश का था। इसने लाला जी की समाध की तीन बार परिक्रमा की, प्रीतम दास से पूछा, "बच्चा रोटी है?" प्रीतम दास दुःख में बोले, "जी एक रोटी मकई की पड़ी है।" उठा कर साई के हाथ पर रख दी। उस मकई के सूखे टुकड़े को उस महांबली त्रिकाल दर्शी दिव्य ज्योति जी ने जब हाथ से स्पर्श किया उसे अमृत का कण बना दिया। प्रीतम दास जी को खाने का आदेश दिया, जब प्रीतम दास ने टुकड़ा खाया, कपाट खुल गए, हृदय विशाल हुआ। तीन बार उछाल ऊपर आया, तीन तावीज अन्दर से निकले, पाखर सिंह ने ताबीज़ उठा लिए। माई चिन्ती भी साथ ही बैठी थी, धागे के साथ लपेटे हुए थे। जब रौशनी हुई, उस समय उठ कर खड़े हो गए, "और कुछ न था, बर्तन ही साफ करना था।" सभी गुरूओं के दर्शन हुए। ऊंचे स्वर में बोलने लगे, वह राजा साहिब जी आ गए, लाला जी आ गए हैं। एक मिनट में ह्दय हलका फूल के समान हो गया। उठ कर वायु की तरह गुरुद्वारा दुःख निवारण साहिब आ गए। लाख–लाख सिजदे किए। मालूम पड़ने पर बहुत से लोग इकट्ठे हो गए। फिर कहा, "देखो! राजा साहिब जी के दर्शन करो।" सरदार हरनाम सिंह ने कहा, "जी! हमारी नज़र देखने वाली नहीं, आप की नजर दिव्य हो गई है। सारे गाँवों में दूर–दूर तक खबर फैल गई। प्रीतम दास जी को ईश्वर का ज्ञान (शक्ति) प्रगट हो गई। यह समाचार सुन कर ज्ञान सिंह और दास भी दर्शन के लिए गाँव झिंगड़ां आए। अभी हम बाहर ही थे, यह पंजाब कौर के चौबारे में आराम कर रहे थे, अभी भी संगत बहुत थी। पहले ही ऊँचे स्वर में कहने लगे, "रहिपीए आए है, भाग चलो, इन की सेवा करो।" चन्नू को दूध लाने का आदेश दिया। इस तरह अन्तरआत्मा वाली बातें लोगों को बताकर हैरान करने लगे। महाराज

नाभ कंवल राजा साहिब जी का दिया हुआ दुपट्टा, एक कापी सीर बन्ते के पास पड़ी थी। जगत सिंह के पास महाराज जी की सोटी पड़ी थी, बहुत देर की। झीरों के घर में अलमारी में से कापी निकलवा ली। जगत सिंह जी के घर से सोटी दुफुटो मिस्त्रियां के घर से। महाराज जी के हाथ से दी वस्तुएं निकलवा लीं। एक दिन गाँव रटैंडे की ओर जा रहे थे। सुच्चा सिंह फलपोते वाला साथ जा रहा था, जाते–जाते बोले, सुच्चा! तेरे साथ घटना घटने वाली है और घटेगी।'' सुच्चा सिंह ने कहा, ''जी आप के होते हुए भी घट जाएगी। बोले,''कई कर्म अमिट होते हैं।'' कुछ दिनों पश्चात सरहाल काजिए डाका पड़ा। सुच्चा सिंह एक दिन सरहाल काजियों में से गुजर रहा था। पुलिस ने पकड़ कर डाके की तफ्तीश में बहुत पीटा। कई असाध्य रोगी सामने आने से ही ठीक हो जाते थे। ज्योति जोत समाने से पहले छः महीने यहां संस्कार किया था, उस स्थान को दुपट्टे से नाप कर कहा यही हमारी समाधि है। ऐसी हजारों ही कहानियां दुनियां को दिखाकर 43 साल की आयु पूरी करके 1961 अठारां भादों को ज्योति जोत समा गए। संस्कार के समय पालकी बना कर जलूस निकाला गया। जिसमें लाखों की तादाद में संगत ने इक्ट्ठा होकर संस्कार किया, काफी मात्रा में घी, मेवा आप जी के अंगीठे पर पाया गया।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी भगवान सिंह घटारों वाले के साथ हुई

भगवान सिंह गांव घटारों का आदिधर्मी था। यह कीर्तन भी किया करता था। संत सेवी और महाराज जी का बहुत प्रेमी था। एक दिन मन में शौक उठा, अनेक ही लोग राजा साहिब जी की सेवा करते

हैं, हम भी एक गमछा (परना) बना कर भेंट करें। यह लुधियाने से बने–बनाए गमछे लाकर बेचता था। भगवान सिंह ने बहुत सुन्दर सूत लाकर अपने हाथ से चारखाना गमछा तैयार किया। जैसे माई भराई जी ने छठे गुरू हरगोबिन्द साहिब जी के लिए चोगा तैयार किया था। भगवान सिंह ने परना तैयार करके स्नान करके बहुत पवित्रता के साथ श्रद्धा सुमन लेकर घर से चला, गमछा दाईं बाजू पर रख लिया। भगवान सिंह करनाणे और मजारे के बीच रास्ते पर चला जा रहा था। गुणचौर का तेली मौला बख्श तेल का खानगार लेकर करनाने को जाता हुआ भगवान सिंह को रास्ते में मिला। मौले ने पूचा, ''रागी जी! कहां ले जा रहे हो? भगवान सिंह, ''मैं नाभ कंवल राजा साहिब के लिए एक तौलिया बना कर ले जा रहा हूँ। मौला बोला, ''भाई साहिब जी! मुझे दर्शन तो कराओ तौलिए के।'' भगवान सिंह बोला, ''भाई! तेरे हाथों को तेल लगा हुआ है, तौलिया मैला हो जाएगा'' मौले ने हाथ साफ करके तौलिया खोलकर देखा, मौले के मन में बेईमानी आई, ''तौलिया बहुत सुन्दर है। महाराज जी निकट खेतों में बैठे हैं. भगवान सिंह ने तौलिया माथा टेक कर वापिस चले जाना है, बाद में उठा लूँगा। भगवान सिंह आगे चला गया। मौला एक खेत में वृक्ष के साथ तेल का खानगार बांध कर खेतों के बीच से झुककर महाराज जी के पिछले पासे एक गेहूं के खेत में छुप कर बैठ गया। भगवान सिंह ने महाराज जी के चरणों में तौलिया रख कर नमस्कार की। बिदुर भगत की तरह मस्त होकर शब्द पढ़ने लग पड़ा। महाराज साहिब जी बोले, ''भानिया, क्या लेकर आए हो?'' भगवान सिंह, ''जी! मैं क्या ला सकता हूँ, आप जी की बख्शी हुई दात है।'' छोटा सा तौलिया उठा कर भगवान सिंह को कहा, ''तौलिया बहुत अच्छा है,

तेरी भेंट स्वीकार है। हमने क्या करना है, चलो किसी और को ही दे देते हैं। पीछे गेहूँ में बैठा मौला तौलिया मांग रहा है,उसे बुलाओ। भगवान सिंह पिछले पासे खेत के किनारे गया, वह ही मौला तेली बैठा। भगवान सिंह बोला, ''मौला बख्श! तुजे महाराज जी बुला रहे हैं। मौला कुछ शर्मिंदा भी हुआ। महाराज जी के सामने हुआ। महाराज जी बोले, ''मौला! उठा ले तौलिया, तुम्हारी वासना तौलिया में है। भगवान सिंह बोला, ''मैं हैरान हुआ, जब कण–कण की जानकारी रखने वाले की कहानियां देखीं। भगवाान सिंह बार–बार नमस्कार करने लगा। इतने समय में एक गांव लंगेरी जागीरदारों से एक औरत आई, जिसके हाथों में सोने के कंगण डाले हुए थे। नमस्कार की। महाराज जी ने कंगण उतरा कर तालाब में फेंक दिए। वह औरत रोने लगी, ''मुझे घर वाले गुस्से होंगे।'' घर वापिस न जाए। दो घण्टे बाद महाराज जी ने बुलाकंर कहा, ''जाओ! दूसरे किनारे से अपने कंगण उठा लो। उस औरत ने दूसरे किनारे से कंगण उठा लिए। माथा टेक कर घर को चली गई। हवा–पानी आप जी के इशारे पर चलते थे। कई बार गहने उतरवा कर कुएं में फेंक देने। बाद में लड़कों ने कुएं में जाकर ढूंढने, लेकिन उनके हाथों में कुछ न लगना।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी नन्ते के साथ हुई

एक दिन की बात है गाँव हेढियां से नन्ता, नाभ कंवल राजा साहिब जी के दर्शन को आया। महाराज जी एक टिब्बे पर बैठे हुए थे। चारों ओर दस कुत्ते भी बैठे रहते थे। नन्ते ने गले में पल्ला डाल कर नमस्कार की, पीछे होकर खड़ा हो गया। महाराज जी की समाधि

लगी हुई थी। नन्ता चुपचाप सुन्दर प्रीतम जी के मुखड़े का आनन्द ले रहा था। नन्ता चकोर की तरह एकागर होकर देखता जा रहा था। मन चरण कमलों में जुड़ गया। नन्ते के देखते–देखते दसं कुत्ते और आप एक पल में अलोप हो गए. नन्ता अकेला खड़ा रह गया। काफी दूर तक खेत खाली दिखाई दे रहे थे। न जाने बिजली की चमक की तरह दर्शन देकर कहां अलोप हो गए। एक बार की फिर बात है नन्ता गाँव हेढ़ियां से मजारे दर्शनों के लिए गया। बहुत सी संगत दरवाजे के आगे बैठी थी। कमरे को किसी तरफ कोई और खिड़की अथवा रोशनदान न थे। सभी संगत को दर्शनों के बाद बाहर बिठा दिया। नन्ते को आदेश दिया, ''नन्ता दरवाजा बन्द कर दे।'' नन्ता दरवाजा बन्द करके संगत में बैठ गया। इतनी देर में और संगत आई और नमस्कार करके बैठ गई। आगे बैठी संगत से विनती की हम जंडियाले से आए हैं, हमें दर्शन करवाओ। नन्ता बोला, ''भाई जी पहले तो दरवाजा खुला था, अभी बन्द किया है, अगर आप कहो तो मैं आवाज़ लगाता हूँ। सभी ने बोला कि धीरे से दरवाजा खोलकर इन्हें दर्शन करवा दो। नन्ते ने दरवाजा खोला तो अन्दर कुछ दिखाई न दिया, खटिया खाली पड़ी थी। सभी संगत यह देखकर हैरान रह गई। दो घण्टे बाद अन्दर से ही संगत को दर्शन प्राप्त हुए। गुप्त प्रगट होकर सिक्ख सेवकों को दर्शन देते थे। एक पल में सेवकों को दर्शन देते थे। एक मेरा मालिक, प्रीतम शक्तियों का मालिक था। इतनी देर में प्रीतम सिंह गाँव मुकन्दपुर से आया। सतिगुरु को चरणों में नमस्कार की। महाराज जी ने एक मुट्ठ भर कर प्रीतम सिंह की झोली में डाल दी, ''लै सिक्खा, तुझे माया दे दें। प्रीतम सिंह पल्ले में डालकर घर ले गया। आज प्रीतम सिंह माया में खेल रहा है। सारे

परिवार के साथ इंग्लैंड में रह रहा है। उस ही दिन प्रीतम सिंह से मेहर सिंह का हाल पूछा। मेहर सिंह उन दिनों एक कतल के केस में जेल में था। प्रीतम सिंह बोला, ''जी वह तो कारावास में है।'' महाराज बोले, ''बच्चा मेहर सिंह को कोई जेल करने वाला नहीं, वह तो हमारा आदमी है।'' मेहर सिंह सचमुच में ही बरी हो गया। इतनी देर में मजारी से प्रीता जो पहले भी महाराज जी के साथ हर दिन सारंगी बजा कर गाता था, एक दो दिन लोगों के मज़ाक उड़ाने की वजह से न गया। महाराज बोले, ''प्रीतिया आज कई दिनों बाद आए हो? प्रीता पैर मलता हुआ बोला, ''जी! बस ऐसे ही नहीं आ सका। महाराज बोले, ''नहीं लोगों के ताने की वजह से नहीं आया, आज तेरी कंगाली भी दूर कर देते हैं।'' हां! आज तुझे दूध, पुत्र सभी दातां बख्श दी हैं।'' वह आज लाखों रुपए में खेलते हैं। बहुत सारे आदमी इंग्लैंड में गए हुए हैं। यह सभी बर्कतें भी सच्चे प्रीतम की निगाह में।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

साखी ठाकुर सिंह खटकड़ कलां वाले के साथ हुई

अच्छी, अच्छी, प्यारी–प्यारी हवा चल रही थी। सूरज अस्त होने वाला था। जानवर घोंसले से वापिस आ रहे थे। ढक्की के वृक्षों पर पक्षी खुशी के गीत गा रहे थे। आप जी नागरा की ढक्की पर साफ सी जगह पर चौंकड़ी लगा कर बैठे, चन्द्रमा की किरणें आप जी के मुख मण्डल पर पड़ रही थीं। आकाश में से तारे प्रीतम का दर्शन कर रहे थे। इस पूर्णिमा वाली रात की शोभा लिखने से दूर है। उस रात ही देवतों ने आप जी पर फूलों की वर्षा की थी। फूल बहुत खुशबू वाले थे। देवतों, गंधर्वों और रास मंडिलयों

ने खुशी के गीत गाए। दिन के चढ़ने के साथ आप जी उठ कर गाँव मजारे करतार सिंह के घर जा बैठे। समुन्दा नागरे वाला प्रतिदिन दर्शन करता। सतिगुरु की तरफ से हुक्म हुआ, ''समुन्दा! जाओ! गांव खटकरां से ठाकुर सिंह को बुला कर लाओ। हमारा पुराना सेवक है, आज उसको अगली, पिछली मेहनतों की मजदूरी दे ही दें।'' जैसे गुरू नानक जी ने सुदेह सैन, इन्द्र सैन का उदार किया। पिछले मित्र समझ कर ऐसे ही नाभ कंवल राजा साहिब जी ने ठाकर सिंह को तारा, समुन्दर सिंह ने ठाकर सिंह को जा कर कहा। ''भाई साहिब जी! आपको राजा साहिब जी बुला रहे हैं।'' ठाकर सिंह संदेशा सुनते ही चल पड़े। ठाकर सिंह निर्मल हृदय, सीधा सादा खेतीबाड़ी का काम करते थे, जिन्दगी में कभी कोई बुरा कार्य नहीं किया। न कभी साधु संत की सेवा की, हमेशा स्वयं ही किरत करके रोटी खाता। अंदर धूनी प्रेम की लगी हुई थी, कोई फूक मार कर जगाने वाला नहीं मिला।

गुरु बिन घोरु अधांरु, गुरु बिन समझ ना आवे।

प्रेम के बगैर खाली ह्दय शोभा नहीं देता। गुरु गोबिन्द सिंह जी ने लिखा है

साच कहुँ सुंन लिओ सबहि जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाएअ

एक प्रेम ही प्रभु का सरूप है प्रभु के मिलाप का वकील है। फरीद जी ने भी कहा है

विरहा विरहा आखिए विरहा तू सुलतान।।
फरीदा जित् तन विरहु न उपजे सो तन जान् मसान।।

एक जुदाई ही प्रभु के मिलाप का सेतू है। सोए हुए ठाकर सिंह को जगाया। ठाकर सिंह ने आप के चरणों में गले में पल्ला डाल कर नमस्कार किया। पिछले सांझे दर्शन पा कर जाग उठीं, मन बैराग से उछल पड़ा. प्रेम की घटाएं चढ़ पड़ीं सावन के बादलों जैसे आसुओं की झड़ी लगा दी। सतिगुरू मेहरबान बोले, ''ठाकर! नजदीक बैठा ही भूला रहा। जाग नहीं की, इतने सुस्त नहीं रहना चाहिए। वहते दरिया के ऊपर बैठ कर भर पेट पानी न पिया, प्यास न बुझाई तो किसी का क्या कसूर। जिन सतिगुरु को जहाज रूप जाना वो भव सागर पार हो गए।'' ठाकर सिंह ने कहा, ''जी! हमें क्या पता! अज्ञानता की नींद सोए पड़े हैं, आप की मेहर से रहमत से ज्ञान होता है। ज्ञान रूपी चिराग जगे तो अंधेरा दूर होता है।'' नजदीक बिठा कर सिर के ऊपर हाथ धरा। सब अगंम निगम का ज्ञान हुआ।

बलिया गुरु ज्ञान अंधेरा विनसिया हरि रतन् पदार्थ लाधा

ठाकर सिंह को निहाल किया, जन्म मरन के दुख नविरत किए पिछले मित्र के शुभ कारज रास किए। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पदार्थ देकर चलता किया। इतने समय में दो और आदमी गांव खटकरां से तेजा सिंह, दूसरा चमार बंसियां से दोनों ने नमस्कार किया। बंसियां वाले की लड़की का रिश्ता गांव बल्लोवाल के मेलू पुत्र मिलखी को तेजा सिंह कराने चला था। तेजा सिंह का मिलखी भानजा था। सतिगुरु घट–घट के जानणहार तेजा सिंह मुस्करा कर कहने लगे, ''मेलू के पुत्र को रिश्ता नहीं होना, छज्जू के पुत्र को रिश्ता कर देना।'' गुप्त बात थी, सुन कर हैरान हुए। जब गांव बल्लोवाल आ कर रिश्ते की बात चलाई। मेलू ने जवाब दे दिया, ''मैं चमार

बंसिए लड़के का विवाह नहीं करना, कुआरा बेशक रह जाओ।'' तेजा सिंह छज्जू के पुत्र प्रकाश को रिश्ता करवा दिया। महाराज जी पहले ही आत्म शक्ति से जो दरगाह में संयोग लिखे थे हुक्म कर दिया था प्रकाश का विवाह बंसिए हुआ। एक दिन की बात है गांव मजारे एक तृंजण में चले गए। लड़कियां गाती थीं, आप के सामने आने पर चुप्प हो गई बारी–बारी सब ने नमस्कार की, हुक्म हुआ गाओ। लड़कियां बोलियां डाल रही थीं। इस तरह गाओ,

धोबिया दे देह छट्णां मुंडा रंग दा सुनींदा काला।
धोबियां ने छट् सुटिया मुंडा निकलिया चिट्टा दुध वर्गा।

यह इन्सान का कर्मों की तरफ संकेत था। पाप करने से इसका जामा मैला हो जाता है काला हो जाता है। गुरु जी की संगत सेवा करने से, नाम जपने से मुख उजला हो जाता है, दिल साफ हो जाता है। धोबी रूप गुरु इस जीव के पाप खंडन कर देता है।

- *फरीदा जे तू अकलि लतीफ काले लिख न लेख*
- *कबीर लेखा देना सुहेला जऊ दिल सूची होई*
  ऊसू साचे दीवान महि पला न पकरै कोई।।

गांव मजारा राजा साहिब जी की करमीं सपुत्री स. पाल सिंह को हुक्म किया, ''पेके घर बैठ कर गुजारा कर लेना, चिट्टा कपड़ा रखना।'' इस लड़की का गांव पलाही में विवाह हुआ था। ससुराल घर से अनबन हो गई, पेके घर बैठ राजा जी का नाम जप कर उसके सहारे गुजारा कर लिया। एक दिन गांव मजारे का परतापू एक गाय ले आया। एक दिन टहलते–टहलते इसकी हवेली को चले गए। गाय का रस्सा खुलवा

क़र हुक्म किया इसको बांधना नहीं इसका तेरा हिसाब खत्म हुआ। आप जी का हुक्म मान कर प्रतापू ने गाय छोड़ दी। बाद में फिर बांध लेना, तीन बार छुड़वाई, प्रतापू फिर बांध लिया करो। गाय बच्चे को जन्म देने से पूर्व मर गई। एक दिन पण्डित बसंत सिंह गढ़ पधाने वाला दर्शन को आया। दो आदमी साथ में थे, एक को आदेश दिया, अलग होकर खड़े हो जाओ। तीसरे दिन, जिसे आदेश दिया था, उसकी देह छूट गई। सभी रिश्ते, मित्र, बहन, भाई, पुत्र, पुत्रियों को छोड़ कर अकेला हो गया। अन्तिम समय नज़दीक आया, अलग हो जाने का। आदेश कर दिया था। गाँव भूखड़ी से कर्मी नाम की एक लड़की, उसे की भी कहा कि बाई के पास रह कर दिन काट लो, ससुराल तो जाना नहीं। सभी आभूषण उतरवा लें। एक बार मुकलावे जाने के बाद उसका पति सदा के लिए उसका साथ छोड़ गया। माइके में भाई के पास चौबारे में दिन काटने पड़े। लंगर की सेवा की, सतिगुरु के दर्शन कर और नाम जप कर जिन्दगी को सफल किया। गुरु घर की बहुत प्रेमिका बन गई। ऐस आत्मिक शक्ति के धनी थे। प्रकृति आप जी के आगे नाचती फिरती। गाती फिरती। ईश्वर की रची हुई दुनियां आकाश, पाताल तक आप जी की नजर काम करती थी। करतार के गुण और शक्ति आप जी की मुट्ठी में बन्द थी। एक दिन की बात है आप जी बहुत खुश–खुश अपने घर बैठे थे। परमात्मा के साथ ध्यान जुड़ा हुआ था, जीवों का भला करने का फरमान जारी हो रहा था। रिद्धियां–सिद्धियां हाथ जोड़ कर खड़ी थी, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पदार्थ हर समय उपस्थित रहते थे। संगत वरदानों की झोलियां भर कर ले जाती थी। एक स्त्री मीरा बाई की तरह नाम के नशे में रंगी हुई, जिसके बाल गले में पड़े थे :–

- *मैनूं वरज न भोलिए माए पीया रंगे मैं रत्ती हां*
- *धूड़ी विच लोड़दीयां सोहां नानक सुहि तैं नाले।*

यह गाती आप जी के चरणों पर आ कर गिरी। सतिगुरु मेहरबान ने रहमत भरी नज़रों से देखा। एक बेर खाने के लिए दिया। यह अमृत फल था। स्त्री के कपाट खुल गए, अंतरयामता हो गई, अज़र जरनां बहुत मुश्किल है, चौदह तबकां की खबर हो गई, नाम का नशा सहार न सकी, पगली हो गई।

वस्तु अन्दर वस्तु समावै, दूजी होवै पासि। शेरनी का दूध सोने के बर्तन में ही रखना पड़ता है, और बर्तन में डालने से दूध फट जाता है। सभी कुछ नज़र आने लगा, लगी करामात दिखाने। कहर करे तो करामात दिखावे। करामात दिखानी कहर का नाम है। खुदा की रज़ा के खिलाफ है। कुछ समय ऐसे रही, एक दिन दर्शन करने आई। सिर पर सोटी रख कर सारी करामात खींच ली। ज्ञान चिराग गंवा कर फिर समय क़ो ढूंढती मर गई।

वक्त लघिया फिर हत्थ न आवे, कई सूरमे वकत नूं भाल दे जी।
विनु करमा किछु पाईयै नाही जे बहुतेरा भावै।।

नाम रूपी धन साफ मन में ही टिकता है। नहीं तो आदमी पागल हो जाता है। सभी पदार्थ मुट्ठी में आ जाते हैं, ऐसे ही एक समय आप संगतों की भलाई करते उद्धार करते। जिला होशियारपुर गढ़शंकर के नजदीक गांव कालेवाल लल्लियां में जा बैठे थे आप जी जहां भी बैठते, संगत वहीं पर उमड़ पड़ती। संगत क़ी भीड़ देखकर कुछ मर्द–औरतें पूछने लगी, यह लोग कहां जा रहे हैं? कहां से आ रहे हो? संगतों ने बताया नाभ कंवल राजा साहिब जी बसूटी के झाड़ों में बैठे हैं, लोग दर्शनों को जा रहे हैं। यह मर्द और औरतें

दर्शन को चल पड़े। किसी अफसोस से वापिस आए थे। औरतें कहने लगी हम से चला नहीं जाता, बहुत भूख लगी हुई है, अगर कुछ खाने को दें तो जाएंगे। सभी ने जाकर नमस्कार की। औरतों के मन की बात जानकर बसूटी की जड़ों से सौगी (किशमिश) तोड़ कर खाने को कहा। संगत ने जब बूटों की तरफ देखा तो वह सौगी से भरे पड़े थे। सभी संगत ने भर पेट सौगी खाई।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

साखी केसरी गुणाचौर वाली के साथ हई

माई केसरी गुणाचौर के निवासी किशन चन्द की पत्नी थी। जिसका सारा परिवार आप जी में बहुत श्रद्धा रखता था, हर रोज़ दर्शन को जाते। सतिगुरु मेहरबान सिक्ख सेवकों के काज संवारते।

'जब जह काज किरति सेवक की तहा–तहा उठ धावै'

केसरी को एक रुपया दिया। साथ ही आदेश दिया गाती जा 'गले में गोटा गजे का' यह रुपया बन्तो से लेकर दिया था। बाहर जा कर बन्तो को रुपया वापिस कर दिया। सतिगुरु जी सभी जानते थे, उन्होंने सेवक को भेज कर वह रुपया वापिस ले लिया। फिर केसरी को रुपया दिया बोले शगुन का रुपया दिया। रिश्तेदारों में ही रिश्ता कर लेना चाहिए, बग्गे को कहना गले में से जनेऊ उतार दो। जब केसरी घर पहुंची, मेहमान घर बैठे थे। बग्गे को रिश्ता करने आए थे. पहले खड़कूवाल से रिश्ता हो रहा था, यह रिश्तेदारों में था, राम सरूप को रिश्ता कर लिया। एक दिन केसरी को आदेश हुआ, शिवदवाले भी राजा के नाम से बने हुए थे, नाम सारखे भी राजा के बताए हुए थे। बग्गे को कहा, डरो मत, बग्गे का नाम घर

वालों ने राम सरूप रखा हुआ था। आप बग्गा बोलकर बुलाया करते थे। बग्गा मन्दिर में पाठ–पूजा करने गया। अचानक ही सांप निकल आया। बग्गा डरकर बाहर निकल गया। सांप झलक दिखलाकर छुप गया। यह कोई परीक्षा थी, जिसमें से पास न हो सका। केसरी के घर कोई काज था, पैसे की जरूरत थी, चिन्ता में रोटी न खाई। महाराज जी के दर्शन को प्रतिदिन जैसे गई। आगे सतिगुरु जी बोले, ''रोटी खा लेनी चाहिए है।'' रोटी खिलाकर दूध पिलाया। एक आम छोटा सा, ऐसा आम कभी देखा न था। न आमों की ऋतु थी, आम का स्वाद भी अनोखा ही था, किसी और देश से आप जी के आगे देवतों ने भेंट किया हुआ था। केसरी को जब छकाया। अनोखा ही सरूर आ गया, शरीर फूलों की तरह हलका हो गया। रोम–रोम नाम के रंग में रंगा गया। और भी बहुत सी संगत केसरी के साथ थी। माई भागवंती से घर की चाबियां लेकर नामे की माई की दिला दी। यह गुणाचौर की स्त्रियां थी। भागवंती अपनी लड़की को साथ लेकर कुएं में पानी भरने के लिए गई। घड़ा भर कर लड़की को उठा दिया, आप पीछे से डोल भरकर खींचने लगी, डोल खींचते ही प्राण पूरे हो गए। महाराज जी ऐसे हजारों ही भविष्य के वचन बता देते थे। एक दिन केसरी को कहा मेरा महन्त पूर्ण तेरा पिछले जन्म में भाई था। इसके साथ दुःख सुख की बात कर लिया कर, अगर पैसे की जरूरत थी। बग्गे को बुला लेना। बग्गा नवांशाहर आढ़त की दुकान करता था। केसरी घर आई तो बग्गा घर पैसे लेकर बैठा था। इस परिवार के ऊपर महाराज जी की बहुत कृपा थी। केसरी के सभी बच्चों के नाम बदलकर रखे हुए थे।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

साखी दुर्गादास गाँव गुणाचौर वाले के साथ हुई

दुर्गादास गाँव गुणाचौर का रहने वाला जाति का ब्राह्मण था। इसका पिता लम्बू हर रोज दर्शन को जाता। मींह–हनेरी जो कुछ भी हो, गुणाचौर से और भी बहुत सी संगत प्रतिदिन दर्शन करने जाती। मुस्लमान, राजपूत, हिन्दू आप जी के बहुत से सेवक थे। सभी लोग आप जी को खुदा का रूप ही मानते थे। दुर्गा दास दीवाली के दूसरे दिन प्रातः समय रात की सुच्ची रखी हुई मिठाई लेकर बैठा था, जब बैठे को आधा घण्टा हुआ, एक स्त्री मन्जकी से (रुड़के से) आई। एक लोटा दूध का, आठ लड्डू चरणों में धर कर गल में पल्ला डालकर बहुत प्रेम से माथा टेका। विनतियां करती, ''सतिगुरू जी सभी का सहाई होवे'' आप जी के चरणों का प्रेम बख्शीं।'' बीबी कर्मी को नाम दान देकर निहाल किया। लड्डू दुर्गे को खाने के लिए कहा। सभी लड्डू खिलाकर दूध का लोटा भी पिला दिया। दुर्गा घर से भी खाकर आया था। दुर्गे के मन में आया कि इतना कुछ खिला दिया, आदेश टाल न सका। दुर्गे को घर वापिस लौटने का आदेश दिया, दुर्गे के मन में वहम हो गया कि इतना कुछ खाने से बीमार हो जाउंगा। अभी घर नहीं पहुंचा कि रास्ते में ही बहुत भूख लग गई। एक बार दुर्गा आप जी के लिए भल्ले बनाकर लाया और संगत आप जी के लिए कोई कुछ, कोई कुछ लेकर आई। सभी कुछ संगत में बांट दिया, आप जी ने कुछ न खाया। भगवान सिंह खानखाना वाले ने प्रार्थना की, ''सच्चे पातशाह! आप भी कुछ छको।'' आगे से हुकम हुआ हमारे लिए दुर्गा भल्ले लेकर आ रहा है। इतनी देर में दुर्गा भले लेकर उपस्थित हुआ आप जी ने भल्ले पकड़ कर छक लिए। एक बार फिर बात है माघ के दिन थे, कुएं की मौन पर एक छोटी सी खैल बनी हुई थी, पानी की भरी हुई थी। दुर्गे को हुक्म दिया, काका! इस खैल के पानी से स्नान

करो। दुर्गा बोला मैं स्नान करके आया हूँ। महाराज–आदेश का पालन करीदा है।'' दुर्गे ने खैल में स्नान किया, उस पानी से अद्‌भुत सी महक आई, न मालूम इस खैल में कुम्भ लगा हुआ था, सारे जगत के तीर्थ इकट्‌ठे किए हुए थे। स्नान किया, मन शान्त हो गया। आंखें नाम के सरुर से भर गई। दूर्गे का चोला बसन्ती रंग में रंगा गया। एक पैनसिल देकर चलता किया। तुम्हारी सरकार के घर नौकरी लाग दी है। घर पहुँचा तो चिट्‌ठी आई हुई थी। रेलवे में अपलाई किया हुआ था। सारी जिन्दगी रेलवे में नौकरी की। इतनी देर में बीबी बन्ती दुर्गे की भरजाई अपने पुत्र हजारे को साथ लेकर चरणों में उपस्थित हुई। हजारा सातवीं कक्षा में पढ़ रहा था। कलम कागज देकर पटवारी बनने का वर दिया। दसवीं पास कर हजारा सिंह पटवारी बना। तमाम जिन्दगी पटवार का काम किया। इस समय में जिस किसी ने बी दर्शन किए, उसे भव सागर से पार लगा दिया। संसारे अमली ने गाँव की सारी सम्पत्ति बेच कर खा ली। शरीर फूला हुआ था। ऐसी मेहर की नज़र से देखा सारे अमल छुड़वा दिए, साथ ही हुकम दिया सौण मल्ल के खेतों का तुझे मालिक बना दिया। किस्मत का सूर्य उद्‌य हो गया। अधिक मेहनत करने और राजा साहिब जी के आर्शीवाद के साथ सौण मल्ल के सारे खेत खरीद लिए। जैसा भी किसी को हुक्म किया, सभी सत्य हुआ।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

साखी रतने का कोहढ़ दूर करने की चली

रतना गाँव गुणाचौर का रहने वाला था। इसके फोड़े बहुत निकला करते थे। शरीर में से हर समय पस चलती रहती थी। इस दुःख से हर समय दुःखी रहता, उपचार करने पर भी कहीं से आराम न आया। दुःख भन्जन सतिगुरु गाँव गुणाचौर के चढ़ते पासे नाईयां वाले छप्पड़

के किनारे जा बैठे। नगर निवासी संगत दर्शन करती है। इतने में हाए! हाए करता डिगता–फिरता रतना भी चरणों में आ गिरा, दुःख से पीड़ित हो रहा था। रोने लगा, अरदास करता, "सच्चे पातशाहो! लाखों कोहढ़ी ठीक किए, मुझ गरीब पर मेहर करो। जैसे रजनी के पिंगले को छप्पड़ी में स्नान करवा कर राज़ी किया, मेरा दुःख भी दूर करो।" सतिगुरू मेहरबान, पापी जीवों का उद्धार करने वालों का हुकम मान कर रतने ने स्नान किया, शरीर अरोग कन्चन जैसा हो गया। फिर सारी जिन्दगी कोई बीमारी न नहीं हुई। इस छप्पड़ में और बहुत से असाधय रोगी स्नान करवा कर राज़ी किए। फोड़े–फुन्सियां, खारिश, पाओ, दादर, चम्बल यह जो बीमारियां हैं, कोहढ़ की बीमारियां हैं, बहुत से रोगी पण्डित दीना नाथ के कुएं पर स्नान करवा कर ठीक किए। बहुत सारे आदिधर्मी, वाल्मीकिए महाराज जी के हुकम से पण्डित दीना नाथ के कुएं के ऊपर स्नान करने के लिए जाते, गण्डू, फण्डू कुएं के ऊपर चढ़ने न दें। दीना नाथ ने वाल्मीकियों को कह दिया, राजा साहिब जी के हुक्म से मेरे कुएं पर स्नान करो। ब्राह्मण को कह दिया राजे ने तो दुनिया की भलाई करनी है, स्नान का तो बहाना रखा हुआ है। अनाथों के नाथ दुःख भंजन हारे, परोपकारी, सभी में भगवान का रूप जान कर सेवा की। बहुत सेवा से खुश होकर दुःख दूर कर देते थे।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

साखी पण्डित दीना नाथ के साथ हुई

पण्डित दीना नाथ गाँव गुणाचौर का रहने वाला था। इसका पिता नाभ कंवल राजा साहिब जी का अनन्य सेवक था। दीना नाथ पढ़ने में बहुत होशियार था। लाहौर डी. ए. वी. कालेज में पढ़ा, संस्कृत अमृतसर

में पढ़ी। पढ़ाई में एक नुक्स है अहंकार का रोग पड़ जाता है। सियासी पढ़ाई के साथ ब्रह्म का विचार भी जरूरी है। जे ब्रह्म की विचार न की जाए तो, वह खुदा की शक्ति को नहीं मानता। किसी गुरू–पीर को नहीं मानता। विश्वास नहीं रखता कि प्रभु की शक्ति दुनिया में काम करती है। जो अन्दर बाहर प्रकाश है, प्रभु की जोत का ही है। एक दिन लहौर से गाँव आया। रात सोए हुए को नाभ कंवल राजा साहिब जी के दर्शन की झलक पड़ी। रोम–रोम में प्रेम जाग पड़ा। सोई किस्मत जाग उठी। दूसरे दिन वह सुबह पीरों के पीर सभी के सांझे सतिगुरु के चरणों में जा उपस्थित हुआ। आप जी डोगर के कमरे के ऊपर बैठे थे। जमाल डिट्ठा दीदार पाया ते ऐसा जलकारा पड़ा कि कोई सुध न रही, ऐसा प्रेम का जाम पिया की रोम–रोम में प्यार की लहर जाग पड़ी। पण्डित जी प्रेम की दात सतिगुरू जी से लेकर वापिस फिर पढ़ने जा लगे। एक दिन प्रिंसीपल ने सारे विद्यार्थी इकट्ठे कर कहा सरकार का आर्डर आया है कि मुलतान में बीमारी फैल गई है, सफाई के लिए, रोगियों की सेवा संभाल के लिए जो विद्यार्थी खुशी से जाना चाहता है हाथ खड़ा करे। सभी से पहले दीना नाथ जी ने हाथ उठाया। पण्डित जी को मुलतान भेजा गया। कुछ दिनों बाद दीना नाथ बीमार हो गया, घर जाने की आज्ञा मांगी, छुट्टी मिल गई। घर आ कर कुछ दिन रहे। एक दिन सतिगुरु जी के दर्शन करने गया, अभी दूर नहीं था, सतिगुरु जी ने हुक्म दिया, ''बच्चा! भाग चल, मुलतान चल, भाग दुःखी रोगियों की सेवा करो। इन्सान की सेवा भगवान की सेवा है। इसी में भला है, भक्ति है। जैसे गुरु दसवें ने वैद सुजान सिंह को आदेश दिया था। पण्डित जी हुक्म पाकर सेवा करने लगे। विद्या हासिल करके घर वापिस आ गए। दिल्ली किसी नौकरी पर लगना है, आज्ञा लेने सतिगुरू जी के पास गया। आगे सतिगुरू बोले,

''राजा का नौकर होकर किसी और का नौकर नहीं होना चाहिए, घर में गद्दी लेकर बैठे रहते, ज्योतिष हिकमत का काम घर बैठे ही बहुत चल पड़ा। एक बार दिल्ली डॉक्टर ने कोई रोगी देखने के लिए बुलाया। रोगी को देखकर जवाब दे दिया, जवाब देकर जामा मस्जिद देखने जा रहा था। एक फकीर ने आवाज़ दी, आवाज राजा साहिब जी की थी, दिव्य आवाज़ कानों में गूँज उठी, रोगी का इलाज कर देना था, वापिस उसी रोगी को दवाई दी, रोगी ठीक हो गया। दीना नाथ घर आकर काम करते रहे, कई बार जिन्दगी में अच्छे बुरे दिन आ जाते हैं, पैसों की तरफ से हाथ कुछ तंग हो गया। मन में सतिगुरु जी के साथ नराज़गी करने लगा, कोई नौकरी नहीं करने दी, पैसों की तरफ से तंगी आ रही है। एक दिन दर्शन को जब गया, सतिगुरू अन्तरयामी बोले, पण्डित तुझे क्या चिन्ता है?'' तू तो मुंशी का काम करी जा, कार्य तो तुम्हारे हम कर रहे हैं। कुछ दिनों बाद एक रुपया झण्डू लोहार को देकर आखा, ''पण्डित को दे देना।'' झण्डू घर आया तो, पण्डित घर नहीं था। झण्डू ने रुपया भागे को देकर पातशाह जी का हुक्म सुनाया। भागा भी महाराज जी का प्रेमी पूर्ण भगत था। भागे ने दीना नाथ को रुपया दिया। दीना नाथ ने रुपया वापिस कर दिया, ''क्या करना है एक रुपया।'' भागे ने दूसरे दिन वही रुपया महाराज जी के चरणों में माथा टेका। यह पण्डित दीना नाथ ने रुपया नहीं लिया। महाराज जी बोले, ''भागा! यह रुपया उसको दे देना, कुआं लगाने के लिए हमने पैसे भेजे है।'' फिर पण्डित जी ने रुपया रख लिया। कुआं लगाने की तैयारी कर ली। सब वस्तुएं ईटें इत्यादि उद्धार मिल गईयां ,कुआं लग गया। गीता आश्रम गाँव में काफी बड़ी इमारत बना कर खोली गई। धर्म का प्रचार शुरु किया गया मरीजों का उपचार करना शुरू कर दिया। 1400 रुपया पण्डित जी

सिर पर कर्ज चढ़ गया। पण्डित जी फिर चिन्ता करने लग पड़े। बहादुर पण्डित नारायण दास, इसकी घर वाली द्रोपति थी, पुछ रोड करोल बाग नई दिल्ली मकान नंबर 2 में रहते थे। यह भी राजा साहिब जी का बहुत प्रेमी था। दीना नाथ के साथ भी इनका बहुत प्रेम था। द्रोपति महाराज जी के दर्शन को आई, चरणों में नमस्कार करके बैठ गई। सतिगुरु जी के दर्शन कर मन शीतल हो गया। सतिगुरु बोले, "द्रोपदी! पण्डित दीना नाथ को मिलकर जाना।" पण्डित दीना नाथ के पास आ गई, सुख सांद पूछी। महाराज जी के बोले हुए वचन पण्डित जी को सुनाए। पण्डित जी ने सारी बात खुलकर बताई 1400 रुपए कर्ज सिर है, नींद नहीं आती, मन बेचैन रहता है। द्रोपदी पण्डित जी की बात सुनकर चुप रही दिल्ली जाकर 2000 रुपया भेज दिया। पण्डित जी का सारा कर्ज उतर गया। एक दिन पण्डित जी दर्शन को गए तो क्या देखा कि लक्ष्मी गल में पल्ला पा कर खड़ी विनतियां करती देखी, पण्डित जी को निश्चय हुआ जितने भी देवी देवते हैं, समेत लक्ष्मी, आप जी के चरणों के दास हैं, एक बार आप जी बोले इतनी माया आया करेगी, संभाल नहीं होगी।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

आगे साखी इन्द्र के साथ हुई

इन्द्र गाँव मजारे वाला आप जी पर बहुत श्रद्धा रखता था। इस पर सतिगुरु जी की बहुत मेहर थी। गाँव मजारे से बहुत सारी संगत हरिद्वार का कुम्भ का मेला दिखाने के लिए गंगा माई पर स्नान करवाने ले गया। कुम्भ लगा हुआ, झाकियां निकल रही थी। पहले सन्यासियों की, बैरागियों की, उदासियों की, निर्मलियों की एक दूजे से बढ़कर हाथी श्रृंगार कर जलूस निकल रहे थे, रण सिंगे बज रहे थे। महंतों

के सिरों पर चंवर झूल हो रहे थे। महंतों के चिहरे सूरज की तरह चमक रहे थे। गंगा दरिया के पानी की लहरें सूर्य की किरणों से टकरा रही थीं। पानी की तिरंगों के नजारे देखने योग्य थे। हाथी फुंकारे मार रहे थे, गले में टल खड़क रहे थे। ऐसी शोभा बनी हुई थी। इन्द्र की शाही सवारी को मात पा रही थी। हरिद्वार के चारों और बाग–बगीचे इन्द्र के नन्दन बाग को पीछे छोड़ रहे थे। देवते, परियां देवपुरी में से महापुरुषों पर फूल बरसा रहे थे। गंगा नदी का बहाव महापुरुषों के चरण स्पर्श करके जा रहा था। ठण्डी–ठण्डी, मीठी–मीठी हवा पहाड़ों में से होकर गुजर रही थी। ऋषिकेश के टिब्बों में बैठे साधू तपस्या कर रहे थे, जटाओं में जानवरों के घंसले थे। आंखों के भौहों के बाल नाभि पर पड़ रहे थे। सूखकर मजनू की तरह तवीत बने हुए थे। ऐसे महापुरुषों के दर्शन करके गाँव मजारे आते ही इन्द्र पातशाह के यहां माथा टेकने गया। सारी संगत साथ थी। आप जी कहने लगे, ''इन्द्र! आप को कहीं जाने की जरूरत नहीं, भानेआल (राजा साहिब के मजारे) में सभी तीर्थ लाए हुए हैं, ''जिन्ने तीर्थ लोचे धू, साधू की ताई'' मजारे का तो बच्चा–बच्चा पुत्रवधुओं का भी उद्धार हो जाएगा। तीर्थ तो इन्द्र प्रतिदिन यहां आते हैं। ऐसा उपदेश गाँव मजारे संगत को किया। ''धर्म की किरत करनी, बाँट के छकना, आए साधू की सेवा करनी, सील, संयम, दया, धर्म की पालना करनी,नाम जपना, दान करना, इन्सान का मुख्य धर्म है, चोरी, यारी बदी, विरोध, निंदा, चुगली, खोटी संगत से सदा दूर रहना।'' ''मूर्ख की संगत कीए, पण्डित भी दुःख पाए।''

बोलो भाई वाहिगुरू।।

साखी संत घुंगरु दास के प्रथाए चली

संत घुंगरु दास इसका जन्म पूर्व देश का था। यह सन् 1931 में गाँव रहिपे आए। यह धूनियां ला कर तप करते थे। रिद्धियां–सिद्धियां दिखा कर अपने पीछे लोगों को लगा लेते थे। सात घुमां ज़मीन रहिपे के लोगों ने नाम लगा दी। हकीमपुर की संगत ने कुआं नाम लगा दिया। थोड़ी देर में मकान संगतों ने बना दिया। कई यज्ञ करवाए, मेले लगने लगे। रहिपा, हकीमपुर, चाहलां से बहुत सी संगत राजा जी के दर्शनों को जाती। मजारे जाने से संगत को रोकने लगा। घुंगरु दास ईष्या की अग्नि में सड़ने लगा। मैं राजा साहिब जी से कम नहीं, मेरे पास से सभी मुरादें मिलती हैं। एक ठाकुर सिंह, सुरमुख सिंह का पुत्र, यह घुंगरु दास के पास नहीं जाता, इसका विश्वास राजा साहिब पर पक्का है। घुंगरु दास ने कई तरह के डरावे दिए। जैसे गुरु अमरदास जी तीसरे पातशाह की संगत से तपा ईष्या करता था, इसी तरह से घुंगरु दास ठाकुर सिंह से ईर्ष्या करता। ठाकुर सिंह अपने सतिगुरु जी से पूछना चाहता था। घंगरु दास के पास जाऊँ अथवा नहीं। ठाकुर सिंह सतिगुरु जी के दर्शन करने गया, मन में विचार था। जो हुक्म हो सो करां। सतिगुरु कहने लगे, ''ठाकुरा ! अपने मकानीं आईदा। किसी के मकान में तो पैर न धरिए। भाग चल ढीले नहीं रहीदा। पूर्व से लाकर दुनियां वसा दी, जमीन, कुआं नाम लगा दिया। उस संत को कहना था हमारा ठेका दे दे अगर ठेका नहीं देता तो कहना उठ कर चला जाए।'' घुंगरु दास चार–पाँच साल रह कर अपने छोटे भाई हरी दास के नाम ज़मीन लगा कर चला गया। आप जी ने ठाकुर सिंह को पहले हुक्म किया था। अगर हाला (हिस्सा) नहीं देता तो उठकर चला जाए। तो वचन सत्य हो गया। शेर अकेला जंगल का राजा होता है। और कोई जानवर उसका शरीक बन कर

नहीं रह सकता। एक बार घुंगरु दास इस विचार से गया कि मैंने पूछना है कि साधू होकर राजा क्यों कहते हो? जब सामने गया ऐसा दस्तूर देखा चढ़ते सूर्य की तरह दग–दग करता चेहरा आत्मिक बल की ताब न सहार सका। पूछना तो क्या था रंग पीला पड़ गया। टाँगे लड़खड़ा गईं, शरीर थर–थर कांपने लगा। सुन्दर प्रीतम बोले, ''साधू सरदाई पी।'' घुंगरु दास बाहर निकल गया। और बहुत से साधु भी इसी विचार से आते थे, सब की तसल्ली हो जाती। एक बार एक साधू को गाँव के लड़के पीटने लगे। धन्नू हलट चला रहा थ। दो कियारे और भरने धन्नू को ऐसी खींच पड़ी कि दो कियारे सूखे छोड़ कर आप जी के पास आ गया। धन्नू को हुक्म किया, ''साधू को रसोखाने लेकर जाओ, लंगर में सरदाई पिलाओ आए हुए साधू की सेवा करनी चाहिए मारना नहीं चाहिए।'' धन्नू बाहर छोड़ आया वापिस आ कर नमस्कार की, दरवाज़े से बाहर खड़ा था बोले, ''चल धन्नू! बाकी बचते कियारे सींच लो, तुझे आप ही बुलाया था।'' आप जी डोगर क घर बैठे थे। एक छोटे खटकड़ां से बुजुर्ग शक्कर लेकर आया, जानवरों को डलवा दी। बुजुर्ग कहने लगा, ''आप ने आप नहीं छकी, बहुत से जानवर इक्ट्ठे होकर खा रहे थे। महाराज बोले, ''गुरमुखा! देख कितनों के मुँह में पड़ी है, ये हम अकेले ही छकते तो यह जीव कहां से छकते। सब में आप ही रहते हैं। एक आत्मा खुश हो जाए तो तीनों लोग खुश हो जाते हैं। आत्मा को खुश करने से परमात्मा खुश हो जाता है। ''जल–थल महीअलि पूरिया रविआ विच वणा'' राबिया ने एक प्यासी कुतिया को अपने सिर से बाल उखाड़ कर बाल की डोरी बना कर सिर का कपड़ा गीला करके कुएं में से पानी निकालकर पिलाया। मक्के के हज को जा रही थी, रेगिस्तान के मारूथलों में बैठी वो ही सैकड़े मील मक्का आगे था। मक्क के दर्शन हो गए। इसी तरह एक दिन करतार सिंह को हुकम किया, ''करतारा

जाओ पांच किलो आटे की रोटियां पका कर लाओ।'' करतारा प्रसादे बना कर ले आया। प्रसादे के छोटे–छोटे टुकड़े करवा कर जानवरों को डलवा दिए। कहते, ''करतारा! जे गृहस्थी इस चाल से चलती रहे तो कोई इसका मुकाबला नहीं कर सकता। उस दिन करतार सिंह को भविष्यवाणी सुनाई और कहने लगे, ''करतारा! बंगीं जा कर डौंडी पीट कर आओ टोपी वाले को कहना, हिन्दुस्तान छोड़ कर चला जाए। (अंग्रेजों की तरफ इशारा था) जवाहर लाल अच्छा आदमी है, उसको राज दे दो। जैसे गुरु तेग बहादुर जी ने दिल्ली में कोठे के ऊपर चढ़कर आखा था, टोपी वाले सिक्ख को देख रहे थे। यह इशारा नाभ कंवल राजा साहिब जी ने अंग्रेजों को हिन्दुस्तान में से जाने का किया। जवाहर लाल जी को हिन्दोस्तान की वागडोर संभालने का हुक्म किया। सन् 1947 में अंग्रेजों के चले जाने के बाद पं. जवाहर लाल जी भारत के प्रधानमंत्री बने। ऐसे भविष्यत वचन बहुत से हैं।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

साखी बीबी कर्मी के साथ हुई

एक दिन की बात है नाभ कंवल राजा साहिब जी अपने घर, जहां आप जी का पलंघ सदा बिछा रहता था, उस कमरे में बैठे थे। कर्मी ने विनती की चैन को बुखार चढ़ा हुआ है। महाराज जी ने एक लड्डू देकर हुक्म किया। कर्मी ने बख्शा हुआ लड्डू चैन के मुंह में पाया, बुखार उतर गया। बुखार उतरा, सतिगुरु पूरे अपनी कृपा धार। आप जी ने दरवाजा बन्द कर लिया। सात दिन दरवाज़ा न खोला, न कुछ खाया, पिया अन्दर गुप्त आत्माओं से वचन करते रहे। यह कौतक दास ने भी देखा। नल वाले पासे दीवार में छेद थे। इन छेदों के रास्ते दर्शन किए, जैसे किसी सभा में बातें करते हैं, इस तरह करते थे। दूसरे

दिन छेद बन्द करवा दिए। सातवें दिन दरवाज़ा खोला, कर्मी करतार सिंह की बहन को आवाज़ लगाई, कर्मी गल में पल्ला डाल कर उपस्थित हुई। मिट्टी की सात टोकरियां मंगवाकर पश्चिम के पास दीवार के पास सुटवा कर एक चबूतरा बना दिया। ऊपर अपने हाथ से ईटें लगाकर कहने लगे, यह जगह आज मानता योग्य बना दी, यहां नमस्कार किया करो। चार बर्तन मिट्टी के एक बड़ा, तीन छोटी मंगवा कर हुक्म किया। पानी से भर दो। यह हमने चार सरोवर रखे हैं, साथ ही करतार सिंह को आवाज़ लगा कर कहा, लेकर आओ नल का पानी, पवित्र कर दें। करतार सिंह ने गड़वा पानी का भरकर चरणों में रख दिया। पवित्र चरणों के स्पर्श से नल का पानी पवित्र कर दिया। पहले आप ने कभी भी नल का पानी नहीं था पिया। सरोवर गागर मल्ल मारवाड़ से आकर अकेला ही बना देगा। सवा मण नमक मेरे लंगर में डला करेगा। संगमरमर के तमाचों में आटा गूँथा जाएगा। गांव रसोखाने को रास्ता जाता था, कई बार प्रतापू ने टहनियां लगा देता था। एक दिन पातशाह ने हुक्म किया, यहां सड़कें बनेंगी। नहरें भी चलेंगी, बिजली की लाईटें भी चमकेंगी। यह वचन पातशाह जी करतार सिंह, किशना, धन्नू और बीबी कर्मी को सुना रहे थे। इस समय पूर्ण रसूलपुरिया जिला लुधियाना मालवे से आए थे। नाजर सिंह के बचाव के लिए विनती करना चाहता था। आगे से सतिगुरु अन्तरयामी बोले पूर्ण सिंह को कृपा कह कर बुलाया करते थे। ''कृपा! ऐसी सिफारिशें नहीं करवाया करते।'' पूर्ण सिंह ने फिर प्रार्थना की, ''इसका बचाव अवश्य करना है।'' अपने प्यारे भक्त की प्रार्थना सुनकर हुक्म कर दिया, ''जाओ! करतार भली करेगा।'' नाज़र सिंह को अदालत में पेश कर दिया। नाजर सिंह के दूसरे साथी को मौत की सजा हुई थी। नाजर

सिंह बरी हो गया। गाँव रसूलपुर के लोग आप जी के बहुत प्रेमी थे। फौगा सिंह जिसे महाराज जी मुनशा सिंह कह कर बुलाया करते थे। खुण्डा सिंह, दलीप, सरदारा सिंह मुख्य सेवक थे। इन सिक्ख सेवकों के बहुत से कार्य किए। आप जी की बरसी पर आकर अखंड पाठ खुलवाते हैं।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

साखी ज्योति–जोत समाने की चली

महाराज नाभ कंवल राज साहिब जी ने बहुत सारे कौतक किए। अनगिणत जीवों का उद्धार किया। 1939 कार्तिक के दिनों में ऐसी हवा चली, शोर मच गया। एक–दूसरे को पूछने लगे कहते राजा साहिब जी ने समा जाना है। एक महीना शोर मच कर बन्द हो गया. एक दिन दीप सुरमुख की नातिन ने पूछा महाराज जी बहुत शोर पड़ रहा है, यह क्या बात है आप जी कहते यह भी एक लीला थी। यह बात सुनकर जो हमारा भक्त था, हमारे पास आ गया। दूसरे साल 1940 ई. को एक ढली रात को करतार सिंह को आवाज़ लगाई। महाराज जी अपने घर बैठे थे, हुक्म हुआ करतारा आँगन में झरना पा लेते तो अच्छा रहना था, तुम्हारे से होना नहीं।अपना आप संभाली, भले कर्म करीं, भला करने से ही भला होता है। नशीली चीज़ का प्रयोग मत करना, जो गुजर जाए, पीछे ग्रंथ खुलवा देना चाहिए। हम चलते हैं करतार सिंह का वैराग्य फूट पड़ा। सिर चक्कर खाने लगा, पैर ज़मीन से उठते जा रहे थे। शरीर कांपने लग पड़ा। थिरकती जुबान से बोलने लगा, ''हमारा कोई ठिकाना है? हम किधर को जाएंगे। आप जी के बिना हमारा कोई सहारा नहीं, हमें किसका

लड़ पकड़ा के जा रहे हो? सतिगुरु जी का हुक्म हुआ, अगर बोले तो तुझे कुछ बना दें? करतार सिंह बोला जी मैं गृहस्थी हूँ। मेरे पास से यह सब नहीं सहारा जाना, बाहर बैठे हैं, इनको मानता नहीं। संत अवधूत जी पश्चिम वाले कमरे में बैठे थे। गुरदास खानखाना वाला सीढ़ियों के नीचे बैठा था, करतार दास मसतों की जगह में बैठा था। पानी की भरी हुई गागर, जगता हुआ लैम्प गुरदास के आगे रख दिया। एक पहर रात रहती 4 बजे सुबह माई जस्सी के घर चले गए। जस्सी के पुत्र करतार सिंह और उसकी पत्नी नन्दी आप जी के पूर्ण भक्त थे। जस्सी रात को सोते समय अपने गले के कपड़े नहीं उतारती। हर समय सेवा के लिए तैयार रहती थी। जब आप जी की बल–बल की आवाज कानों में पड़ी नन्दी ने जाकर दरवाज़ा खोला। जैसे विदुर की स्त्री ने भगवान कृष्ण की आवाज सुनकर प्रेम में मस्तानी होकर दरवाज़ा खोला था। ऐसे नन्दी ने दरवाजा खोला, सेवा के लिए विनती की। हुक्म हुआ स्नान करना है, स्नान करके अन्दर चले गए। घर के पूर्व वाले कमरे में आसन लगा लिए, जहां पहले आकर बैठते थे। एक खिड़की राहीं संगतें दर्शन करती रहीं, कीर्तन हर समय संगतें दरवाजे के आगे करती रहती थी, बहुत कम बोलते थे। प्रसादा छकना भी बन्द कर दिया, कुछ दिन ऐसे रहते रहे। 30 अगस्त 1940 (15 भादों समत 1997) को ज्योति जोत समा गए और 17 भादों की अमावस को संस्कार किया गया।

सुबह 4 बजे अन्दरों बाहर निकले, जस्सी को कहा हमें कौन सी जगह देनी है। लेप करके आसन लगाना है। जस्सी बोली सारा घर आपका ही है, जहां दिल करता है, आसन लगा लो। कई वार कहा जस्सी को समझ न आया न ही मन में आया कि शरीर छोड़

कर हमारे से हमेशा के लिए बिछुड़ जाएंगे। अन्दर चले गए, बाहर से जस्सी को ताला लगाने को कह दिया। आप जी ने अन्दर से कुण्डा लगा लिया। जिस कमरे में सदा बैठते थे, सफैद चादर लेकर लेट गए. चोला त्याग कर सच्चखण्ड चले गए। कोटि सूर्यों के समान उजाला हुआ। अवतार मात उजाला लोग से जब चोला छोड़ कर सच्चखण्ड जाते हैं तो अकाल पुर्ख साथ होता है, बड़ी शक्तियां साथ होती हैं। बड़े–बड़े देवते सितारे आकाश में से दर्शन करते हैं। आप जी उस शुद्ध स्वरूप में जा समाए।

जिऊ जल महि जलु आइ खटाना।। तिऊ ज्योति संग ज्योति समाना।।

तीन दिन कुछ पता न चला कि आप ज्योति–जोत समा गए हैं, तीसरे दिन कुछ भरम पड़ने लगा। दरवाजे की खाली जगह से संगत देखने लगी, महाराज हिलते–जुलते नहीं, गाँव के लोग जस्सी को कहने लगे, ''ताला खोलो।'' जस्सी ने ताला न खोला, बोली मुझे ताला खोलने का हुक्म नहीं। झिंगड़ा, रहिपे और गांवों में भी संदेशे भेज दिए। रहिपे से मियां सिंह, ठाकर सिंह, ज्ञान सिंह, झिंगड़ां से हरनाम सिंह, गुरबख्श सिंह, चरण सिंह और जो भी सुनता रात को मजारे पहुँच गए। यह सभी मुख्य सेवक संत करतार दास के पास गए। करतार दास आगे से बोला, 'नहीं'' फिर संत अवधूत जी के पास गए। संत जी बोले, ''महाराज जी सैर को गए हुए हैं। ज्योति–जोत नहीं समाए।'' शरीर छोड़ कर पहले भी कई बार सैर को चले जाते थे। कई दिन दरवाजा नहीं खोलते थे, न कुछ खाते–पीते थे, निराधार ही रहते थे। इस विचार से संतों ने बोला। गुरदास मस्त हालत में था। इसने आप ही ऊँची आवाज में करतार सिंह को कहा, ''करतारिया! भाणा वरत चुका है, शेर वन, खाली कर गया, शेर चला गया। बापू जी ज्योति जोत समा गए हैं। सभी ने इकट्ठे होकर

खिड़की तोड़ी। जब अन्दर जा कर देखा तो महाराज जी ज्योति जोत समा चुके थे। नहा कर बरामदे में पलंघ (बिछौना) विछा कर महाराज जी के शरीर को रखा। रातो–रात ही गाँवों में दूर–दूर तक पता चल गया। सत्रह भादों दिन रविवार पालकी सजा कर, संस्कार की तैयारी की गई। जिसमें लाखों की गिनती में संगत इकट्ठी हुई, पालकी का जलूस निकला। जिस पर देवतों ने फूलों की वर्षा की, आंकाश में से सितारे बहुत नीझ के साथ दर्शन कर रहे थे। बहुत भारी जलूस गाँवों के चारों ओर होता हुआ, जहां आप जी ने पहले पंजाब के कुएं पर बैठकर रसोखाने की जगह एक कमरा बना कर एक पलंघ रखवाया था, उसी जगह आप जी संस्कार किया। बेअंत घी के टीन, सैंकड़े मण मेवा, लाखों रुपए, पैसे आप जी के अंगीठे में डाले गए। तीन दिन आप जी का अंगीठा जगता रहा। इस ही स्थान पर आप जी की समाधि बनी हुई है। अंगीठे में से झिंगड़ां की संगत ने राख उठा कर गुरुद्वरा दुःख निवारन में समाधिं बना दी। हिन्दू, सिक्ख, मुस्लमान आप जी को सांझा पीर मानते थे। बहुत सारे गाँवों की संगतें आप जी के शरीर को अपने गाँवों में लेकर जाना चाहती थी, इसीलिए आप जी ने ज्योति जोत समाने का किसी को भेद नहीं दिया। आप जी ने अपने ग्रंथ में भी लिखा है।

बूदोबास वलायत छोड़ दई अब पाइ लीया ईहां आइ मजारा।।
रैह जन बीच सकूनत दाखल समझ चली कुछु ऐ दिलदारा।।
ऐह बंदोबस्त हो कोसस से नहीं सोर, पवे कभी आइ करारा।।
दास भगवान न होह नादान लै रमज पछान है की गुफतारा।।
(स्वैया 166, भगवान बलास)

हमने अपने रहने का स्थान (जो प्रदेस के पास है) छोड़ दी है। अपना सारा कुछ छोड़ कर अब आकर मजारे को अपना ठिकाना

बना लिया है। परन्तु हे प्यारे! इस रहस्यमई भेद को ज़रा गहराई से समझने का प्रयत्न कर, क्योंकि यहां एक दिन लुटेरे आकर दाखिल होंगे। यह समय बहुत कोशिश, बहुत कठिनाई से संभाला जाएगा, क्योंकि बहुत शोर–शराबा होने का डर है। राजा साहिब जी ने फिर सुचेत करते कहा है कि इस रहस्यमई भेद को अकल और चतुराई से समझने का प्रयत्न कर।

इस करके आप जी ने भेद रखा, राख उठाने से झिंगड़ां वाली संगत से काफी शोर पड़ा। यह नूरी किरणां श्री हजूर नाभ कंवल राज साहिब जी की जीवन लीला जन्म साखी जो भी पढ़ेगा और सुनेगा, सभी का उद्धार होगा। सभी तीर्थों के स्नान का फल प्राप्त होगा। अथम श्री जन्म साखी अध्याय संपूर्ण।

बोलो भाई वाहिगुरू नाभ कंवल राजा साहिब जी सहाय।।

नूरी किरणों का सार

आप जी का जन्म गाँव बल्लोवाल नानके घर सन् 1862 को हुआ। आप जी का पैतृक गाँव मन्नणहाना (जनपद होशियारपुर) था। आप जी ने गाँव मूसापुर मौलवी शाहदीन के पास से विद्या प्राप्त की। चौदह साल की आयु में गाँव महिरमपुर गरचे संत गंगा दास के डेरे में संत मंडली के साथ कुछ समय रहे। इस ही वर्ष बूटा सिंह और वरियाम सिंह गाँव झिंगड़ा वालों को प्रेरणा से झिंगड़ी संत मण्डली के साथ आए। यहां भाई जवाहर जी के साथ मिलाप हुआ। यहां ही रहते हुए बाहर गांवों में आप जी के बहुत से सेवक बन गए। बाबा सरमुख सिंह की प्रेरणा से गाँव रहिपे आ गए। सन् 1905 को रहिपे सावन के मास में तख्त की रनचा की। सन् 1906 चेत्र की सक्रांति को गाँव झिंगड़ां में गुरुद्वारा दुःख निवारण साहिब की नींव रखवाई। कार्तिक मास में सन् 1907 को गांव गोसलां में गुरुद्वारा थड़ा साहिब बनाया। पोह माघ के दिनों में आप पटियाले और नाभे चले गए. वहां मस्त साहिब दास जी से मुलाकात हुई। उस समय आप जी की आयु 40–42 वर्ष की थी। मस्तों की संगत करने से पूरे नग्न होकर बार देश मुस्लमान, ननकाना सहिब, गुजरात आदि शहरों की जांकी लेते हुए 1909 में भादों के दिन आप जी गाँव रहिपे में आ गए। जब रहिपे से उठकर गाँव झिंगड़ां को आए तो संगत ने दोबारा आप जी के वस्त्र पहनाए। 1910 को माघ के दिनों में गाँव सुज्जों में जा बैठे। यहां आप जी ने बंगला साहिब गुरुद्वारा बनवाया। 1913 को आप जी मग्घर के दिनों में वापिस गाँव मजारे पंजाब सिंह के कुएं

पर आ बैठे। दो वर्ष इस कुएं पर बैठे करतार सिंह मुसापुरिया के पास से लंगर का नक्शा बनवा कर फाड़ दिया। सन् 1916 में आप जी गांव मजारे गाँव से पूर्व वाले पासे यहां आजकल आप जी की समाधि और लंगर चल रहा है रसोखाना साहिब की रचना की और बाबे माने ने झिंगड़ां वाले भाई जवाहर सिंह के लड़के इन्द्र सिंह को एक रीस अथवा गरुना के बूटे के नीचे लंगर तैयार करके छकाने का हुक्म किया। यहां–यहां भी आप जी ने चरण डाले, बड़े–बड़े गुरुद्वारा बने हुए हैं। हर समय लंगर चलते रहते हैं। संगत की तरफ से अखण्ड पाठ बेअंत खुले रहते हैं। हज़ारों ही जीवों की सेवा करते हुए जन्म सार्थिक कर रहे हैं। हज़ारों ही रोगी सेवा करने से, लंगर के बर्तन साफ करने से स्वस्थ होते हैं. आप जी के रचे हुए तीर्थों के रूप में संगतों के भले के लिए कुएं में अमृत रूपी जल से स्नान करने से स्वस्थ हो ज़ाते हैं। बहुत सी मिसालें हैं। कुष्ठ रोगी ठीक होकर जाते हैं। हज़ारों जीवों के नाम में रंगे हुओं के कपाट खोल देते हैं। हजारों बेऔलाद जाते हुए घरों को आबाद किया, ऐसी शक्ति है।

ब्रह्म ज्ञानी का कौन जाने भेद. आप जी सदाचित, सदा अनंद विभु रूप दीपों, लो, खण्डां, ब्रहमण्डां के मालिक सर्व शक्तिमान सन् 1940, 14 भादरों दिन बृहस्पतिवार को ज्योजित ज्योत समा गए।

संसार एक स्वपन है

नरवत एक सिंहासन सोया
सुखने भया भिखारी

बली प्रथमा मान धाता
मही पम जिन रथ चैंकर कीए सत दी पंग
भुजो भी, भर्थ अंत के अंत काल खंडंग
तहि कर दल करन महाबली तिन आसं।

महाभारत के युद्ध में कर्ण मूर्छित हो गया। डेरे में जाकर कृष्ण जी ने एक लम्बी सांस लेकर अर्जुन जी को कहा, ''आज संसार में से दानरूपी सूर्य कर्ण छिप जाएगा।'' अर्जुन बोला, ''महाराज! दान मैं भी करता हूँ। आप कर्ण की उपमा करते रहते हो।'' भगवान बोले, ''चलो परीक्षा ले लो।'' ब्राह्मण बन कर कर्ण के पास गए जा कर दान मांगा। कर्ण बोला, ''मैं तो मृत्यु की सेज पर पड़ा हूँ। मेरे पास इस समय कुछ भी नहीं है।'' भगवान बोले, ''तुम्हारे दाँतों को सोना लगा हुआ है, तोड़ कर दो।'' करन बोला, ''पत्थर लाकर दाँत तोड़ कर ले जाओ।'' भगवान कहने लगे, ''दान तूने करना है, हम क्यों तोड़े तुम खुद तोड़ कर दो।'' कर्ण ने रींघ कर पत्थर उठा कर दाँत तोड़ कर भगवान कृष्ण के हाथ में पकड़ा दिए। भगवान प्रकट हो कर बोले, ''करन! मांगो जो कुछ मांगना है।'' करन ने हाथ जोड़ कर विनती की, ''अन्त समय में आप जी के दर्शन हुए हैं, आप जी के चरणों में निवास हो।'' भगवान जी ने उसका अपने हाथों से संस्कार किया और जन्म–मरण के आवागमन से मुक्त कर दिया। पृथ्वी के बड़े–बड़े योद्धे, महांबली काल का ग्रास बनते हैं। जैसे मदारी बहुत कुछ दिखाता है, पर वह असल में होता नहीं। ठीक उसी प्रकार संसार के सभी पसारे माया की ही खेल है। जैसे लाहौर में श्री गुरू नानक देव जी ने मुल्तानी राग को माया दिखाई थी। श्री कृष्ण जी ने अर्जुन

को दिखाई थी और विष्णु जी ने नारद को दिखाई थी। इसलिए अच्छे कर्म करने चाहिएं। अच्छे–बुरे कर्म इसके दुःख और सुख का कारण बनते हैं। तीन तरह के कर्म शास्त्रकारों ने लिखे हैं :–

1. प्रारभद कर्म :– जो हम पिछले किए हुए भोग रहे हैं।

2. संच कर्म :– जो जमा हो रहे हैं, जो अगले जन्म में सुख दुख का फल देंगे

3. किरेमान कर्म : जो हम प्रतिदिन करते हैं, इनसे हमारे विचार अच्छे–बुरे बनते हैं। सपना भी किरेमान कर्मों का ही फल है। जैसे राजा जनक को सपना आया, सभी शहर और दरबारी लोग घृणा की नज़र से देख रहे हैं। किसी और बादसाह ने मिसलापरी के तख्त पर कब्जा करके राजे को देश निकाला दे दिया। राजा भूख से पागल होकर जंगल में जा रहा था। खिचड़ी का लंगर चल रहा था। मिट्टी के प्याले उठा कर लोग खिचड़ी डलवाकर खा रहे थे। राजा भी उन लोगों की तरह खिचड़ी लेकर छकने लगा, दो लोग झगड़ते हुए राजा की तरफ आए। जनक जी डरते भागे हाथ से प्याला गिर पड़ा और साथ ही राजा जनक को जाग आ गई। अगले दिन दरबार लाकर ज्योतिषी पण्डितों से पूछा कि यह सच्चा है अथवा वह सच्चा है। किसी से भी राजा जनक के सवाल का जवाब न दिया गिया। अष्टावक्र जिसके शरीर को आठ बल थे, ने राजे की शंका दूर की। न यह सच्चा है और न ही वह। आप दानी हैं, खोटे कर्मों का फल सपने में ही भुगता गया। जैसे गुरू गोबिन्द सिंह जी ने भाई शमीर के सत्र जन्मों का खोटा फल काट दिया था। हरी जैन सकेत मण्डी वाले राजे के भी पांचवें गुरू अर्जुन देव जी ने उस के कर्म सपने में ही भुगत दिए थे। साधू की सेवा दान सत संगत का ऐसा फल है।

''जो कोइ जीओ कहे ऊना को
जम की तलब न होइ''

ऐसा परताप साध संगत का है। मन पानी की तरह है जैसा रंग पानी में डालोगे पानी उस ही रंग का हो जाता है। अच्छे–बुरे खाने और गाने का आठ पहर असर रहता है। मलन आहर नहीं करना चाहिए। जीव हिंसा करना भी पाप है। मुहम्मद साहिब जी ने कुरान में लिखा है :–

''हे इन्सान अपने पेट में हैवानों की कबर बनाना छोड़ दे''

जब इन्सान कर्म करता है तो स्वतंत्र होता है, जितना दिल करे पाप कर्म कर लेता है। जब किए कर्मों का फल भोगना पड़ता है, कलम किसी और के हाथ होती है। उस समय वह बोल नहीं सकता अठारह नर्क शास्त्रकारों न लिखे हैं, 17 नर्क पुरी में हैं। जहां कठिन से कठिन सज़ा पापी भोगते हैं। 18वां नर्क मात लोक में है। अस्पताल, जेलें, कोहड़, संकट आदि हैं। महाभारत के युद्ध में दुनिया भर के योद्धे मारे गए, धृतराष्ट्र ने व्यास जी को पूछा, ''महाराज मैंने कौन सा ऐसा पाप पिछले जन्म में किया? यह तो मेरा शरीर हर समय जलता रहता है। जन्म से अन्धा हूँ। 100 पुत्र मेरे युद्ध में मारे गए। भीम सेन ने दुशासन की बाहें जड़ से उखाड़ कर दुर्योद्धन के रथ में फेंक दी। मैं बहुत सदमा सह रहा हूँ।'' व्यास जी ने बताया, ''महाराज पिछले जन्म में आप राजा थे। एक दिन आप शिकार खेल रहे थे, आप के आगे एक हिरनी और दो बच्चे उसके निकले। आप उसे पीछे चले हिरनी (मृग) एक रीस के बूटे में जा छिपी। आपने हुकम करके चारो

ओर आग लगा दी। आग के सेक से हिरनी और बच्चे और सौ बच्चे साँप के सभी सेक से अन्धे होकर मरे, वह किया हुआ पाप आप भोग रहे हो।''

''जैसा बीजे सो लुने
कर्मा संदड़ा खेत''

प्रारभय कर्म भोगे बिना समाप्त नहीं होता

शास्त्रकारों ने तीन तरह के पाप लिखे हैं। शरीर करके, बानी करके, मन करके। शरीर करके–जैसे शिवाजी ने ब्रह्मा का पांचवां सिर काटा, शिवजी को ब्रह्म हत्या लगी। दुःखी होकर तीर्थों में भ्रमण किया। गोपाल मोचन तीर्थ पर नहाकर शिवजी का पाप छूटा। भऋगु की स्त्री मर गई। भृगु रो रहा था। विष्णु जी ने भृगु को मजाक किया, ''क्यों झूठी माया के पीछे पागलों की तरह रो रहे हो? भृगु ने विष्णु जी को श्राप दे दिया, ''जाओ तुम भी मात लोक में जन्म लेकर इसी माया रूपी स्त्री के पीछे रोते पड़ोगे।

''रोवे राम निकाला भया,
सीता, लक्ष्मनु विछिड़ गया।।

विष्णु जी को राम चन्द्र जी का रूप धारण करना पड़ा। बाणी से किए गए कर्मों का फल भोगना पड़ा। इसी तरह शास्त्रकारों ने पाँच माएं लिखी हैं। अपनी मां, घर वाली की मां, मित्र की मां, गुरु की स्त्री, राजे की स्त्री, पांचों को मां के बराबर समझना चाहिए। अपनी इज्जत, अपने मित्र की इज्जत, मित्र के मित्र की इज्जत, अपनी इज्जत समझनी चाहिए। किसी के साथ विश्वासघात नहीं करना चाहिए। इन्द्र गौतम

के घर पाप कर्म करके पछताया। देवतों को भी किए कर्मों का फल भोगना पंड़ता है। एक दिन राजा भोज शिकार खेलता खेलता जंगल में दूर जा निकला। आगे से शेर निकल आया। राजा घोड़ा छोड़ कर वृक्ष पर जा चढ़ा। वृक्ष पर रीछ बैठा देख कर राजा डर गया। रीछ बोला, ''डर मत! मेरे घर आप आए। मैंने तुझे मित्र कह दिया, रात पै गई। पहले आप सो जाओ, मैं पहरा दूँगा, फिर मैं सोऊँगा, तुम पहरा देना।'' जब रीछ सोया, शेर राजे को कहने लगा, ''रीछ को धक्का देकर नीचे फेंक दो, मैं मार कर चला जाऊंगा, तुम अपने घर चले जाना, मैं भी अपने घर चला जाऊंगा। यह मेरे डर से तुजे नहीं खाता, मेरे जाने के बाद यह तुझे मार कर खा जाएगा।'' राजे ने सोए हुए रीछ को धक्का मारा। रीछ गिरा नहीं। राजा बहुत डरा। रीछ ने फिर कहा, ''तुम डरो मत मैंने तुझे मित्र बोल दिया है। रीछ ने राजा को कहा, ''विश्मरा।'' राजा घर आया। दरबार लगा कर इस का अर्थ पूछा, किसी को न आया। काली दास वजीर को देश निकाला दिया हुआ था. एक समय बादशाह खेलता–खेलता अपनी रानी के बगैर खाना न खावे,–काली दास ने रानी की फोटो राजे के सामने खींच दी। एक जांघ पर एक गुपत तिल था, वह बी लगा दिया, इसी पर बादशाह को शंका हुई काली दास को देश निकाला दिया। काली दास को 14 विद्याओं का ज्ञान था देवी का वरदान था। सवाल का जवाब कोई न दे सका। राजे ने काली दास बारे ऐलान कर दिया, वह जहां भी है, उपस्थित होवे, उसके सारे दोष माफ कर दिए गए। काली दास छुपकर शहर में ही बैठा था, दो तंबू लगाकर बीच में पर्दे लगा कर एक तंबू में आप बैठा और दूसरे में राजा को बिठा लिया। काली दास ने पूछा, ''बताओ! बादशाह आप का क्या प्रश्न है?'' बादशाह कहने

लगा, ''विश्मर'' का क्या अर्थ है?'' कालीदास बोला, ''यह कोई जंगल की बात रात के समय किसी जानवर के संबंध में हुई है। 'विश्मरा' का अर्थ है तुमने किसी के साथ विश्वासघात किया है।'' शास्त्रकारों ने छः हत्याएं लिखी हैं। विश्वासघात बड़ा पाप है। विश्वासघात बख्शा नहीं जाता, चाहे सोने के पहाड़ दान करो। इसलिए ज्ञानवान योद्धे ऐसा काम नहीं करते। जब महाभारत का युद्ध हो रहा था। कर्ण के पास नाग आया। करण को बोला, ''अर्जुन तक आपका बाण पहुँचा दो, मैं तीर में प्रवेश कर अर्जुन को मार दूँगा। मुझे इसने खण्डण वन में साड़ दिया था। कर्ण बोला, ''भाग जाओ यहां से। मैं किसी के बल के साथ नहीं लड़ूंगा, किसी के साथ विश्वासघात नहीं करूंगा। यह योद्धों का धर्म नहीं है।'' इसी तरह दसवें दिन की लड़ाई में युधिष्ठर, भीषम जी को मिले और प्रार्थना की, ''हमारी सेना के दस हजार फौज आप प्रतिदिन मार देते हो। हमारी जीत कैसे होगी? भीष्म बोला, ''कल को मेरे मुकाबले धरुपद के लड़के शिखण्डी को भेज देना। वह हिंजड़ा त्रीमत रूप है। योद्धे का धर्म नहीं कि स्त्री पर वार करे। मैं पीठ दे दूँगा। फिर जिसका मन करे मुझे मार देना।'' यह है योद्धाओं का धर्म। जैसे गुरु हरगोबिंद साहिब जी ने करतारपुर की जंग में पैंदे खां को घायल करके घोड़े फेंका। पैंदे खां सहकता था, सतिगुरु घोड़े से उतर कर पैंदे खां का मुँह सूरज की तरफ था। सूरज की तरफ अपनी ढाल कर खड़े हो गए और बोले, ''अन्तिम समय है कलमा पढ़'' पैंदे खा बोला, ''जी! आप की रहमत भरी नज़र ही कलमा है। यह है सच्चे मित्रों के गुण ऐसे होने चाहिएं।

नानक कचड़ियां सियों तोड़,
ढूंढ सज्जन पकिआं,

उह जीवदे विछुड़े,
मोइया न जाई विछोड़,

साबार के हाथ से पापी भी मारा जाए तो परमगती पा जाता है। कीचड़ भरे को गले से लगाने का मान देतों का सच्चे मित्र (महापुरुष) मरने का बाद भी दरगाह में सहाई होते हैं।

यहां लेखा मंगिए, वहां खड़े दिसन। पुरुष को अहंकार नहीं करना चाहिए। दुर्योधन, कंस, हिरणकश्यप, रावण, सभी का अहंकार ने ही नाश किया है। अहंकारी पूरी आयु नहीं भोग सकता। सुलेमान पुरी ने कोई झीर की लड़की को देखकर अंहकार से कहा, ''इसके हाथ से कोई रोटी भी खा लेगा।'' इसके साथ कोई विवाह नहीं करवा सकता।'' क्योंकि वह कुरूप थी। सुलेमान के हाथ में एक अंगूठी थी, बहुत सारे यंत्रों–मंत्रों से मड़ी हुई थी। इस करके इसका तख्ता परियों ने उठा कर रखा था। अंगूठी नदी में गिर गई, परियां तख्त फेंक कर चली गई। सुलेमान को उसी भट्ठी पर आकर रेडां चबा कर रात काटनी पड़ी। उस झीरों की लड़की के हाथ से रोटी खानी पड़ी, उसी के साथ विवाह करवा कर भट्ठी झोकता रहा।

हरि जीओ अंहाकर न भावई
वेदि कूकि सुनावहि।।

उसके बन जाईए तो लाजपत रख ही लेता है जैसे द्रोपति की रखी।

आत्म विचार ज्ञान सागर

बलिहारी गुरु आपने जिन सतिगुरु दिया मिलाए
नाभ पवलन घरि आसन बैसे

आत्मिक ज्ञान के बारे में भी लिखना जरूरी है, क्योंकि बहुत सारे लोग अपने असली सरूप, जद्द को भूल कर देवी–देवतों

बुतों की पूज़ा कर रहे हैं। जिस भी देवता की कोई पूजा भक्ति करता, उस देवते की पुरी में जाएगा। बाणी में लिखा है। ब्रह्म पुरी का होएगा काला। अकाल पुरख के बगैर सभी का समय निश्चित किया गया है। सभी देवते उंकार की भक्ति करने से पूजे जाते हैं। उँकार का सिमरन करने का बड़ा महातम है। बाणी में, वेदों में, जितने भी देवी–देवते लिखे हैं, सभी ने प्रभु का सिमरन किया। ईश्वर की ज्योति सभी जीवों के अन्दर है। जैसे दूध में घी, अफीम में नशा, फूलों में खुश्बु, अन्दर बाहर निरंकार का ही नूर है।

इह जग सचे की है कोठड़ी, सचे का विच वासु।

जब ब्रह्मा, विष्णु, महेश कोई नहीं था। छत्तीस युग धुन्धकारा रहा। जब न जल था, न सूर्य, न हवा, न कोई ओर, वहां खुदा आप निरामल बालक रूप होकर बोहड़ (बरगद) के पत्ते पर अंगूठा चूसता रहा। जब विचार बना बहुत रूप होण तो अपनी शक्ति से तीन देवते थापे।

इक संसारी, इक भण्डारी, इक लाए दीवाणु। चौरासी लाख यौनि उपाई सात दीप, नौं खण्ड, तीन लोकों में आप ही रम रहा है।

ए सरीरा मेरिआ हरि तुम महि जोत रखी ता तू जग में आया।
पंच तत का पुतला वाजा पवन बजाया
अमोलक वस्तू देही अन्दर पा के गुप्त रखी।

दिल और दिमाग की दरुस्ती के नाल यार बगल में सूरत पहचान दिलदार दी।

जैसे बुल्ले शाह कहते हैं कि यार तो पास ही बैठा है। राजा साहिब जी भी फरमान करते हैं।

है घट अंतर सरब निरंतर होइ इकंत्र बात बचारी
सतगुरु बाझ नहीं हथ आवत मिलकर उनहन काज सवारी
सबद की कुंजी को लैकर बालक तौ गड़ कांया के कुलफ उतारी।
दास भगवान खुले खट चक्र ज गगुनंत्र सुरति सिधारी।

हर एक शरीर के दाएं पासे नाभि से दस उंगले मुषमना नाड़ी है। दस उंगलों पर कमल में अंगूठे के पोटे समान सत्या का बांग है, गुप्त है। अभ्यास करने से कमल सीधा हो जाता है।

'रिद्ध कमल खिड़े जैसे भान उदय।' कोटि सूरजों के समान अन्दर ही प्रकाश हो जाता हैं। अन्दर से ही ज्योति के दर्शन हो जाते हैं।

तीन तबादस पौन इकागर प्रांन उपान की गत बिचारो
दास भगवान न फरक रहे जब स्वै प्रकाशक है निरंकारो।

काहन सिंह नाभा ने महान कोष में लिखा है, स्वास ही प्राण है। स्वासों के भी दो हिस्से हैं। उपरला हिस्सा नाभि तक जाता है। अन्दरला हिस्सा सत्या तक जाता है।

'हे होंवदा रज जमाल उसनू लैंदा उस ही तरफ दा सास जेहड़ा।' वेदों में ऊँकार ही (मंत्र) प्रभू का नाम लिखा है। गुरु की कृपा से स्वास–स्वास सिमरन करने से अ्दर ही नाम की धुन उठ पड़ती है। जिसको अजपा जाप बाणी में लिखा है।

'गुरमुख रोम–रोम हरि ध्यावे' इसका बेअंत फल है इक बार जपने से फल 60 हज़ार के बराबर है। स्वास अन्दर जाते समय रोम बाहर आते समय अकसर यह माला का काम भी देता रता है। यह भक्ति मोक्ष देने वाली है। पर इस रहस्य को वही समझ सकता

है, जिस पर गुरु की कृपा हो। जिसको आत्मिक ज्ञान हो जाए। उसको सारे के सारे पुण्य मिल जाते हैं। जिसको आत्मिक ज्ञान नहीं उसको सभी पाप लग जाते हैं। व्यास जी ने सभी वेदों पुराणों का सार लिखा है। आत्म ज्ञान की प्राप्ति सभी भेदों, वर्णों से ऊपर उठ कर प्राप्त होती है।

''न को वैरी नही बेगाना
सगल संगि हम को बनि आई।।

जब इस अवस्था में जिज्ञासु पहुंच जाए तो उसके अन्दर ही अमृत का सोमा प्रकट हो जाता है। अन्दर कई प्रकार के शब्दों को धुनें उठने लगती हैं। शंख, घड़ियाल अन्दर से ही दैवी आवाजें सुनाई देने लगती है। सभी इन्द्रियां नाम में मस्त होकर झूम पड़ती हैं।

'पंच शब्द धुन अनहद वाजै' इसी ही अवस्था में जाकर सभी माइक पदार्थ झूठे और जहर लगते हैं।

''फरीदा सकर खंड निवात गुड़ु
माखिओं मांजा दुधु
सभे वस्तु मिठीआं
रब न पूजनि तुधुं''

जैसे हंस पानी में से दूध अलग कर लेता है। दूध को मथ कर मक्खन निकाल लेते हैं. उसी तरह ही आत्म ज्ञानी देही में से ज्योत प्रकट कर लेता है। शास्त्रकारों ने 6 चक्र इस देही में लिखे हैं। शास्त्रकार लिखते हैं, ''एक चक्र गुदा में जहां इस देही में है। जहां ऊपर वायु का निकास है। मूलाधार चक्र चार पंखड़ियों वाला पीले रंग का कमल है। जहां कुंडली नस है। दूसरा चक्र छः दल का इन्द्री

के मूल में है। इसके लाल रंग उरद मुख है। तीसरा चक्र नाभि में है नीले रंग का उदर दस पत्तियों वाला कंवल है। चौथा चक्र बारह दल का स्वर्ण जैसे रंग का जो ह्दय में है। पांचवा चक्र धर्म बन्ध का उदर मुख 16 दल का कंवल कण्ठ में है। 6वां चक्र भावों के दो पंखड़िया का उदर मुख्य चन्दर के समान कंवल है। इन छः चक्र के ऊपर दसवां द्वार है। हजार दल का सफैद कंवल है। दसवां दवार जब खुले तो दयाल का दर्शन कीज।''

सूरज चन्द्र जी का एक जगह तहा कामल पीर पुवादी झाकी।

आत्मिक ज्ञान भक्ति का फल एक तो मोक्ष देता है। दूसरा धर्म राज मानस देह देता जाएगा। टिड्डी यौनी में आत्मा नहीं जाएगी। शब्द की तलाश से पूरे गुरू की (आत्मिक ज्ञानी) की भाल करके शब्द की कमाई ही करेगा। आप निरंकार प्रेरणा करके कामिल गुरू का मिलाप कर देगा। जन्म–मरण का त्रास मिट जाएगा। सिमर के साथ–साथ कर्म काण्ड भी जरूरी है। सेवा, स्नान, दान–यह सभी भक्ति के अंग है। इन कर्मों से अंत करण की शुद्धि होती है। जैसे कमरे की सफाई प्रतिदिन हो तो ही साफ रहता है। चाहे वह बन्द ही तो भी भीतर धूल जमा हो जाती है। इसी लिए जितने भी महापुरुष हुए सभी ढली रात उठ कर स्नान करते रहे हैं। गुरु नानक देव जी रावी दरिया में, गुरू अंगद जी ने सत्यवादी होकर सेवा की। गुरू अमरदास जी ब्यास में स्नान करते रहे और अपने गुरू को भी स्नान करवाते रहे। गुरू राम दास जी ने लोग–लज्जा छोड़ कर अपने ससुराल जाकर टोकरी उठा कर सेवा की। गुरू अर्जुन देव जी ने माता गंगा जी को साथ लेकर आप सिर पर प्रसादे उठा कर पिपली साहिब में संगतों की सेवा की। भगवान कृष्ण जी ने पाण्डवों के यग के समय संगत के जूठे बर्तन उठाए, चरण धोए।

जिज्ञासु को ध्यान कूंज की तरह सिमरन करने की जरूरत है. प्रेम–भक्ति, सिमरन भक्ति, सेवा भक्ति, जब यह गुण जिज्ञासु में पूरी तरह आ जाते हैं। इसके शरीर के चिह्न बदल जाते हैं. रहन–सहन बदल जाता है। नौं चिहन आशिकों के शास्त्रकारों ने लिखे हैं। रंग पीला पै जाना, आहो जरद, चश्म तर, कम खाना, पीना कम, सोना कम, बोलना कम, इन्तजारी, बेकारी, बेचैन रहना सिर नीचे करके बैठे रहना।

- *जो आशिक होगा गिरफ्तारी इश्क में खड़ा होगा।*
  अजराईल के आने से पहले मरा होगा।
  जब अजराईल आएगा तो आशिक हँस के बोलेगा।
  गली महबूब की होगी बाहर आशिक खड़ा होगा।
- *आशिक दा की मारना, जिहड़ा झिड़क दित्तयां मर जाए।*
- बस बुलाओ नहीं हम को कोई नोस नसा कीआ है हम ने।

भुने हुए दानों की तरह आशिक लोग जीवित ही मरे हुए होते हैं। एक दिन हीर सलेटी चूचक की पुत्री झंग शहर के साथ एक छोटी सी नदी बह रही थी। सावन के दिन थे। पृथ्वी हर तरह के फूलों, बूटों से भरी पड़ी थी। बारिश हो कर बन्द हो चुकी थी। बादल चाल पड़ी हुई थी। ठण्डी ठण्डी पौन पहाड़ की चल रही थी। चार बजे की करीब हीर उठ कर सखियों को साथ लेकर नदी के किनारे पर एक छोटा सा मकान अपने आराम के लिए बनवाया हुआ था, जिम में सदा सेज (बिछौना) बिछी रहती है। यहा ही पहले–पहल रांझे के साथ मिलाप हआ था। नदी का पानी नाचता, टपता, कूदता, उछलता अपने असली सरूप समुन्द्र की तरफ जा रहा था। सभी लड़कियां

अपने–अपने सोच विचार के अनुसार नदी के किनारे खुदा के करिश्मे देख रही थी, जहां किसी का दिल करता था, घूमने लगी। हीर रांझे की याद में दूर चले गई। लड़कियों ने पीछे हीर–हीर कह कर आवाजें लगाई। आगे से हीर ने कहा,

- *रांझा रांझा करती नी मैं आपे रांझा होई।*
  सद्दो नी मैंनू धीदो रांझा हीर न आखो कोई।
- *हाजी लोक मक्के वल जांदे मेरा रांझन माही मक्का।*

एक दिन हीर रांझे के लिए चूरी कूट कर आंचल में छन्ना छुपा कर जा रही थी। एक बरगद के वृक्ष के नीचे काजी नमाज़ पढ़ता था। आगे से जब हीर गुजरी काज़ी ने उठकर हीर के छमकें मारी। आगे से हीर ने काज़ी को कहा, ''मियां जी! मैं तो अपने निशाने की तरफ जा रही थी। मैंने आप जी को नहीं देखा। मैं आप जी को नहीं देख सकी तो आपकी नजर मेरे पर कैसे पड़ी। इसका मतलब यह हुआ कि आपका ध्यान पक्का नहीं था। आप की निमांज में कज़ा थी।''

अग वांग तपे रेत ससी नूं न सोच होर करके झराणा है बलोच वाला
मरदी केही है प्रीती सोहनी कचा घड़ा देख के ठिवदी है
नदी विच मरणों न डरदी
हीर दे निकाह वेले दोजखां दे डरावे दिते
हीर ने इक गल नाल सब दी निशा कर दिती
जिनां एक महबूब ते जान वारी तिनां दोजखां नाल की वासता ई।
जिन प्रेम किओ, तिन ही प्रंभु पाइयो।

एक दिन दशम गुरू ने सिक्खों को हुकम किया आज आधी रात कड़ाह प्रसाद बना कर बांटा जाएगा। आधी रात के समय सभी ने

उपस्थित होना, सर्दी का मौसम था, जोर से बारिश शुरू हो गई। नाल ठक्का बहुत जोर का चल पड़ा। कोई भी सिक्ख न आया। सुबह बारिश बन्द हुई, धीरे–धीरे सभी सिक्ख आने लगे। सभी इकट्ठे हुए और आप जी ने सभी से पूछा, ''आधी रात का समय दिया था, आप क्यों नहीं आए?''

सभी कहने लगे, ''रात को तो बहुत जोर की बारिश थी, आना मुश्किल था।

सतिगुरु जी कहने लगे, ''सोहनी का सिदक पक्का था अथवा तुम्हारा? सभी चुप रहे कोई जवाब न दे सका।

महाराज कहने लगे, ''सोहनी प्रतिदिन अंधेरी रातों को चीरती हुई चिनाब को पार करके महींवाल को जा मिलती थी।''

सभी सिर नीचे करके बैठे रहे कोई बोला नहीं। देह का ख्याल इन आशिकों का खत्म हो चुका होता है। तब ही तो समस तबरेज ने हाथ से उलटी खल लाह दी थी। मनसूर ने सूली पर झूटे लिए थे। मती दास, भाई दयाला, भाई तारू सिंह, भाई मनी सिंह जैसे सच्चे आशिकों ने हँस–हँस कर शहीदियां पाईं। इन आशिकों की बात कहने सुनने से दूर है। यह मौत का जाम पहले ही पी चुके होते हैं। यह रहती दुनिया तक अमर हो जाते हैं।

आशिक, आशिक सभ कोई आखे। टेढ़ी पगड़ी धर के,
सिर तो परे इश्क दा डेरा, जित्थे पहुंचे बन्दा मर के
मां समझावे मुड़ जा हीरे कलां जगा न सुतियां
नहीं ता पुठी खल लुहा के तेरा मास खलांसा कुतीयां।
हँस के आगे हीर पई आखे, खलड़ी लहिसी तां की होसी?
मेरा चाक सवासी जुतीआं''

मेरी चमड़ी मौजड़े–गुरू सिक्ख हण्डाए, कुबजां, सुदामा, उदव, अर्जुन, बधक, कुन्चर, सदना सेन, भीलनी, भवीखण, हनुमान, भाई लालो, झण्डा, वादी, नामदेव, कबीर, धन्ना, पीपा, रविादस–यह सभी प्रेमा भक्ति सेवा करके तरे हैं।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

बिन वैराग न छूटस माया

वैराग्य के बिना माया की जंजीरें नहीं टूटती। जन्म–मरण का चक्र समाप्त नहीं होता। वैराग्य भी शास्त्रकारों ने तीन प्रकार से लिखा है।

तरतीब्र वैराग्य :– पहले संस्कारों के अनुसार होता है। जैसे गुरु नानक देव जी को, राम चन्द्र जी को, गुरु तेग बहादुर जी को, दत्तात्रते जी को, गोरख नाथ जी को था।

कारण वैराग्य :– जैसे भर्थरी जी, धरू भक्त जो को हुआ। भरथरी ऊजैन का बादशाह था, धर्मात्मा था। इसके राज्य में प्रजा बहुत सुख से रहती थी। एक रिखी (ऋषि) ने भरथरी जी को अमृत फल दिया। भरथरी ने अपनी रानी पिंगला को दिया। पिंगला के साथ राजे का बहुत प्यार था। रानी का आगे महावत के साथ प्यार था, रानी ने खुद न खाकर महावत को दे दिया। महावत का आगे वेश्या के साथ प्यार था, महावत ने वेश्या को दे दिया। वेश्या ने उस फल को धर्मी जान कर राजा भरथरी को दे दिया। राजा ने फल पहचान कर वेश्या को सखताई से पूछा, ''सत्य बोलो यह फल कहां से लिया? अगर झूठ बोली तो सज़ा–ए–मौत दी जाएगी। वेश्या ने डरते हुए सभी सत्य बोल दिया। उसी समय महावत को पकड़ लिया। उसने भी सब

सत्य बता दिया कि आप की रानी ने फल दिया था। रानी के ऐसे गन्दे इख्लाक का जब राजे को पता चला तो राजे का दिल छलनी हो गया। सभी राजे के सुख, रिश्तेदारों का प्यार अमृत जैसा सोमा फुलवारी की तरह खुश्बू दे रहा था, सभी विष रूप हो गया। ह्दय कोले–कोले हो गया। राज्य छोड़ कर साधु हो कर सिमरन किया। वैराग्य सतक ग्रंथ लिखा जिसमें दुनिया के सुख, दुनिया का प्यार कुंभी नरक लिखा। जब भरथरी जी साधु हो गए, गोपी चन्द जी की मां मैनांवती ने गोपी चन्द को उपदेश दिया, ''पुत्र! तेरा मामा भरथरी हरी साधु हो गया है, तुम भी साधु बन कर सिमरन कर।'' गोपी चन्द जब जोगी बन के गल में अलफी पा कर, कानों में मुन्दरां पाकर हाथ में खप्पर पकड़ कर नाद बजा कर अपने ही घर में भिक्षा मांगी तो मां मोह के वश हो कर रोने लगी, ''पुत्र घर में रह कर ही घर के सुख भोगो, यह फकीरी बहुत मुश्किल है।'' इसी कारण संसार में साढ़े तीन माएं रह गई धरू की मां, फरीद की मां मन्दालसा, राजे निरवोह की मां। इन तीनों माताओं ने अपने पुत्रों को सिमरन करने का उपदेश दिया। इस करके यह पूरी माताएं हुई हैं, गोपी चन्द की मां आधी रह गई। साधु होना भी अच्छे खानदान वालों का ही काम है।

बुरे खून वाले साधु नहीं हो सकते, योद्धे शूरवीर भी परीक्षा करने पर ही पहचाने जाते हैं। कर्ण परस राम से ब्राह्मण बन कर शास्त्र विद्या सीखता रहा। एक दिन कर्ण की जांघ पर सिर रख कर परस राम सोया पड़ा था। सांप ने कर्ण के पैर पर डंग मारा, जब परस राम जी ठे खून चलता देख कर पूछा, ''यह खून कैसे चल रहा है?'' कर्ण बोला, ''मेरे पैर के अंगूठे पर सांप ने डंग मारा था, आप जी सोए पड़े थे, इसीलिए मैंने पैर नहीं हिलाया।'' परस राम जी बोले, ''तुम ब्राह्मण नहीं हो, ब्राहमण

में इतनी सहन शक्ति नहीं हो सकती। परस राम जी क्रोध में आकर बोले, ''सत्य बताओ, नहीं तो श्राप दे दूँगा? कर्ण ने बता दिया, ''मैं कर्ण हूँ, आप क्षत्रिय को शास्त्र विद्या नहीं देते थे, इसीलिए मैं ब्राह्मण बन कर आया था। परस राम जी ने कहा, ''तूने धोखे से विद्या ली है, जब तेरे जैसे योद्धे से तुम्हारा मुकाबला होगा, तेरे अस्त्र, शस्त्र, निष्फल हो जाएंगे। जब महाभारत के युद्ध में अर्जुन से मुकाबला हुआ तो ऐसा ही हुआ। इसीलिए अपने गुरू उस्ताद के पास झूठ नहीं बोलना चाहिए। उत्तम पुरुष अपने बड़ों का आदर करते हैं। अर्जुन को जब भी अपने दादा भीष्म के साथ, गुरू दरोणाचारिया के साथ युद्ध करना पड़ा तो शत्रु होने के साथ भी ऐसा सत्कार करते रहे। एक–एक तीर दोनों के चरणों में नमस्कार के लिए छोड़ते। एक–एक तीर आज्ञा लेने के लिए कानों के पास से सां–सां की आवाज़ करते छोड़ते रहे। गद्दार और किसी की नेकी न जानने वाले वो अपने माता–पिता का सत्कार भी नहीं करते। जब राम चन्द्र जी लंका विजयी करके अयोध्या में आए तो एक रात के समय वीर यात्रा कर रहे थे। एक धोबी अपनी पत्नी से लड़ रहा था। धोबिन कहने लगी, ''बच्चों को संभाल, मैं तो चली।'' धोबी बोला, ''जाओ यहां राम चन्द्र नहीं जो निकली हई सीता को अपने घर बसा लेगा।'' यह ताना सुन कर अपनी निंदा सुनकर लक्ष्मण जी को हुक्म दिया, लोग हमारी निन्दा करते हैं, सीता को जंगल में छोड़ कर महाराज जी का हुक्म सुना कर वापिस आ गए। माता जी का उस समय हाल बहुत दर्दनाक था।

यहां ही लव–कुश जी का जन्म हुआ। जब वाल्मीकि जी ने सीता और राम चन्द्र जी की सुलह करवा दी। बाद में अपनी राजधानी में रह रहे थे, एक दिन और रानियों ने माता सीता जी को पूछा, ''रावण की सूरत कैसी थी?'' सीता जी ने एक दीवार के ऊपर रावण

की फोटो बना दी। इतने भगवान राम चन्द्र जी वहां आए। रावण की फोटो देखकर कहने लगे, तुम्हारे दिल में से अभी भी रावण का प्यार नहीं जाता, यह बात सुनकर माता सीता जी ने पृथ्वी पर हाथ मार कर अरदास की, "अगर मेरा सत्य कायम है तो मुझे अपने में समा लो।" माता जी सचमुच ही धरती में समा गए। यह है सच्चे–सुच्चे होने की निशानी, लज्जा वाले पुरुष इतनी बात नहीं सहार सकते, अपने आप का अन्त कर लेते हैं। बे–लज्जा लोगों पर ऐसी बात का कोई प्रभाव नहीं होता, ढीठ बन कर दिन काट लेते हैं।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

मध्यम वैराग्य

चोरी करके, डाके मार कर, हत्या करके, मौत की सजा से डरते साधू हो जाते हैं, यह है मध्यम वैराग्य। अच्छी–बुरी दिमागी शक्ति पिछले कर्मों के अनुसार ही हुआ करती है।

जिन में दैवी गुण होते हैं, ऐसे पुरुष स्वर्गों के सुख भोग कर मात लोग से आए होते हैं। यह खूबसूरत भी होते हैं, दयावान भी होते हैं, जो नर्कों की सज़ा भोग कर मात लोग में आते हैं, उनकी मत मैली और राक्षसों की तरह होती है, नीच कुलों में उनका जन्म हुआ करता है। रूप भी उनका करूप होता है। भयानक सूरतें हुआ करती हैं, दया धर्म इनमें नहीं होता। हर एक जीव को मार कर खा जाते हैं। एक आदमी के चार पुत्र थे, चारों की ही नंबरदारी चाहते थे। अदालत ने शर्त रख दी। चारों को खाना बनाकर दिया जाएगा। जो खाने की पूरी पर्ख बताएगा उसको नंबरदारी दी जाएगी। चार तरह के खाने बनाकर लाए गए। मांस वाले ने मांस खाकर बताया, इस बकरे ने कुत्तिया

का दूध पिया होएगा। खीर वाले ने बताया खीर भेड़ के दूध में बनी होगी। शराब वाले ने बताया शराब शमशान की आग से निकाली हुई है। चौथे ने खाना खाए बगैर ही बता दिया। उसको नंबरदारी दी गई।

बिक्रमाजीत के समय की बात है। चार लड़कियां एक राजकुमार से विवाह करवाना चाहती थी। राज कुमार ने शर्त रखी, जो देखकर जाति बता देगी, उसी से शादी करूँगा। बहुत सारे मर्द औरतें इकट्ठे किए गए। एक ने सभी जातियां देखकर बता दिया। यह है पवित्र आत्मा के गुण.

जब पाण्डव विराट नगर में गए। द्रोपति भी साथ थी। सुदेशना रानी ने पास बुला कर पूछा, ''आप कौन हो?'' द्रोपति ने कहा , ''मैं सुरैदरी द्रोपति की दासी हूँ, वह वन में चले गए, मैं कुछ समय आप के पास रहने आई हूँ।'' साथ ही यह शर्त रखी है कि मैं किसी के पैर नहीं धोऊंगी, जूठे बर्तन साफ़ नहीं करूंगी। मेरे पाँच पति गन्धर्व है, अगर कोई मेरी ओर बुरी नजर से देखेगा, उस को मार देंगे। यह है अच्छे खानदान का चिह्न। नीच पुरुषों को कोई लाभ–हानि नहीं हुआ करता। थोड़े ही लाभ के पीछे अपना धर्म छोड़ देते हैं, अपनी मिसल नहीं देखते। नीच पुरुषों के संग बैठकर खाने लग पड़ते हैं।

धर्मी लोग ही देश और अपनी रक्षा कर सकते हैं। अधर्मी पुरुष नहीं कर सकते।

बोलो भाई वाहिगुरू।।

●●●●●